श्रीगणेशायनमः॥

अथ आरण्यकाण्ड लि०॥

दोहा

पाप दुःख अज्ञान हर सुख संपति के धाम।
धर्म ज्ञान वैराग्य कर नमो नमो श्री राम ॥१
पीत वसन तनु स्याम कर सर धनु कटि तूणीर।
जटा मुकुट सिय लखन संग जय जय श्री रघुबीर २

चौपाई

लगतहि अगहन मास सुजाना॥ राम लखन सिय कीन पयाना॥
धसे दंडकारण्य मझारा॥१॥ जँह खग मृग जल जंतु अपारा
फूले फले लता तरु नाना॥ झुके धरनि मे लसत महाना॥
बने मुनिन के भवन बिशाला। ब्रह्म भवन सम रहित कशाला।
ब्रह्म घोष सुनि लखि छवि धामा। आनि हर्षे लक्षमन सिय रामा॥
आयेस न मुख मिलन मुनीसा। जटा चीर धर ब्रह्म सरीसा॥
राम लखन सिय छवि लखि सोई। रहे ठगेसे इकटक होई॥१॥
सादर मिले परस्पर सारा॥१॥ गये लेय ऋषि कुटिन मझारा॥
३ दो० करि पूजा सत्कार अति कोमल बचन सुनाय॥
राखे आश्रम मे तिनहि वरफल मूल खवाय ३
प्रात होनकरि कृत्य उदारा॥ सुनन स्वस्ति वाचन हितकारा
मिलत मुनिन सें ठामहि ठामा॥ चलेजात मगमे श्री रामा॥
शैल शृंग सम रूप भयंकर॥ देख्यो असुर महा स्वनदुखधर
व्याघ्र चर्म के बसन बनायें॥ वसा रुधिर तनु मेल पकायें॥
तीन सिंह अरु च्यार बघेरा॥ दो वृक दश मृग शिर गज केरा॥
ठके सूलमे आय सु दोरा॥ सियहि उठाय कहे वच घोरा॥

कों तुम वन में फिरो अकेला॥ तिय जुत तजि करि जीव नवेला
मैं विराध राक्षस इहि कानन॥ विचरौ मुनि भक्षक मख नाशन
दो॰ बोले प्रभु हम क्षत्रि हैं रघुवंशी भय हीन॥
खल घालक शालक अरि न प्रति पालक जन दीन६

बिराधवचन

मैं करिहौं इहिं तियहि स्वनारी॥ पीहौं रुधिर तुमाहिं अब मारी॥
सो सुनि सिय डरि कंपन लागी जिमि कदली अति मारुत पागी॥
तिहिं लखि कहि लछमन सें राम॥ देखि भद्र का गति मो वाम॥
यह आई मो संग हित रीती॥ आज बनी केकयि की चीती॥
पिता मरन सुनि गये स्वराजू॥ जुन भा मुहि दुख सो भा आजू॥
सुनि कहि लछमन तुम जगनाथा किमि भाषो बच यथा अनाथा
मैं तुम्हरो जन अब करि कोपा॥ करों छाडि सर इहि को लोपा॥
जो मो कोप भरत पर आही॥ आज सु मैं काढौं इहिं माही॥
दो॰ सुनि विराध बोल्यौ गरजि धारि अभिमान विशाल
जब रु शत ऋदा को सुवन मैं हौं तुम्हरो काल ८॥
मैं तप करि विधि बचन प्रमाना भो अवध्य तनु अति बलवाना
तातें तुम तिय तजि घर जाहू॥ जनि पितु मातन के उर दाहू॥
सो सुनि राम सात सर मारे॥ पृथक पृथक तिंहि अंग विदारे
तब करि कोप सियहि तजि धाई। प्रभु लषनहि गहि गयो पलाई
प्रभु लछमन की गति लखि सीता रोवन विलपन लगी सभीता।
तिंहि तनु शस्त्र अवध्य निहारी॥ मार्यो गरत माहि खल डारी॥
दो॰ तिंहि निज तनु धारि जोरि कर कहि मैं हौं गंधर्व
नाथ धनद के सापसें राक्षस भयो सगर्व॥१०॥
सो मैं पुनि तुंबर भयो तुव प्रसाद करि नाथ॥+॥
अब जाऊं निज भवन कों जय जय जय रघुनाथ ११

तुम जगदीश चराचर ताता ॥ सिय स्वजि पालनि त्रिभुवन माता
लछमन शेष विश्व आधारा ॥ लिय अवतार हरन महि भारा ॥
नाथ मह्य भव भंजन हारा ॥ रहो मोर उर ध्यान तुम्हारा ॥
रसना करे गुरगन के गाना ॥ श्रवन सुनै तुव गुण विधि नाना
भोकर प्रभु पद पूजन ठानै ॥ शिर चरनन मैं नमि सुख मानै ॥
भक्ति तुम्हारि रहै उर छाई ॥ कवि गुलाव यों यह वरसाई २३

दो॰ बोले विहसि दयालु प्रभु तुव मांगे सब होहि ॥
मो माया जग मोहिनी अब नहि व्यापै तोहि २३

पुनि प्रभु सियहि बिसारि कै लेय शशि कला साथ
आश्रम मुनि सरभंग के पहुचे त्रिभुवन नाथ २४

तब आयो सुरपति मुनि पासा ॥ तब रावत लखि तिहिं अघ नासा
भानु अग्नि सम प्रभा अपारा ॥ हरित वाजि रथ अति छबि बारा
महि नहि परसत तिहिं आरूढा ॥ बिमल छत्र धर तेज अगूढा ॥
पंच विंस संवत् वय सारे ॥ शत शत जन चहुं घार खवारे ॥
बर्ष पचीश आयु सुर केरा ॥+ रहत सदा बुध कहत घनेरा ॥
लखि लछमन यह पुरुष अनूपा सुरपति दीषत है बर रूपा १५

दो॰ तातै ह्यां सिय सहित तू ठहरि मुहूर्त निदान ॥
जितने जानों याहि मैं को है रथ थित जान ॥ २६ ॥

राखि लषन सियकों तिहि ठांही गये इकाकी प्रभु मुनि पांही ॥
लखि रामा गम पूजि मुनी सहि ॥ गोन मिल्यौ प्रभु से कुसमय लहि
पुनि प्रभु सिय लछमन मुनि चरना गहे जाय बिधिवत अघहरना ॥
दै असीस मुनि हिय हर्षाये ॥ कंद मूल फल मधुर खवाये १७

दो॰ बर आसन बैठाय पुनि वोले मुनि कर जोरि ॥
दै दरशन प्रभु तुम करी मनसा पूरन मोरि ॥ २८

दीन दयाल भक्त हितकारा ॥ अवधि निवासी जन मन हारा ॥

सिय लछमन जुत श्यामसरीरा॥ बसो मोर उर घर रणधीरा ॥
मो मन तुम चरनन तैं न्यारा॥ होय न यह बर देऊ उदारा ॥
एवमस्तु कहि पूछ्यौ रामा ॥ मुनिसैं सुरपति आगम कामा ॥
कहि मुनि सो तप कारन आयो॥ लेजावन विधि धाम सुहायो ॥
मैं तुम आगम जानि गुसाँई॥ गयो न सुरपति संग रघुराई ॥
अब तुमसैं मिलि निज तनु त्यागों॥ जैहौं ब्रह्मलोक हित पागों ॥
निकट सुतीक्षण बसबन माहीं॥ तुम्हरो भक्त मिलऊ प्रभु नाहीं॥

दो० यौं कहि रामहि दे सुकृत पुनि करि अग्नि प्रवेस॥
ब्रह्मलोक शरभंग गो लहि नूतन तनु वेस ॥२०
पुनि तहं धार्मिक प्रभु निकट आये ये ऋषि राज॥
विपति निवेदन आपनों कष्ट निवारन काज ॥२१
बालखिल्य वैखान सरु तापस पत्रा हार ॥+॥
संप्रक्षाल मरीचि परु पुनि मुनि सलिला हार २२
दौंनरु दंतो लूखली स्थांडिल सापी सोय ॥+॥
अश्मकुट्ट उन्मज्ज करु पंच तपोन्वित होय २३
वायु भक्ष आकाश गृह सजप आर्द्री पट वास
अनवकाशि करु असयन सुतपो निष्ठ गिरिवास २४

मुनिबचन

प्रभु असुरन अगानित मुनि खाये॥ देखहु तिनके अस्थि निकाये
तिनहि बिदारि हरऊ मुनि पीरा॥ जन पालक खल घालक धीरा ॥
करुणाकर बोले असुरारी ॥+॥ राक्षस हीन करौं महि सारी ॥
देखऊ अनुज सहित मो कामा॥ कवि गुलाब सब बसऊ स्वधाम

दो० यौं प्रन करि मुनिगन सहित गये सुतीक्षण पास॥
मिले हर्षि उठि छकित पत मिट तन मुनि चष प्यास २५

मुनि कहि प्रभु तुव दर्शन हेतू॥ मारग जोवत रह्यो निकेतू ॥+

नतु मैं जातो स्वर्ग गुसाँई ॥ मोहि लैन आयो सुर राई ॥
तुम सब प्राणिन के उर वासी समदरसी सम रूप प्रकासी ॥
तउ तुव मंत्र जाप करि कीना ॥ तिनहि करो निज माया लीना ॥
नाना श्रित की हरो स्वमाया ॥ जिमि नृप करै सेव सम छाया ॥
एक तुम थिति पालन लयकारा विधि हरि शंकर रूप उदारा ॥
सब कहँ भासत त्रिविधाकारा ॥ जिमि दिन नायक बारि मझारा
मोह पास गत मोहि निहारयो ॥ सदन आय जन जानि उधारयो
दो॰ नाथ कीन अति दीन पर कृपा कृपाल महान ॥
सदा लषन सिय सहित प्रभु मो उर बसहु सुजान २०

सुनि मुनिबर की मृदु बर बानी ॥ बोले राम हर्षि सुख दानी ॥
मैं ऋषिराज तुमहि सब लोका ॥ देहौं जेहैं अगम अशोका ॥
अब मैं कहाँ बसों मुनि राया ॥ स्थान बताबहु मुहि करि दाया
तुम सब जानन सब हित कारा ॥ कह्यो मोहि शरभंग उदारा ॥
मुनि बोले यह आश्रम रामा ॥ है रमनीय बसहु मति धामा ॥
बसत महा मुनिगन ह्यां नाना ॥ रहन मूल फल सदा महाना २८
दो॰ पै ह्यां आवत बहुन मृग विक्रम रूप दिषाय ।
मोह तमन मुनि जनन के है यह दुख रघुराय २६

राम वचन

मैं ते मृग हनिहौं इहि थाना ॥ कस तुम्हरे सन्मुख भगवाना
ताते ह्यां न रहों चिर काला ॥ हनों अनत बसि मृग विकराला ॥
यों कहि संध्या करि रघुराई ॥ अमृत समान मूल फल खाई ॥
सोये निशि सिय लखन समेता ॥ प्रात नित्य कृत करि चित चेता ॥
पूछि सुतीक्षण से मग गाथा ॥ नाय शीश राम नवत्रय साथा ॥
कहि मुनि लखिवन ऋषिगन ठामा पुनि आवहु इहिं आश्रम रामा ॥
दो॰ ऐहैं कहि प्रभु लखन जुत करि प्रदक्षिण तास ॥

चले राम सिय लखन त्रय मुनिगन जुत सहुलास ३१

सीतावचन

कामजनीत दोष है नाथा ॥ मिथ्याबचन रूप रतिय साथा ॥
बिना बैर रौद्रत्व निदाना ॥ तुम सब दोषन रहित सुजाना
खल मृगअसुर नाशयन कीना ॥ सो मिथ्या नहिं होय प्रवीना ॥
पै अपराध बिहीन बिनासा ॥ अनुचित दोष तहें अरि त्रासा ॥
तुम धर्मिष्ट सत्य ब्रत धारी ॥ पितु सासन रत जग हित कारी ॥
मुनि बिनती सुनि बिन अपराधा। चले करन असुरन कों बाधा ॥
जुगल शस्त्र धर तिनहिं निहारी हनिहौं मैं मनमें निर्धारी ॥
तातें प्रभु अब पावन माही ॥ चलिवो मोमन मानत नाही ॥

दो० ताको कारण है यहै ज्यों अगिन के पास ॥
होय शस्त्र इंधन तबै बढै तेज बल नास ॥ ३३

पूर्वे हुतो इक मुनि बन माही ॥ खग मृग रत शुचि मन अघ दाही
तिहिं तप विघन करन मन मानी आयो सुरपति भट तनु ठानी ॥
खड्ग धरोहरि धस्यो मुनि ताही ॥ राखै तिहिं करि जत्न महाही
कंद मूल फल लेनहु जावै ॥ खड्ग राखि संग हिय हुलसावै
नित्य खड्ग बंधन के साथा ॥ भई क्रूरमति मुनि की नाथा ॥
त्यागि स्वधर्म मत्त अति होई ॥ गयो नरक में मुनिवर सोई ३४

दो० होत शस्त्र सें कलुषमति तातें धारि मुनि बेष ॥
धरौ धर्म ही धर्म सें पावत सर्म अशेष ॥ ३५

धर्म कष्ट सें सुख संसारा ॥ ॥ लहत न सुखसें सुख अरिहारा
नित्य धर्म रत शुचि मन आपू ॥ त्रिभुवन व्यापक परमप्रतापू ॥
सर्व तत्व वित हौ विज्ञानी ॥ है त्रिभुवन की बात न छानी ॥
तिय स्वभाव करि बात जनाई करहु बिचार सहित दोउ भाई

दो० सुनि सियके हित युत बचन बोले श्री रघुराय ॥

प्रिया कहे तैं धर्म जुत बचन सदा सुख दाय ॥ ३७
पै यह क्षत्र धर्म है प्यारी ॥ सुनै न आरत बच धनु धारी ॥
अति आरत ऋषि दंडक बासी आये मोर सरन खल त्रासी ॥
कही सबन ऋषि ऋषि तपसाना खाये खल असुरन ने नाना ॥
होम पर्व के समय सदा ही ॥ देत महा दुख दोष बिना ही ॥
शाप देय हम तिनहि नशावैं पै तप बिगरत देखि सकावैं ॥
रक्षक हेरत बहु दिन बीते ॥ आज मिले प्रभु तुम चित चीते
आये सरन रावरी ताता ॥ ४ ॥ हरो घोर दुख त्रिभुवन त्राता ॥
मैं सुनि दीन बचन निर्धारा ॥ असुर नाश कीनो स्वीकारा ॥ ३

दो० बिना कहे हू सर्वदा मैं टारों मुनि ताप ॥ ४ ॥
अब तौ तिनकी सुनि बिनय स्वीकृत कीनों आप ३९

तजौं न पन मन भावत मोही ॥ त्यागौं जीवन लछमन तोही
कहे बचन तैं मो हित साना ॥ तिन तैं मुहि भी हर्ष महाना ॥
हैं ये बच तुव कुल अनुरूपा ॥ धर्म तिया है मोरि अनूपा ॥
प्रानहु तें मुहि अधिक पियारी पति रत पावन अति मति वारी
यों कहि धनु सर धर रघुनाथा ॥ चले बिपिन सिय लछमन साथ
आगे जाय तड़ाग निहारा ॥ अति सुंदर जोजन बिस्तारा ४०

दो० ताके जल निर्मल बिषे सुनियत बाजा गीत ॥
बिन जन लखि बिस्मत भये राम लखन अरु सीत

पूछी मुनिहि धर्म भृत नामा ॥ का यह अचिरज कहु सुख धाम
यह पंचाप्सर नाम तड़ागा ॥ मांडकर्णि मुनि रचित सभागा
तिन तप कीन सहस दश साला ॥ भखि बर बात पैठि इहिं ताला
तप लखि सकल सुरन दुख माना मुनि चाहत किहुं सुर का स्थाना
सब मिलि पंच अप्सरा प्रेरी ॥ तिन माया फैलाय घनेरी ॥ ४
मुनि मन स्ववस कीन छिन माही कीन स्वपति पंचन मुनि ताही

दो० ते मुनि जुत इहिं ताल मधि रमत रहत सुख साथ
तिनके भूषन गान को है यह रव रघुनाथ ४३
सुनि प्रभु तहाँ वसे निशि पाई ॥ पुनि क्रम क्रम मुनि आश्रम जाई ॥
बसे वर्ष दश तहाँ सुजाना ॥ आये बहुरि सुतीक्षण थाना ॥
कछुक महूक संबत रघुराई ॥ बसे तहाँ भक्तन सुखदाई ॥
इक दिन मुनि ढिग बैठे सुजाना ॥ पानि जोरि बोले भगवाना ॥
नाथ अगस्त्य बसत बन माही ॥ तिनको आश्रम जानौ नाहीं ॥
देहु बताय तहाँ अब जैहैं ॥ मुनि दर्शन करि कृत अइहैं ॥
दो० राम वचन शुचि सरल सुनि बोले मुनि हर्षात ॥
राम अवहिं मैं हौं यही कहन चहत हौं तात ४५
मन भावत अवहीं चित चाऊ ॥ प्रभु ह्याँ तें चव जोजन जाऊ ॥
दक्षिण दिक इक आश्रम आही ॥ तहं अगस्त्य को भ्रात रहाही ॥
तातें इक जोजन पर सांई ॥ है अगस्त्य मम गुरु मुनि राई ॥
सो सुनि मुनिहिं नाय सिर रामा ॥ गमने इध्म वाह मुनि ठामा ॥४६
दो० सो आश्रम लखि राम ने कहि लक्षिमन सैं वात
ह्याँ पहिलैं खल असुर जुग भ्रात इते द्विज घात ४७
वातापी इल्वल लछल खानी ॥ इल्वल द्विज बनि संकृत वानी ॥
श्राद्ध भाखि द्विज निवत लगावै ॥ वातापी सुमेष बनि जावै ॥+॥
तिहि हनि करि तिहि मांस रसोई ॥ द्विजन जिमावै इल्वल सोई ॥
जीमे पर कहु आवहु भाई ॥ तब सो उदर फारि कढि जाई ॥
हने हजारन द्विज इहि रीती ॥ तब देवन अति जानि अनीती ॥
कहि अगस्त्य सैं तिन तहं आई ॥ भाख्यौ सुमेष मुदित मुनि राई ॥
तब कहि इल्वल्ल कढि मम ताता ॥ मुनि कहि जम घर गो तुव भ्राता
तब कुपि इल्वल्ल मुनि पर धायो ॥ नयनानल करि ताहि जरायो ॥४८
दो० पुनि मुनि सैं मिलि वसि निशा कंद मूल फल खाय ॥

मातमुनिन्हि शिर नाय प्रभु चले रजाय सु पाय ४६

देख्यौ ऋषि अगस्त्य थल पावन॥ फूले फले तरु लता सुहावन॥
बैर रहित खग मृग गन डोलैं॥ शुक पिकादि कोमल कल बोलैं
होम धूम करि भौ बन श्यामा॥ चीर माल थापित सब ठामा॥
दक्षिण दिसि लखि लखन सुजाना॥ ऋषि प्रभाव कारि अभय निदाना
लाग्यौ बाढन विंध्य गिरीसा॥ रवि मग रोकन धरि मन रीसा॥
सो अगस्त्य मुनि आय निवार्यौ॥ बढै न अबलौं बचन मचार्यौ

दो० दीर्घ आयु तप तेज जुत है अगस्त्य मुनि राय॥
छमा दमादम शांति धर सुचि मन दीन सहाय ५१

ह्यां बीसहीं बन के दिन शेषा॥ करिहैं मुनि कल्यान बिशेषा॥
सुर मुनि सिद्ध यक्ष गंधर्वा॥ नियमित असन बसहि ह्यां सर्वा
कूट शठ निर्दय अरु पापी॥ हिंसक बसि ह्यां बचैन कापी॥
अल्पऊ तप करि इहिं पद मांही॥ लहैं परम पद संसय नाही ५२

दो० चौकाहि प्रभु सिय लखन सह मुनि अगस्त्य ढिंग जाय
नमि करि आशिर्वाद लहि बैठे आय सुपाय॥ ५३॥

कुशल प्रश्न करि भोजन दीना॥ सादर राम चंद्र सिय कीना॥+
पुनि आसन बैठाय अनूपा॥ हाथ जोरि बोले मुनि भूपा॥
हौ तुम एक आदि जग कारी॥ मूल प्रकृति है शक्ति तुम्हारी॥
सो माया तुव इच्छा पाई॥ महत्तत्व कौं रचे गुसांई॥+॥
तातें अहंकार उप जावै॥+॥ अहंकार तें गुन प्रगटावै॥
सात्विक राज सता मस सोई॥ विष्णु बिरंचि ईस तुम होई॥
जन हित लीला करन अनंता॥ निर्गुन तुमहि होत गुन वंता॥
सो तुव माया द्वै विधि रामा॥ विद्या और अविद्या नामा॥

दो० पुरुष अविद्या वान सब हैं प्रवृत्ति मग लीन
विद्या बस वर्ती मनुज मग निवृत्ति रत चीन ३६

रत संसार अबिद्या आरे ॥ विद्यायुत निर्द्वै धन सारे ॥+॥+॥
नामजपत तुब भक्त न माही ॥ विद्या प्रगटत राम सदाही ॥
तातें मुक्त भक्त तुब आही ॥ आन मुक्त सपने हू नाही ॥+॥
मुक्ति हेतु केवल सत संगा ॥ जातें रुचि ह्वै कथा प्रसंगा ॥+॥
सो मुहि देऊ सदा रघुराया ॥ हरन मोह ममता मद माया ॥
कबि गुलाब तुब भक्ति बिहीना ॥ लहै न दर्शन परम प्रवीना ॥३६

दो० आज सफल मम जन्म भौ भये सफल मख सर्व
दीर्घ काल तप सफल भौ लहि तुव दर्श अगर्व ३७

पुनि सुरपति ने धरे अनूपा ॥ राम हेत अक्षय बर रूपा ॥+॥
मुनि असि धनु सर तरकस दीने ॥ सादर करि प्रणाम प्रभु लीने
हंसि प्रसन्न ह्वै बङ्करि मुनीशा ॥ बोले मृदुल सुनऊ जगदीशा ॥
मग श्रम सहि आये मो ठामा ॥ कीन्ह मोहि प्रभु पूरन कामा ॥
राज कुवांरि सिय अतिसुकुमारी ॥ आई वन संग प्रेम प्रचारी ॥
सहत महा दुख मग बन माही ॥ रह हर्षित जिमि रघव यांही ॥
यह तासी रीतियन की आही ॥ रह सुख में दुख देखि पलाही ॥
तड़ित चपल ता असि पै नाई ॥ रहत तियन में पवन तुराई ॥३८

दो० सियइ न दोष न रहित है महा पूज्य पति लीन ॥
भला घनी यज्यौ सुरन में अरु धर्ती अघ हीन ३९

पुनि कहि तुव कर्तव्य बिचारी ॥ पठवौं अनत विश्व हितकारी ॥
ह्यां ते ह्वै जोजन इक ठांऊं ॥ पावन पंचवटी तिंहि नांऊ ॥
तहं वसि पालऊ ऋषिन समाजा ॥ हनि गन असुर करऊ सुर काजा ॥
सो सुनि मुनि चरनन सिर नाई ॥ बोले विमल बचन रघुराई ॥
प्रभु कृतकृत्य भये हम आजू ॥ कौन प्रसंसा तुम मुनि राजू ॥+॥
यौं कहि बार बार शिर नाई ॥ गमने हर्षि रजाय स याई ॥४०

दो० पंचवटी के मार्ग में लख्यौ गीध वल धाम ॥

महा काय तिहिं प्रभु कह्यौ कोतू कहि कुल नाम
बोल्यौ गीध राम हित बाना ॥ मैं हौं दशरथ मीत सुजाना ॥
मानि महामति पितु को मीता ॥ पितुवत पूज्यौ राम पुनीता ॥
बहुरि गीध बोल्यौ हर्षाई ॥ सुनहु मोरि उत्पति रघुराई ॥
पूर्व काल मे ये नृप ताता ॥ भये प्रजापति शुचि मन ताता ॥
कर्दम प्रथम विकृत पुनि सेषौ ॥ संश्रय पुनि बहु पुत्र बिशेषा ॥
स्थाणु मरीचि रु अत्रि सचेता । क्रतु पुलस्त्य अंगिरा प्रचेता ।
पुलह दक्ष विवस्वान निदाना । अरिष्टनेमि रु कश्यप जाना ।
भई दक्ष के साठि सुताही ॥+॥ तिनतें कश्यप ने रह ब्याही ४

दो० अदिति दिति रु दनु कालका ताम्रा क्रोधवसा रु
मनु अनला इन आट की संतति वर्णौं चारु ४३
जने अदिति तेतीस सुर आदित्य रु वसु आन ॥
रुद्र रु अश्विनै अथ जने दिति ने दैत्य निदान ४४

अश्वग्रीव भयो दनु बालक ॥ जने कालका नरक रु कालके ॥
क्रौञ्ची भासी श्येनी आना ॥ धृतराष्ट्री रु शुकी बलवाना ॥
पाँच सुता ताम्रा उपजाई ॥ तिनतें उपजे खग समुदाई ॥
क्रोधवसा के भइ दश कन्या ॥ तिन उपजाये पशु अहि धन्या
मृगी हरी मृगमंदा श्वेता ॥ भद्रमंदा कद्रु को सचेता ॥
मातंगी सुरसा शार्दूली ॥+॥ सुरभी दश भमनी अनुकूली ॥
मनु के उपजे मनुज अपारा ॥ अनला के तरु अखिल उदार
सुता सुकी की नता निदाना ॥ नता सुता बिनता मति बाना ॥

दो० विनता के सुत दोय मे गरुड़ अरुण विख्यात
अरुण सुवन संपाति अरु मैं जटायु भौ तात ॥४६

कहौं मे तुव वास सहाई ॥ जब सह लखन सिकार हि जा
तब करिहौं सिय की रखवारी ॥ रहि करि आश्रम शून्य मझारी

सो सुनि राम ताहि सनमान्यौ ॥ हर्षित भये पिता सम जान्यौ ॥
संग लेय तिहिं कीन पयाना ॥ गये गोमती तीर सुजाना ॥
पंचवटी आश्रम रुचि राई ॥ लखि लछमन सैं कहि रघुरा
समिध पुष्प कुश जल है नीरा ॥ लता व्रक्ष महि मन हर धीरा ।
रचहु कुटी तहँ विसद बिशाला तुहि मुहि सियहि सुखद सब
लहि प्रभु संमति कुटी बनाई ॥ कुशकांश रु शर पर्ण न छाई ।
दो० माहि सवारि अस्नानकरि अमल फूल फल लाय ॥
बास्तु शांति करि बर कुटी दीनी प्रभुहि दिखाय ॥+॥
लखि प्रभु महा मनोहर नाई । है हर्षित लखनहि उर लाई
बोले महल कर्म लखि तोरा ॥ महा प्रसन्न भयो मन मोरा ॥
अति धर्मज्ञ कृतज्ञ सुजाना ॥ कला कुशल सब बिधि बलवा
तैं करि काज मोर मन भायो ॥ सदन त्याग पितु मरन भुलाय
दो० यौं भ्रातहि सनमानि सिय अनुज सहित रघुराय
बसत भये तहँ गीधजुत कबि गुलाब हर्षाय ५०
इक दिन लछमन कहि मम नाथा कहु प्रभु मोहि मुक्तिप्रद गाथ
बोले राम सुनहु प्रिय भाई ॥ माया कल्पित विश्व सदाई
दीपत यौं आत्मा मैं नाना ॥ रज्जुहि सर्प कहत अज्ञाना
अस तस कल है सुन्यौ लख्यौउ जैसैं स्वप्न मनोरथ दोउ ॥
जीवतु बुध्या दिक तैं आना ॥ परमात्मा सो आहि निदाना ।
ताको ज्ञान होइ इहि रीती ॥ मान दंभहिं सादि अमीती ॥
पर कृत निंदा सहि ऋजु रहई ॥ मन बच तनु करि गुरुहित ग
बाहरि भीतरि शुद्ध सदा रह ॥ सत क्रियादि मैं थिरता अति ग
दो० ॥ काय बचन मन दमन करि विषय चाह तजि देय
अहंकार तजि जन्म अरु जरा मरण सुधि लेय ५२
पुत्र कलत्र धनादिक माहीं ॥ होय न सक्त विरक्त रहाहीं ॥

दुष्ट अनिष्ट आप्ति की वारा ॥ धरै चित्त समता मति वारा ॥
राषै मोसे भक्ति अनन्या ॥ प्राकृतजन रति तजि अति धन्या
आत्मज्ञान हित रत उद्योगा ॥ करवे दांत अर्थ मैं योगा ॥+॥
इनतैं होइ ज्ञान बिज्ञाना ॥ सो है जीवन मुक्त निदाना ॥
पै मम भक्ति बिमुख कौं ताना॥ है अति दुर्लभ मुक्ति बिख्याना
ज्यौं सदृग अङ्ग कौं निशि नहिं भासै॥ दीप धरें सब वस्तु प्रकासै ॥
यौं मम भक्ति जुक्त कौं भाई ॥ भली भांति आत्मा दरशाई ५३
दो० है कारण मो भक्ति को मो भक्तन को संग ॥
मो सेवा मो जनन की सेवा करन अभंग ५४
ग्यारसि व्रत करि कर जागरना॥ मम उत्सव ठानै मन हरना ॥
श्रवन पठन व्याख्यान अपारा॥ करै सदा मो गुण नमकारा ॥
रटै नाम पूजन मन धारै ॥+॥ तब मम भक्ति हृदय बिस्तारै
तातैं होय ज्ञान बिज्ञाना ॥+॥ मुक्ति तासु कर बसै निदाना ॥

कबिवचन

दो० पंचवटी मैं बसत इमि पावत हर्ष अनंत ॥
बीती वर्षा शरद ऋतु आवत ऋतु हेमंत ५७
बड़े प्रात इक दिन रघुबीरा॥ जात लषन सिय सह सरि तीरा
बोले लषन लषउ रघुराई ॥ चहुं दिशि हिम ऋतु की सरसाई
सस्यवती महि अति नीहारा ॥ भौ जल दुखद अगिन सुखकारा
असन पाक गोरस अति आही॥ बिचरत भूपति देशन माही॥
रवि लहि दक्षिण भई अपीची॥ तिलक हीन तिय तुल्य उदीची
लहि तुषार भौ धूसर भानू॥ श्वास अंध आदर्श समानू॥
पून्यौ ज्यौं न्हतु षार मलीना॥ लसत न ज्यौं सिय घाम विलीना
दूर उदित नीहार मकारा ॥ रवि शशि सम लागत सुकुमारा
दो० शीतल सपरस हिम मिलित पश्चिम पवन दुसार

बहुत सदा पर अति दुखद है प्रभात की बार॥

भाफ उठत जब गोड्डन मांही ॥ ओस बिंदु मुक्तन सम आही ॥
उदित भानु अति राजत क्यारी ॥ सारस क्रौंचन के नद बारी ॥
दीसत हिम व्यापित बन छीना ॥ शीत दग्ध तरु पल्लव हीना ॥
भोदिन अल्प मध्य सुख देना ॥ शीत बली भइ दीरघ रैना ॥ +॥

दो॰ महा तृषित जल पान हित द्विरद ताल ढिंग जाय
अति शीतल जल छुवत ही लेत स्व हस्त हटाय ६०

जलचर खग हू थित जल तीरा ॥ धसैं न शीत बिकल सर नीरा ॥
पुष्प रहित अति हिम तम साजी ॥ सती सी दीषत बन राजी ॥ +॥
भाफ भरयो जल सारस नीरा ॥ सोहत सरिता शीत सरीरा ॥
जरे पुष्प पल्लव बिचि ताला ॥ दीसत कौलन के कलनाला ६२

दो॰ शीत भरी अतिसय दुखद ऋतु हेमंत मझार॥
करत भरत तप अवधि मैं तुम्हरे भक्त उदार॥

त्यागि भोग मद मान रजाई ॥ महि सोवत मुनि अन्नन खाई
बड़े मान सरजू जल मांही ॥ करत भरत स्नान सदा ही ॥
अति सुख लायक तनु सुकुमारा वह तप वन अति परत तुषारा॥
धसि हिम शीतल सरजू नीरा ॥ करत भरत जप कस रघुबीरा॥
कमल नयन श्यामल श्री माना॥ धर्म सत्य रत अति मति वाना॥
प्रिय मृदु भाषी सरल सुभाऊ ॥ नाकि तिय सब सुख कौसलराउ
जीत्यो स्वर्गहि भरत सधर्मा ॥ घर वासि कारि तुम सम वन कर्मा
लेत स्वभाव मात को लोका ॥ भरत कीन मिथ्या यह कोका ६३

दो॰ पति जाको दशरथ न्रपति साधु भरत सुत तासु
क्यों कारि माता केकयी क्रूरा भइ प्रकास ॥६४

धार्मिक लक्षमन की सुनि बानी ॥ सत्य सनेह विनय नय सानी ॥
सहि न सके जननी परि वादा ॥ बोले कोमल सहित प्रसादा ॥

तात तोहि माता कैकेयी ॥ नहि निंदा कर्त्तव्य क देयी ॥
रघुकुल नाथ भरत की गाथा ॥ कहत्र सदा लछमन सुख साथा
सो मति दृढ ब्रतजुत है भाई ॥ तदपि भरत हित करि बिकलाई
मृदुल मधुर प्रिय अमृत समाना ॥ सुमरौं भरत बचन नित काना
कब व्है है वह दिन सुखवारा ॥ मिलिहैं चव भ्राता हित कारा ॥
यों बिलपत पुनि २ रघुबीरा ॥ पह्नचे सरि गोदावरि तीरा ॥ ६५

दो० करि सनान सिय लखन जुत तर्पि पितर रघुनाथ ॥
करि अस्तुति रवि उदित ही थल आये सब साथ ६६
कहत सुनत विज्ञान तहँ धर्म कथा न्रप नीति ॥
सिय लछमन मुनि बनन सौं इक संवत गो बीति

रावण की भगनी तिहिं वारी ॥ सूर्पनखा आई निशि च्वारी ॥ १॥
सुषमा धाम काम सम रामा ॥ श्यामल तनु भ्रकुटी बर बामा ॥
चंद बदन दृग कंजल जाना ॥ महा बाहु सुरपति उप माना ॥
गज गामी न्रप चिन्ह अपारा ॥ जटा मुकुट धर अति सुकुमारा ॥
नख सिख सुभग देषि रघुबीरा ॥ काम विवस व्है भई अधीरा ॥
धरि वर रूप राम ढिंग जाई ॥ कुटी माहिं बोली मुसकाई ॥
मैं रीझी लषि रूप तुम्हारा ॥ करो मोहि तुम अंगी कारा ॥ २
हौं रावण भगिनी बर वामा ॥ मोहि वरें व्है हो सुष धामा ॥

दो० काह्यो प्रभु मैं तिय सहित हौं है यह मुहि अति प्यारि
तातैं तोहि न होय सुख असह सौति दुख नारि ॥

बोली तिय आवै हित चाही ॥ ताहि तजें व्है दोष महा ही ॥ ३॥
मैं हौं काम कलान प्रवीना ॥ मुहि भजि त्यागि याहि रति हीना
सुनि कहि राम वह्नरि इमि वानी ॥ नाहि परसौं पर नारि सयानी ॥
तातैं कहूँ इक आन उपाऊ ॥ मो समान तुहि अनुज बताऊ

दो० सब लक्षण संपन्न शुचि लछमण शील महा हि

हे बाहिर जा नाहि भजि तिहिं संग नारी नाहि
जाय लखन ढिग मृदु मुसकाई ॥ कहि तुम मम पति होउ गुसाँई
कहि लछु मन मैं उन कर चेरा ॥ दासी भये कौन भल तेरा ॥+॥
तातें त्रिभुवन पति की बाला ॥ रघुपत्नी बनि हो सुख शाला ॥
तू बर रूपा लघु वय बारी ॥ व्है हैं तुव वस झट असुरारी ॥
सुनि प्रभु ढिंग गइ लछमन प्रेरी ॥ समुझि हास्य रस भौंह तरेरी ॥
भीम रूप धरि सिय पै धाई ॥ तब बोले रघुनाथ रिसाई ॥
क्रूर कुटिल शठ से परि हासा ॥ नहि करिये यह है फल तासा ॥
पुनि रिस रोकि कही जग पाला ॥ डरपावति सीतहि क्यों बाला ॥
दो॰ तोहि बनायो मै अनुज तूं आई तिहिं टारि ॥
पुनि जा ताही के निकट कहि है तोहि स्वनारि
सुनि बोली मैं गइ तिहि पासा ॥ फिरि आई इहि हेतु प्रकासा ॥
तुव अनुरूप आहि तुव भ्राता ॥ सुनै न क्यों हू एकहु बाता ॥+॥
तू अनुजहि चह मोहि विवाहो ॥ नो द्वै आखर लिखि दे ताही
लिखी लखन कुटिला है नारी ॥ नाक कान हनि देउ विडारी ॥
दो॰ प्रभु लिपि लखि लीन्हे लखन नाक कान तिहि काटि
मनु दशशिर भुज बीस को लियो सकल बल लाटि
बीते द्वादश वर्ष वन लगत तेरवों साल ॥+॥
मार्ग शुक्ल एकादशी सूर्प नखा तिहिं काल ॥
रोइ कही हा दशशिर भ्राता ॥ कुंभकरण अति बल बिख्याता
हा गुण खानि बिभीषण भाई ॥ महा कष्ट मे करहु सहाई ॥
यों बिलपति खर दूषण पाहीं ॥ जाय पुकारि परी महि माहीं ॥
खर कहि तुव असि गति किन कीनी किहिं अँगुरी अहि मुख मैं दीनी
काल पास निज कर गरडारी ॥ को जैहै जम पुर विष धारी ॥
काम रूप तूं सकल महा ही ॥ को अति बली तोहि जिहिं दाही

तिन्हिं मांहि डारि सरन ततु भानी। करिहैं गीध काक सिज मानी॥
सुनि खर बचन सकोप सम्हारी॥ कही कथा रघुबर की सारी ७३
दो० पुनि कहि भ्राता तू जबै हनिहै तिनहिं सुखेन॥
तब मै तिनको मांहि परत पीहौं रुधिर सफेन ७४
यह मम प्रथम काम है भ्राता॥ करहु बेग अरि हर सुर घाता॥
सो सुनि खर ने प्रबल चतुर्दस॥ पठये तिनहिं हनन हित राक्षस॥
कहि झट न्टप सुत मारि गिरावौ॥ मम भगिनी कौ रुधिर पिवावौ॥
ते करि कोप राम पै धाये॥ तिनहिं मारि प्रभु भूमि गिराये॥
पुनि गइ सूर्पनखा खर पासा॥ सो सुनि दल सजि चल्यौ अत्रास॥
असगुन अमित भये मग माहीं॥ अति असंक मानै तिंहिं नाहीं ७६
छप्प० पृथुग्रीव दुर्जय रु श्येन गामी रुधिहंगम॥
यज्ञ शत्रु सर्पास्य हेम माली सम मन छम॥
परुष महा माली रु काल कार्मु करु धिराशन
करवी रासक सन्धिव द्विदश खर के मन भावन।
बढ़ि चल्यौ सेन सैं खर सबै आस पास ये उभये
करि क्रुद्ध उद्ध भट जुद्ध हित रामचंद्र के ढिंग गये
दो० स्थूलाक्ष रु त्रिसिरा अपर महा कपाल प्रमाथ॥
है कराल च्यारहु चले ये दूषन के साथ ७७
तिनहि देषि सिय सहित गुसांई॥ लषनहिं दिय गिरि गुहा पठाई॥
कवच धारि धनु सर धरि हाथा॥ लगे लरन तिनसैं रघुनाथा॥
प्रथम सहस सर खर ने मारे॥ पुनि सब असुरन शस्त्र प्रहारे॥
ते सब राम काटि रज कीने॥ पुनि शत सहस बान प्रभु दीने॥
होन परस्पर शस्त्र प्रहारा॥ भागे असुर राम सर मारा॥
दूषन तिनहिं बिसारि बहोरी॥ आयो कोपि राम पै दौरी॥ ७८॥
गरजि गरजि भट अगनित धाये॥ अस्त्र शस्त्र तरु गिरिवर साये॥

काटि राम रजसम सब कीनं॥ तब खल असुर भये मद हीने॥

दो॰ बहुरि राम गांधर्व सर छाडि सहस करि दीन॥
सेन पदूषन सहित दल पाँच सहस किय षीन॥७९

पुनि प्रमाथ स्थूलाक्ष स क्रोधा॥ महा कपाल तीन अति जोधा॥
तिनहू अस्त्र शस्त्र बहु डारे॥ छिनमहि राम मारि महि पारे॥
खर सुनि पाँच सहस भट हानी॥ सचिवन सहित चल्यौ अभिमानी
कोपि कोपि तिन सस्त्र चलाये॥ काटि काटि रघुनाथ ढलाये॥
पुनि करि कोप राम सर मारे॥ तुरतहि खर भट सकल संहारे
पुनि त्रिसिरा कौं मारि गुसांई॥ खर सैंन लरन लगे रघुराई॥
तिहिं खल प्रभु को कवच विदास्यौ तव प्रभु कोपि नाहि महि पास्यौ
इंद्र नमुचि बल वृत्र संहारा॥ हर अंधक त्यौं प्रभु खर मारा ८०

दो॰ जन स्थान वासी गये चौदह सहस नसाय॥
ज्यौं करका भषि ब्राह्मणी अंतक सदन बसाय ८१
कछुकम घटि का तीन मैं मारे राम उदार॥
सुमन वृष्टि नभतें भई दुंदुभि बजे अपार ८२
चंद कला सीता लखन आये आस्रम माहि॥
देषि पराक्रम राम को वाढ्यो हर्ष महाहि ८३

भागि तहांतें गयो अकंपन॥ जाय कथा सब कहि रावन सन
पुनि कहि राम कोपि सर धारे॥ तो पूरन सरिवेगहि टारे॥+॥
करें अकास हिन षत बिहीना॥ अवनि उधारे दु:ख बिलीना
वेला तजत जलधि कौं डहै॥ सर सजि वात प्रवाहहि पाहै॥
तातें तून जीति सक रामहि॥ ज्यौं अघ कारक नर सुर धामहि
है तिहिं नाशक एक उपाऊ॥ करहु वेग चित लाय सुनाऊं
तासु तिय सीता अति लोनी॥ है स्यामा सम तनु गज गौनी॥
नगी पन्नगी देव कुमारी॥ नहि तिहिं सम कोनरी विचारी

दो० तिहि हरिलावै यत्न करि विपिन अचानक जाय
मरै राम ताके बिरह सुनि लषन अरु मरि जाय ८५

सुनि नभचर रथमै चढ़ि धायो ॥ झट मारीच सदन सो आयो ॥
कहि रावन इक नृपसुत रामा ॥ खल खरादि भट हने तमामा
हरि लाउं तिहि तिया किशोरी ॥ होउ सहाय तात तू मोरी ॥+॥
सुनि बोल्यो मारीच प्रवीना ॥ सिया हरन मत किहि तुहि दीना
सोहै मित्र रूप अरि तोरा ॥+॥ राक्षसकुलहि चहत जलबोरा
जो यह तुहि उत्साह करावै ॥ सो तोपै अहि डाढ़ परावै ॥८६

दो० कानै अनुचित कर्म खलु सिखयो कठिन नवीन
रावन तुव सुख सोत यह किहि मस्तक सर दीन
सुद्धवंश भव सुंड वर तप मद रद जुग हाथ ॥
रन सन्मुख कोउ लषि न सक गंधकरी रघुनाथ
रनबन थित मध्यम बयस राक्षस मृग मृगराय
सरपूरण तनु डाढ़ असि तिहि सूतहि न जगाय ८८
चापग्राह सर ऊर्मि गन भुज बल पंक अथाह
घोर राम रन जलधि मे जानि परि राक्षसनाह ९०
समुझायो मारीच को रावन हो यहि रास ॥
आयो लंका मे प्रविशि बैठ्यो सभा सचास ॥९१

सूर्पनखा हू लखि खर नासा ॥ जल्लद नाद सम रोय प्रकासा
महा दुखित रावन ढिग आई ॥ देख्यो सिंहासन थित भाई
लसन सचिव गन माझ महाना ॥ सुरगन मांहि सुरेस समाना ॥
करत बिलाप गई तिहि पासा ॥ नाक कान हत निपट उदासा ॥
को पित होय रोय दुख दीना ॥ बोली कठिन बचन छबि छीना
मत्त भोग रत लुब्ध अमानी ॥ काम बिबस भूप जु अभिमानी
मानत ताहि न प्रजा हित कारा ॥ चिता ज्वाल कों जिमि संसारा ॥

समय त्यागि जो करै स्वकाजा॥ राज्य सहित बिनशै वह राजा।
दो० अनुचित कार नियादि बस नरपति औसर टाल।
तजत ताहि सब लोक जिमि नदी पंक कौ ब्याल ९३
कटु बचनी गर्वित शठरु सूम प्रमत्त स्वभाय ॥
बिपति परे अस स्वामि की कोउ न करै सहाय॥९४
सचिवन मल का मन करै भयतें भय नल हाय ॥
छूटि राज्य ह्वै सीघ्र ही त्वरा सम दीन सुराय ९५
शुष्क काष्ट हू काम कर लोह रजहु कर काम ॥
भ्रष्ट थान महि पाल सें होय न तनकहु काम ९६
ज्यौं हैं भोगे बसन अरु मर्दी माला सोय ॥
त्यौंहि निरर्थ समर्थ हू राज्य भ्रष्ट नृप होय ९७
अप्रमत्त इन्द्रिय जित रु धर्मसील सर्वज्ञ ॥+॥
थिर नृपता लहि भूप सो पर उपकारि कृतज्ञ ९८
तू सब दोषन सहित है सब गुण रहित निदान
राज्य भ्रष्ट अब शीघ्र ही ह्वै है असुर प्रधान ९९
दशरथ सुवन नाम रघुबीरा ॥ तिहिं खरादि मारे रण धीरा ॥
लखि न सक्यो तू चर चख द्वारा॥ सोवत है मद बस जित दारा ॥
सुनि खरादि वध राम प्रतापा ॥ भो रावन मन अति संतापा ॥
भगनी बिकल देखि दुखसानी॥ रिसभरि बोल्यो तिहिं सनमानी॥
दो० कहहु रूप बल राम को शस्त्र खरादि बिनास॥
ताहि बिरूपा कीन सो भाषहु दोष मकास १०१
बोली राघव श्याम शरीरा ॥ बाहु बिशाल धरे मुनि चीरा॥
काम सरूप नयन अरु नारा ॥ आनन अमल कमल मद हारा॥
वृषभ कंध धवल सिंह समाना॥ शक्र चाप सम चाप निदाना॥
ताहि कर्षि सर करत बिभागा॥ निकसत मनहु महा विषनागा॥

खैंचत शरनहि दीषत चापा ॥ मरतहि दीषत सुभट अनापा
हनै सस्य कौं करका धारा ॥ त्यौं राघव सर असुर संघारा ॥
एक मोहि टारी बलवाना ॥ तिय बध शंका जानि सुजाना ॥
तासु अनुज है इक सम नाही ॥ मति गुण विक्रम तेज महाही
दो॰ भक्त प्रेम रत विजय मद शुचि मन गौर शरीर ॥
मानऊ नै प्रियराम की दक्षिण भुज रण धीर २०३
राम प्रिया सीता मृदु बैनी ॥ शशि बदनी मृग सावक नैनीं ॥
कनक बरन तनु अति सुकुमारी ॥ श्री सम सोहत विपिन मझारी
रक्त तुंग नख नासा कीरा ॥ उन्नत कुच रदना बलि हीरा ॥
शील शानी सब भांति ललामा ॥ तिहि नख सम नहिं तिऊं पुर बाम
भरै अंक मैं जाहि सुवाला ॥ तिहिं पग रज सम नहि सुरपाला
सो तुव लायक लखि बर नारी ॥ अति उत्तम तिऊं लोक उजारी ॥
तुब ढिग लावन हित मति धारी लागी करन उपाय सुरारी ॥+॥
लछमन नाम राम के भ्राता ॥ तिहिं अघ नासा कान निपाता ॥
दो॰ तू लखि हैं भ्राता जबै सीतहि बन मैं जाय ॥
सुरी किन्नरी आसुरी कोउन ऐहै दाय ॥ २०५
मन भावै सो करि उपचारा ॥ जाय विपिन मैं लखि इक बारा
मो मत तौ हरि आनि किशोरी ॥ पुनि अस दीठि न परिहै तोरी ॥
सो सुनि सचिवन देय बिदाई ॥ आप इकांत निजासन जाई ॥
सिया हरन मत मन ठहरायो ॥ इकलो मन जब रथ चढि धायो
दो॰ मग मैं नाना वाग वन गिरि मुनि थल सरि नाल ॥
देखत देख्यौ सिंधु तट बट को वृक्ष विशाल २०७
घन सम श्याम सघन अति रूरा ॥ नाम सुभद्र रूद पिन जुत पूरा ॥
शत शत जोजन शाखा तासा ॥ तिहिं अब सत तहं पन्नग नासा
आये गज कच्छप गहि भागा ॥ बैठे बट पर करन अहारा ॥+॥

त्रयके भार भंग भौ डारा ॥ तिंहिं तर मुनि गन नशत निहारा
गाहि सो शाखा गरुड़ उड़ाये॥ मगमे गज कच्छप ते खाये ॥
पुनि शत जोजन स्कंध गिराई॥ दियो निषाद देश बिनशाई॥
तिंहिं लषि दश मुख हियहर्षायो। झट मारीच सदन पुनि आयो।
नमि पूछी मारीच दयाला ॥ कसभा पुनि आगमतत्काला ॥
दो॰ कहि सब कथा खरादि की सूर्प नखा को हाल॥
पुनि कहि चलि मो संग ज्यौं हरौं राम की वाल १०९
ह्वै आनि कनक कुरंग बिचित्रा॥ सीता सन्मुख बिचरि पवित्रा॥
तब सीता प्रेरित दोउ भाई ॥ तुहि मारन चलिहैं हर्षाई ॥
तब मै सियहि लायहौं ताता॥ करहु बिलंब न उठि हर्षाता ॥
सो सुनि बिकल होय मारीचा॥ बोल्यौ प्रभु आई मो मीचा ॥
राम तेज पावक झर आही॥ जरिहैं असुर सलभ धसि ताही
जो सुख चाहो तौ तुम ताता॥ छाडहु राम बैर की बाता ११०
दो॰ बाल बयस मे मुनि सदन बिन फर मार्यो तीर
तिंहितै मे आयो इहाँ अति बल है रघुबीर १११
अबहू मैं दंडक बन माहीं ॥ धारि मृग रूप कराल महा हीं॥
होय असुर संग लै अति घोरा॥ भषत ऋषिन बिचरौं चहुंओरा
तहं ऋषि रूप राम मुहि पायो॥ सिय लछमन जुत सरस सुहायो
तबमै पूर्व बैर उर आनी॥ गयो तिनहि मारन अभिमानी
तिन त्रयलखि छोरे त्रय बाना॥ते द्वै मरे बचे मो प्राना ॥ + ॥
तबतें मुनि बनि छाडि कुकर्मा॥ रहौं इहां नियमित धरि धर्मा
अबसु हि नभ जल थल सब ठोरा॥ दीषत राम धनुर्धर घोरा ॥+॥
सोवन स्वप्न माहि तिंहिं देषी॥ उठौं पुकारि अचेत बिशेषी ११२
दो॰ तातें सिय अभिलाष तजि राम बैर निर्वारि ॥+॥
भवन गवन रावन करहु निज कुल कुशल बिचारि

काहि रावन तू चलि करि काजू देहौं अर्ध मोर तुहि राजू ॥
नाहि चलिहै तु भानि हौं माया॥ सो सुनि डरपि लग्यौ तिहि साथ
तिंहि संग लै प्रभु आश्रम गयऊ॥ तँहं मारीच अमल मृग भयऊ॥
रजत बिंदु जुत कनक शरीरा॥ रत्न सींग मणि खुर गति धीरा॥
नीलरत्न लोचन मन हारा॥ तड़ित प्रभा सम प्रभा अपारा॥
अस माया मृग उहरन धायो॥ सीता सन्मुख झट चलि आयो॥

दो॰ तबही करी प्रवेश प्रभु सिय कहं पावक माहि
एरवी छाया मात्र यह लखन जु जानी नाहि १२५

माया सीता लखि मृग ताही॥ हसि बोली पति सौं अति चाही
देखहु नाथ मनोहर हिरना॥ मुहि मोहत है इत उत फिरना।
लखन कही मारीच न होई॥ अस मृग लख्यौ सुन्यो नहि कोई
इंहि मृग बनि मृगया के माही॥ हने बहुत नृप सो खल आही॥
पुनि सियबोली विस्मय मानी॥ याहि पकरि आनौ दिन दानी॥
बनवास तें अवधि लै जैहैं॥ भरतादिक लखि बिस्मय पैहैं॥

दो॰ जियत न आवै हाथ तौ मारि हरिन कौं राम॥
देहु लाय करिकै मया मोकौं उत्तम चाम १२७

राम बचन

लखन लखी तैं सिय अभिलासा॥ मांगत मृग कै चर्महि तासा॥
तातें मैं जाऊं बन माही॥ गहि लाऊं कै हनि मृग याही
है मारीच जु मृग तनु धारी॥ तउ मारब उचित नहि अघकारी
चले राम सुर काज विचारी॥ लखनहि सौंपि सिया रखवारी

दो॰ असि धनु सर तूणीर धर आवत लखि रघुराय
माया मृग प्रगटत दुरत भय भरि चल्यौ पलाय १२८

बन मैं दूर जाय मृग मारयौ॥ तिंहि प्रभु बच सम बचन उचारयौ
हा सीता लछमन इमि बानी॥ कयौ उच्च स्वर आरत सानी॥

तजि मृग रूप रूप निज धारी ॥ रुधिर लिप्त महि परयौ सुरारी ॥
तब प्रभु मन बिचार इमि कीना ॥ सिय लछमन सुनि कै हैं हीना ॥
तातें शीघ्र आन मृग मारी ॥ तिहिं पल गहि गमने असुरारी ॥
सीता प्रभु बच गनि अकुलाई ॥ लछमन सौं बोली मुरझाई ॥
दो० संकट है तुव भ्रात कौं जाऊ वेग तिहिं पास ॥
आरत सुरमुनि राम को होत मोर मन त्रास १२१

लछमन बचन

तिहिं कहि राम चराचर ताना ॥ तिनको सोच करऊ जनि माता ॥
पन्नग असुर देव गंधर्वा ॥+॥ जीतिन सक रामहि मिलि सर्वा ॥
समर अवध्य आहिं रघुवीरा ॥ तजऊ सोच मन धारऊ धीरा ॥
है यह बच कोउ राक्षस केरा ॥ फिरत बिरोधी असुर घनेरा ॥
गये समाल सौंपि प्रभु मोही ॥ तातें नहि जाऊं तजि तोही ॥
लखन बचन सुनि कोपित होई ॥ बोली कठिन बचन भय भोई ॥
तू पापी शठ है कुबिचारा ॥ चाहत भ्रात मरन निरधारा ॥
पुनि चाहत मुहि ग्रहन अगूढा तातें जान न प्रभु ढिग मूढा ॥
दो० पै मै श्यामल अमल तनु कमल नयन की नारि
परसौं पुरुष न आन कौं रघुबीरहि निवारि १२३

अब तुव आगे तजि हौं प्राना ॥ धसि जल मैं कै करि विष पाना ॥
अगनि प्रविसि कै गर धरि दामा ॥ नहि जीवौं छिन हू विन रामा ॥
यौं कहि रोय विलापि महाही ॥ कूटन लगी उदर दुख दाही ॥
तिहिं लखि लखन होय दुखदीना बोले जोरि हाथ हित हीना ॥
अनुचित शंका करत अयानी ॥ तैं मो भक्ति रीति नहिं जानी ॥
न्याय पथस्थ राम बच धारी ॥ मैं तुव से बारत हित कारी ॥
धिक तुहि कहत बचन विपरीता ॥ दीषत नाश निकट तुव सीता ॥
अब मैं जाऊं जहां प्रभु जाना ॥ कबि गुलाब हो तुहि कल्याना ॥

दो० बनदेवी बन देव कौं सौंपि तासु रखवारि ॥
लखन चले रघुनाथ ढिंग चंद्रकला मन मारि
माघ शुक्ल चौदशि दिवस विंद मुहूर्त मझार ॥
लखनहि गमनत आश्रमहि लखि निर्जन निर्धार
मुनि तनु धारि रावन तहं आयो॥ ब्रह्म घोष करि हिय हर्षायो॥
जानि महा ऋषि सिय हर्षानी॥ अर्घ्य पाद्य पूजा अति दानी ॥
सिय छवि निरखि काम बस होई॥ बोल्यो कोमल दुल उर जोई
को तू सुंदरि सुमुखि सलोनी ॥ उमा रमा कि गिरा गज गौनी ॥
देवी यक्षी रति गंधर्वी ॥+॥ भूति अप्सरा सिद्धि स गर्वी ॥
तुव पति शिव वसु मरुत किवारी सुहि दीसत है देव कुमारी१२
दो० उत्तम सुबरन वरन वर तनु लावन्य सथान॥
मै महि मंडल मे तिया लखो न तो सो आन॥
शशि सम आनन अमल अपारा॥ भाल अर्ध शशि मन मद हारा।
भ्रकुटी कुटिल मदन धनु टारा॥ नयन बिशाल असित अति तारा॥
शुक सम नासा अति मन हारी॥ गोल कपोल बिमल दुति धारी॥
अधर बिंब सूक्षम रत नारे ॥ रद सम सित चिक्कन अति थारे
चिवुक मनोहर दर दर ग्रीवा॥ बाहु लता कर तल छवि सीवा
कुच उन्नत मुख पीन कठोरा॥ ताल फलो पम चिक्कन तोरा॥
तिनपर मणि मुक्तन के हारा॥ लेत चोरि चित अलि छवि वारा
जघन विशाल पीन अति नीका॥ करि कर तुल्य ऊरु हर हीका॥
दो० रूप बयस सुकुमारता निर्जन विपिन मझार॥
बास तोर मृग लोचनी मो मन करत बिकार ॥
उचित न तोहि वास इहि ठौरा॥ नगर महा मंदिर थल तोरा ॥
कस आई इकली इहि थाना॥ कहु सो कारन मोहि सुजाना॥
राक्षस थल ह्यां देव न आवैं ॥ मृग वृक सिंहादिक सरसावैं॥

तिनतें भय मानत नहिं बाला॥ कोहै कित ह्व तुव रखवाल॥
दो॰ सुनि सीता मृदु मधुर वच ताहि महा छटाधारि
आदिहि तें सब आपनी कही कथा बिस्तारि १२८
पुनि कहि सानुज मो पति आही॥ उनचालीस बर्ष वय ताही॥
अति समर्थ विजयी अरि हारा॥ अस्त्र शस्त्र वित् अति मति बारा
अब पति देवर गे बन माही॥ मृग बधि ऐहैं शीघ्र इहांही॥
लावहिं गे फल फल बिधि नाना॥ करिहैं सब बिधि तुव सनमाना
दो॰ अब कहु मुनि तुम कौन हौ नाम जाति निज ठाम॥
फिरहु दंडकारन्य मे द्विज इक ले किहिं काम १२९
रावन वचन॥
दो॰ जिहिं बस कीने लोक सब देव असुर नर नाग॥
सो हौं राक्षस लंक पति रावन नाम सभाग १३०
अब मै तुहि करि हौं निज बामा॥ पटरानी ले जाय स्वधामा॥
पंच सहस बर भूषन बारी॥ ह्वै हैं तुव दासी सुकमारी॥
सुनि सीता बोली कटु बानी॥ मै हौं सिंह पुरुष हित सानी॥
तू जंबुक सिंही को चाही॥+॥ पैठत काल गाल के माही॥+॥
प्रभु लखि मैं परसौं नहिं तुहि इमि महा भाग आदित्य प्रभा जिमि
राम प्रिया कहं तू शठ चाहत॥ अहि मुख मै अंगुरी अब गाहत
दो॰ क्षुधित सिंह सें मिलन है मंदर चहत उठान॥
दृग सूची धरि बिष भषत चाटत छुरी अयान १३२
तरत जलधि गर धरि शिला रवि शशि गहत स्वहाथ
अग्नि अुजावत बसन सें जो मुहिं चहत अनाथ १३३
सिंह स्यार कंचन अयस हंस गीध संबंध॥
गज बिडाल सम राम अरु तो मै अंतर अंध १३४॥
सुनि बोल्यो मम रोष मरारा॥ आगें शक्रादिक सुर सारा॥+॥

वैदौं तहँ वहँ मंद बयारी ॥ लजै उ क्षता शीघ्र लकारी ॥+॥
चलत महानद हौं हिं पगारा ॥ निर्म्मल दल सहै मग तरु सारा ॥
मम अंगुरी सम नाहिरन रामा ॥ है मानुष भिक्षुक च्युत धामा ॥
आयो मै तुब भाग्य वसाई ॥ चलि संग लै त्रिभुवन ठकुराई ॥
यों कहि वाम हस्त गहि केसा ॥ पकरि दहिन कर उरु विसेसा
निज तनु धरि गहि अंकमकारी ॥ सियहि लेय रथ चढ्यो सुरारी
ज्यौं अकामकौं काम बसाई ॥ पन्नग इंद्र वधुहि गहि जाई

दो॰ तब अति बिवसा जानकी रामहि दूर बिचारि
दुखित भ्रांत चित्त मत्त लौं रोवन लगी पुकारि १३६

चल्यौ गगन मग रथ मन मीता ॥ विलपन लागी भय भरि सीता ॥
हा लछमन हा राम उदारा ॥ कौन सुनौं मो दीन गुहारा ॥
लियें जात मुहि रावन क्रूरा ॥ तुम न लखौ यह मम अघपूरा
हौ समर्थ पर सुधि नहि मोरी ॥ मैं हत भाग्य तुमहि नहि खोरी
हे खग मृग तरु किसलय नाना ॥ दीन विनय मम सुनौं सुजाना ॥
लियें जात रावरा कारि जोरी ॥ सो सुधि प्रभु सैं कहियो मोरी १३७

दो॰ गीधराज मम ससुर के सखा ससुर सम मोर ॥
कौंन करै मो परम या है भरोस अति तोर १३८

यौं कहि रोवन लगी पुकारी ॥ सो जटायु ने जागि निहारी ॥
विवशाक गत लखि सिय दीना ॥ गीधराज वोल्यौ भय हीना ॥
खल तू नहि जानत रामहि ॥ लियें जात जगपति की वामहि
सकल लोक पति राम उदारा ॥ इंद्र वरुरा सम जग हित कारा ॥
तासु धर्म पत्नी है सीता ॥+॥ सब करि रक्षा योग्य पुनीता ॥
करत अकारण राम विरोधा ॥ काल पास गर धरत अवोधा ॥
सूर्पनखा हू गइ प्रभु पासा ॥ देन लगी सीतहि अति त्रासा ॥
तब श्रुति नासा लछमन भाना ॥ तिहिँ हित गे खरादि भट नाना

दो० अस्त्र शस्त्र गहि कुपित व्है मारन लागे ताहि
तबते मारे दोव स्यों कौन राम को आहि १४०

अबतें बसन बांधि अहि लीना॥ पैहै ताको फल अति पीना ॥
ठहरि ठहरि शठ लषि बल मोरा॥ गीधराज मैं अंतक तोरा ॥+
साठि सहस संवत बय मोरी॥ तउ करिहौं पूरन वय तोरी ॥
सो सुनि रावन अति रिस छायो॥ गीधराजपर शर झर लायो ॥
पुनि खग राज चूंच नख केरा ॥ रावन तन क्षत कीन घनेरा ॥
पुनि रावण तीक्षण दश तीरा ॥ मारे कु यकां गीध सरीरा ॥
तब खग पति तिंहि बपुष विदार्यौ धनुष तोरि धरनी मैं डार्यौ ॥
आन धनु ले करि अति क्रोधा॥ सर वर्षाये अगनित जोधा॥१४२

दो० तब रिस धारि जटायु नै रथ वाहन रथवान ॥+।
छत्र व्यजन हनि रावनहि माहि पटक्यौ बलवान

सियहि अंक धरि व्याकुल होई॥ पर्यौ अधोमुख माहि मैं सोई ॥
तब खग पति तिंहि पीठि विदारी॥ पुनि पुनि चूंच चरण क्षत धारी
बहुरि उपारे केश विसेसा ॥ कीन महा क्षत पुनि शिर देशा ॥
तब अति रिस धरि असुर तदा ही॥ वाम अंक मैं धारि सिया ही ॥
दाहिन करन सैं थापर दीनी ॥ गीध राज पर परसो लीनी ॥+॥
पुनि दश वाम भुजा तिंहि केरी॥ काटि गीध पति माहि मैं गेरी ॥
पुनि ते भुजा कटी तिंहि बारी ॥ ज्यौं बाबीतें अहि विष धारी ॥
सियहि त्यागि तब रावण जोधा॥ खग सें लरन लग्यौ करि क्रोधा

दो० मुष्टि रु चरण प्रहार बहु गीधराज तनु दीन ॥
गीध राज हू असुर तनु चूंच चरण क्षत कीन १४४

करत परस्पर जुद्ध महा ही ॥+॥ थकित गीध माहि पर्यौ तहा ही
रावण खड्ग काढि तिंहि वारा ॥ तासु पार्श्व पग पक्ष निवारा ॥
पुनि रावन सीतहि गहि लीनी॥ लगी पुकारन सो भय भीनी ॥

हा लछमन रघुनाथ उदारा॥ डूबत हौं दुख जलधि मझारा॥
दो॰ करि अति कृपा जटायु नै कीनी मोरि सहाय॥
सो अभाग्य तें यह परयो मारि माहि मैं खगराय १४६

धारि अंक मैं चलत सुरारी॥ ललाल सन पकरत सुकुमारी॥
छोडि २ कह पुनि पुनि रोई॥ केश गहें गमनत खल सोई॥
तिहिं अवसर भो जगत मलीना॥ थकित प्रभंजन रवि छवि छीन
विधि हू बिलोकि दिव्य दृग ताही॥ भये बंद ह्वाल कर्म लदाही॥
अटाबिन ध्यान त्यागो मनि सोका॥ व्याकुलता व्यापी सब लोका
स्यंदन हीन य धारि खल सोई॥ चल्यौ गगन मग हर्षित होई
दो॰ तब अति बिलपति रोवती बोली सिय सुजान॥
हे खग पति तैं मो रहित ठान्यौं मरन निदान॥+॥

तातें रामप्रसाद उदारा॥+॥ जैहै विस्नु लोक निर्धारा॥+॥
जब लगि राम मिलहि तुहि आई॥ तब लगि प्रान रखहु खगराई
ऋष्यमूक गिरि पर पुनि पीना॥ वानर पंच जनक जा चीना॥
भूषन छोरि फारि निज सारी॥ तामहि बाँधि दीन तहँ डारी॥
यौं गनि ऐंहैं रघुनाथा॥ तौ परि जैहैं तिन के हाथा॥
कपिन उठाय लिये तिहिं वारा॥ सकल शोक तनि ऊर्ध निहारा॥
हा लछमन हा रघुबर रामा॥ इमि बिलपति देखी नभ वामा
लखि न सक्यो रावन सियकामा॥ विकल अधोमुख भय वस रामा
दो॰ चल्यौ अग्र लै ताहि खल ह्वै मन माहि अशंक॥
नहि जानै यौं कालवस है भुजगी मो अंक १४८

मृत्यु काल मै ज्यौं नर नाना॥ करै काम बिपरीत निदाना॥+॥
रोग ग्रसित कौं पथ्य न भावै॥ खाय अपथ्य वस्तु हर्षावै॥+॥
त्यौं असुराधम काल बसाई॥ जलनिधि लांघि शीघ्र हर्षाई॥
पहुँचि लंक रण वास मझारी॥ कहि सिय सौं तू हो मो प्यारी॥

दो॰ राक्षसबत्तिस कोटि भट हैं बस मोर सयानि॥
तू तिन सबकी पालनी होउ मोरि पटरानि १५०

जलनिधि घेरी नगरी लंका॥ है सुरगनसैं अगम अशंका॥
बातहि बांधै कलग ह हाथा॥ तौ तुहि पाय सकै रघुनाथा॥
त्रिभुवन मै दीषत नहि मोही॥ जो मोतें सिय लै सक तोही॥
एमकीन अतिदुष्कृत कोई॥ बन बन नाहि भ्रमावै सोई॥
तैं कोउ कीनौं पुन्य महाई॥ ताको फल भोगन ह्यां आई॥
सो सुनि बिच तृण धरि सियबोली॥ रे खल मृत्यु तोर सिर डोली॥
है अब जीबन शठ अति थोरा॥ यूपब ध्यौं पशु की सम तोरा॥
लखिहै प्रभु तुहि करि दृगलाला॥ ह्वैहै भस्म मूढ तिहिं काला॥

दो॰ जो प्रभु शशि कौ महि पटकि छिनमें सकें नसाय
जलधि सोषि सो तोहि हनि करि हैं मोरि सहाय
जो वेदी मख मध्य गत सुर ऋषि पूजित काल॥
वेद मंत्र करि पूत तिहिं परसिन सक चांडाल १५४

त्यौं मुहि धर्म पत्नी ब्रत लीना॥ तून परसि सक खल अघ पीना॥
हंस संग तजि पंकज जाली॥ बसै न वायस सदन मराली॥
मैं जीवन की करौं न चाहा॥ मारि मोहि कट राक्षस नाहा॥
सुनि रावन भय भीति जनाई॥ बहुत भांति पुनि २ समुझाई १५५

दो॰ कह्यौ न मान्यौ जनकजा पांचि हार्यौ दशसीस
तब अशोक बन मै रषी चंद कला ह्वै षीस १५६
पुनि कहि द्वादश मास मैं जो न मोर मन मान॥
तौ ह्वांहें काटि कलेब मम करि हैं सूद सुजान १५७

जब अशोक बन मैं सिय राषी॥ तब बिरंचि सुरपति सैं भाषी
हित त्रिलोक निशिचरन अहेता॥ कौन लंक मैं सिया निकेता॥+॥
तहँ तू जाहु बिताहि खवाई॥ आवहु असुरन दीठि दुराई॥

सुनि सुरपति गो सिय हित कारी॥ माया नीद मोहि निशि चारी॥
बोल्यो सियसैं मैं सुर पाला॥ आयो अन्न खुवावन वाला॥
बर्ष सहस दस क्षुधा पियासा॥ लगे न याहि भषे मृदु हासा॥
सिय बोली पहिचाना तोही॥ पहिलो रूप दिखावे मोही॥
जो सरभंग सथान मझारा॥+ देख्यो मैं पति देवर लारा॥+॥
दो॰ वही स्वरूप सुरेशने करि लीनो तिहिं बार॥
मनगन दशरथ जनक सम लीनो पायस न्वार
पति देवर हित बोदि पुनि खायो सो सिय हाल॥
बहुत भांति बिश्वास तिहिं सदन गयो सुरपाल
राम मारि मृग कीन पयाना॥ मग आवत लखि लखनानिदाना
विवरन वदन विकल मन दीना॥ बोले कठिन होय प्रभु हीना॥
कहहु तात मम सासन टारी॥ क्यौं आयो तजि जनक कुमारी॥
जो सुर सुख सम सदन बिहाई॥ राज्य भृष्ट संग हठि बन आई॥
बिपदा साथ निमान अधारा॥ क्यौं तिहिं तजि आया सुकुमारा॥
भूमि राज सुरराज सुजाना॥ सिय बिन मुहि जम सदन समाना॥
फरकन वाम बाहु उर नैना॥ असगुन होत सकल दुख दैना॥
तात चलहु कुट आश्रम माही॥ मोमत सीता मिलि है नाही॥
दो॰ मैं मरि जैहौं सिय बिना तब तू जैहै धाम॥
जानि केकयी यह दशा ह्वै है पूरन काम १६०
प्राभ राज सुखसुत वती लहि केकयि अभिमान
अब मृत पुत्रा कौसल्या कस करि है गुजरान १६१

लक्ष्मण बचन॥

मैं निजकाज हेत नहि आयो॥ सियने हठ करि मोहि पठायो॥
कहि तुव भ्राता हित है कठिनाई॥ जाहु बेगि तिहिं करहु सहाई॥
मैं कहि यह बच प्रभु को नाही॥ प्रभु सम वचन असुर छल आही॥

दीन वचन सो भ्रातन न भावै ॥ त्रिभुवन रक्षक किहिं अभिलाषै ॥
भयो न है नहिं आगे होई ॥+॥ रामहि करै पराजय सोई ॥+॥
सो सुनि सिय नै कुपिह्रसि भाषा ॥ तूराषत है मम अभिलाषा ॥+॥
मिल्यौ भरत मैं है छल लीना ॥ भ्रात मरन चाहत मति हीना ॥
यौं सुनि कोपित होय तदाही ॥ कवि गुलाब आयो तजि ताही ॥

दो॰ बोले प्रभु नहिं कीन भल अनुचित सुनि तियबात
कोपवती पै कोपकरि आयो तिहिं तजि तात ॥
सीता दर्शन लालसा शीघ्र चले रघुराय ॥+॥
देष्यौ आश्रम शून्य जहँ रहे काक गन छाय ॥
सिय विहीन रोवन लगे विकल होय दोउ भ्रात
तबहिं मूर्छि महि मैं परे राम अधिक अकुलात

मंद मंद जल सींचि सुहायो ॥ लछमन रामहि चेत करायो
कहि प्रभु सिय किंऊ हरी कि खाई ॥ कै मुहि लखि कऊं रही लुकाई
सो अब बिहसि निकसि है सीता नतु मम जीवन कठिन बिनीता ॥
करि विलाप आश्रम हि निहारी ॥ सिय कहं खोजन लगे खरारी ॥
हे आश्रम हे खग मृग जाला ॥ हे अशोक तरु विल्वतमाला ॥
लता पुष्प पल्लव फल नाना ॥ तुम देषी मम प्रिया सुजाना ॥
सब आश्रम लखि सिया विहीना होय राम व्याकुल अति दीना ॥
बोले बिलपत अब तनु त्यागी ॥ जैहौं सुरपुर अति दुख पागी ॥

दो॰ तहँ मुहि लखि कहिहै पिता मोरि प्रतिज्ञा टारि
क्यों आयो असमय अधम धिक तुहि अनुचितकारि

मिथ्या वच नी मन्मथ दासा ॥ बनिता बसवर्ती जस नासा ॥
कौन कहानैं मम ढिंग आई ॥ सुनि पितु वच रहिहौं शिर नाई
तातैं प्रिया कृपा करि मोरा ॥+॥ दर्शन देय हरऊ दुख घोरा ॥
यौं भाषत रामहिं लाषदीना ॥ पंक मग्न गज जिमि छवि छीना

बोले लखन मृदुल कर जोरी ॥ नाहिं आश्रम मैं जनक किशोरी
तजि बिषाद धरि धीरज नाना ॥ का बिगुलाऊ मुहिं गुनजन ग्याना

दो० नाथ अनन खोजऊ सियहि पैहो नाहिं निदान
जैसें वलिसें बिष्णु नैं लीनी अबनि सुजान १६७

राम वचन

तात जनक तनया नहि पैहे ॥ तौ मुहि कातर लोक बतैहै ॥
गये अवधि केकाथ हासि कहिहै ॥ सिया सहित गोसो संग नहि है
मृदु बचनी शशिमुखि सियहीना ॥ कसधसिहौं अंतःपुर दीना ॥
पुछिहै मोहि जनक कुशलाई ॥ कसकाहि हौं बन सिया गमाई
तातें मैं घर चालि हौं नाही ॥ मारिहौं प्रिया वियोग इहांही ॥
अब तू जाऊ अवधि मैं ताता ॥ कहियो ह्यां कनी सब बाता ॥
कौसल्या केकयी सुमित्रा ॥ कहियो इनहि म नाम पवित्रा
सिया हरन मामरन तयारी ॥+॥ कहियो कौसल्याहि विस्तारी

कवि वचन

दो० यौं विलपत लखि राम कौं सिय विहीन अतिदीन
भये विकल मन लखन हू ज्यौं सफरी जल हीन

राम वचन

लक्षमन नहि मो सम अघ कारी ॥ त्रिभुवन मै दुखतें दुख धारी ॥
राज्य गयो विछुरे मम लोगा ॥ पितु बिनाश निजजनानि बियोगा
सब भूल्यौ सिय संग बन मांही ॥ सिय विन अब सब मोहि दहांही
पुनि लखि मृगगन दृग जल धारी ॥ कहि प्रभु कित है जनक कुमारी ॥
सुनि मृग मुरि सब दषिन लखाये ॥ पुनि पुनि प्रभुहि देखि नित धाये
तब लछमन कहि दछिण ओरा ॥ है सिय हरन कै नान किशोरा ॥
सो सुनि प्रभु दिश दषिन पलाने ॥ मग सिय शिरच्युत पुष्प पिछाने
पुनि नर खोज लख्या अति भारा ॥ तहँ सिय खोज लख्यो नियार

दो॰ इत उत धावत सियहि संग नर के खोज निहारि ॥
धनु तरकस रथ भग्न लखि ह्वै ग्रति विमन खरारि ॥

रामबचन

बोले लखन लखहु महि माही ॥ कनक बिंदु सिय भूषन ग्राही ॥
रुधिर बिंदु महि परे ग्रनेका ॥ तिनतें मोमन होत बिबेका ॥
जनक सुता जुग ग्रसुरन ग्राई ॥ काटि रु बाँटि बाँटि के खाई ॥
धर्म शिवादिक कीनि न रक्षा ॥ मोहि जानि निर्बिक्रम दक्षा ॥

दो॰ ताते ग्रबहि त्रिलोक कौं करौं भस्म निरधार ॥
देखि लखन मो वीर्य कौं एक मुहूर्त मझार ७३

यों कहि कुप भरि करि दृग लाला ॥ फरकत ग्रधर तरेरि स्वभाला ॥
वल्कल ग्राजिन बांधि कटि सोई ॥ जटाभार कसि सज्जित होई ॥
महा भयंकर सर धनु रोपा ॥ २ ॥ करन राम त्रिभुवन को लोपा ॥
लेत सास पुनि पुनि रिस पाई ॥ प्रलयकाल शंकर की नाई ७४

दो॰ पूर्व लख्यौ नहि लखन नै प्रथम देखि कुप सोय
हाथ जोरि बोले नमित ग्रति भय व्याकुल होय ॥
सर्व भूत हित रत मृदुल दांत सदा शुचि भाव ॥
प्रकृति त्यागि ग्रब क्रोध वस होहु न कोशलराव

न्रपमांधाता सगर भगीरथ ॥ रघु ग्ररु ग्रंबरीष ग्रादिक गथ ॥
सुनी प्रजा पाली सुभ रीती ॥ २ ॥ लीनो सुजस धारि न्रप नीती ॥
तुम रबिकुल भूषन जस ताके ॥ ग्रति बल्लक हौ पाल प्रजाके ॥
रबि मैं प्रभा चंद मैं श्रीरह ॥ बेग बात मैं क्षमा भूमि गह ॥
ये चारिउँ तुम मैं जस साथा ॥ नित्य बिराजत त्रिभुवन नाथा ॥
इकने कीन दोष तिहि माँही ॥ त्रिभुवन नाश उचित नहि ग्राही
हरी जानकी खोजहु ताही ॥ उद्यम निफल जैहै नाँही ॥ २ ॥
सो सुनि साग्रज लीन उसासी ॥ रिस निवारि हर्षित ग्रसुरारी ॥

दो॰ लियो लाय उर अनुज कौं शीश सूंघि हसि हाल
सहित सनेह प्रशंसि सिय हेरन चले कृपाल॥

आगे रुधिर लिप्त महि माँही ॥ पस्यौ पर्वताकार महाही ॥+॥
तिहिं लखि काहि लछमन सौं साँई॥ तात जनक तनया इहिं खाई॥
सोवत है तिहिं भांस अघायो॥ अवसि मूढ जमपुर घर आयो॥
सों कहि राम धनुष सर तान्यो॥ सुनि जटायु बोल्यो भय सान्यो॥
मारिन मोहि मृतक कहँ ताता॥ मै जटायु हौं असुर निपाता॥
सिय हित कीनों मैं रन भारा॥ ताने यह गति कीन उदारा॥
लखि खग गति सुनि बच मृदुलाई॥ रोवत भूमि परे दोउ भाई॥
सिया हरन सुनि लखि खग नासा॥ पुनि पुनि लेय राम अति सासा॥

दो॰ परसि तासु तनु बिकल मन बोले करुणा धारि
किन कीनी तुव दुर्दसा तात कहहु बिस्तारि २७७

गीधवचन

राम लषन तुम गे बन ओरा॥ आयो रावण सिय को च्योरा॥
नभ मारग रथ सें बिलपाती॥ मै देषी जागी सिय अकुलाती॥
तब तिहिं रोकि ठानि रन भारी॥ बिरथ कीन मै बिकल सुरारी॥
मै अति वृद्ध थकित भौ ताता॥ तिहिं असि तें मो पंख निपाता॥
पुनि सिय गहि गो दच्छिन ओरा॥ है लंका पति राक्षस च्योरा॥+॥
राम काज जनि सोच सुजाना॥ मिलिहै जनक सुता बलवाना॥

दो॰ रावन हनि लै सियहि संग जैहौ अवधि निदान॥
मिलि जननी भरतादि सैं पैहौ अति कल्यान २७८

सो सुनि राम लाय उर ताही ॥+॥ रोये लखन सहित दुख दाही॥
रुधिर वमत फिर व्याकुल निदाना॥ पस्यो धरनि खग तजि निज प्राना॥
तिहिं लखि राम होय दुख दीना॥ बोले खग तनु परसि प्रवीना॥
लछमन असुरन वाल मझारा॥ वसत रह्यो यह जून जुगारा॥

आयो आज काल बस सोई ॥ परमारथ कृत मम हित होई ॥
नृप दसरथ सम सो हितकारा ॥ पूज्य मान्य है गीध उदारा ॥
यों कहि मृदु मन करुणा धामा । निज कर दाह दीन तिहि रामा ॥
उदक देय हनि मृग मन भाये ॥ मांसपिंड करि खग तृप्ताये ॥

दो० पितुवत क्रिया जटायु की करि हरि करुणाधाम
नयन नीर भरि मृदुल मन बोले विलपत राम १९२
गीधराज मो पितु सखा हो सहाय अति मोर ॥
सिय रक्षा कृत सो न रह्यो देषि दिनन को जोर १९३
वैदेही बिछुरन लखन मुहि दुख भयो अपार
गीध मरन ताते दुगुन भो बिषाद भय कार १९४
गदा चक्र दर पद्मधर विष्णु रूप हर्षाय ॥+॥
बिमानस्थ लाग्यो करन खग अस्तुति शिर नाय १९५

वारिज बदन बादन जग जालं ॥ वारिज कर हर विपति करालं ॥
वारिज माल वारिज गल दामं ॥ वारिज नयनं नमामि रामं ॥+॥
विमल भाल उर बाहु विशालं ॥ अधर पानि पद नख अति लालं
सुतनु मदन मद रद कर श्यामं ॥ कर सर चापं नमामि रामं ॥
अति विक्रम महि आगत रूपं ॥ अगणित गुण लावन्य अनूपं
त्रिभुवन पालक करुणा धामं ॥ सुखमा सदनं नमामि रामं ॥+॥
भक्तजनगन से अति दूरं ॥+॥ भव विमुखन मन समता पूरं ॥
सरधन विद्य त्यागी निष्कामं ॥ दायक स्वपद नमामि रामं ॥

दो० सुनि अस्तुति अति मुदित मन बोले खग से राम
तात होउ कल्यान तुहि जाउ शीघ्र मो धाम ॥
विष्णु पारषद चारि करि पूजित हिय हर्षाय ॥
सूर्य मान बोगीन करि जात भयो खग राय ॥

पुनि लछमन जुत धीरज धारी ॥ दक्षिण दिसि गमने असुरारी ॥

तीन कोस चलिगये तहाहीं ॥ क्रौंचारण्य गहन बन मांहीं ॥
आई अयोमुखी निशिचारी ॥ अग्रचलत लछमनहिं निहारी ॥
दौरि अंक भरि हिय हर्षानी ॥ बोली श्रीपति हो गुनखानी ॥
लखन काढि असि कारि रिसभारी ॥ नाक कान कुच काटि बिडारी ॥
महाभयंकर तनु धरि सोई ॥ गई भागि अति दुःखित होई ॥
दो० फेरि बिपिन खोजन सियहिं चले अग्र रघुराय ॥
इक जोजन विस्तृत भुजन विन्हि आये दोउ भाय १८६
प्रभु कहि यह राक्षस कोउ आही ॥ बिन सिर लखि बल सुख उर माहीं
भुज समेटि अब जैहै खाई ॥+॥ कहु लछमन का करिय उपाई ॥
बोले लषन बिकल मन होई ॥ आन उपाय न सूझै कोई ॥+॥
मुहि कारि असुर भेट तुम जाऊ ॥ पैहो सिय कहँ झट रघुराऊ ॥
पुनि पैहो निज राज महाना ॥ तँहँ मुहि सुमिरत रहियो जाना ॥
महा प्रेमभय संजुत बानी ॥+॥ सुनि लछमन की आरत सानी ॥
दो० बोले दीन दयालु प्रभु तुव समान जन भ्रात ॥
करैं न चिंता बिपति मैं होइ सजग हर्षात १८८
सुनि धीरज धरि कहि अहि नाहा ॥ छेदिय भुज दोउ सहित उमाहा
राम लखन असि काढि सराही ॥ दहिन वाम भुज हनी तहाहीं ॥
कही असुर तुम को सुकुमारा ॥ सुर दुर्लभ भुज छेदन हारा ॥
तब प्रभु निज वृत्तांत सुनायो ॥ सुनि दानव बोल्यो हर्षायो ॥
आज धन्य भो मै रघुनाथा ॥ आये मो ढिंग त्रिभुवन नाथा ॥
मै गंधर्व राज हौ सोई ॥ गर्वित जोवन रूप महाई ॥
दो० तप करि बिधि सैं लैवर तनु अवध्य सुरराय
लोकन मैं बिचरत रह्यो मनमथवत मद माय१८०
मुनि अष्टावक्र कहि इक वारा ॥ हस्यो देषि तिँहिं कुअ्अकारा ॥
कुपि तिँहिं मुनि मुहि राक्षस कीनो ॥ पुनि मुनि दीन देषि वर दीनो ॥

मभानि है तुव भुज माई ॥+॥ कहै है तू गंधर्व तदाई ॥+॥
नि मै सुरपति सें हठ ठान्यौ ॥ तिहिं मो मस्तक पविते भान्यौ
ब सु हि दाह देहु रघुराऊ ॥ सियमारग मैं तुमहिं बताऊं ॥
हत तन सो भौ गंधर्वा ॥+॥ बोल्यो जय जग दीस अगर्वा ॥
म सुरपाल अनादि अनंता ॥ सूक्षम थूल रूप भगवंता ॥+॥
क्षमरूप जीव तुव आहीं ॥ स्थूलरूप लोरिथयत सबठाहीं ॥
दो॰ तउ श्यामलतनु चाप शर धरें जटा मुनि चीर ॥
सिय खोजत लछमन सहित मो उर रघुबीर २८४
ऋक्ष रजस सुत सूर सुत बालि भ्रात सुग्रीव ॥
कपि पति आलि सति बसत है गिरि पर प्रभु बलसीव
अति कृतज्ञ है काम सरूपा ॥ सत्यवाक धृति मान अनुपा
द भ्रगल्भ परा क्रम बाना ॥ अग्रज करि पीडित दुख साना ॥
हि छाजो ता तें साहै सारी ॥ करिहै सिय शोधन अरि हारी ॥
करहु मित्रता जाय सुजाना ॥ बड़ अभिलाषी है हितवाना
पंपा सर तट ऋषि गन नाना ॥ बसत मतंग शिष्य मति वाना ॥
हैं मतंग परे चर्या कारी ॥+॥ श्रमणी सबरी अति मति बारी ॥
ऋषि प्रभाव करि राम सदाहीं ॥ धसिन सकै गज आश्रम माहीं
ऋष्यमूक गिरि है तिहिं पासा ॥ पुष्पित द्रुम खग करत उलासा
दो॰ ऋष्यमूक गिरि शीश पै सोवै पुरुष सुजान ॥
मिलै स्वप्न मैं वित्त सो जागत लहै निदान २८५
पापी तिहिं गिरि सोवै जाई ॥ सोवत ही तिहिं राक्षस खाई
ग्राल उच्च गिरि सघन महाना ॥ सिंहरी छ गज विचरत नाना ॥
ला ऊपर इक गुहा बिशाला ॥ तिहिं आगे सीतो दक नाला
बसत तहां सुग्रीव सुजाना ॥ चारि सचिव हैं तिहिं संग आन
दो॰ रावण राक्षस लंक पति तिहिं सिय लई चुराय

हे माते बिकल वियोगीनी महादुखित रघुराय

नाथ कछुक आगे पग दीजे ॥ सवरी आश्रम पावन कीजे ॥
है वह तुव दासी असुरारी ॥ भक्ति विलीन महा माते वारी
सो सब कहिहै सिय की बाता ॥ सुनि गम्मने त्रिभुवन सुखदाता
लखि सवरी निज आश्रम आये ॥ राम लखन अतुलित छवि छाये
दौरि दूर तें चरनन माही ॥ परी दंड लौं हर्षि महाही ॥
सादर बर आसन बैठाये ॥+॥ चरन धोय ननु भवन सिचाये
विधिवत पूज्य मूल फल नाना ॥ दिये गुरख्ये परषि निदाना
अपि हर्षाय सराहि अघाई ॥ बैठे आसन पुनि रघुराई ॥+

दो० हाथ जोरि सिर नाय परि बार बार प्रभु पाय ॥
तनु पुलकित बोली मृदुल सवरी हिय हर्षाय ॥

जब तुम चित्रकूट पग धारा ॥ तब मम गुरु हरि धाम सिधारा
कही मोहि हां लछमन रामा ॥ ऐहैं जग पावन माते धामा ॥
करि दर्शन तिनको पद नाई ॥ पैहै तू सद्गति मन भाई ॥+
तब तें बन फल परषि अपारा ॥ राखे तुम लायक उपहारा ॥
मगजोवत रहि प्रभु सब काला भइ हम कृत्य आज जन पाला
सुनि प्रसन्न ह्वै हिय हर्षाई ॥ बोले मधुर बचन रघुराई १६

सो० हम मतंग बन कौं सुमति देख्यों चहत निदान
तू संग चालि दिखाय सब जो यह तुव मन मान

हर्षि जाय सब बनहि दिखाई ॥ सादर निज आश्रम पुनि लाई
बर आसन बैठाय पुनीता ॥ बोली गद्गद बचन बिनीता ॥
मैं तिय जाति हीन मति हीना ॥ तुव दासन के दास प्रवीना ॥
गन संख्या तरतिन की दासी ॥ होन सकौं अधमा अघरासी ॥
तिहिं तुव दर्श दीनजन त्राता ॥ कोमल मन त्रिभुवन पितु माता
नहिं जानौ अस्तुति करि साईं ॥ होउ प्रसन्न दीन सुखदाई ॥

राम अस्तुन

दो॰ पुरुष नपुंसक नारि वा आश्रम नाम सुजाति
नहि कारन सो भजन को भक्ति हि कारन ख्याति

वेदाध्ययन यज्ञ तप दाना ॥ तीरथ क्रिया कर्म शुभ नाना ॥
इन संजुत सो भक्ति विहीना ॥ लहैं न मोर दर्श अति दीना ॥
तातें भामिनि बिन विस्तारा ॥ साधन कहौं भक्ति हित कारा ॥
सत संगति साधन है आदी ॥ दूजो है मम कथा सवादी ॥+॥
तीजो साधन सो गुण गाना ॥ चौथो मोर वचन हित वाना ॥
पंचम गुरु कहँ सो सम मानै ॥ छठम मोर पूजन नित ठानै ॥
सप्तम राम नाम रट लावै ॥ अष्टम सरल सबहित सरसावै
तत्व विचारन नवमजिहिं माही ॥ तिंहिं मम भक्ति मिलै अघदाही

दो॰ भक्ति होत लही तत्व को अनुभव होय निदान ॥
तबहि मुक्ति ह्वै मुक्ति को कारन भक्ति हि नान

तू सो भक्ति युक्त है वाला ॥ तातें दर्शन दीन रसाला ॥
जानत है तुव नाथ सुबामा ॥ कित है सिय किंहिं हरी ललामा
तुम सब जान त्रिभुवन राई ॥ तउ पूछे तें कहौं गुसांई ॥+
रावण हरी सु लंका माही ॥ अव है सीता दुखित महा ही ।
ऋष्यमूक गिरि पर रघुनाथा ॥ रह सुग्रीव चारि कपि साथा
जाऊ तहां बह्न तुव सब काजा ॥ कारि है धर्मातम कपिराजा ॥

दो॰ पुनि वह सबरी प्रभुहि वार वार शिर नाय ॥
जारि अग्नि तनु अनघ सो हरि पुर पहुंची जाय ।
जाति हीन मति हीन अति तिय आचार विहीन ।
सब विधि पसुनी ताहि प्रभु मुनि दुर्लभ गति दीन
नाना ज्ञान विशेष मत मंत्रन की नाति त्यागि ॥
रामहि सुमिरै सो सुधर स्याल तनु अनुरागि २०९

मंदहास्ययुत मधुर अमोला ॥ कब कानन परिहै सिय बोला ॥
दो० ॥ सभा माहि जब जनक सुहि पुछिहै सिय कुशलात
तब मिथिलापति कौं कहा देहौं उत्तर तात २१४
सिय बिन लखि कौसल्या मोहू ॥ पूछहि कित है मोरि पतोहू ॥
ताको उत्तर कहा सुनाऊं ॥ तातें नान नमें घर जाऊं ॥+॥
अब तू जानिज भवन प्रवीना ॥ मैनहि बाचि हौं प्रिया बिहीना ॥
यौं बिलपत रामहि लखि भ्राता। बोले मृदु नय संजुत बाता ॥
तजऊ नेह मन धारऊ धीरा ॥ हौ निर्मल मन बचन शरीरा ॥
नेह दुखद है प्रभु सब भाती ॥ जरै नेह भर आलि ऊ बाती ॥
रावन दिति गर्भ ऊ के माही ॥ धासि है तउ हनि हौं मै ताही ॥
सियहि लाय हौं तजऊ गलानी होय शोक सैं कारज हानी २१५
दो० ॥ प्रभु बल है उत्साह ही धारऊ मन उत्साह ॥
कारज उत्साही न कौं नहि दुर्लभ नर नाह २१६
नर उत्साह वंत जग माही ॥ कर्मन सैं दुख पावत नाही ॥
लहि उत्साह तुमऊ मतिवाना ॥ पैहौ सो तहि शीघ्र सुजाना ॥
भ्रातबचन सुनि राम उदारा ॥ शोक मोह तजि धीरज धारा ॥
करि अस्नान बऊरि दोउ भाई ॥ बैठे तरु छाया हर्षाई ॥+॥
तब तहं सुर स्टाषि आय तमामा करि अस्तुति गे निज निज धामा
पुनि आये नारद मुनि धीरा ॥ मिले हर्षि तिन सैं रघुबीरा ॥
सुनि बिस्तान संत गुण गाथा ॥ गये सदन सुमरत रघुनाथा ॥
तब सिय हेरन हिय हर्षाई ॥ चलत भये लछमन रघुराई ॥
दो० ॥ पंपा सर गमनत अमल श्यामल गौर शरीर ॥+॥
चंदकला के उर बसौ धनुसर धारण धीर २१८

इति श्रीमदवनिमण्डल मण्डनायमान बुन्दीपुरन्दर श्री रामसिंहात्मज श्रीरघुबीरसिंह महीन्द्राश्रित वंदिवंशावतंस कविराज श्रीमद्राव गुलाबसिंहस्य कृती चंद्रकला कृत रामचरित्रे आरण्यकाण्ड संपूर्णम् ॥

रामचरित्र

अर्थात

वाल्मीकीय १ अध्यात्म २ अग्निवेश्य ३ पद्मपुराण ४ नृसिंहपुराण ५ अद्भुत ६ तुलसीकृत ७ रामचंद्रिकादि ८ अनेक ग्रंथ मतानुसार

श्रीयुत चक्रवाण वंशावतंस हड्डकुल कलश बुन्दीन्द्र महाराजाधिराज महाराव राजा जी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री रघुवीरसिंह जी के कविराज राव जी श्री गुलाबसिंह जी की किंकिरी चंदकला बाईकृत

का

आरण्य कांड

[illegible] गढ़

[illegible] श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद के प्रबंध से छापा गया

[illegible] ५००] [[illegible]]

विज्ञापन

चंद्र कला बाई कृत राम चरित्र के सातो कांड तैयार हैं
कवि-व-चित्रकार के मैनेजर फ़तहगढ़ अथवा चंद कलाबाई
बूंदी को लिखने से
मिलसक्ते हैं

श्री गोस्वामी तुलसी दास जी कृत रामायण का-

श्रीयुत विद्या सागर ग्रूस साहिब बहादुर का किया हुआ अति
उत्तम और विख्यात इंगरेज़ी अनुवाद
(पांचवी वार छापा गया)

उत्तम अंगरेज़ी लिखना सीखना चाहो तो इस अनुवाद को पढ़ो सोचो और स्मरण रक्खो कि कैसी २ कठिन बातों को श्री ग्रूस साहिब ने किस योग्यता से उत्तम अंगरेज़ी में प्रगट किया है. और जैसी उत्तम अंगरेज़ी ग्रूस साहिब लिखते हैं वैसी बिरले ही अंगरेज़ी लिख सके हैं-

उस विद्यार्थी को बड़ा अभागा और अल्प बुद्धि समझना चाहिये जो ऐसे रत्न को जैसा यह अंगरेज़ी अनुवाद है न ले. यह अनुवाद आठ रुपया में बिकता था परंतु विद्यार्थियों के सुभीते के लिये हम इस से उक्त अनुवाद करता के चित्र सहित निम्न लिखित थोड़े से मूल्य में देते हैं. मूल्य ३) रु० डाक महसूल ।~) यदि कोई १० पुस्तकें ले अर्थात ३०) डाक महसूल के सिवाय भेजे तो उसको एक जिल्द मुफ़्त मिलेगी-

पता पंडित कुंदन लाल फ़तहगढ़ ॥

कान्यकुब्ज कुल कौमुदी पंडित द्वारिका प्रसाद कृत यह पुस्तक ब्राह्मणों के देखने योग्य है पुस्तक मिलने का पता जगत् प्रकाश प्रेस फ़तहगढ़ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ आरण्यकाण्ड लि० ॥

दोहा

पाप दुःख अज्ञान हर सुख संपति के धाम।
धर्म ज्ञान बैराग्य कर नमो नमो श्री राम ॥१
पीत बसन तनु स्यामकर सर धनुकटि तूणीर।
जटा मुकुट सिय लखन संग जय जय श्री रघुबीर २

चौपाई

लगनहि अगहन मास सुजाना ॥ राम लखन सिय कीन पयाना
धसे दंडकारण्य मझारा ॥१॥ जँह खग मृग जल जंतु अपारा
फूले फले लता तरु नाना ॥ झुके धरनि मैं लसत महाना ॥
बने मुनिन के भवन बिशाला। ब्रह्म भवन सम रहित कसाला।
ब्रह्म घोष सुनि लखि छबि धामा अति हर्षे लछमन सिय रामा ॥
आयेसन सुख मिलन मुनीसा। जटा चीर धर ब्रह्म सरीसा ॥
राम लखन सिय छबि लखि सोई। रहे ठगेसे इकटक होई ॥१॥
सादर मिले परस्पर सारा ॥१॥ गये लेय ऋषि कुटिन मझारा ॥
३ दो० करि पूजा सत्कार अति कोमल बचन सुनाय ॥
राखे आश्रम मे तिनहि बरफल मूल खवाय ३
प्रात होत करि कृत्य उदारा ॥ सुनन स्वस्ति वाचन हितकारा
मिलत मुनिन सें ठामहि ठामा ॥ चलेजात मगमें श्री रामा ॥
सैल शृंग सम रूप भयंकर ॥ देख्यो असुर महा स्वन दुखघर
व्याघ्र चर्म के बसन बनायें ॥ बसा रुधिर तनु मेल पठायें ॥
तीन सिंह अरु च्यार बघेरा ॥ दो वृक दश मृग शिर गज केरा ॥
ठके सूलमै आय सु दौरा ॥ सियहि उठाय कहे बच घोरा ॥

को तुम बनमें फिरो अकेला॥ तियजुत तजि करि जीव नवेला
मैं बिराध राक्षस इहि कानन॥ विचरौं मुनि भक्षक मख नाशन
दो० बोले प्रभु हम क्षत्रि हैं रघुवंशी भय हीन॥
खल घालक शालक असुरि न प्रति पालक जन दीन६

बिराधवचन

मैं करिहौं इहिं तियहि स्वनारी॥ पीहौं रुधिर तुमहिं अब मारी॥
सो सुनि सिय डरि कंपन लागी जिमि कदली अति मारुत पागी॥
तिहिं लखि कहि लछमनसें रामा। देखिभई का गति मो वामा॥
यह आई मो संग हित रीती॥ आज बनी केकयि की चीती॥
पिता मरन सुनि गये स्वराजू॥ जुन भा मुहि दुख सो भा आजू॥
सुनि कहि लछमन तुम जगनाथा किमि भाषौ बच यथा अनाथा
मैं तुम्हरो जन अब करि कोपा॥ करों छाड़ि सर इहि को लोपा॥
जो मो कोप भरत पर आही॥ आज सु मैं काढौं इहिं माहीं७
दो० सुनि विराध वोल्यो गरजि धारि अभिमान विशाल
जव रुशत इन्द्रा को सुवन मैं हौं तुम्हरो काल ८॥
मैं तप करि बिधि बचन प्रमाना॥ भो अवध्य तनु अति बलवाना
तातें तुम तिय तजि घर जाहू॥ जनि पितु मातन के उर दाहू॥
सो सुनि राम सात सर मारे॥ पृथक पृथक तिहि अंग विदारे॥
तब करि कोप सियहि तजि धाई। प्रभु लषनहि गहि गयो पलाई
प्रभु लछमन की गति लखि सीता रोवन विलपन लगी सभीता॥
तिहिं तनु शस्त्र अवध्य निहारी॥ मार्यो गरत माहि खल डारी॥९
दो० तिहिं निज तनु धरि जोरि कर कहि मैं हौं गंधर्व
नाथ धनद के सापसें राक्षस भयो सगर्व॥१०॥
सो मैं पुनि तुंबर भयो तुव प्रसाद करि नाथ॥+॥
अब जाऊं निज भवन को जय जय जय रघुनाथ ११

तुम जगदीश चराचर ताता ॥ सिय स्रजि पालनि त्रिभुवन माता
लछमन शेष विश्व आधारा ॥ लिय अवतार हरन महि भारा ॥
नाथ महा भव भंजन हारा ॥ रहो मोर उर ध्यान तुम्हारा ॥
रसना करै गुरगन के गाना ॥ श्रवन सुनै तुव गुण विधि नाना
मो कर प्रभु पद पूजन ठानै ॥ शिर चरनन मै नमि सुख मानै ॥
भक्ति तुम्हारि रहै उर छाई ॥ कवि गुलाब यौ यह वरसाई १४

दो० बोले विहसि दयालु प्रभु तुव मांगे सब होहि ॥
मो माया जग मोहिनी अब नहि व्यापै तोहि १३
पुनि प्रभु सियहि बिसालि कै लेय शशि कला साथ
आश्रम मुनि सरभंग के पहुंचे त्रिभुवन नाथ १४

तब आयो सुरपति मुनि पासा ॥ तब रावत लखि तिहिं अघ नासा
भानु अग्नि सम प्रभा अपारा ॥ हरित वाजि रथ अति छबिवारा
महि नहि परसत तिहिं आरूढा बिमल छत्र धर तेज अगूढा ॥
पंच विंस संवत् वय सारे ॥ शत शत जन चक्र धार खवारे ॥
बर्ष पचीश आयु सुर केरा ॥+ रहत सदा बुध कहत घनेरा ॥
लखि लछमन यह पुरुष अनूपा सुरपति दीपत है बर रूपा १५

दो० ताते ह्यां सिय सहित तू ठहरि मुहूर्त निदान ॥
जितनै जानौं याहि मैं को है रथ थित जान ॥ १६॥

राखि लषन सियकौ तिहि ठांहीं गये दूका की प्रभु मुनि पांही ॥
लखि रामा गम पूजि मुनी तहि ॥ गोन मिल्यौ प्रभु से कुसमय लहि
पुनि प्रभु सिय लछमन मुनि चरना गहे जाय बिधिवत अघहरना
दै आसीस मुनि हिय हर्षाये ॥ कंद मूल फल मधुर खवाये १७

दो० बर आसन बैठाय पुनि बोले मुनि कर जोरि ॥
दै दरशन प्रभु तुम करी मनसा पूरन मोरि ॥ १८

दीन दयाल भक्त हितकारा ॥ अवधि निवासी जन मन हारा ॥

सियलछमनजुल श्यामसरीरा॥ बसो मोर उर घर रणधीरा ॥
मो मन तुम चरनन तें न्यारा॥ होय न यह बर देऊ उदारा ॥
एवमस्तु कहि पूछ्यो रामा ॥ मुनिसें सुरपति आगम कामा ॥
कहि मुनि मो तप कारन आयो॥ लेजावन विधि धाम सुहायो ॥
मै तुम आगम जानि गुसांई॥ गयो न सुरपति संग रघुराई ॥
अब तुमसें मिलि निज तनु त्यागों॥ जैहों ब्रह्मलोक हित पागों ॥
निकट सुतीक्षण बसबन माहीं॥ तुम्हरो भक्त मिलहु प्रभु ताही॥
दो॰ यों कहि रामहि दै सुफल पुनि करि अग्नि प्रवेस॥
ब्रह्मलोक शरभंग गो लहि नूतन तनु वेस ॥२०
पुनि तहं धार्मिक प्रभु निकट आये ये ऋषि राज॥
विपति निवेदन आपनो कष्ट निवारन काज ॥२१
वालखिल्य वैखान सरु तापस पत्रा हार ॥+॥
संप्रक्षालमरीचिपरु पुनि मुनि सलिला हार २२
दांतरु दंतोलूखली स्थांडल सायी सोय ॥+॥
अश्मकुट्ट उन्मज्जकरु पंचतपोन्वित होय २३
वायु भक्ष आकाश गृह सजप आर्द्रा पट वास
अनवकाशिकरु असयन सुतपो निष्ठ गिरिवास २४

मुनि बचन

प्रभु असुरन अगनित मुनि खाये॥ देखहु तिनके अस्थि निकाये
तिनहि बिदारि हरहु मुनि पीरा॥ जनपालक खल घालक धीरा ॥
करुणाकर बोले असुरारी ॥+॥ राक्षस हीन करों महि सारी ॥
देखहु अनुज सहित मो कामा॥ कवि गुलाब सब बसहु स्वधाम
दो॰ यों पन करि मुनिगन सहित गये सुतीक्षण पास॥
मिले हर्षि उठि छबि लषत मिटत न मुनि चष प्यास २५
मुनि कहि प्रभु तुव दर्शन हेतू॥ मारग जोवत रह्यो निकेतू ॥+

नतु मैं जातो स्वर्ग गुसाँई ॥ मोहिं लैन आयो सुर राई ॥
तुम सब प्रानिन के उर वासी सबद्रष्टा सम रूप प्रकासी ॥
तउ तुव मंत्र जाप करि लीना ॥ तिनहिं करौं निज माया लीना ॥
नामाश्रित की हरे स्वमाया ॥ जिमि न्रप कौं सेवक सम छाया ॥
इक तुम थिति पालन लयवारा विधि हरि शंकर रूप उदारा ॥
सब कँहँ भासत त्रिविधाकारा ॥ जिमि दिन नायक वारि मझारा
मोह पास गत मोहि निहारयो ॥ सदन आय जन जानि उधारयो
दो० नाथ कौन अभि दीन पर कृपा कृपाल महान ॥
सदा लखन सिय सहित प्रभु मो उर बसहु सुजान २०
सुनि मुनि बर की मृदु बर बानी ॥ बोले राम हरषि सुख दानी ॥
मैं ऋषिराज तुमहि सब लोका ॥ देहौं जेहैं अगम अशोका ॥
अबसे कहाँ बसौं मुनि राया ॥ स्थान बताबहु मुहि करि दाया
तुम सब जानन सब हित कारा ॥ कह्यो मोहि शरभंग उदारा ॥
मुनि बोले यह आश्रम रामा ॥ है रमनीय बसहु मति धामा ॥
बसत महा मुनिगन ह्याँ नाना ॥ रहत मूल फल सदा महाना २१
दो० पै ह्याँ आवत बहुत मृग विक्रम रूप दिखाय ।
मोह नसन मुनिजनन को है यह दुख रघुराय २२
राम वचन
मैं ते मृग हनिहौं तुहि याना ॥ कस तुम्हरे सन्मुख भगवाना
ताते ह्याँन रहौं चिर काला ॥ हनौं अनन वाले मृग विकराला ।
यौं कहि संध्या करि रघुराई ॥ अमृत समान मूल फल खाई
सोये निशि सिय लखन समेता ॥ मान नित्य कृत करि चित चेता
पूछि सुतीक्षण सें मग गाथा ॥ नाथ शीघ्र गमन्यौ जय साथा ।
कहि मुनि लखि बन ऋषिगन ठामा पुनि आवहु तुहि आश्रम राम
दो० ऐसें कहि प्रभु लखन जुत करि प्रदक्षिणा तास ॥

चले राम सिय लखन त्रय मुनिगन जुत सङ्लास ३१

सीताबचन

कामजतीन दोष है नाथा ॥ मिथ्याबचन रूप रतिय साथा ॥
बिना बैर रौद्रत्व निदाना ॥ तुम सब दोषन रहित सुजाना ॥
अब मृगअसुर नाशयन कीना ॥ सो मिथ्या नहिं होय प्रवीना ॥
पै अपराध बिहीन बिनासा ॥ अनुचित दोष तहैं अरि त्रासा ॥
तुम धर्मिष्ठ सत्य ब्रत धारी ॥ पितु सासन रत जग हित कारी ॥
मुनि बिनती सुनि बिन अपराधा। चले करन असुरन कौं बाधा ॥
जुगल शस्त्र धर तिनहिं निहारी हनिहौं मैं मनमैं निर्धारी ॥
तातें प्रभु अब पावन माहीं ॥ चलिवो मो मन मानत नाहीं ॥

दो० नाको कारण है यहै छत्रि अगिन के पास ॥
होय शस्त्र इंधन तबै बढ़ै तेज बल नास॥ ३२

पूर्वे इतो इक मुनि बन माहीं॥ खग मृग रत शुचि मन अघ दाहीं
तिहिं तप विघन करन मन मानी आयो सुरपति भट तनु ठानी ॥
खड्ग धरोरि धस्यौ मुनि नाहीं॥ राखै तिहिं करि जत्न महाहीं
कंद मूल फल लेनङ्ग जाबै ॥ खड्ग राखि संग हियङ्लसावै
नित्य खड्ग बंधन के साथा ॥ भई क्रूर मति मुनि की नाथा ॥
त्यागि स्वधर्म मत्त अति होई ॥ गयो नरक मैं मुनिबर सोई ३४

दो० होनशस्त्र सैं कलुषमति तातें धारि मुनि बेष ॥
धरौ धर्म ही धर्म सें पावत सर्म अशेष ॥ ३५

धर्म कष्ट सैं सुख संसारा ॥+॥ लहत न सुखसैं सुख अरि हारा
नित्य धर्म रत शुचि मन आपू॥ त्रिभुवन व्यापक पाम प्रतापू ॥
सर्वे तत्व वित हौ विज्ञानी ॥ है त्रिभुवन की बात न छानी॥
तिय स्वभाव करि बात जनाई करङ्ग बिचार सहित दोउ भाई

दो० सुनि सियके हित युत बचन बोले श्री रघुराय ॥

प्रिया कहे तैं धर्म जुत बचन सदा सुखदाय ॥ ३७

पै यह क्षत्र धर्म है प्यारी ॥ सुनै न आरत बचन धनु धारी ॥
आति आरत ऋषि दंडक बासी आये मोर सरन खल त्रासी ॥
कही सबन हूमि ऋषि तपसाना खाये खल असुरन ने नाना ॥
होम पर्व के समय सदाही ॥ देत महा दुख दोष बिनाही ॥
शाप देय हम तिनहि नशावैं पै तप बिगरत देखि सकावैं ॥
रक्षक हेरत बहु दिन बीते ॥ आज मिले प्रभु तुम चित चीते
आये सरन रावरी ताता ॥+॥ हरो घोर दुख त्रिभुवन त्राता ॥
मैं सुनि दीन बचन निर्धारा ॥ असुर नाश कीनों स्वीकारा ॥ ३८

दो० बिना कहे हू सर्वदा मैं टारौं मुनि ताप ॥+॥
अब तौ तिनकी सुनि बिनय स्वीकृत कीनौं आप ३९

तजौं न पन मन भावत मोही ॥ त्यागौं जीवन लछमन तोही
कहे बचन तैं मोहित साना ॥ तिनतैं मुहि भो हर्ष महाना ॥
हैं ये बच तुव कुल अनुरूपा ॥ धर्म तिया है मोरि अनूपा ॥
प्रानहु तैं मुहि अधिक पियारी पति रत पावन आति मति वारी
यों कहि धनु सर धर रघुनाथा ॥ चले बिपिन सिय लछमन साथा ॥
आगे जाय तड़ाग निहारा ॥ आति सुंदर जोजन बिस्तारा ४०

दो० ताके जल निर्मल बिषे सुनियत बाजा गीत ॥
बिन जन लषि बिस्मत भये राम लखन अरु सीत

पूछौ मुनिहि धर्म भृत नामा ॥ का यह आचिरज कहु सुख धामा
यह पंचाप्सर नाम तड़ागा ॥ मांडकर्णि मुनि रचित सभागा
तिन तप कीन सहस दश साला ॥ भषि बर बात पैठि इहि ताला
तप लखि सकल सुरन दुख माना मुनि चाहत किहुं सुर का स्थाना
सब मिलि पंच अप्सरा प्रेरी ॥ तिन माया फैलाय घनेरी ॥+
मुनि मन स्ववस कीन छिन माही कीन स्वपति पंचन मुनि ताही

दो॰ ते मुनि सुत इहिं ताल मधि रमत रहत सुख साथ,
तिनके भूषन गान को है यह रव रघुनाथ ४३

सुनि प्रभु तहाँ बसे निशि पाई ॥ पुनि क्रम क्रम मुनि आश्रम जाई ॥
बसे वर्ष दश तहाँ सुजाना ॥ आये बहुरि सुतीक्षण थाना ॥
कछुक मद्रक संयत रघुराई ॥ बसे तहाँ भक्तन सुखदाई ॥
इक दिन मुनि ढिंग बैठि सुजाना ॥ पानि जोरि बोले भगवाना ॥
नाथ अगस्त्य बसत बन माहीं ॥ तिनको आश्रम जानौं नाहीं ॥
देउ बताय तहाँ अब जैहैं ॥ मुनि दर्शन करि कृत २ ह्वैहैं ॥

दो॰ रामचन्द्र न शुचि सरल सुनि बोले मुनि हर्षात॥
राम आजु हि मैं हौं यही कहन चहत हौ तात ४५

मन भावतु अबहीं चित चाऊ ॥ प्रभु ह्याँ तें चव जोजन जाऊ ॥
दक्षिण दिक इक आश्रम आही ॥ तहं अगस्त्य को भ्रात रहाही ॥
तातें इक जोजन पर सोई ॥ है अगस्त्य मम गुरु मुनि राई ॥
सो सुनि मुनिहि नाथ सिर रामा ॥ गमने इध्मवाह मुनि ठामा ॥४६

दो॰ सो आश्रम लखि राम ने कहि लछिमन सैं बात
ह्याँ पहिलें खल असुर जुग भ्रात इते द्विज घात ४७

वातापी इल्वल खल खानी ॥ इल्वल द्विज बनि संस्कृत बानी ॥
श्राद्ध भाखि द्विज नेवत लगावै ॥ वातापी सुमेष बनि जावै ॥+॥
तिहि हनि करि तिहि मांस रसोई ॥ द्विजन जिमावै इल्वल सोई ॥
जीमे पर कहि आवहु भाई ॥ तब सो उदर फारि कढि जाई ॥
हने हजारन द्विज इहि रीती ॥ तब देवन अति जानि अनीती ॥
कहि अगस्त्य सैं तिन तहँ आई ॥ भाख्यो सुमेष मुदित मुनि राई ॥
तब कहि इल्वल कढि मम ताता ॥ मुनि कहि जम घर गो तुव भ्राता
तब कोपि इल्वल मुनि पर धायो ॥ नयनानल करि ताहि जरायो ॥४८

दो॰ सुनि मुनि सैं मिलि वासी निशा कंद मूल फल खाय॥

मातमुनिहि शिर नाय प्रभु चले रजायसु पाय ४९

देख्यौ ऋषि अगस्त्य थल पावन॥ फूलि फले तरु लता सुहावन॥
बैर रहित खग मृग गन डोलैं॥ शुक पिकादि कोमल कल बोलैं
होम धूम करि भौ बन श्यामा॥ चीर माल थापित सब ठामा॥
दक्षिण दिसि लखि लखन सुजाना॥ ऋषि प्रभाव करि अभय निदाना
लाग्यौ बाढ़न विंध्य गिरीसा॥ रविमग रोकन धरि मन रीसा॥
सो अगस्त्य मुनि आय निवास्यौ॥ बढ़ैन अबलौं बचन प्रचास्यौ

दो० दीर्घ आयु तप तेज जुत है अगस्त्य मुनि राय॥
क्षमा दमादम शांति धर शुचि मन दीन सहाय ५१

ह्यां बसिहौं बन के दिन शेषा॥ करिहैं मुनि कल्यान बिशेषा॥
सुर मुनि सिद्ध यक्ष गंधर्वा॥ नियमित असन बसहि ह्यां सर्वा
कूट शठ निर्दय अरु पापी॥ हिंसक बसि ह्यां बचैन कापी॥
अल्पज्ञ तप करि इहिं पद मांहीं॥ लहै परम पद संसय नाहीं ५२

दो० चौंकाहि प्रभु सिय लखन सह मुनि अगस्त्य ढिंग जाय
नमि करि आशिर्वाद लहि बैठे आय सुभाय॥ ५३॥

कुशल प्रश्न करि भोजन दीना॥ सादर रामचंद्र सिय कीना॥+॥
पुनि आसन बैठाय अनूपा॥ हाथ जोरि बोले मुनि भूपा॥
हौ तुम एक आदि जग कारी॥ मूल प्रकृति है शक्ति तुम्हारी॥
सो माया तुव इच्छा पाई॥ महत्तत्व कौं रचे गुसांई॥+॥
तातें अहंकार उपजावै॥+॥ अहंकार तें गुन प्रगटावै॥
सात्विक राजस तामस सोई॥ विष्णु बिरंचि ईस तुम होई॥
जन हित लीला करन अनंता॥ निर्गुन तुमहि होत गुनवंता॥
सो तुव माया द्वै विधि रामा॥ विद्या और अविद्या नामा॥

दो० पुरुष अविद्या बान सब हैं प्रवृत्ति मग लीन
विद्या बस वर्ती मनुज मग निवृत्ति रत चीन ३९

रत संसार अबिद्या वारे ॥ बिद्या तुत निर्व धन सारे ॥+॥+॥
नामजपत तुव भक्त न माही ॥ छिद्या प्रगट त राम सदाही ॥
तातैं मुक्त भक्त तुव आही ॥ ज्ञान मुक्त सपने हू नाही ॥+॥
मुक्ति हेतु केवल सत संगा ॥ जातैं रुचि कै कथा प्रसंगा ॥+॥
सो मुहि देऊ सदा रघुराया ॥ हरन मोह ममता मद माया ॥
कवि गुलाव तुव भक्ति विहीना ॥ लहै न दर्शन परम प्रवीना ॥३६

दो॰ आज सफल मम जन्म औ भये सफल मख सर्व
दीर्घ काल तप सफल भौ लहि तुव दर्श अगर्व ३७

पुनि सुरपति ने धरे अनूपा ॥ राम हेत अक्षय बर रूपा ॥+॥
मुनि असि धनु सर नरकस दीने ॥ सादर करि प्रणाम प्रभु लीने
हँसि प्रसन्न ह्वै बहुरि मुनीशा ॥ बोले मृदुल सुनहु जगदीशा ॥
मग श्रम सहि आये मो ठामा ॥ कीन्ह मोहि प्रभु पूरन कामा ॥
राज कुंवरि सिय अति सुकुमारी ॥ आई वन संग प्रेम प्रचारी ॥
सहन महा दुख मग बन माही ॥ रह हर्षित जिमि रघुवर याही ॥
यह तासीर तियन की आही ॥ रह सुखमें दुख देखि पलाही ॥
तड़ित चपलता असि पै नाई ॥ रहन तियन मैं पवन तुराई ॥३८

दो॰ सियहु न दोष नरहित है महा पूज्य पति लीन ॥
ज्यौ धनी यज्यौं सुरनमें अरु धर्तौं अघ हीन ३९

पुनि कहि तुव कर्तव्य बिचारी ॥ पठवौ अनन विम्ब हित कारी ॥
ह्यां तें द्वै जोजन इक ठाँऊ ॥ पावन पंचवटी तिहिं नांऊ ॥
तहँ बसि पालहु ऋषिन समाजा ॥ हनि गन असुर करहु सुर काजा
सो सुनि मुनि चरनन सिर नाई ॥ बोले विमल बचन रघुराई ॥
प्रभु कृत कृत्य भये हम आजू ॥ कौन प्रसंसा तुम मुनि राजू ॥+॥
यौं कहि बार बार शिर नाई ॥ गमने हर्षि रजाय स पाई ॥४०

दो॰ पंचवटी के मार्ग मैं लख्यौ गीध वल धाम ॥

महाकाय तिहिं प्रभु कह्यौ कोतू कहि कुल नाम

बोल्यौ गीध राम हित बाना ॥ मैं हौं दशरथ मीत सुजाना ॥
मानि महामति पितु को मीता ॥ पितुवत पूज्यौ राम पुनीता ॥
बहुरि गीध बोल्यौ हर्षाई ॥ सुनहु मोरि उत्पति रघुराई ॥
पूर्व काल मे ये दश साता ॥ भये प्रजा पति शुचि मन ताता ॥
कर्दम प्रथम विकृत पुनि सेषो ॥ संश्रय पुनि बहुपुत्र बिशेषा ॥
स्थाणु मरीचि रु अत्रि सचेता ॥ क्रतु पुलस्त्य अंगिरा प्रचेता ॥
पुलह दक्ष विवस्वान निदाना ॥ अरिष्टनेमि रु कश्यप जाना ॥
भइ दक्ष के साठि सुताही ॥ + ॥ तिनतें कश्यप तेरह ब्याही ४२

दो० अदिति दिति रु दनु कालका ताम्रा क्रोधवसा रु
मनु अनला इन आठ की संतति वर्णौं च्यारु ४३
जने अदिति तेतीस सुर आदित्य रु वसु आन ॥
रुद्र रु अश्विन अथ जने दिति ने दैत्य निदान ४४

अश्वग्रीव भयो दनु बालक ॥ जने कालका नरक रु कालक ॥
क्रौंची भासी श्येनी आना ॥ धृतराष्ट्री रु शुकी बलवाना ॥
पांच सुता ताम्रा उपजाई ॥ तिनतें उपजे खग समुदाई ॥
क्रोधवसा के भइ दश कन्या ॥ तिन उपजाये पशु अहि धन्या
मृगी हरी मृगमंदा श्वेता ॥ भद्रमदा कद्रु को सचेता ॥
मातंगी सुरसा शार्दूली ॥ + ॥ सुरभी दश भगनी अनुकूली ॥
मनु के उपजे मनुज अपारा ॥ अनला के तरु अखिल उदारा
सुता शुकी की नता निदाना ॥ नता सुता बिनता मति वाना ॥

दो० बिनता के सुत दोय भे गरुड अरुण विख्यात
अरुण सुवन संपाति अरु मैं जटायु भौ तात ॥४६

रहिहौं मै तुव वास सहाई ॥ जब सह लषन सिकारहि जाई
तब करिहौं सियकी रखवारी ॥ रहि करि आश्रम शून्य मझारी

सो सुनि राम ताहि सनमान्यौ ॥ हर्षित भये पिता सम जान्यौ ॥
संग लेय तिहिं कीन पयाना ॥ गये गोमती तीर सुजाना ॥
पंचवटीआश्रम रुचि राई ॥ लखि लछमन सें कहि रघुराई
समिध पुष्प कुशजल ह्वै नीरा ॥ लता वृक्ष महि मन हर धीरा ॥
रचहु कुटी तंहँ बिसद बिशाला तुहि मुहि सियहि सुखद सबकाला
लहि प्रभु संमति कुटी बनाई ॥ कुशकाश रु शर पर्ण न छाई ॥
दो॰ महि लवारि अस्नानकरि अमल फूल फललाय ॥
बास्तुशांति करि बर कुटी दीनी प्रभुहि दिखाय ॥+॥
लखि प्रभु महा मनोहर ताई । ह्वै हर्षित लखनहिं उर लाई ॥
बोले महत्त कर्म लखि तोरा ॥ महा प्रसन्न भयो मन मोरा ॥
आतिधर्मज्ञ कृतज्ञ सुजाना ॥ कला कुशल सबबिधिबलवाना
तें करि काम मोर मन भायो ॥ सदन त्याग पितु मरन भुलायो
दो॰ यौं भ्रातहि सनमानि सिय अनुज सहित रघुराय
बसत भये तंहँ गीधजुत कबि गुलाब हर्षाय ५०
इक दिन लछमन कहि मम नाथा कहु प्रभु मोहि मुक्तिप्रद गाथा
बोले राम सुनहु प्रिय भाई ॥ माया कल्पित विश्व सदाई ॥
दीषत यौं आत्मा में ताना ॥ रज्जुहि सर्प कहत अज्ञाना ॥
अस नस कल है सुन्यौ लख्योऊ जैसें स्वप्न मनोरथ दोऊ ॥+॥
जीवतु बुध्यादिक तें आना ॥ परमात्मा सो आहि निदाना ॥
ताको ज्ञान होइ इहि रीती ॥ मान दंभ हिंसादि अभीती ॥+॥
पर कृत निंदा सहि ऋटजु रहई ॥ मन बच तनु करि गुरुहित गहई
बाहरि भीतरि शुद्ध सदा रह ॥ सत क्रियादि में थिरता अति गह
दो॰ ॥ कायबचन मन दमन करि विषय चाह तजि देय
अहंकार तजि जन्म अरु जरा मरण सुधि लेय ५२
पुत्र कलत्र धनादिक माहीं ॥ होय न सक्त विरक्त रहाहीं ॥+॥

इष्ट अनिष्ट प्राप्ति की वारा ॥ धरै चित्त समता अति वारा ॥
राखै मोमैं भक्ति अनन्या ॥ प्राकृतजन रति तजि अतिधन्या
आत्मज्ञान हित रत उद्योगा ॥ करवेदांत अर्थ मैं योगा ॥+॥
इनतैं होइ ज्ञान बिज्ञाना ॥ सोहै जीवन मुक्त निदाना ॥
पै मम भक्ति विमुख कौं ताता ॥ है अति दुर्लभ मुक्ति बिख्याता
ज्यौं सदृगङ्ग कौं निशि नाहि भासै ॥ दीप धरें सब वस्तु प्रकासै ॥
यौं मम भक्तिजुक्त कौं भाई ॥ भलीभांति आत्मा दरशाई ५३

दो० है कारण मो भक्ति को मो भक्तन को संग ॥
मो सेवा मो जनन की सेवा करन असंग ५४

ग्यारसि व्रत करि कर जागरना ॥ ममउत्सव ठानै मन हरना ॥
श्रवन पठन व्याख्यान अपारा ॥ करै सदा मो गुणानु कारा ॥
रटै नाम पूजन मन धारै ॥+॥ तब मम भक्ति हृदय बिस्तारै
तातैं होय ज्ञान बिज्ञाना ॥+॥ मुक्ति तासु कर बसै निदाना ॥

कबिवचन

दो० पंचवटी मैं बसत इमि पावत हर्ष अनंत ॥
बीती बर्षा शरद ऋतु आवत ऋतु हेमंत ५७

बडे प्रात इक दिन रघुबीरा ॥ जात लषन सिय सहसरि नीरा
बोले लषन लषङ्ग रघुराई ॥ चहुं दिशि हिम ऋतु की सरसाई
सस्यवती महि अति नीहारा ॥ भौ जल दुखद अगिनि सुखकारा
असन पाक गोरस अति आही ॥ विचरत भूपति देशन माही ॥
रवि लहि दक्षिण भई अपीची ॥ तिलक हीन तिय तुल्य उदीची
लहि तुषार भो धूसर भानू ॥ श्वास अंध आदर्श समानू ॥
धून्यो ज्यौं न्हतु बार मलीना ॥ लसत न ज्यों सिय घाम विलीन
इह ओदित नीहार मकारा ॥ रवि शशि सम लागत सुकुमार

दो० शीतल सघर सहिम मिलित पश्चिम पवन तुसार

बहत सदा पर अति दुखद है प्रभात की बार॥
आफ उदल जब गोड़न मांही ॥ ओस बिंदु मुक्तन सम आहीं ॥
उदित भानु अति राजन क्यारी ॥ सारस क्रौंचन के नद बारी ॥
दीसत हिम व्यापित बन छीना ॥ शीत दग्ध तरु पल्लव हीना ॥
भोहिन अल्प मध्य सुख देना ॥ शीत बली भइ दीरघ रैना ॥+॥
दो० मत्त त्रषित जल पावहित द्विरद ताल ढिग जाय
अति शीतल जल छुवत ही लेत स्वहस्त हटाय ६०
जल चर खग हू थित जल तीरा ॥ धसैं न शीत बिकल सर नीरा ॥
पुष्प रहित अति हिम तम साजी ॥ सूतीसी दीखत बन राजी ॥+॥
भाफ भर्यो जल सारस नीरा ॥ सोहत सरिता शीत सरीरा ॥
जरे पुष्प पल्लव बिन्हि नाला ॥ दीसत कौंलन के कलना ला ६२
दो० शीत भरी अतिसय दुखद ऋतु हेमंत प्रकार॥
करत भरत तप अवधि मैं तुम्हरो भक्त उदार॥
त्यागि भोग महिमा नर जाई ॥ महि सोवत मुनि अन्नन खाई
बड़े भोर सरजू जल माही ॥ करत भरत स्नान सदाहीं ॥
अति सुख लायक तनु सुकुमारा वह तप बन अति परत तुषारा॥
धसि हिम शीतल सरजू नीरा ॥ करत भरत जप कस रघुबीरा॥
कमल नयन श्यामल श्री माना॥ धर्म सत्य रत अति मति बाना॥
प्रिय मृदु भाषा सरल सुभाऊ ॥ नाजितय सब सुख कोसलराउ
जीत्यो स्वर्गहि भरत स धर्मा ॥ घरवासि कारि तुम सम बन कर्मा
लोन स्वभाव मात को लोका ॥ भरत कीन मिथ्या यह कोका ६३
दो० पति जाको दशरथ न्रपति साधु भरत सुत तास
क्योंकरि माता केकयी क्रूरा भइ प्रकास ॥६४
धार्मिक लछमन की सुनि बानी ॥ सत्य सनेह विनय नय सानी ॥
सहि न सके जननी परि बादा ॥ बोले कोमल सहित प्रसादा ॥

तात तोहि माता कैकेयी ॥ नाहिं निंदा कर्तव्य कदेयी ॥
रघुकुल नाथ भरत की गाथा ॥ कहहु सदा ल छमन सुख साथा
मो मति दृढ़ वृत जुत है भाई ॥ तदपि भरत हित कर बिकलाई
मृदुल मधुर प्रिय अमृत समाना ॥ सुमरौं भरत वचन नित जाना
कब ह्वै है वह दिन सुखकारा ॥ मिलिहैं जब भ्राता हित कारा ॥
यों बिलपत पुनि २ रघुबीरा ॥ पहुंचे सरि गोदावरि तीरा ॥ ६५

दो॰ करि सनान सिय लखन जुत तर्पि पितर रघुनाथ ॥
करि अस्तुति रवि उदित ही चल आये सब साथ ६६
कहत सुनत विस्तान तहँ धर्म कथा न्रप नीति ॥
सिय ल छमन मुनि बालन सों इक संवत गो बीति

रावण की भगनी तिहिं वारी ॥ सूर्पनखा आई निशिचारी ॥ ६७
सु धमा धाम काम सम रामा ॥ श्यामल तनु भ्रकुटी बर बामा ॥
चंद बदन दृग कंजल जाना ॥ महा बाहु उरपति उप माना ॥
गज गामी न्रप चिन्ह अपारा ॥ जटा मुकुट धर अति सुकुमारा ॥
नख सिख सुभग देषि रघुबीरा ॥ काम विवस ह्वै भई अधीरा ॥
धरि वर रूप राम ढिंग जाई ॥ कुटी माहिं बोली मुसकाई ॥
मैं रीझी लषि रूप तुम्हारा ॥ करो मोहि तुम अंगी कारा ॥ ६८
हौं रावण भगिनी बर वामा ॥ मोहि बरें ह्वै हौ सुष धामा ॥

दो॰ कहि प्रभु मैं तिय सहित हौं है यह मुहि अति प्यारि
तातैं तोहि न होय सुख असह सौति दुख नारि ॥

बोली तिय आवै हित चाहो ॥ ताहि तजें ह्वै दोष महा हो ॥ ६९
मैं हौं काम कलान प्रवीना ॥ मुहि भजि त्यागि याहि रति हीन
सुनि कहि राम बहुरि इमि बानी ॥ नहिं परसौं पर नारि सयानी ॥
तातैं कहुं इक आन उपाऊ ॥ मो समान तुहि अनुज बताऊं

दो॰ सब लक्षण संपन्न शुचि लक्ष्मण शील महाहि

तिहिं संग नारी नाहि
है बाहिरजा नाहि भजि तिहिं संग नारी नाहि
...थ लखन हिग मृदु मुसकाई॥ कहि तुम मम पति होउ गुसाँई॥
...हि लछु मनमें उन कर चेरा॥ दासी भये कौन भल तेरा ॥+॥
...तिं त्रिभुवन पति की वाला॥ रघुपत्नी बनि हो सुख शाला॥
...वर रूपा लघु वय बारी ॥ क्है हैं तुव वस कट असुरारी ॥
...सुनि प्रभु हिंग गइ लछमन प्रेरी॥ समुझि हास्य रस भौंह तरेरी॥
...सीस रूप धारि तिय पै धाई ॥ तब बोले रघुनाथ रिसाई ॥
...क्रूर कुटिल शठ सें परि हासा॥ नहि करिये यह है फल तासा॥
...सुनि रिस रोकि कह्यो जग पाला॥ डरपावति सीतहि क्यों वाला॥
...दो० तोहि वताये मैं अनुज तूं आई तिहिं टारि ॥
पुनिजा ताही के निकट करि है तोहि स्वनारि
सुनि बोली मैं गइ तिहि पासा ॥ फिरि आई इहि हेतु प्रकासा॥
तुव अनुरूप आहि तुव भ्राता ॥ सुनें न क्यौंहू एकहु वाता ॥+॥
तू अनुजहि चह मोहि विवाहो॥ तो द्वै आखर लिखिदे ताही
लिखी लखन कुटिला है नारी॥ नाक कान हनि देउ विडारी॥
दो० प्रभु लिपि लखि ली ज्ये लखन नाक कानतिंहि काटि
मनु दशशिर भुजबीस को लियो सकल बल छाटि
बीते द्वादश वर्ष वन लगत तेर वौं साल ॥+॥
मार्ग शुक्ल एकादशी सूर्प नखा तिहिं काल ॥
...रोइ कही हा दशशिर भ्राता ॥ कुंभ करण अति बल बिख्याता
हा गुण खानि बिभीषण भाई॥ महा कष्ट मे करहु सहाई ॥
यों बिलपति खर दूषन पाहीं ॥ जाय पुकारि परी महि माहीं॥
खर कहि तुव असि गति किन कीनो किहिं अंगुरी अहि मुखमें दीनो
काल पास निज कर गरडारी ॥ कोजैहै जम पुर विष धारी ॥
काम रूप तूं सबल महाही ॥ को अस बली तोहि जिहिं दाही

तिँहिँ महि डारि सरन तनु भानी। करिहौं गीध काक मिज मानी
सुनि खर बचन सकोप सम्हारी ॥ कही कथा रघुबर की सारी ७
दो० पुनि कहि भ्राता तू जबै हनिहै तिनहि सुखेन ॥
तब मै तिनको माँहि परत पीहौं रुधिर सफेन ७४
यह मम प्रथम काम है भ्राता ॥ करहु बेगभारि हर सुरघाता।
सो सुनि खर ने प्रवल चतुर्दस ॥ पठये तिनहि हतनहित राक्षस
कहि फट न्टप सुत मारि गिरावो॥ मम भगिनी को रुधिर पिवावो
ते करि कोप राम पै धाये ॥ तिनहि मारि प्रभु भूमि गिराये
पुनि गइ सूर्पनखा खर पासा॥ सो सुनि दल सजि चल्यौ अत्रा
असगुन अमित भये मग माही॥ अति असंक माने तिँहिँ नाही
छप्प० पृथुग्रीव दुर्जय रु श्येन गामी रुधिहंगम ॥
यज्ञ शत्रु सर्पास्य हेम माली समम छम ॥
परुष महा माली रु काल कार्मु करु धिराशन
करवी राक्षस सचिव द्वादश खरके मन भावन।
बढि चल्यो सेन सैं खर तबै आस पास येऊ भये
करि क्रुद्ध उद्ध भट जुद्ध हित रामचंद्र के ढिंग गये
दो० स्थूलाक्ष रु त्रिसिरा अपर महा कपाल प्रमाथ ॥
है कराल च्यारउ चले ये दूषन के साथ ७७
तिनहि देषि सिय सहित गुसाँई॥ लषनहिँ दिय गिरि गुहा पठा
कवच धारि धनु शर धरि हाथा॥ लगे लरन तिन सैं रघुनाथा।
प्रथम सहस सर खर ने मारे ॥ पुनि सब असुरन शस्त्र प्रहारे
ते सब राम काटि रज कीने ॥ पुनि शत सहस बान प्रभु दीने,
होन परस्पर शस्त्र प्रहारा ॥ भागे असुर राम सर मारा ॥
दूषन तिनहि बिसारि बहोरी ॥ आयो कोपि राम पै दौरी ॥ ७
गरजि गरजि भट अगनित धाये॥ अस्त्र शस्त्र तरु गिरिवर साथे।

काटि राम रजसम सब कीने॥ तब खल असुर भये मद हीने॥
दो॰ बहुरि राम गांधर्व सर छाडि सहस करि दीन॥
सेन पदूषन सहित दल पांच सहस किय षीन ॥७९
पुनि प्रमाथ स्थूलाक्ष स क्रोधा॥ महा कपाल तीन अति जोधा॥
तिनहू अस्त्र शस्त्र बहु डारे ॥ छिनमहि राम मारि महि पारे॥
खर सुनि पांच सहस भट हानी॥ सचिवन सहित चल्यौ अभिमानी
कोपि कोपि तिन सस्त्र चलाये॥ काटि काटि रघुनाथ टलाये ॥
पुनि करि कोप राम सर मारे ॥ तुरतहि खर भट सकल संहारे
पुनि त्रिसिरा कौं मारि गुसांई ॥ खर सैंन लरन लगे रघुराई ॥
तिहिं खल प्रभु को कवच विदार्यौ तव प्रभु कोपि ताहि महि पार्यौ
इंद्र नमुचि बल वृत्र संहारा ॥ हर अंधक त्यौं प्रभु खर मारा ८०
दो॰ जन स्थान वासी गये चौदह सहस नसाय॥
ज्यौं करका भषि ब्राह्मणी अंतक सदन बसाय ८१
कछुकम घटिका तीन मैं मारे राम उदार ॥
सुमन वृष्टि नभतैं भई दुंदुभि बजे अपार ८२
चंद कला सीता लखन आये आश्रम माहि॥
देखि पराक्रम राम को वाढ्यौ हर्ष महाहि ८३
भागि तहांतें गयो अकंपन ॥ जाय कथा सब कहि रावनस
सुनि कहि राम कोपि सर धारै॥ तौ पूरन सरिवेगाहि टारै ॥+
करै अकास हिन षत बिहीना॥ अवनि उधारै दुःखबिलीन
वेला तजत जलधि कौं डढै ॥ सर सजि वात प्रवाहहि पाढै
तातैं तून जौति सक रामहि॥ ज्यौं अघ कारक नर सुर धामहि
है तिहि नाशक एक उपाऊ ॥ करहु बेग चित लाय सुनाऊं
तासु तिया सीता अति लौनी ॥ है श्यामा सम तनु गज गौनी
नगी पन्नगी देव कुमारी ॥ नहि तिहिं सम कानरी बिचा

दो॰ तिंहिं हरिलावै यत्नकरि बिपिन अचानक जाय
मरै राम ताके बिरह पुनि लषनऊ मरि जाय ८५
सुनि नभचर रथमै चढ़ि धायो ॥ झट मारीच सदन सो आयो ॥
कहि रावन इक नृपसुत रामा ॥ खल खरादि भट हने नसामा
हरि लाऊं तिंहिं तिया किशोरी ॥ होहु सहाय तात तू मोरी ॥+॥
सुनि बोल्यो मारीच प्रवीना ॥ सिया हरन मन किंहिं तुहि दीना
सोहै मित्र रूप अरि तोरा ॥+॥ राक्षसकुलहि चहत जलबोरा
जो यह तुहि उत्साह करावै ॥ सो तोपै अहि डाढ परावै ॥८६
दो॰ कानै अनुचित कर्म खलु सिखयो कठिन नवीन
रावन तुव सुख सोत यह किंहिं मस्तक सरदीन
सुद्धवंश भव सुंड वर तप मद रद जुग हाथ ॥
रन सन्मुख कोउ लखि न सक गंधकरी रघुनाथ
रन बन थित मध्यम बयस राक्षस मृग मृगराय
सरपूरण तनु डाढ आसि तिंहिं सूतहि न जगाय ८८
चाप ग्राह सर ऊर्मि गन भुज बल पंक अथाह
घोर राम रन जलधि मे जानि परि राक्षसनाह ८०
समुझायो मारीच को रावन ह्यो यहि रास ॥
आयो लंका मे प्रविशि बैठ्यो सभा स त्रास ॥८१
सूर्प नखा हू लखि खर नासा ॥ जलद नाद सम रोय प्रकासा
महा दुखित रावन ढिंग आई ॥ देख्यो सिंहासन थित भाई
लसन सचिव गन माझ महाना ॥ सुरगन माहि सुरेस समाना ॥
करत बिलाप गई तिंहिं पासा ॥ नाक कान हत निपट उदासा ॥
को पित होय रोय दुख दीना ॥ बोली कठिन बचन छवि छीना
मत्त भोग रत लुब्ध अमानी ॥ काम विवस भूपजु अभिमानी
मानत ताहि न प्रजहित कारा ॥ चिताज्वाल कौं जिमिं संसारा ॥

समय त्यागि जो करै स्वकाजा॥ राज्य सहित बिनशै वह राजा॥
दो० अनुचित कार नियादि बस नरपति मौसर टाल।
तजत ताहि सब लोक जिमि नदी पंक को ब्याल ९३
कटु बचनी गार्बित शठ रु सू मप्रमत्त स्वभाय ॥
बिपति परे अस स्वामि की कोउ न करै सहाय॥ ९४
सचिवन मत का मन करै भयतें भय नल हाय ॥
छूटि राज्य कै शीघ्रही त्टरा सम दीन सुराय ९५
शुष्क काष्ट हू काम कर लोह रजऊ कर काम ॥
भ्रष्ट थान महिपाल सें होय न तन कछु काम ९६
ज्यौं हैं भोगे बसन अरु मर्दी माला सोय ॥
त्यौंहि निरर्थ समर्थ हू राज्य भ्रष्ट नृप होय ९७
अप्रमत्त इंद्रिय जित रु धर्मसील सर्वज्ञ ॥+॥
थिर नृपता लह भूप सो पर उपकारि कृतज्ञ ९८
तू सब दोषन सहित है सब गुण रहित निदान
राज्य भ्रष्ट अब शीघ्रही कै है असुर अयान ९९
दशरथ सुवन नाम रघुबीरा ॥ तिंहिं खरादि मारे रण धीरा ॥
लखिन सकौ तू चर चख द्वारा॥ सोवन है मद वस जित दारा ॥
सुनि खरादि बध राम प्रतापा ॥ भौरा बन मन अति संतापा ॥
भगनी बिकल देखि दुखसानी॥ रिस भरि बोल्यौ तिंहिं सनमानी
दो० कहहु रूप बल राम को शस्त्र खरादि बिनास॥
तोहि बिरूपा कीन सो भाषहु दोष प्रकास१०१
बोली राघव श्याम शरीरा ॥ बाहु बिशाल धरे मुनि चीरा॥
काम सरूप नयन अरु नासा ॥ आनन अमल कमल मद हासा॥
वृषभ कंध वल सिंह समाना॥ शक्र चाप सम चाप निदाना॥
ताहि कर्षि सर करत बिभागा॥ निकसत मनहु महा विषनागा॥

खैंचत शरनहि दीषत चापा॥ मरतहि दीषत सुभट ग्रमापा॥
हनै सस्य कौं कर का धारा॥ त्यौं राघव सर ग्रसुर संघारा॥
एक मोहि टारी बल वाना॥ नियबध शंका जानि सुजाना॥
तासु ग्रनुज है इक समनाही॥ मति गुण विक्रम तेज महाही॥
दो॰ भक्त प्रेमरत विजय प्रद शुचि मन गौर शरीर॥
प्रानह्र ते प्रियराम की दक्षिणभुज रण धीर॥२०३
राम प्रियासीता मृदु बैना॥ शशिबदनी मृग सावक नैनी॥
कनक बरन तनु ग्रतिसुकुमारी॥ श्री सम सोहत विधिन सकारी॥
रक्त तुंग नख नासा कीरा॥ उन्नत कुच रदना वलिहीरा॥
शील शनी सब भांति ललामा॥ तिंहि नख सम नहिं तिहूं पुरवामा॥
भरै ग्रंक मैं जाहि सुवाला॥ तिंहिं पग रज सम नहिं सुरपाला॥
सो तुब लायक लखिबर नारी॥ ग्रतिउत्तम तिहूं लोक उजारी॥
तुब ढिंग लावन हित मति धारी लागी करन उपाय मुरारी॥+॥
लछमन नाम राम के भ्राता॥ तिंहिं ग्रघ नासा कान निपाता॥
दो॰ तू लखिहै भ्राता जबै सीताहि बन मैं जाय॥
सुरी किन्नरी ग्रासुरी कोउन ग्रैहै दाय॥२०५
मन भावै तौ करि उपचारा॥ जाय विपिन मैं लखि इक बारा॥
मो मत तौ हरि ग्रानि किशोरी॥ पुनि ग्रसि दीठि न परिहै तोरी॥
सो सुनि सचिवन देय बिदाई॥ ग्राप इकांत निजासन जाई॥
सिया हरन मत मन ठहरायो॥ इकलो मन जब रथ चढ़ि धायो॥
दो॰ मग मैं नाना बाग बन गिरि मुनि थल सरि नाल॥
देखत देख्यो सिंधु तट बट को वृक्ष बिशाल॥२०७
घन सम श्याम सघन ग्रलि रूरा॥ नाम सुभद्र ऋषिन जुन पूरा॥
शत शत जोजन शाखा तासा॥ तिंहिं ग्रबसर तंह पन्नग नासा॥
ग्राये गज कच्छप गहि भारा॥ बैठे वट पर करन ग्रहारा॥+॥

त्रयके चार भंग भो डारा ॥ तिंहिं तर मुनिगन नशत निहारा
गहिं सो शाखा गरुड़ उड़ाये॥ मगमें गज कच्छप ते खाये ॥
पुनि शतजोजन स्कंध गिराई॥ दियो निषाद देश बिनशाई॥
तिंहिं लषि दशमुख हियहर्षायो। झट मारीच सदन पुनि आयो।
नमि पूछी मारीच दयाला ॥ कसभा पुनि आगमतत्काला ॥
दो॰ कहि सब कथा खरादि की सूर्पनखा को हाल॥
पुनि कहि चलि मो संग ज्यों हरौं राम की वाल१०९
हूजै नकनक कुरंग बिचित्रा॥ सीता सन्मुख बिचरि पबित्रा॥
लख सीता प्रेरित दोउ भाई ॥ तुहिं मारन चलिहैं हर्षाई ॥
तब मैं सियहिं लायहौं ताता॥ करझ बिलंब न उठि हर्षाता ॥
सो सुनि बिकल होय मारीचा॥ बोल्यो प्रभु आई मो मीचा ॥
राम तेज पावक मर आही॥ जरिहैं असुर सलभ धसि ताही
जो सुख चाहो तौ तुम ताता॥ छाड़झ राम बैर की बाता ११०
दो॰ बाल बयस मैं मुनि सदन बिन फर मार्यो तीर
तिहिंते मैं आयो इहां अति बल है रघुबीर १११
अबहू मैं दंडकबन माहीं ॥ धरि मृगरूप कराल महाहीं॥
होय असुर संग लै अति घोरा॥ भषत ऋषिन बिचरौंचझं ओरा
तहं ऋषि रूप राम मुहिं पायो॥ सिय लछमन जुत सरस सुहायो
तब मैं पूर्ब बैर उर आनी॥ गयो तिनहिं मारन अभिमानी
तिन त्रयलखि छोरे त्रय बाना॥ ते द्वै मरे बचे मो प्राना ॥ + ॥
तबतें मुनि बनि छाडि कुकर्मा॥ रहौं इहां नियमित धरि धर्मा
अबसु हि नभ जल थल सब ठोरा। दीषत राम धनुर्धर घोरा ॥+॥
सोवत स्वप्न माहिं तिंहिं देषी॥ उठौं पुकारि अचेत बिशेषी ११२
दो॰ तातें सिय अभिलाष तजि राम बैर निर्वारि ॥+॥
भवन गवन रावन करझ निज कुल कुशल विचारि

काहि राव न तू चलि करि काजू देहौं अर्ध मोर तुहि राजू ॥
नाहि चलिहै तु भानिहौं माया॥ सो सुनि डराय लग्यौ तिंहि साथ
तिंहि संग ले प्रभु आश्रम गयऊ॥ तँह मारीच बिमल मृग भयऊ॥
रजत बिंदु जुत कनक शरीरा॥ रत्न सींग मणि खुर गति धीरा॥
नीलरत्न लोचन मन हारा॥ तडित प्रभ्रा सम प्रभा अपारा॥
अस माया मृग टहरत धायो॥ सीता सन्मुख झट चलि आयो॥

दो० तबही करी प्रवेस प्रभु सिय कँह पावक माहि
राखी छाया मात्र यह लखन न जानी नाहि ११५

माया सीता लखि मृग ताही॥ हसि बोली पति सौं अतिचाही
देखहु नाथ मनोहर हिरना॥ मुहि मोहत है इत उत फिरना॥
लखन कही मारीच न होई॥ अस मृग लख्यो सुन्यो नहि कोई
इहि मृग बनि मृगया के माही॥ हने बहुत नृप सो खल आही॥
पुनि सिय बोली विस्मय मानी॥ याहि पकरि आनो दिन हानी॥
बनवासांत अयोध्य ले जैहैं॥ भरतादिक लखि बिस्मय पैहैं॥

दो० जियत न आवै हाथ तो मारि हीन कौ राम ॥
देहु लाय करिके मया मोकौं उत्तम चाम ११७

राम बचन

लखन लखी तै सिय अभिलासा॥ माँगत मृग के चर्महि तासा॥
तातै मै जाऊं बन माही॥ गहि लाऊं कै हनि मृग याही
है मारीच जु मृग तनु धारी॥ तउ मारब उचित नहि अघकारी
चले राम सुर काज बिचारी॥ लखन नहि सौंपि सिया रखवारी

दो० असि धनु सर तूणीर धर आवन लखि रघुराय
माया मृग प्रगटत दुरत भय भरि चल्यो पलाय ११८

बन मैं दूर जाय मृग मार्यौ॥ तिहिं प्रभु बच सम बचन उचार्यौ
हा सीता लछमन इमि बानी॥ कह्यौ उच्चस्वर आरत सानी॥

तजि मृग रूप रूप निज धारी ॥ रुधिर लिप्त महि यसौ सुरारी ॥
तब प्रभु मन बिचार इमि कीना ॥ सिय लछमन सुनि ह्वैहैं हीना ॥
तातैं शीघ्र आन मृग मारी ॥ तिँहिं पल गाँहि गमने असुरारी ॥
सीता प्रभु बच जानि अकुलाई ॥ लछमन सौं बोली मुरझाई ॥
दो० संकट है तुव भ्रात कौं जाऊ वेग तिहिं पास ॥
आरत सुर मुनि राम को होत मोर मन त्रास १२१

लछमन बचन

तिँहिं कहि राम चराचर ताता ॥ तिनको सोच करहु जनि माता ॥
पन्नग असुर देव गंधर्वा ॥+॥ जीतिन सक रामहि मिलि सर्वा ॥
समर अवध्य आहिं रघुबीरा ॥ तजहु सोच मन धारहु धीरा ॥
है यह बच कोउ राक्षस केरा ॥ फिरत बिरोधी असुर घनेरा ॥
गये समाल सौंपि प्रभु मोही ॥ तातें नहिं जाऊं तजि तोही ॥
लखन बचन सुनि कोपित होई ॥ बोली कठिन बचन भय भोई ॥
तू पापी शठ है कुविचारा ॥ चाहत भ्रात मरन निर्द्धारा ॥
पुनि चाहत मुहि ग्रहन अगूढा तातें जात न प्रभु ढिंग मूढा ॥
दो० पै मैं श्यामल अमल तनु कमल नयन की नारि
परसौं पुरुष न आन कौं रघुबीरहि निवारि १२३

अब तुव आगे तजि हौं प्राना ॥ धसि जल मैं कै करि विष पाना ॥
अगिन प्रविसि कै गर धरि दामा ॥ नहिं जीवौं छिन हूं बिन रामा ॥
यौं कहि रोय विलापि महाही ॥ कूटन लगी उदर दुख दाही ॥
तिँहिं लखि लखन होय दुख दीना ॥ बोले जोरि हाथ हित हीना ॥
अनुचित शंका करत अयानी ॥ तैं मो भक्ति रीति नहिं जानी ॥
न्याय पथस्थ राम बच धारी ॥ मैं तुव से बारत हित कारी ॥
धिक तुहिं कहत बचन विपरीता ॥ दीषत नाश निकट तुव सीता ॥
अब मैं जाऊं जहां प्रभु जाना ॥ कबि गुलाब हो तुहि कल्याना ॥

दो० वनदेवी वन देव कौं सौंपि तासु रखवारि ॥
लखन चले रघुनाथ ढिंग चंद्रकला मन मारि
माघ शुक्ल चौदशि दिवस विंद मुहूर्त मझार ॥
लखनहि गमनत आश्रमाहि लखि निर्जन निर्धार
मुनि तनु धारि रावन तहँ आयो॥ ब्रह्म घोष करि हिय हर्षायो ॥
जानि महा ऋषि सिय हर्षानी॥ अर्घ्य पाद्य पूजा अति ठानी ॥
सिय छबि निरखि कामबस होई॥ बोल्यो कोमल छल उर जोई
को तू सुंदरि सुमुखि सलोनी ॥ उमा रमा कि गिरा गज गौनी ॥
देवी यक्षी रति गंधर्वी ॥+॥ मूर्ति अप्सरा सिद्ध स गर्वी ॥
तुव पति शिव वसु मरुत कि वारी सुहि दीसत है देव कुमारी २७
दो० उत्तम सुवरन वरन वर तनु लावन्य सथान ॥
मै महि मंडल मै तिया लखी न तोसो आन ॥
शशि सम आनन अमल अपारा॥ भाल अर्ध शशि मन मद हारा।
भृकुटी कुटिल मदन धनु टारा ॥ नयन बिशाल असित अति तारा॥
शुक सम नासा अति मन हारी॥ गोल कपोल बिमल दुति धारी॥
अधर बिंब सूक्षम रत नारे ॥ रद सम सित चिक्कन अनियारे
चिबुक मनोहर दर दर ग्रीवा॥ बाहु लता कर तल छवि सीवा
कुच उन्नत मुख पीन कठोरा ॥ ताल फलोपम चिक्कन तोरा ॥
तिन पर मणि मुक्तन के हारा॥ लेत चोरि चित अति छवि वारा
जघन विशाल पीन अति नीका॥ करि कर तुल्य ऊरु हर हीका ॥
दो० रूप बयस सुकुमारता निर्जन बिपिन मझार॥
बास तोर मृग लोचनी मोमन करत बिकार ॥
उचित न तोहि बाम इहिं ठोरा॥ नगर महा मंदिर थल तोरा ॥
कस आई इकली इहिं थाना॥ कहु सो कारन मोहि सुजाना॥
राक्षस थल ह्याँ दवन आवैं ॥ मृग वृक सिंहादिक सरसावैं ॥

तिनतें भय मानत नहिं बाला ॥ कोहै किन हैं तुव रखवाला ॥
दो० सुनि सीता मृदु मधुर बच ताहि महा क्रोधधारि
आदिहि तें सब आपनी कही कथा बिस्तारि १२८
पुनि कहि सानुज मो पति आही ॥ उनचालीस बर्ष वय ताही ॥
अति समर्थ विजयी अरि हारा ॥ अस्त्र शस्त्र वित् अति मति बारा
अब पति देवर गे बन माही ॥ मृग वधि ऐहैं शीघ्र इहांही ॥
लावहिंगे पल फल बिधि नाना ॥ करिहैं सब बिधि तुव सनमाना
दो० अब कहु मुनि तुम कौन हो नाम जाति निज दाम ॥
फिरहु दंडकारन्य में द्विज इक ले किहि काम १२९

रावन वचन ॥

दो० जिहिं वस कीने लोक सब देव असुर नर नाग ॥
सो हौं राक्षस लंक पति रावन नाम सभाग १३०
अब मैं तुहि करि हौं निज वामा ॥ पटरानी लै जाय स्वधामा ॥
पंच सहस बर भूषन बारी ॥ ह्वै हैं तुव दासी सुकमारी ॥
सुनि सीता बोली कटु बानी ॥ मैं हौं सिंह पुरुष हित सानी ॥
तू जंबुक सिंही को चाही ॥+॥ पैठन काल गाल के माही ॥+॥
प्रभु तजि मैं परसौं नहि तुहि इमि महा भाग आदित्य प्रभा जिमि
राम प्रिया कहं तू अब चाहत ॥ अहि मुख मैं अंगुरी अब गाहत
दो० क्षुधित सिंह सें मिलन है मंदर चहत उठान ॥
दृग सूची धरि विलभषत चाटन छुरी अयान १३२
तरत जलधि गर धरि शिला रवि शशि गहत स्वहाय
अग्नि भुजाबल बसन सें जो मुहि चहत अनाय १३३
सिंह स्यार कंचन अयस हंस गीध संबंध ॥
गज बिडाल सम राम अरु तोमें अंतर अंध १३४ ॥
सुनि बोल्यो भय रोष मकारा ॥ भागे शक्रादिक सुर सारा ॥+॥

बैठौं तंहं वहं मंद बयारी ॥ तजैं उष्णता शीघ्र तमारी ॥+॥
चलत महानद हौं हिं पगारा ॥ निश्चल दल द्वै मग तरु सारा ॥
मम अंगुरी सम नहिं रन रामा ॥ है मानुष भिक्षुक च्युत दामा ॥
आयो मै तुव भाग्य वसाई ॥ चलि संग लै त्रिभुवन ठकुराई ॥
यौं कहि वाम हस्त गहि केसा ॥ पकरि दहिन कर जानु विसेसा
निज तनु धरि गहि अंकमझारी ॥ सियहि लेय रथ चढ्यो सुरारी
ज्यौं अकामकौं काम बसाई ॥ पन्नग इंद्र वधुहि गहि जाई

दो॰ तब अति बिवसा जानकी रामहि दूर बिचारि
दुखित भ्रांत चित्त मत्त लौं रोवन लगी पुकारि १३६

चल्यो गगन मग रथ मन मीता ॥ बिलपन लागी भय भरि सीता ॥
हा लछमन हा राम उदारा ॥ कौन सुनौं मो दीन गुहारा ॥
लियें जात मुहि रावन क्रूरा ॥ तुम न लखो यह मम अघपूरा
हौ समर्थ पर सुधि नहि मोरी ॥ मैं हतभाग्य तुमहि नहि खोरी
हे खग मृग तरु किसलय नाना ॥ दीन विनय मम सुनौ सुजाना ॥
लियें जात रावण करि जोरी ॥ सो सुधि प्रभु सैं कहि यो मोरी १३७

दो॰ गीधराज मम ससुर के सखा ससुर सम मोर ॥
कौन करै मो परस या है भरोस अति तोर १३८

यौं कहि रोवन लगी पुकारी ॥ सो जटायु ने जागि निहारी ॥
रावणाक गत लखि सिय दीना ॥ गीधराज बोल्यौ भय हीना ॥
रे खल तू नाहि जानत रामहि ॥ लियें जात जगपति की वामहि
सकल लोक पति राम उदारा ॥ इंद्र वरुण सम जग हित कारा ॥
तासु धर्म पत्नी है सीता ॥+॥ सब करि रक्षा योग्य पुनीता ॥
करत अकारण राम विरोधा ॥ कालपास गर धरत अबोधा ॥
सूर्पनखा ह्वै गइ प्रभु पासा ॥ देन लगी सीतहि अति त्रासा ॥
तब श्रुति नासा लछमन भाना ॥ तिहिं हित गे खरादि भट नाना

दो० अस्त्र शस्त्र गहि कुपित ह्वै मारन लागे ताहि
तबले मारे होंय ह्यां कौन राम को आहि २५०

अबलौं बसन बांधि अहि लीना ॥ पैहै ताको फल अति पीना ॥
बहुरि बहुरि सठ लखि बल मोरा ॥ गीधराज मैं अंतक तोरा ॥+
साठि सहस संवत बय मोरी ॥ तउ करिहौं पूरन बय तोरी ॥
सो सुनि रावन अति रिस छायो ॥ गीधराजपर झार कर लायो ॥
पुनि खगराज चूंच नख केरा ॥ रावन तन छत कीन घनेरा ॥
पुनि रावण तीक्षण दश तीरा ॥ मारे कुपकरि गीध शरीरा ॥
तब खगपति तिहिं बपुष बिदास्यौ धनुष तोरि धरनी मे डास्यौ ॥
आन धनु ले करि अति क्रोधा ॥ सर वर्षा ये अगनित जोधा ॥२५२

दो० तब रिस धारि जटायु ने रथ वाहन रथवान ॥+।
छत्र ध्वजन हनि रावनहि महि पटक्यौ बलवान

सियहि अंक धरि व्याकुल होई ॥ पस्यौ अधोमुख महिमे सोई ॥
तब खगपति तिहिं पीठि बिदारी ॥ पुनि पुनि चूंच चरण छत धारी
बहुरि उपारे केश बिसेसा ॥ कीन महा छत पुनि शिर देशा ॥
तब अति रिस धरि असुर तदाही ॥ बाम अंक मे धारि सियाही ॥
दहिन करन सें थापर दीनी ॥ गीधराज पर परसो लीनी ॥+॥
पुनि दशवाम भुजा तिहिं केरी ॥ काटि गीधपति महिमे गेरी ॥
पुनि ते भुजा कटी तिहिं बारी ॥ ज्यौं बावीतें अहि बिष धारी ॥
सियहि त्यागि तब रावण जोधा ॥ खग सें लरन लग्यो करि क्रोधा

दो० मुष्टि रु चरण प्रहार बहु गीधराज तनु दीन ॥
गीधराज हू असुर तनु चूंच चरण छत कीन २५४

करत परस्पर जुद्ध महाही ॥+॥ थकित गीध महि पस्यो तहाही
रावण खड्ग काढे तिहिं बारा ॥ तासु पार्श्व पग पक्ष निवारा ॥
पुनि रावन सीतहि गहि लीनी ॥ लगी पुकारन सो भय भीनी ॥

हा लछमन रघुनाथ उदारा॥ डूबत हौं दुख जलधि मझारा॥

दो० कारि आति कृपा जटायु नै कीनी मोरि सहाय॥

मो अभाग्य तें यह परयो मारि साहिसे खगराय २४६

धारि अंक सै चलत सुरारी॥ लता तरुन पकरत सुकुमारी॥

छोड़ि२ कहि पुनि पुनि रोई॥ केश गहें गमनत खल सोई॥

तिहि अवसर भो जगत मलीना॥ थकित प्रभंजन रवि छबिहीना

बिधि ऊ बिलोकि दिव्यदृग ताही॥ भये अंद कृत कर्म तदाही॥

ऋषिन ध्यान त्यागो सनि सोका॥ व्याकुलता व्यापी सबलोका

स्यंदन हीन यधारि खल सोई॥ चल्यौ गगन मग हर्षित होई

दो० तव आति बिलपति रोवती बोली सिया सुजान॥

हे खग पति तें मोर हित ठान्यौ मरन निदान॥+॥

तातें रामप्रसाद उदारा॥+॥ जैहै विस्नुलोक निर्धारा॥+॥

जवलगि राम मिलहि तुहि आई॥ तब लगि प्रान राखु खगराई

ऋष्यमूक गिरि पर पुनि पीना॥ वानर पंच जनक जा चीना॥

भूषन छोरि फारि निज सारी॥ तामहि बाँधि दीन तहँ डारी॥

यौं गनि आअैहैं रघुनाथा॥ तौ परि जैहैं तिन के हाथा॥

कपिन उठाय लिये तिहिं वारा॥ सकल शोक सनि ऊर्ध निहारा॥

हा लछमन हा रघुबर रामा॥ इमि बिलपति देखी नभ बामा

लषि न सक्यो रावन सियकामा॥ विकल अधोमुख भयवस रामा

दो० चल्यौ अग्र लै ताहि खल व्है मन माहि अशंक॥

ताहि जानै यौं कालबस है भुजगी सो अंक २४८

मृत्युकाल से ज्यौं नर नाना॥ करै काम बिपरीत निदाना॥+॥

रोग ग्रसित कौं पथ्य न भावै॥ खाय अपथ्य वस्तु हर्षावै॥+॥

त्यौं असुराधम काल बसाई॥ जल निधि लाँधि शीघ्र हर्षाई॥

पहुँचि लंक रण वास मँझारी॥ कहि सिय सौं तू हो मो प्यारी॥

दो० राक्षसकत्तिस कोटि भट हैं बस मोर सयानि ॥
तू तिन सबकी पालनी होऊ मोरि पटरानि १५०

जलनिधि घेरी नगरी लंका ॥ हैं सुर गनसैं अगम अशंका ॥
बानाहि बाँधें कलगह हाथा ॥ तौ तुहि पाय सकै रघुनाथा ॥
त्रिभुवन मै दीषत नहिं मोही ॥ जो मोतै सिय लै सक तोही ॥
रामकीन अति दुष्कृत कोई ॥ बन बन ताहि भ्रमावे सोई ॥
तै कोउ कीनौं पुन्य महाई ॥ ताको फल भोगन ह्यां आई ॥
सो सुनि बिन्च त्टण धरि सियबोली ॥ रे खल मृत्यु तोर सिर डोली ॥
है अब जीवन शठ अति थोरा ॥ यूपबद्ध ध्यों पशु की सम तोरा ॥
लखिहैं प्रभु तुहि कारि दृग लाला ॥ ह्वैहै भस्म मूढ तिहिं काला ॥

दो० जो प्रभु राशि कों माहि पटाकि छिनमै सकैं नसाय
जलधि सोखि सो तोहि हनि करिहैं मोरि सहाय
जो वेदी मख मध्य गत सुर ऋषि पूजित काल ॥
वेद मंत्र करि पूत तिहिं परसि न सक चांडाल १५४

त्यों मुहि धर्म पत्नी व्रत लीना ॥ तू न परसि सक खल अघपीना ॥
हंस संग तजि पंकज जाली ॥ बसै न वायस सदन मराली ॥
मैं जीवन की करौं न चाहा ॥ मारि मोहि कट राक्षस नाहा ॥
सुनि रावन भय प्रीति जनाई ॥ बहुत भांति पुनि २ समुझाई १५५

दो० कह्यौ न मान्यौ जनकजा पचि हार्यौ दशसीस
तब अशोक बन मे रषी चंद कला ह्वै षीस १५६
पुनि कहि द्वादश मास मैं जो न मोर मत मान ॥
तौ तुहिं काटि कलेव मम करिहैं मूद सुजान १५७

जब अशोक बन मैं सिय राखी ॥ तब बिरंचि सुरपति सें भाषी ॥
हित त्रिलोक निशिचरन अहेता ॥ कीन लंक मै सिया निकेता ॥ +॥
तँहँ तू जाहु विताहि खवाई ॥ आवहु असुरन दीठि दुराई ॥

सुनि सुरपति गो सिय हित कारी॥ माया सीय सोहि निर्धारी॥
बोल्यो सियसें मै सुर पाला॥ आयो अन्न खुवावन वाला॥
वर्ष सहस दस छुधा पियासा॥ लगे न याहि भखें कछु हासा॥
सिय बोली पहिचाना तोही॥ पहिलो रूप दिखावै मोही॥
जो सरभंग सथान मझारा॥+ देख्यो मैं पति देवर लारा॥+॥
दो० वही स्वरूप सुरेशने करि लीनो तिहिं बार॥
मनगन दशरथ जनक सम लीनो पायस चार
पति देवरहि निवेदि पुनि खायो सो सिय लाल॥
बहुत भांति बिश्वास तिहिं सदन गयो सुरपाल
राम मारि मृग कीन पयाना॥ मग आवत लखि लखन निहाना
बिबरन बदन विकल मन दीना॥ बोले कठिन होय मसु हीना॥
कहहु तात मम सासन टारी॥ क्यों आयो तजि जनक कुमारी॥
जो सुर सुख सम सदन बिहाई॥ राज्य भूष संग छाडि बन आई॥
बिपदा साथ निप्रान अधारा॥ क्यों तिहिं तजि आयो सुकुमारा॥
भूमि राज सुरराज सुजाना॥ सिय बिन मुहि जग सदन समाना
फरकत बाम बाहु उर नैना॥ असगुन होत सकल दुख दैना॥
तात चलहु झट आश्रम माहीं॥ सोमत सीता मिलि है नाहीं॥
दो० मै मरिजैहो सिय बिना तब तू जैहै धाम॥
जानि केकयी यह दशा ह्वैहे पूरन काम १६०
भ्रात राज सुख सुत वती लहि केकयि अभिमान
अव सूत पुत्रा को सल्या कस करि है गुजरान १६१

लक्ष्मण बचन॥

मै निज काज हेत नहि आयो॥ सियने हठ करि मोहि पठायो॥
कहि तुव भ्रातहि है कठिनाई॥ जाहु बेगि तिहिं करहु सहाई॥
मै कहि यह बच प्रभु को नाहीं॥ प्रभु सम कवन असुर जग माहीं॥

त्रिभुवन रक्षक किहिं अभिलाषै।
दीन वचन सो आनन न भाषै ॥ रामहि करै पराजय सोई ॥+॥
भयो न है नहिं आगे होई ॥+। तूराघत है मम अभिलाषा ॥+।
सो सुनि सिय नै कुपि इमि भाषा ॥ भ्रात मरन चाहत मति हीना ॥
मिल्यौ भरत सैं है छललीना ॥ कवि गुलाब आयो तजि ताही ॥
यौं सुनि कोपित होय तदाही ॥ सुनि सियबात

दो॰ बोले प्रभु नहिं कीन भल अनुचित सुनि सियबात
कोपवती पै कोप करि आयो तिहिं तजि तात ॥
सीता दर्शन लालसा शीघ्र चले रघुराय ॥+॥
देख्यौ आश्रम शून्य जहँ रहे काक गन छाय ॥
सिय विहीन रोवन लगे विकल होय दोउ भ्रात
तबहिं मूर्छि महि मैं परे राम अधिक अकुलात

लछमन रामहि चेत करायो
मंद मंद जल सींचि सुहायो ॥ कै मुहि लखि कउँ रही लुकाई
कहि प्रभु सिय किंउ हरी कि खाई ॥ न तु मम जीवन कठिन बिनीता।
तो अब बिहसि निकसि है सीता ॥ सिय कँहं खोजन लगे खरारी ॥
करि बिलाप आश्रमहि निहारी ॥ हे अशोक तरु विल्वतमाला ॥
हे आश्रम हे खग मृग जाला ॥ तुम देषी मम प्रिया सुजाना ॥
लता पुष्प पल्लव फल नाना ॥ होय राम व्याकुल अति दीना ॥
सब आश्रम लखि सिया बिहीना ॥ जैहौं सुरपुर अति दुख पागी ॥
बोले बिलपत अब तनु त्यागी ॥

दो॰ तहँ मुहि लखि कहिहैं पिता मोरि प्रति आटारि
क्यों आयो अस मय अधम धिक तुहि अनुचितकारि

बनिता बसवर्ती जस नासा ॥
मिथ्या बच नीतिन्यय दासा ॥ सुनि पितु बच रहिहौं शिर नाई
कीन कहानैं मम ढिग आई ॥ दर्शन देय हरउ दुख घोरा ॥
तातैं प्रिया कृपा करि मोरा ॥+॥ पंक मगन गज जिमि छवि छीना
यौं भाषत रामहिं लषि दीना ॥

बोले लखन मृदुल कर जोरी ॥ नहि आश्रम मैं जनक किशोरी
तजि बिषाद धरि धीरज नाना ॥ करबिगुलाल मुहि जुनजन ज्ञाना
दो० नाथ अनत खोजऊ सियहि पैहौ नाहि निदान
जैसें वलिसैं बिष्णुनैं लीनी अवनि सुजान १६७

रामबचन

तात जनक तनया नहि पैहै ॥ तौ मुहि कानर लोक बतैहै ॥
गयें अवधि केकयि हसि कहिहै ॥ सिया सहित गो सो संग नहि है
मृदुबचनी शशिमुखि बिलसि यहीना ॥ कस धसि हौं अंतःपुर दीना ॥
पुछिहै मोहि जनक कुशलाई ॥ कस कहि हौं बन सिया गसाई
तातैं मैं घर चलि हौं नाही ॥ मरि हौं प्रिया बियोग इहांही ॥
अब तू जाऊ अवधि मैं ताता ॥ कहियो स्यों बनी सब बाता ॥
कौसल्या केकयी सुमित्रा ॥ कहियो इनहि प्रनाम पवित्रा
सिया हरन मो मरन तयारी ॥+॥ कहियो कौसल्याहि बिस्तारी

कबिबचन

दो० यौं बिलपत लखि रामकौं सिय बिहोन अति दीन
भये बिकल मन लखन हू ज्यौं सफरी जल हीन

रामबचन

लछमन नहि मो सम अघकारी ॥ त्रिभुवन मैं दुखतैं दुख धारी ॥
राज्य गयो बिछुरे मम लोगा ॥ पितु बिनाश निजजननि बियोगा
सब भूल्यौ सिय संग बन मांही ॥ सिय बिन अब सब मोहि दहाही
पुनि लखि मृग गन दृग जल धारी ॥ कहि प्रभु कित है जनक कुमारी ॥
सुनि मृग मुरि सब दखिन लखाये ॥ पुनि पुनि प्रभु हि देखि नित धाये
तब लछमन कहि दक्षिण ओरा ॥ है सिय हरन व तात किशोरा ॥
सो सुनि प्रभु दिश दखिन पलाने ॥ मग सिर शिर च्युत पुष्प पिछाने
पुनि नर खोज लख्या आनि भारा ॥ तँहँ सिय खोजऊ लख्यो निधारा

दो॰ दूलउल धावत सियहि संग नर के खोज निहारि ॥
धनु लखकस रथ भग्न लखि ह्वै अति विमन खरारि॥

रामवचन

बोले लखन लखहु महि माही ॥ कनक बिंदु सिय भूषन आही ॥
रुधिर विंदु महि परे अनेका ॥ तिनतें मोमन होत विवेका ॥
जनक सुता जुग असुरन ह्वांई ॥ काटि रु वांटि वांटि कै खाई ॥
धर्म शिवादि जु कीनि न रक्षा ॥ मोहि जानि निर्विक्रम दक्षा ॥
दो॰ तातें अवहि त्रिलोक कों करों भस्म निरधार ॥
देखि लखन मो वीर्य कौं एक मुहूर्त मझार ७३
यों कहि कुप भरि करि दृगलाला ॥ फरकत अधर तरेरि स्वभाला॥
वल्कल अजिन बांधि कटि सोई॥ जटाभार कसि सज्जित होई ॥
महाभयंकर सर धनु रोपा ॥+॥ करन राम त्रिभुवन को लोपा ॥
लेत सास पुनिपुनि रिस पाई ॥ प्रलयकाल शंकर की नाई ७४
दो॰ पूर्व लख्यो नहि लखन नै प्रथम देखि कुप सोय
हाथ जोरि वोले नमित अति भय व्याकुल होय॥
सर्व भूत हित रत मृदुल दांत सदा शुचि भाव॥
प्रकृति त्यागि अव क्रोधवस होऊ न कोशलराव
नृप साधाता सगर भगीरथ ॥ रघु अरु अंवरीष आदि क गथ ॥
सुनी प्रजा पाली सुत रीती ॥+॥ लीनौ सुजस धारि नृप नीती ॥
तुम रविकुल भूषन जस ताके ॥ अति वर्द्धक हो पाल प्रजा के ॥
रवि मै प्रभा चंद मै श्री रह ॥ वेग वात मैं क्षमा भूमि गह ॥
ये चारिऊं तुम मे जस साथा॥ नित्य बिराजत त्रिभुवन नाथा
इक के कीन दोष तिहि मांही ॥ त्रिभुवन नाश उचित नहि आहे
हरी जानकी खोज जु ताही ॥ उद्यम निर्फल जैहै नाही ॥+॥
सो सुनि सायक लीन उतारी ॥ रिसा निवारि हर्षित असुरारी ॥

दो॰ लियो लाय उर अनुज को शीश सूंघि हँसि हाल
सहित सनेह प्रशंसि सिय ढेरन चले कृपाल॥

आगे रुधिर लिप्त महि माँही ॥ पर्यो पर्वताकार महाही ॥+॥
तिहिं लखि कहि लछमन सैं साँई ॥ तात जनकतनया इहिं खाई ॥
सोवत है तिहिं मांस अघायो ॥ अवसि मूढ जमपुर घर छायो ॥
यों कहि राम धनुष सर तान्यो ॥ सुनि जटायु बोल्यो भय सान्यो ॥
मारिन मोहि मृतक कँहँ ताता ॥ मैं जटायु हौं असुर निपाता ॥
सिय हित कीनौं मैं रन भारा ॥ ताते यह गति कीन उदारा ॥
लखि खग गति सुनि वच मृदुलाई ॥ रोवत भूमि परे दोउ भाई ॥
सिया हरन सुनि लखि खग नासा ॥ पुनि पुनि लेय राम अति सासा ॥

दो॰ परसि तासु तनु बिकल मन बोले करुणा धारि
किन कीनी तुव दुर्दसा तात कहहु बिस्तारि ९७७

गीधवचन

राम लषन तुम गे बन ओरा ॥ आयो रावन सिय को चोरा ॥
नभ मारग रथ सैं बिलपाती ॥ मैं देषी जागि सिय अकुलाती ॥
तव तिहिं रोकि ठानि रन भारी ॥ बिरथ कीन मैं बिकल सुरारी ॥
मैं अति वृद्ध थकित भौ ताता ॥ तिहिं असि तैं मो पंष निपाता ॥
पुनि सिय गहि गो दक्षिण ओरा ॥ है लंका पति राक्षस चोरा ॥+॥
राम काज जानि सोच सुजाना ॥ मिलिहैं जनक सुता बलवाना ॥

दो॰ रावन हनि लै सियहि संग जे हौ अवधि निदान॥
मिलि जननी भरतादि सैं पैहौ अति कल्यान ९७८

सो सुनि राम लाय उर ताही ॥+॥ रोये लखन सहित दुख दाही ॥
रुधिर वमत शिर ध्वनित निदाना ॥ पर्यो धरनि खग तजि निज माना ॥
तिँहिं लखि राम होय दुख दीना ॥ बोले खग तनु परसि प्रबीना ॥
लछमन असुरन वास मकारा ॥ वसत रह्यौ यह जूल कुमारा ॥

आचो आज काल बस सोई ॥ परमारथ कृत मम हित होई ॥
नृप दशरथ सम सो हित कारा॥ पूज्य मान्य है गीध उदारा ॥
यों कहि मृदु मन करुणा धामा निज कर दाह दीन तिहिं रामा ॥
उदक देय हाने मृग मन भाये ॥ मांस पिंड करि खग त्पताये ॥
उदक देय हाने मृग मन भाये ॥ मांस पिंड करि खग तृप्ताये ॥

दो० पितु कृत क्रिया जटायु की करि हरि करुणाधाम
नयन नीर भरि मृदुल मन बोले बिलपत राम१८२
गीधराज सो पितु सखा हौ सहाय अति मोर ॥
सियरक्षा हित सो नश्यौ दोष दिनन को जोर१८३
बैदेही बिछुरत लखन मुहि दुख भयो अपार
गीध मरन ताते दुगुन भौ बिषाद भय कार१८४
गदा चक्र दर पद्मधर विष्णु रूप हर्षाय ॥+॥
बिमानस्थ लाग्यो करन खग अस्तुति शिर नाय१८५

बारिज बदन कदन जग जालं॥ वारिज कर हर विपति करालं॥
बारिज गल बारिज गन दामं ॥ वारिज नयनं नमामि रामं ॥+॥
बिमल भाल उर बाहु बिशालं॥ अधर पानि पद नख अति लालं
सुतनु मदन मद रद कर श्यामं॥ कर सर चापं नमामि रामं ॥
अति बिक्रम महि मामति रूपं॥ अगणित गुण लावन्य अनूपं
त्रिभुवन पालक करुणा धामं॥ सुखमा सदनं नमामि रामं ॥+॥
भक्त जनन मन से अति दूरं ॥+॥ भव बिमुखन मन समता पूरं ॥
धरधन तिय त्यागी निष्कामं ॥ दायक स्वपद नमामिरामं ॥

दो० सुनि अस्तुति अति मुदित मन बोले खगसे राम
तात होउ कल्यान तुहि जाउ शीघ्र मो धाम ॥
बिष्णु पारखद चारि करि पूजित हिय हर्षाय ॥
स्तूयमान योगीन करि जात भयो खगराय ॥

पुनि लक्ष्मन जुत धीरज धारी॥ दक्षिण दिसि गमने असुरारी॥

तीन कोस चलिगये तहाही ॥ क्रौंचारण्य गहन बन मांही ॥
आई अयोमुखी निशिचारी ॥ अग्र चलत लछमनहि निहारी
दौरि अंक भरि हिय हर्षानी ॥ बोली मोपति हो गुनखानी ॥
लखन काढि असि करि रिसभारी ॥ नाक कान कुच काटि बिडारी ॥
महा भयंकर तनु धरि सोई ॥ गई भागि अति दुःखित होई ॥
दो० फेरि विपिन खोजन सियहिं चले अग्र रघुराय ॥
इक जोजन विस्तृत भुजन बिच आये दोउ भाय १८६
प्रभु कहि यह राक्षस कोउ आही ॥ बिन सिर लषि यत मुख उर माही
भुज समेटि अब जैहै खाई ॥+॥ कहु लछमन का करिय उपाई ॥
बोले लषन बिकल मन होई ॥ आन उपाय न सूझै कोई ॥+॥
मुहि करि असुर भेट तुम जाऊ ॥ पैहो सिय कहँ रुट रघुराऊ ॥
पुनि पैहौ निज राज महाना ॥ तँह मुहि सुमरत रहियो जाना ॥
महा प्रेम भय संजुत बानी ॥+॥ सुनि लछमन की आरत सानी ॥
दो० बोले दीन दयालु प्रभु तुव समान जन प्रान ॥
करें न चिंता विपति मैं होइ सजग हर्षान १८८
सुनि धीरज धरि कहि अहि नाहा ॥ छेदिय भुज दोउ सहित उमाहा
राम लखन असि काढि महाही ॥ दहिन वाम भुज हरी तहाही ॥
कही असुर तुम को सुकुमारा ॥ सुर दुर्लभ भुज छेदन हारा ॥
तब प्रभु निज वृत्तांत सुनायो ॥ सुनि दानव बोल्यो हर्षायो ॥
आज धन्य भौ मैं रघुनाथा ॥ आये मो ढिंग त्रिभुवन नाथा ॥
मैं गंधर्व राज हौ सोई ॥ गर्वित जोबन रूप महाई ॥
दो० तप करि विधि सैं लेय बर तनु अवध्य सुरराय
लोकन मैं बिचरत रह्यौ मन मद बस मद भाय १९०
मुनि अष्टावक्र कहि इक बारा ॥ हस्यो देषि तिहिं कुअ अपारा ॥
कुपि तिहिं मुनि मुहि राक्षस कीनो ॥ पुनि मुनि दीन देषि वर दीनो ॥

रस आनि है तुब भुज भाई ॥+॥ कह्यो है तू गंधर्व तदाई ॥+॥+॥
पुनि मै सुरपति सैं हठ ठान्यो ॥ तिंहि मो मस्तक पावते भान्यो
अब सु हि दाह देऊ रघुराऊ ॥ सियमारग मैं तुमहिं बताऊं ॥
दाहत तन सो भो गंधर्वा ॥+॥ बोल्यो जय जग दीस अगर्वा॥
तुम सुरपाल अनादि अनंता ॥ सूक्षम थूल रूप भगवंता ॥+॥
सूक्षम रूप जीव तुब आही ॥ स्थूल रूप लखियत सब ठाही॥

दो॰ तउ श्यामल तनु चाप शर धरें जटा मुनि चीर ॥
लिय खोजत लछुमन सहित मो उर रघुबीर २८२
ऋक्ष रजस्सुत सूरसुत वालि भ्रात सुग्रीव ॥
कपि पति आति अति बसत है गिरि पर प्रभु बलसीव

आति कृतज्ञ है काम सरूपा॥ सत्यवाक धृति मान अनुपा
दक्ष प्रगल्भ परा क्रम बाना ॥ अग्रज करि पीडित दुख साना॥
नहि छानो तासैं महि सारी ॥ करिहै सिय शोधन अरि हारी॥
करहु मिलना जाय सुजाना ॥ बहु अभिलाषी है हित बाना
पंपा सर तट ऋषि गन नाना॥ बसत मतंग शिष्य मति वाना॥
है सबरी परि चर्या कारी ॥+॥ श्रमणी सवरी अति मति बारी॥
ऋषि प्रभाव करि राम सदाही॥ धसिन सकै गज आश्रम माही
ऋष्यमूक गिरि है तिंहिं पासा॥ पुष्पित द्रुम खग करत उलासा

दो॰ ऋष्य मूक गिरि शीश पै सोवे पुरुष सुजान॥
मिलै स्वप्न मैं वित्त सो जागत लहै निदान २८५

पापी तिंहिं गिरि सोवै जाई॥ सोवत ही तिंहि राक्षस खाई
आगम उच्चगिरि सघन महाना॥ सिंह री छ गज विचरत नाना॥
ता ऊपर इक गुहा बिशाला॥ तिंहि आगे शीतोदक नाला
बसत तहाँ सुग्रीव सुजाना ॥ चारि सचिव हैं तिंहि संग आन

दो॰ रावण सहस लंक पति तिंहि सिय लई चुराय

है ग्राति बिकल वियोगिनी महादुखित रघुराय

नाथ कछुक ग्रागे पग दीजे ॥ सवरी ग्राश्रम पावन कीजे ॥
है यह तुव दासी ग्रसुरारी ॥ भक्ति विलीन महा मति बारी॥
सो सब कहिहै सिय की बाता॥ सुनि राम त्रिभुवन सुखदाता॥
लखि सवरी निज ग्राश्रम ग्राये॥ राम लखन ग्रतुलित छवि छाये
दौरि दूर तें चरनन माही ॥ परी दंडलों हर्षि महाही ॥
सादर बर ग्रासन बैठाये ॥+॥ चरन धोय तनु भवन सिञ्चाये॥
बिधिवत पूज्य मूल फल नाना॥ दिये जु रखे परषि निदाना ॥
भषि हर्षाय सराहि ग्रघाई॥बैठे ग्रासन पुनि रघुराई ॥+॥

दो॰ हाथ जोरि शिर नाय पारि बार बार प्रभु पाय॥
तनु पुलकित बोली मृदुल सवरी हिय हर्षाय॥

जब तुम चित्रकूट पग धारा ॥ तब मम गुरु हरि धाम सिधारा
कही मोहि ह्यां लछमन रामा॥ ऐहैं जग पावन मति धामा ॥
करि दर्शन तिनको पद नाई॥ पैहै तू सद्गति मन भाई ॥+॥
तब तें बन फल परषि ग्रपारा॥ राखे तुम लायक उपहारा ॥
मग जोवत रहि प्रभु सब काला भइ कृत कृत्य ग्राज जन पाला
सुनि प्रसन्न ह्वै हिय हर्षाई॥ बोले मधुर बचन रघुराई १९९

दो॰ हम मतंग बन कौं सुमति देख्यौ चहत निदान
तू संग चालि दिखाय सब जो यह तुव मन मान

हर्षि जाय सब बनहि दिखाई॥ सादर निज ग्राश्रम पुनि लाई
वर ग्रासन बैठाय पुनीता ॥ बोली गद्गद बचन बिनीता ॥
मैं तिय जाति हीन मति हीना ॥ तुव दासन के दास प्रवीना ॥
शत संख्या तरातिन की दासी॥ होन सकौं ग्रधमाग्र वरासी॥
तिहिं तुव दर्श दीनजन त्राता॥ कोमल मन त्रिभुवन पितु माता
नहिं जानौं ग्रस्तुति करि साईं॥ होउ प्रसन्न दीन सुखदाई॥

राम वचन

दो० पुरुष नपुंसक नारि वा आश्रम नाम सुजाति
नहि कारन मो भजन को भक्तिहि कारन ख्याति
वेदाध्ययन यज्ञ तप दाना ॥ तीरथ क्रिया कर्म शुभ नाना ॥
इन संजुत मो भक्ति विहीना ॥ लहै न मोर दर्श अति वीना ॥
तातें भामिनि बिन विस्तारा ॥ साधन कहौं भक्ति हित कारा ॥
सत संगति साधन है आदी ॥ दूजो है मम कथा सवादी ॥+॥
तीजो साधन मो गुण गाना ॥ चौथो मोर वचन हित वाना ॥
पंचम गुरु कंहं मो सम माने ॥ छठम मोर पूजन नित ठानै ॥
सप्तम राम नाम रट लावै ॥ अष्टम सरल सबहि न सरसावै
तत्व विचारन बमाजिहिं माही ॥ तिंहिं मम भक्ति मिलै अघ दाही
दो० भक्ति होतही तत्व को अनुभव होय निदान ॥
तबहि मुक्ति व्है मुक्ति को कारन भक्ति हि नान
तू मो भक्ति युक्त है वाला ॥ तातें दर्शन दीन रसाला ॥
जानत है तुव नाय सुवामा ॥ कित है सिय किंहिं हरी ललामा
तुम सब जान त्रिभुवन राई ॥ तउ पूछेतें कहौं गुसांई ॥+
रावण हरी सु लंका माही ॥ अब है सीता दुखित महा ही ।
ऋष्य मूक गिरि पर रघुनाथा ॥ रह सुग्रीब चारि कपि साथा
जाऊ तहां बह तुव सब काजा ॥ कारि है धर्मातम कपिराजा ॥
दो० पुनि वृद्धा सवरी प्रभुहि वार वार शिर नाय ॥
जारि अग्नि तनु अनघ सो हरि पुर पहुंची जाय ।
जाति हीन मति हीन अति निच आचार विहीन ।
सब विधि धिप सुनी ताहि प्रभु मुनि दुर्लभ गति दीन
नाना ज्ञान विशेष मत मंत्रन की तति त्यागि ॥
रामहि [illegible] सो सुघर म्याल तनु अनुरागि २०८

पुनि प्रभु गे पंपा सर नीरा ॥ देषि मुदित भे निर्मल नीरा ॥
खिले कमल गन नाना जाती ॥ कूजत खग गुंजत अलि पाती
लगत पवन विरहाकुल होई ॥ बोले लक्ष्मन सैं ऋषि सोई ॥
तात बसंत समय सुखकारा ॥ सीता बिन मुहि दहत अपारा ॥
चहुं दिशि कुसमित वन गिरि नाना दीषत मुहि जम सदन समाना ॥
लखि यह जल कुक्कुट जलपासा। बोलत देत मोर मन त्रासा ॥+॥
प्रथम सिया ढूंढहिं लाषे हर्षाती ॥ बोलत मोहि बुलाय दिषाती
नव पल्लव तरु लखि लखि सीता। होती हर्षित सदा बिनीता ॥
दो० ॥ अब सिय बिन वन गिरिन मै करि मधुकर खगनाद
सिलत परस्पर मोहि सब करत काम उन्माद २१०
कै है यह ऋतु है जहं सीता ॥ मो सम सोचत कै है भीता ॥+॥
रहित वसंत देश हू माही ॥ मो बिन सीता जीसक नाही ॥
पुष्प पवन सिय सँग सुखकारा। सो अब पावक सम निर्धारा ॥
सिय संग ही नव उडु प्रकासा बोलत हो वायस सुख नासा
अब तरु थित बोलत हर्षाना ॥ मिलवै है सीतहि सुख साना ॥
आस अशोक पुष्प नव पाना ॥ मुहि दाहन है अगिन समाना ॥
दो० ॥ कमल दलन मै लगत चष लखि सिय सम धीर
सिय स्वासन सम लहि चहत नासा कमल समीर २११
लखि लक्ष्मन दल दीषत नाही। फूले किंशुक गिरि वन माही ॥
मल्लि मालती धव कर बीरा ॥ कुंद केतकी चंपक धीरा ॥+॥
वंजुल वकुल मधूक शिरीषा ॥ चंदन तिलक शिंश पादीषा ॥
सीमालि तिनिस लोध वासंती ॥ तरु लपटाय लता खिल संती॥
देत मोहि शिक्षा इमि साषी ॥ तुम न जनक जा हम सम राषी॥
तात मिलै अब जनक कुमारी ॥ तौ छिन हू नहि राषौं न्यारी ॥
कमल सहस्रन रहित लमामा ॥ कब लखि हौं सिय मुख छवि धाम

मंदहास्य जुत मधुर अमोला ॥ कब कानन परिहे सिय बोला ॥

दो० ॥ सभा माहिं जब जनक सुहि पुछिहैं सिय कुशलात
तब मिथिला पति कौं कहा दैहों उत्तर तात २१५

सिय बिन लखि कौसल्या मोहू ॥ पूछहिं किन है मोरि पतोहू ॥
ताको उत्तर कहा सुनाऊं ॥ तातें तात नमें घर जाऊं ॥ + ॥
अब तू जा निज भवन प्रवीना ॥ मैं नहिं बचिहौं प्रिया विहीना ॥
यौं विलपत रामहिं लषि भ्राता ॥ बोले मृदु नय संजुत बाता ॥
तजहु नेह मन धारहु धीरा ॥ हौ निर्मल मन वचन शरीरा ॥
नेह दुखद है प्रभु सब भाती ॥ जरै नेह भर आलिहु बाती ॥
रावन दिति गर्भहु के माहीं ॥ धसिहै तउ हनिहौं मैं ताहीं ॥
सियहिं लाय हौं तजहु गलानी होय शोक सैं कारज हानी २६

दो० ॥ प्रभु बल है उत्साह ही धारहु मन उत्साह ॥
कारज उत्साहीन कौं नहिं दुर्लभ नरनाह २१६

नर उत्साह वंत जग माहीं ॥ कर्मन सैं दुख पावत नाहीं ।
लहि उत्साह तुमहु मतिवाना ॥ पैहौ सीतहिं शीघ्र सुजाना ॥
भ्रात बचन सुनि राम उदारा ॥ शोक मोह तजि धीरज धारा ॥
करि अस्नान बहुरि दोउ भाई ॥ बैठे तरु छाया हर्षाई ॥ +
तब तंहं सुर रिषि आय तमामा करि अस्तुति गे निज निज धा
पुनि आये नारद मुनि धीरा ॥ मिले हर्षि तिन सैं रघुबीरा ।
सुनि विज्ञान संत गुण गाथा ॥ गये सदन सुमरत रघुनाथा
तब सिय हेरन हिय हर्षाई ॥ चलत भये लछमन रघुराई

दो० ॥ पंपा सर गमनत अमल श्यामल गौर शरीर ॥ + ॥
चंदकला के उर बसौ धनु सर धारण धीर २१८

इति श्रीमदवनिमण्डलमण्डनायमानबुन्दीपुरन्दरश्रीरामसिंहात्मज श्रीरघुवीरसिं
हाश्रितवंदिवंशावतंसकविराजश्रीमद्राव गुलाबसिंह तनिकुमारी चंद्रकला कृत रामचरि
... राय कांड समाप्त

ग़लतनामा आरण्य कांड ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	७	सुंग	सैंग	५	२४	ढूंहित	ढूंहिं	१८	२१	डाटै	डाटै
१	२२	लपटायैं	लपटायें	६	१०	पावन	पावक	१८	२१	पाटै	पाटै
१	२४	ठके	टके	६	१५	खड्ग.	खड्ग	१९	१५	ग्राह	ग्राह
२	२	ढूहि	ढूंहिं	६	२३	ततत्व	तत्व	१९	२४	सत	मत्त
२	२	बिचरैं	बिचरैं	८	१७	संकृत	संस्कृत	२१	१	खैचन	खैंचत
२	२	सापान	नापान	८	१७	भाषि	भाषि	२१	४	समनहीं	तमताहीं
२	९	ओसंग	ओसुंग	८	२१	भाव्यो	भख्यो	२३	५	प्रभा	प्रभा
२	९	चौती	चौंती	९	२३	द्वैविधि	द्वैविधि	२४	६	सुरसुनि	खरसुनि
३	६	सार्दू	सार्दूं	१०	२८	अरुधती	अरुंधती	२४	१३	लखन	लखन
३	१०	पङ्केरुह	पङ्केरुहि	१०	२९	पदवोभं	पदवौंभ	२४	२५	जहां	जहं
		वन	भुवन			नत	नत	२५	१२	तोसे	तोसी
३	११	तबराक्षः	भ्रतराक्ष	१०	२८	है	हैं	२९	१६	ह्यां	ह्यां
३	२०	प्रभुसे	प्रभुसैं	११	१९	भसनी	भगिनी	२९	२२	नामा	नाना
४	१४	स्यांडल	स्यांडिल	१२	१६	पिय	प्रिय	२९	२४	लांघि	लांघि
		सापी	साथी	१३	८	[illegible]	भक्षन	३०	१२	सोवि	सोबि
४	१६	आर्द्री	आर्द्र	१४	१९	मृदुभाषा	मृदुभाषी	३१	४	पहिचाना	पहिचानौं
४	१९	अमानिन	अगनित	१५	३	हृदुव्रत	हृदव्रत	३३	४	[illegible]	[illegible]
४	२०	झालक	घालक	१६	२	लखमादि	लखनादिंग	३४	११	सख्यान	सख्यात
४	२२	मुनिगन	मुनिगन	१६	४	रघुपती	लघुपती	३५	१४	रावसा	रावन
५	९	लषन	लषन	१६	२१	कष्टसे	कष्टमैं	३६	२०	स्वपद	स्वपदं
५	१३	सोहि	सोहि	१६	२२	दूषस	दूषन	३८	६	सूंरसुत	सूरसुत
५	१४	रमसीय	रमनीय	१७	१८	हैकाल	त्रैकाल	४०	१०	गदम.	गदम
								४१	७	ढूंहिं	ढूंहिं
५	२३	गमनव	गमनत	१८	२९	खरसैन	खरसैं	४१	१९	किंशुक	किंशुक

जालकौमुदी

नक़्शे नवीस ओवरसियर इन जीनिअर मिस्त्री संगतराश बढ़ई राज इत्यादि के लाभ की पुस्तक

तैयार! तैयार!! तैयार!!!

अब यह पुस्तक छपकर तैयार हो गई है। इसमें कई प्रकार की जालियों के खींचने की रीति ऐसी स्पष्ट भांति से लिखी गई है कि हर मनुष्य उसको एकबारही पढ़कर अति सुन्दर और विचित्र जालियां बना सक्ता है। २६४ उत्तम जालियों के नमूने भी इसमें छापे गये हैं। कागज़ बहुत उत्तम लगाया गया है सुन्दर और स्वच्छ अक्षरों में छपी है इसके अन्त में बहुत से वह कवित्त जो "किस कारण कौन निकाली है जाली" की समस्या पर देशदेशान्तर से आये थे छापे गये हैं यह भी देखने योग्य हैं. ता॰ ७ नवम्बर सन् १८९२ ई॰ का हिन्दी बङ्गवासी लिखता है॥

"नियमों के अनन्तर पुस्तक के ८८ पृष्ठों में २६४ जालियों का चित्र लिखा गया है। कहना नहीं होगा. इन उदाहरणों को देखने में बुद्धि कुछ काम नहीं करती। वही कलम वही स्याही और वैसेही काली लकीरों के द्वारा उतनेही स्थान में तरह २ की जालियों का नकशा बना है। कलम दावात कागज़ मिलने से छोटे २ लड़के केवल अलाय बलाय लकीर खींचते हैं पर विद्वान लोग विविध भावों से युक्त विविध अभिप्राय प्रगट करने वाले पद लिखकर लोगों का मन मोहते हैं वैसेही उन्हीं सामिग्रियों के द्वारा पंडित जी ने २६४ प्रकार के चित्र लिखडाले हैं। काव्य और चित्रकारी की रीति आपने इस द्वार भी खूब स्पष्ट कर डाली है। यदि केवल इन चित्रों का दाम १) रक्खा जाता तो भी दाम कम समझा जाता परन्तु इतने विषय के साथ भी इस पुस्तक का दाम ॥-) होना और अच्छी बात है॥

मूल्य डाक महसूल सहित ॥-) परंतु बिना दाम आये पुस्तक नहीं भेजी जावेगी यदि कोई वेल्यू पेएबिल मंगावें तो ॥=) में भेजी जावेगी. अर्थात =) महसूल के और देने होंगे॥

पता: पंडित कुंदनलाल फतहगढ़ ज़िला फर्रुखाबाद

वनिताभूषण

(अर्थात्)

भाषा सैं नायिका अलंकारन के सकल लक्षण
उदाहरनन को संस्कृत अनेक ग्रंथ मतानुसार श्री
सुत चक्र वारा वंश वतंस हड्ड कुल कलश
बुन्दीन्द्र महाराजाधिराज महाराव राजा
जी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्रीरघुवीर
सिंह जी के कवि राज राव जी
श्री गुलाब सिंह जी कृत

और

जवाल प्रकाश यंत्रालय फतहगढ़ में
मालिक जी श्री जगन्नाथ प्रसाद ने छापा
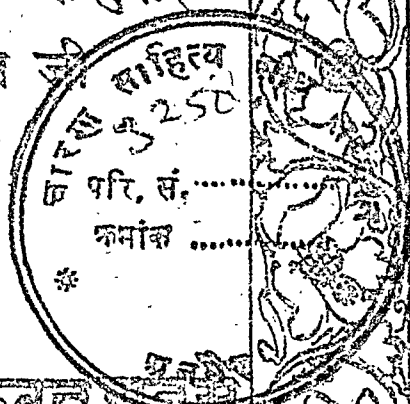
...धारन सैं होय ॥ ८ ॥ अथ अलंकार लक्षण ॥ दोहा ॥ स...
...अर्थन तें भिन्न जो शब्द अर्थ के माहिं ॥ चमत्कार भूषन सरिस...
...न मानत नाहिं ॥ १० ॥ अथ अलंकारांग कथन दोहा
...मुख चन्द्रादि उपमेय हैं शशि कमलादि उपमान ॥ समानार्थ वाच-
...कसो धर्म एक गुन मान ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ है उपमेय विषय

...लंकार बरायें ॥ उपमानरु विषयी रु अवरायें ॥ प्रासंगिक कहें प्रस्तु-
...त जानि ॥ अप्रसंग अप्रस्तुत आनि ॥ २२ ॥ भेदक विशेष्य विशे-
...षण भेदक ॥ बड़ व्यापक सामान्य अभेदक ॥ २३ ॥ अल्प व्या-
...पक आहि विशेष ॥ अपन आसक नाम अशेष ॥ २३ ॥ अथ पू-
...र्णोपमा लुप्तोपमा लक्षण ॥ दोहा ॥ सुपूर्णोपमा बाचक रु वि-
...षय धर्म उपमान ॥ इक द्वै त्रय के लोप में लुप्तोपम परिमान ॥ २४ ॥
टीका ॥ बाचक उपमेय धर्म और उपमान ये च्यारों होय सो पूर्णोप-
मा अलंकार है ॥ इन के दोय के तीन के लोप में लुप्तोपमा को प्रमाण
है ॥ २५ ॥ अथ साधारण नायिका पूर्णोपमा उदाहरण ॥
दोहा ॥ शशि सो उज्वल मुख सुभग अर्ध चंद सो भाल ॥ कनकल-
ता सी छबि भरी बिहरत देखी बाल ॥ २५ ॥ टीका ॥ शशि सो उज-
लो मुख है ॥ आधा चंद्रमा सो सुन्दर भाल है ॥ सोना की वेलि सी छ-
बि भरी भई नायिका डोलती देखी ॥ यहां शशि उपमान सो बाचक उ-
ज्वल धर्म मुख उपमेय है १ और अर्ध चंद उपमान सो बाचक भा-
ल उपमेय सुभग धर्म है २ और कनक लता उपमान सी बाचक छबि
भरी धर्म बाल उपमेय है ३ यातें पूर्णोपमा अलंकार है ॥ २५ ॥ बाच-
क लुप्ता १ धर्म लुप्ता २ धर्म बाचक लुप्ता ३ बाचकोपमेय लुप्ता ४ उप-
मान लुप्ता ५ बाचकोपमान लुप्ता ६ धर्मोपमान लुप्ता ७ धर्मोपमान बा-
चक लुप्ता ८ ये लुप्ता के आठ भेद हैं ॥ अथ स्वकीया आठों लुप्ता
उदाहरन ॥ दोहा ॥ कर किसलय मृदु १ कंज से पाय २ नैन मृग
नैन ३ ॥ जो छबि ४ कटि कृश सिंह सी ५ पिक मधुरे सिय बैन ॥ ६ ॥
टीका ॥ कर हैं सो नवीन पान से कोमल हैं याके मूल में सो बाचक
नहीं यातें बाचक लुप्ता है ॥ १ ॥ कंज से पाय हैं यामें धर्म लुप्ता है ॥ २ ॥
नायका के नेत्र मृग नैन से हैं याके मूल में धर्म बाचक नहीं यातें
में बाचक लुप्ता है ३ [illegible] जैसी छबि है याके मूल में बाच-

उपमेय नहीं यातें धर्म वाचकोपमेय लुप्ता है ४ कोट सिंह सी पत-
ली है इहां सिंह की कटि नहीं कही यातें उपमान लुप्ता है ५ सिय
के बैन कोयल सैं मीठे हैं यामें मूल मैं पिक बानी उपमान और वे
वाचक नहीं यातें वाचकोपमान लुप्ता है ६ ॥ २६ ॥ कवि है ॥ सि
रिजा हग मृग सम है बालि बाज्ञ लाल ॥ आपुन लुप्ता आठ विधि यों
कविराज ॥ २७ ॥ टीका ॥ पार्वती के बैन हरिन के समान हैं । यामें
मृग के दृग उपमान नहीं और धर्म नहीं यातें धर्मोपमान लुप्ता है
७ बालि गजराज यामें नायिका की चालि उपमेय तो है धर्म उपमान
वाचक नहीं यातें धर्मोपमान वाचक लुप्ता है ८ जानकी पार्वती-
स्वकीया नायिका हैं ॥ २७ ॥ अथ मुग्धा अनन्वय लक्षण ॥
दोहा ॥ जिहिं तनु जोवन अंकुरित मुग्धा तिय है सोय ॥ जाकी
उपमा जाहि कौ तौ अनन्वय होय ॥ २८ ॥ अथ मुग्धा अन-
न्वय ॥ उदाहरन ॥ दोहा ॥ मुख सो मुख हग से हगहि कच से
कच दरसाहिं ॥ अल्प उरोज उरोज से जनक सुता के आहिं ॥ २९ ॥
टीका ॥ मुख सो मुख ही है हग से हग ही हैं कच से कच ही दी
से हैं जनक सुता के छोटे कुच से कुच ही हैं यहां छोटे कुच सैं मु
ग्धा है और मुख हग कुच उरोजन को उनहीं की उपमा लगी यातें
अनन्वय है ॥ २९ ॥ अथ अज्ञात यौवना उपमेयोपमा ल
क्षण ॥ दोहा ॥ नहिं जाने निज यौवनहि है अज्ञात सु जोय ॥
उपमा उपमेयोपमा लगै परस्पर होय ॥ ३० ॥ टीका ॥ जोवन कौं
नहिं जाने सो अज्ञात यौवना तिया है ॥ परस्पर उपमा लगै सो उप
मेयोपमा अलंकार होय है ३० ॥ अथ अज्ञात यौवनोपमेयो
पमा उदाहरन दो० ॥ सर कानन गुड़ियाँ लखै लसत अमित छवि खा
नि ॥ जलज पानि से जलज से जनक लली के पानि ॥ ३१ ॥ टीका ॥
गुड़ियाँ सर कावे है नव जनक लली [illegible]य से जलज लसे है जै

मेघ सें बीजुरी चंचल दीखे है यहाँ नायक का पास सें नायिका आ-जे हैं यातें नवोढ़ा है नायिका सी बीजुरी है यामें उपमेय उपमानथ्य यो नायिका को अनादर भयो यातें दूसरो प्रतीप है॥२५॥ अथ विश्रब्ध नवोढ़ा तृतीय प्रतीप लक्षण॥ दोहा॥ सो विश्रब्ध नवोढ़ है विश्वा सें कछु पीय॥ बरायें बरायें रोह अब रायेहि अनादरे सु तृतीय॥२६॥ टीका॥ पीतम को कछु विश्वास करे सो विश्रब्ध नवोढ़ा नायिका है॥उपमेय है सो उपमेय रहकरि के उपमान को अनादर करे सो तीसरो प्रतीप है॥२५॥ अथ विश्रब्ध नवोढ़ा तृतीय प्रतीप उदाहरन॥ दोहा॥ केलि भवन कैं भामिनी भीति भरी सी जाय॥ दामिनि मन को दुति दरपनि हि विरियाँ न रहाय॥२७॥ टीका॥ क्रीड़ा का भवन कैं भामिनी है सो उर में भरी सी जाय है॥ता समय बीजुरी का मन को दुति को गर्व नहीं रहे॥यहाँ नायिका केलि भवन कैं डरपती सी जाय है यातें विश्रब्ध नवोढ़ा नायिका है॥और नायिका उपमेय सें बीजली उपमान ने अनादर पायो यातें तीसरो प्रतीप है यह द्वितीय भेद सें उलटो है॥२५॥ अथ सतांतरेण मुग्धा भेद॥ चौपाई॥ बयसंधि १ नव बधू २ असंबा॥ नव जोवन पुनि नवल अनंगा ४॥ रति बाला ५ मृदु आना ६ मानौं॥ लज्जा प्राया सात बखानौं॥२८॥ अथ बयःसंधि चतुर्थ प्रतीप लक्षण॥ दोहा॥ बयसंधि शिशुता कलक झलके जब तन तीय॥ चवथ बरायें उपमान के अबगयेस म नर नीय॥२६॥ टीका॥ जब तिय का तन में बालकपना की झलक झलके सो बयसंधि नायिका है॥उपमेय है सो उपमान हो जाय उपमेय को समान उपमान नहीं गन्यों जाय सो चवथो प्रतीप है॥२६॥ अथ बयसंधि चतुर्थ प्रतीप उदाहरन॥ दोहा॥ सजि सिंगार जब तिय चलत मंद तेज गति माहिं॥ तब तब करी

कुंसा गति समता पावत नाहिं॥३०॥ टीका॥ जब तिय है सो सिंगा-
र साजि के मंद तेज गति से चले है तब तब हाथी और हिरण को
गति समता नहीं पावे है इहाँ मंद तेज गति सें चले है यातें वय-
संधि नायिका है और मंद तेज गति उपमेय है सो उपमान भयो
करी कुरंग की गति समता लायक नहीं यातें चवथो प्रतीप है॥३०॥
अथ नवल वधू पंचम प्रतीप लक्षण दोहा॥ दिन दिन
दूनी दुति बढ़े नवल वधू अनुमान॥ उपमेयहु उपमान है व्यर्थ हो-
य उपमान॥३१॥ टीका॥ दिन दिन प्रति दूनी शोभा बढ़े यह नव-
ल वधू को अनुमान है उपमेय है सो उपमान हो जाय और उपमान
व्यर्थ हो जावे सो पंचम प्रतीप है॥३१॥ अथ नवल वधू पं-
चम प्रतीप उदाहरन॥ दोहा॥ दोयज के ससि लौं कला नि-
सि वासर सरसात॥ जनक सुता तनु निरख लौं कनक लता दबि जा-
त॥३२॥ टीका॥ दोज का चंद्रमा को समान कला राति दिन सर-
सावे है। जनक सुता का शरीर कों देखतौं कनक की लता दबि जा-
वे है। इहाँ कला सरसावो सो नवल वधू नायिका है और जनक
सुता उपमेय है सो उपमान भई तातें आगे कनक लता व्यर्थ भई या-
तें पंचम प्रतीप है॥३२॥ अथ रूपक लक्षण॥ दोहा॥
विषयी रंजे विषय कों द्वै तद्रूप अभेद॥ अधिक न्यून सम दुहुन
करि षट रूपक के भेद॥३३॥ टीका॥ उपमान है सो उपमेय
कों रंजे तद्रूप और अभेद होकरि के॥ एक उपमान उपमेय में नि-
रखो रहे एक उपमान न्यारो रहे सो तद्रूप॥ उपमान उपमेय में भे-
द नहीं रहे सो अभेद॥ इन दोनून के अधिक न्यून समता करि
छः भेद होते हैं॥३३॥ अथ नव योवना अधिक तद्रूप
लक्षण॥ दोहा॥ सो मुग्धा नव योवना जोवन झलक लखाय
है अधिक तद्रूप जह उपमेय हि अधिकाय॥३४॥ टीका

जाके जोवन की झलक लखावे सो मुग्धा नव यौवना नायिका है जहाँ उपमेय की अधिकता होय सो अधिक तद्रूप है ३४॥ अथ नव यौवना अधिक तद्रूप उदाहरन॥ दोहा॥ लसै चन्द्र प्रकास तें जोवन झलक प्रकाश॥ सिय मुख शशि शशि तें सरस निशि दिन करत प्रकाश॥३४॥ टीका॥ चंद्रमा का उजाला सें जोवन की झलक को प्रकाश अधिक है॥ सीता कोमुख चंद्रमा है सो चंद्रमातें अधिक है राति दिन उजारो करे है इहाँ तो जोवन का प्रकाश सें नव यौवना नायिका है और सीता का मुख चंद्रमा उपमेयमें राति दिन प्रकाश करबो अधिकता है यातें अधिक तद्रूप है॥३४॥ अथ नवल अनंगा न्यून तद्रूप लक्षण॥ दोहा॥ नवल अनंगा काम रुचि भोलापन में जानि॥ होय न्यून तद्रूप जब उपमेयहि कमठानि॥३६॥ टीका॥ भोलापन में काम की रुचि होवे सो नवल अनंगा नायिका जानो॥ जब उपमेय को कम ठानें तब न्यून तद्रूप होय है॥३६॥ अथ नवल अनंगा न्यून तद्रूप उदाहरण॥ दोहा॥ सुनि रति की पिय विनय तिय नैन मूँदि मुसकाय॥ तव मुख की चख कमल में चंचलता न रहाय॥३७॥ टीका॥ तिय है सो पिय की रति की विनय सुनि करि के नैन मूँदि मुसकावे तब मुख की सी चख कमल में चंचला नहीं रहे यहाँ नैन मूँदि मुसकावा सें नवल अनंगा नायिका है और कमल की सी चंचलता चख कमल में नहीं यातें न्यून तद्रूप है॥३७॥ अथ रति वामा सम तद्रूप लक्षण॥ दोहा॥ रति वामा वामा सुतो सुरत अरुचि पहिचानि॥ सम तद्रूप दुहून में समता अर्थ बखानि॥३८॥ टीका॥ रति वामा है सो तो सुरत में अरुचि पहिचानो॥ दोनून में समता अर्थ पै सम तद्रूप बखानो॥३८॥ अथ रति-वामा सम तद्रूप उदाहरण॥ दोहा॥ मौन धारि पिय सों

स जब बैठे द्दग शिर नाय॥ तब राधा रति अति लसत मानवती रति भाय॥ ३९॥ टीका॥ जब मौन धारि करि कै पिय के पास द्दग शिर नवाय करि के बैठे तब राधा रति है सो अत्यंत लसे है मानवती रति की समान ॥ यहाँ मौन धारि शिर नवाय बैठि बासों रति वाला नायिका है और राधा रति मैं मानवती रति मैं समता है यातें सम रूपक है॥ ३९॥ अथ मृदु माना अधिक अभेद लक्षण॥ दोहा॥ मृदु माना जो मान के अवसर मृदुल रहात॥ अधिक होय उपमेय तब अधिक अभेद कहात॥ ४०॥ टीका॥ मान का अवसर मैं मृदुल रहावे सो मृदु माना नायिका है उपमेय अधिक होय तब अधिक अभेद कहावे है॥ ४०॥ अथ मृदु माना अधिक अभेद उदाहरण॥ दोहा॥ साय राध लखि पिय प्रथम मुसकानी रिस टारि॥ हास्य जोन्हतद सदन में प्रात रही बिस्तारि॥ ४१॥ टीका॥ पीतम को पहिले सापराध देखि करि कै रिस को टारि करि के हँसी तब हास्य रूपी चाँदनी सदन में सँवेरे ही बिस्तारि रही यहाँ रिस टारि मुसकानो सों मृदु माना नायिका है और हास्य में चाँदनी में भेद नहीं यह तो अभेद सबेरे विस्तारि रही यह अधिकता है यातें अधिक अभेद रूपक है॥ ४१॥ अथ लज्जा प्राया न्यून अभेद लक्षण॥ दोहा॥ लज्जा जुत सुरतहि करै सो है लज्जा प्राय॥ न्यून होय उपमेय तब न्यून अभेद कहाय॥ ४२॥ टीका॥ लाज सहित सुरत करै सो लज्जा प्राया नायिका है जब उपमेय न्यून होय तब न्यून अभेद कहावे है॥ ४२॥ अथ लज्जा प्राया न्यून अभेद उदाहरन॥ दोहा॥ धीर धरङ्क गुरुजनन नद जो गत दै व रसात पिय सों भाषत भय भरी तिय रति सोभ प्रकास॥ ४३॥ २॥

टीका ॥ धीरज धरो गुरु जन ननद देवर सास जो हैं पिय सौं
भाषतां तिय रति की भय भरी सोभ प्रकासै है इहां गुरु जनादि-
कसैं लाजै है यातें लज्जा भाया है तिय रति की भय भरी सोभ
प्रकासवो न्यूनता है यातें न्यून अभेद रूपक है ॥४३॥ अथ
मध्या सम अभेद लछ्छन ॥ दोहा ॥ लाज काम सम जासु
कै॰ सो है मध्या तीय ॥ उपमान रु उपमेय सम॰ होय अभेद तृतीय
४४॥ टीका ॥ जाके लाज काम समान होय सो मध्या नायिका
है॰ उपमान॰ उपमेय समान होय सो तीसरो अभेद है ॥४४॥ अथ
मध्या सम अभेद उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखि लखि पिय दृग
छबि लिया जब जब दीठि दुराय ॥ तब तब पिय मन बस करनि
दृग कंजन छबि छाय ॥४५॥ टीका ॥ पीतम का दृगन की छ
बि देखि देखि करि के तिया है सो जब जब दीठि दुरावै तब
तब पीतम का मन कों बस करवा वाली दृग कंजन में छबि छा
वै है देखि करि के दीठि दुरावै है यातें मध्या नायिका है
दृगन के और कंजन के समता है यातें सम अभेद रूपक है ॥
४५॥ मध्या भेद ॥ चौपाई ॥ इक आरूढ़ यौवना १ बा
ला ॥ प्रगल्भ बचना २ द्वितिय ललाला ॥ प्रादुर्भूत अनंगा ३ सोई
चौथी सुरत बिचित्रा ४ होई ॥४६॥ अथ आरूढ़ यौवना
परिणाम लछ्छन ॥ दोहा ॥ सु आरूढ़ जुवना कह्यो पूरन जो
बन बाल ॥ उपमेय रु उपमान मिलि करै क्रिया परिणाम ॥४७॥
टीका ॥ जो बाल पूरन जोबनवान होय सो आरूढ़ यौवना नाय
का है॰ उपमेय॰ उपमान मिलि करि कै क्रिया करै सो परिणाम अ
लंकार है ॥४७॥ अथ आरूढ़ यौवना परिणाम उदाह
रन ॥ दोहा ॥ कुच कुंभन तें उर परसि॰ भुज लतिकनि गहि लेत॥
[illegible]

कुच कुंभन सैं उर कों परसि करि के भुज लति कान सैं गहि लेहै
हग कंजन सैं देखि कै प्रिया है सो मन कों राजी करि दे है य
हां कुच कुंभन सैं आरूढ़ योवना नायिका है और कुच कुंभ
भुज लतिका हग कंजन सैं परसिवो गहिवो देखिवो क्रिया-
नी यातैं परिणाम अलंकार है ॥४८॥ अथ प्रगल्भ ब-
चना प्रथम उल्लेख लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रगल्भ बचना
बहु बचन भाषि जु है अनुराग ॥ बहु मानें बहु एक कौं सो उल्ले
ख सनाद ॥४९॥ टीका ॥ जो बहु बचन भाषि करि के उपावे है सो बहु-
सो प्रगल्भ बचना नायिका है एक कौं बहुत
त प्रकार माने सो प्रथम उल्लेख मानावो ॥४९॥ अथ प्रग-
ल्भ बचना प्रथम उल्लेख उदाहरन ॥ दोहा ॥ साख
सा पिय लखि तिय बचन भाषत जुत अभिमान ॥ पिय पियूष
कोकिल सखिन सौतिन जाने बान ॥ ५०॥ टीका ॥ पीतम कों
अपराध सहित देखि करि कै तिय कौं अभिमान सहित बचन
भाषतां पीतम ने पियूष जान्या सखीन ने कोकिल जान्या सौ-
तिन ने बाण जान्या यहां अभिमान का बचन भाषवा सैं प्रग-
ल्भ बचन नायिका है और एक बचन कों पीतम ने पियूष जा-
न्या सखीन ने कोकिल जान्या सौतिन ने बाण जान्या यातैं उ-
ल्लेख अलंकार है ॥५०॥ अथ आदुर्भूत मनोभवा द्विती
य उल्लेख लक्षण ॥ दोहा ॥ आदुर्भूत मनोभवा पूरित काम
कलान ॥ बहु गुन सौं बहु बिधि कहे जुग उल्लेख प्रमान ॥५१॥
टीका ॥ काम कलान मैं पूरित होय सो आदुर्भूत मनोभवा है
बहुत गुन सैं बहुत बिधि करि के कहे सो दूसरा उल्लेख को प्र
मान है ॥५१॥ अथ आदुर्भूत मनोभवा द्वितीय उल्ले
ख उदाहरन ॥ दोहा ॥ काम कलान भरी तिया रति मैं रति

दरसाय ॥ छबि सैं बिरिझी गुन गिरा चालन रसा लरसाय ॥ ५१ ॥
टीका ॥ काम कलान की भरी ऊई तिय है सो रति में रति द-
रसावे है छबि में बिरिझा है गुन में गिरा है चालन रसाल
रसा है । यहाँ काम कलान की भरी ऊई है यातें प्रादुर्भूत मनो-
भवा नायिका है और एक नायिका कों अनेक गुणा में अनेक
तरह जानी यातें दूसरो उल्लेख है ॥ ५२ ॥ अथ सुरत बिचि-
त्रा सुमरन लच्छन ॥ दोहा ॥ सुरत बिचित्रा नायिका जो अद्भुत
रत ठान ॥ सुमरन है इक वस्तु लखि सो सुमरन को मान ॥ ५३ ॥
टीका ॥ जो अद्भुत रत ठाने सो सुरत बिचित्रा नायिका है
एक वस्तु कों देखि करि के सुमरन होय सो सुमरन अलंकार है
५३ अथ सुरत बिचित्रा सुमरन उदाहरन ॥ दोहा ॥
केलि कला अद्भुत करत जब पिय मन ऊलसात ॥ तब तबनि
रखि सरवीन कौं मदन तिया सुधि आत ॥ ५४ ॥ टीका ॥ अ-
द्भुत केलि कला करतौं जब पीतम को मन ऊलसावे है तब तब
निरखि करि के सरवीन कौं मदन तिया की सुधि आवे है यहाँ
अद्भुत केलि कला में सुरत बिचित्रा नायिका है और नायिका
कों देखि करि के सरवीन कौं मदन तिया को स्मरण भयो यातें
स्मरण अलंकार है ॥ ५४ ॥ अथ प्रौढ़ा भ्रम लच्छन ॥
दोहा ॥ प्रौढ़ा पति ही के विषय केलि कलाप प्रबीन ॥ इक
कों लखि भ्रम होय जहँ है भ्रम भूषण बीन ॥ ५५ ॥ टीका ॥
पति के विषय केलि कला में प्रबीन होय सो प्रौढ़ा नायिका है
एक को देखि के भ्रम होय तहाँ भ्रम अलंकार है है बीन ॥ अ-
थ प्रौढ़ा भ्रम उदाहरन ॥ दोहा ॥ जब पिय संग सि-
य चाढ़ि अटा हाथे लिये लपटाति ॥ तब लखि हर्षे मोर
गन घन दामिनि मन आनि ॥ ५६ ॥ टीका ॥ जब सोनो हेले

और धोरे कारे के साँचा भाव कों छिपावे सो युक्तापन्हुति अलं-
कार है ॥ ६२॥ अथ कामोंधा युक्तापन्हुति उदाहरन ॥
दोहा ॥ नैनन याके मैन सर- बैनन मद घर आँहिं ॥ तजे न पति
कों छिनक यह डरे गुरुन सौं नाँहिं ॥ ६२ ॥ टीका ॥ याके नेत्र
नहीं हैं-मैन के सर हैं- बचन नहीं है मद के घर हैं- यह पति
कों छिन भर भी नहीं त्यागै है- बड़ा आदमीन सें डरपै नहीं-
यहाँ पति कौं नहीं त्यागै है- यातें कामाँधा है- और नैनन कौं
मैन सर ठहराया- बैनन कौं मद घर ठहराया- यातैं युक्तापन्
हुति है ॥ ६२ ॥ अथ भावोन्नता हेत्वपन्हुति लच्छ-
न ॥ दोहा ॥ उन्नत भावन ते तिया- भावोन्नता बखानि ॥ हेत्व
अपन्हुति युक्ति सौं बस्तु दुराये जानि ॥ ६३ ॥ टीका ॥ उन्नतभा
वन तें भावोन्नता नायिका बखानो- युक्ति सें बस्तु छिपावै पै हे-
त्व पन्हुति अलंकार जानो ॥ ६३॥ अथ भावोन्नता हेत्व
पन्हुति उदाहरन ॥ दोहा ॥ अति उन्नत भावन भरी- यह
नहिं नवी निदान ॥ सतनु पति नी रति नहीं- रमा आहि छवि खा
न ॥ ६४॥ टीका ॥ अत्यंत उन्नत भावन की भरी है यह निश्चय
हो नवी नहीं- तनु सहित पति वाली है- यातैं रति नहीं- छवि की
खान रमा है यहां उन्नत भावन सें भावोन्नता नायिका है- और ना
यिका कों युक्ति सौं रति सें बचाय रमा ठहराई यातें हेत्व पन्हु
ति है ॥ ६४॥ अथ दर क्रीड़ा पर यस्ता पन्हुति लच्छन॥
दोहा ॥ जब के चोरी लाज तब दर क्रीड़ा तिय गाय ॥ पर यस्ता
पन्हुति धर्म पर को पर में रोप ॥ ६५ ॥ टीका ॥ जब चोरी लाज
होय तब दर क्रीड़ा नायका है- पैला को धर्म पैला में रोपे सो पर
यस्तापन्हुति अलंकार है ॥ अथ दर क्रीड़ा पर यस्ता प-
न्हुति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुमन कमल अध खुलित सर-

जब तिय बोलत मंद ॥ जाहि सुधा धरते बचन नहिं न सुधा धर
चंद ॥६६॥ **टीका** ॥ सुरत कला जथ खुल्या नेनन मैं जब ति
य मंद बोले- ते बचन सुधा धरे है- चंद्रमा सुधा धर नहीं है-
यहाँ जथ खुल्या नेनन से दूर प्रौड़ा नायका है- और चन्द्रमा
को सुधा धर पणो छिपाय बचन मैं ठहरायो- यातें पर्यस्ताप
न्हुति है ॥६६॥ **अथ समस्त रत कोबिदा प्रौढा पन्हु**
ति लछना ॥ **दोहा** ॥ सो समस्त रत कोबिदा सकल सुरत प
र बीन ॥ भ्रांतापन्हुति आन की करे भ्रांति को छीन ॥६७॥ टी०
संपूर्ण सुरत मैं प्रवीन होय सो समस्त रत कोबिदा है- और को
भ्रांति कों छीन करे सो भ्रांतापन्हुति अलंकार है ॥६७॥४॥
अथ समस्त रत कोबिदा भ्रांता पन्हुति उदाहरन ॥
दोहा ॥ नाना बिधि निधि सुरत तें अमित श्रांत लखि नाहिं ॥ स
खि पूछी कछु आधि है तिय कहि रति श्रम आहि ॥६८॥ **टी०**
नाना प्रकार सें रति मैं सुरत तें ताकों सखेद अमित देखि के स-
खी नें पूछी कछु आधि है तिय नें कही रति को श्रम है। यहाँ
नाना प्रकार की सुरति तें समस्त रत कोबिदा है- और नायका का
बचन तें सखी को भ्रम जातो रह्यो- यातें भ्रातापन्हुति अलंकार
है ॥६८॥ **अथ आक्रांत नायका छेकापन्हुति लछ-**
ना ॥ **दोहा** ॥ सु आक्रांत नायक तिया तिहि पति कुल बस-
भाव ॥ छेका पन्हुति आन के जानें सांच छिपाव ॥६९॥ टी०
जाके पति और कुल बस मैं होय सो आक्रांत नायका है और
का जान्या सें सांच को छिपावे सो छेका पन्हुति अलंकार है६
अथ आक्रांत नायका छेका पन्हुति उदाहरण ॥
दोहा ॥ नन्दसुत मन मोरे नहीं भूषन बसन बनात ॥ सखि क
... सखि पपिहा की बात ॥७०॥ **टीका**

भूषन बसन बनाना मन कौं तनक भी नहीं मोरै है- सखीनै कही पिय को काया है- नायका नैं कही नहीं सखी- सखी की बात है य- हाँ भूषन बसन बनावा सौं ज्ञातान नायका है श्रोर नायका नैं सखी सैं साँची बात छिपाई यातें छेका पन्हुति है॥ ७०॥

अथ समस्त रस कोविदा कैतवा पन्हुति लक्षण

दोहा॥ है समस्त रस कोबिदा पियहि सकल रस दाय॥ पद मिसादि करि कै तवा पन्हुति सत्य दुराय॥ ७१॥ टीका॥ पी- तम कौं संपूर्ण रस दायक होय सो समस्त रस कोबिदा है मिस पद करि कै सत्य कौं दुरावे सो कैतवा पन्हुति अलंकार है॥ ७१॥

अथ समस्त रस कोबिदा कैतवा पन्हुति उदाहर- न॥ दोहा॥ हास बिलास कलान करि प्रेम पास मन खैंचि॥ पीतम कर मैं कर लियो चितवनि मिस रस सींचि॥ ७२॥ टीका॥ हास बिलास कलान करि कै प्रेम पासी सैं मन कौं खैंचि के पी तम कौं कर मैं कर लियो चितवनि का मिस सौं रस सींच करि कै यहाँ कलान करि कै पीतम कौं बस सैं कर लियो यातें समस्त रस कोबिदा है- श्रोर चितवनि कौं मिस पद करि कै रस सींचवो ठहरायो यातें कैत वा पन्हुति अलंकार है अथ चित्र बिभ्रमा लक्षण॥ दोहा चित्र बिभ्रमा नायका बिभ्रम जासु बिचित्र॥ तन दुति पिय मन बस करै निबर्नत बिबुध पवित्र॥ ७३॥ उदाहरन॥ दो०॥ जिहिं रद हासी मुख करत कुंद जोन्ह ससि मंद॥ सोहीन सगुन राधिका मोहि लियो ब्रज चंद॥ ७४॥ अथ लब्धा पति लक्षन॥ दो०॥ सो लब्धा पति नायिका प्रौढा भेद बखानि॥ कानि करै जाकी सदा पति कुल गुरु जा- नि॥ उदाहरन॥ दोहा॥ लीले ललचानी बाल कौं लई ल- ला उर लाय॥ कुल रक्त मिलत कुल जुन रहौ देह सरमाय॥

[illegible]

लक्षण ॥ दोहा ॥ रिस प्रगटै कहि व्यंग्य वच मध्या धीरा नारि ॥ है संभाव्यरु आस्पद सुउक्ता स्पदा विचारि ॥ ८०॥ टीका ॥ व्यंग्य को बचन कहकरि कै रोस कौं प्रगटै सो मध्या धीरा नायिका है- संभाव्य मान और आस्पद होय सो उक्ता स्पदा विचारो॥ ८०॥ अथ मध्या धीरा उक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ हर्षित कीनी मोहि दिखा लालन लोयन लोल॥ लालऊ रंजे मजीठ रंग हैं जुग मीन अमोल ॥ ८१॥ टी० लालन नें चंचल नेत्र दिखा करि कै मोकों हर्षित करी मानों मजीठ का रंग मैं रँग्या हुया अमोल दो मीन हैं- यहां हर्षित शब्द मैं दूखन हो यो व्यंग्य मैं कह्यो- यातें मध्या धीरा नायिका है और लोचन वस्तु मैं मीन न की तर्क है- यातें वस्तूत्प्रेक्षा है- और दूनं विद्य मान हैं- यातें उक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा है॥८२ अथ मध्या अधीरा अनुक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ परुष बचन कहि व्यंग्य बिन कोपै मध्या धीर॥ जँहँ नहिं पद मैं आस्पसु अनुक्ता सपद धीर ॥ ८२॥ टीका ॥ परुष बचन कह करि कै व्यंग्य बिना कोपै सो मध्या धीरा नायिका है- जहाँ पद मैं संभावना को ठिकानों नहीं होय सो अनुक्ता सपदा है हे धीर ॥ ८२॥ अथ मध्या अधीरा अनुक्ता स्पदा वस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥ अनल भाल कै नु विष अधर नैनन सोंहि मसाल॥ जावो जहं निशि जागि पगोकैं मुहि करत बिहाल ॥ ८३॥ टीका ॥ भाल मैं अनल है अधर मैं विष है नैनन के सोंहि मसाल है- जहाँ रेन मैं जागि करिकै पगे तहाँ जावो मोको बिहाल क्यों करते हो- यहाँ जावक अंजन ललाट मैं अनल विष मसाल की तर्क है यातें वस्तूत्प्रेक्षा और जावक अंजन ललाई नहीं कही यातें अनुक्ता स्पदा वस्तू-

त्प्रेक्षा है ॥ ८३ ॥ अथ मध्या धीरा धीरा सिद्धास्पदा हे
तूत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ व्यंग्य अव्यंग्य हि बचन कहि
रोस प्रकाशे रोय ॥ ॥ सिद्ध अहेतुहि हेतु कृत हेतूत्प्रेक्षा होय
८४ ॥ टीका ॥ व्यंग्य अव्यंग्य बचन कह करि के रो करि के रोस
कों प्रकासे - सिद्ध अकारण कों कारण करे सो सिद्धास्पदा हेतूत्प्रे
क्षा होय ॥ ८४ ॥ अथ मध्या धीरा धीरा सिद्धास्पदा
हेतूत्प्रेक्षा उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय लखि रोय रिसाय ब-
कि कीने लोयन लाल ॥ तिन की रुचि लखि मनु भये लालन लोय
न लाल ॥ ८५ ॥ टीका ॥ पिय कों देखि करि के रो करि के रोषक
रि के - बांकि करि के लाल नेत्र करया तिनकी रुचि देखि के मानों
लालन के लाल नेत्र भये यहां रोवा सों मध्या धीरा धीरा नायि-
का है - और लालन के लाल नेत्र हो वाको कारण नायिका के ला
ल नेत्र नहीं तिस कों कारण ठहराया - यातें हेतूत्प्रेक्षा और ला
ल हो वो सिद्ध है यातें सिद्धास्पदा हेतूत्प्रेक्षा है ॥ ८५ ॥ अ-
थ प्रौढा धीरा असिद्धास्पदा हेतूत्प्रेक्षा लक्षण ॥
दोहा ॥ कोप प्रकाशे व्यंग्य करि रति तें रहें उदास ॥ होय अ
सिद्धेतु दूसरी हेतूत्प्रेक्षा भास ॥ ८६ ॥ टीका ॥ व्यंग्य करि के
कोप कों प्रकाशे रति तें उदास रहे - सो प्रौढा धीरा नायिका है -
सो असिद्ध होय तो दूसरी हेतूत्प्रेक्षा भासे है ॥ ८६ ॥ अथ-
प्रौढा धीरा असिद्धास्पदा हेतूत्प्रेक्षा उदाहरन ॥
दोहा ॥ पिय लखि सुरति बिसारि तिय करि करि राते नेंन ॥
मदमाती यातें मनों बोलत छल बल बेंन ॥ ८७ ॥ टीका ॥
पिय कों देखि के सुरति बिसारि करि के तिय है सो राते नेंन
करि करि के मद मस्त भई - यातें मानों छल बल बचन बोले
है यहां मद माती का बहाना सों छल बल बचन बोले है या

तें प्रौढा धीरा नायिका है और मद मस्त हो वाको कारण छल बल बचन बोलवो नहीं ताकें कारण ठहरायो यातें हेतूत्प्रेक्षा है- मद मस्त हो वो असिद्ध है- यातें असिद्धा हेतूत्प्रेक्षा है ८७

अथ प्रौढा अधीरा सिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥ तर्जन ताडन आदि करि- व्यंग्य रहित करि कोप ॥ सिद्ध अफल कों फल करे सु फलोत्प्रेक्षा ओप ॥८८॥ टी॰ तर्जना ताडना आदि करि के व्यंग्य रहित कोप करे सो प्रौढा अधीरा नायिका है- सिद्ध अफल के नांई फल करे सो फलोत्प्रेक्षा ओपे है ॥८९॥ **अथ प्रौढा अधीरा सिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥** गर्जत त्रासत डरत नहिं धरत न चित में चेत ॥ घूमत झुकि झुकि रहत मनु मदगज समता हेत ॥९०॥ **टीका** ॥ गरजे है- त्रासे है- डरे नहीं है चित्त में चेत नहीं धरे है- घूमे है झुकि झुकि रहे है मानों मदगज की समता के वास्ते- यहां गर्जादिक सें प्रौढा अधीरा नायिका है- और गर्जवो त्रासवो नहीं डरवो चित्त में चेत नहीं धरवो- घूमवो- झुकिवो इनको फल मद गज की समता नहीं ताको फल ठहरायो यातें फलोत्प्रेक्षा गर्जादिक सिद्ध है यातें सिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा है **अथ प्रौढा धीराधीरा असिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा लक्षण ॥ दोहा ॥** ताडनादि करि रति विरस कोप प्रकासे नारि ॥ जहँ असिद्ध के अफल फल सु फलोत्प्रेक्षा धारि ॥९१॥ **टीका ॥** ताडनादि करि के रति सें विरस हो करि के तिय रोसें है सो कोप को प्रकासे सो प्रौढा धीरा धीरा नायिका है जहँ अफल फल असिद्ध होय सो फलोत्प्रेक्षा धीरा है ॥ **अथ प्रौढा धीराधीरा असिद्धास्पदा फलोत्प्रेक्षा उदाहरण ॥ दोहा ॥** अलग रहो पर सोज पद लखें आपको लाल

नूतन स्खलता छिन मनौं रंगे नैंन रंग लाल ॥ ८१॥ टीका॥ अलया रह्मो पद कीति परसो आपनो हाल देखो- नूतन की सखता के वास्तै मानौं लाल रंग मैं नेत्र रंग्यौ है॥ इहां अलया रह्मो पद कीति परसो या बचन सें सुरत सें बिरस रही यांतें मौढ़ा धीरा धीरा नायका है॥ और लाल नेत्र करवाको फल नूतन की सखता नहीं ताको फल वह राय संभावना करी- यांतें फलोत्प्रेक्षा है॥ नेत्र रंगवो असिद्ध है यांतें असिद्धा स्पद फलोत्प्रेक्षा है॥ ८२॥ अथ ज्येष्टा कनिष्टा रूप का तिशयोक्ति लक्षण॥ दोहा॥ द्वै व्याही तिय होय जंह ज्येष्ट कनिष्टा युक्ति॥ निकसै बरर्य अबरर्य तें रूप का तिशय उक्ति॥ ८३॥ टीका॥ जहां दोय परणी हुई स्त्री होय वहां ज्येष्ट कनिष्टा की युक्ति है॥ उपमान में उपमेय निकसै सो रूप का तिशयोक्ति अलंकार है॥ ८३॥ अथ ज्येष्टा कनिष्टा रूप का तिशयोक्ति उदाहरन॥ दोहा॥ कनक लता जुग में कमल अमल प्रफुल्लित पाय॥ अली रली इक मैं करत इक से दीठि दुराय॥ ८४॥ टीका॥ दो कनक लतान में निर्मल कमल प्रफुल्लित पा करि के अली है सो एक में रली करे है- एक सें दीठि दुराय करि देय है॥ दो नायिकान सें ज्येष्टा कनिष्टा हैं॥ और दो कनक लतान में दो नायिका निकली और अली सें नायक निकल्यो यांतें रूप कातिशयोक्ति अलंकार है॥ ८४॥ इति स्वकीया

अथ परकीया लक्षण॥ दोहा॥ परकीया पर पुरुष सों गुप्त करे जो प्रेम॥ तासु परोढा कन्यका द्वै विधि करि के नेम॥ ८५

अथ परोढा सापन्हवा तिशयोक्ति लक्षण॥ दो० ऊढा व्याही और की करे और सों प्रीत॥ होय अपन्हव सहित यह

के ताँई छिपावे सो तीसरी गुप्ता की गाथा है ॥ जहाँ कारण कारज को साथ होय सो अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ २०५ ॥

अथ भविष्यति सुरत गुप्ता अक्रमातिशयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ फूलन हित बन सघन मे जैहों आली आज ॥ पग धरत हित नव सन वर कटि है कंटक साज ॥ २०६ ॥ **टीका ॥** फूलन के वास्ते हे आली आज सघन बनमें जाऊंगी ॥ पग धरतां ही तन का सुन्दर कपड़ा कंटकन के साज सें कटैगा- यहां होवा वाला चिन्ह कह्या- यातें भविष्यति सुरत गुप्ता है ॥ और पग धरतां ही कपड़ा कटैगा ईमें कारन कारज संग है- यातें अक्रमातिशयोक्ति अलंकार है ॥ २०६ ॥

अथ बचन विदग्धा चपलातिशयोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ बचन विदग्धा चातुरी करै बचन में साज ॥ है चपलातिशयोक्ति जहं हेतु ज्ञान ते काज ॥ २०७ ॥ **टीका ॥** बचन में चतुराई करे सो बचन विदग्धा नायिका है ॥ जहाँ कारण ज्ञान ही सें कारज होवे सो चपलातिशयोक्ति अलंकार है ॥ २०७ ॥ **अथ बचन बिदग्धा चपलातिशयोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥** हरि लखि सखि सें कहि अबहि जैहों जमुना न्हान ॥ प्यारी बचन पियूष से सुनतहि हर्षे कान्ह ॥ २०८ ॥ **टीका ॥** हरि कों देखि करि कै सखी सें कही जमुना न्हावा कों अब ही जाऊंगी प्यारी का पियूष सा बचन सुनतां ही कान हर्षे यहां नायिका को [illegible] करि के सखी से कही यातें बचन विदग्धा नायिका है और स्नान हित जावो कारण है ताको सुन वा से ही कृष्ण को हर्षिवो कारज भयो यातें चपलातिशयोक्ति अलंकार है ॥ २०८ ॥ **दोहा ॥** बचन विदग्धा होय जब देशी में अनराग ॥ स्वयं दूतिका पथिक से कहै बचन करि

१०८॥ **अथ क्रिया विदग्धा अत्यंतातिशयोक्ति**
लक्षण ॥ दोहा ॥ क्रिया विदग्धा चातुरी जवे क्रिया में सा-
ज ॥ अत्यंतातिशयोक्ति है पूर्व हेतु सें काज ॥ ११०॥ **टीका ॥**
जब क्रिया में चतुराई करे सो क्रिया विदग्धा नायका है ॥ हे-
तुसें पहिलें काज होय सो अत्यंतातिशयोक्ति अलंकार है ११०
अथ क्रिया विदग्धा अत्यंतातिशयोक्ति उ-
दाहरन ॥ दोहा ॥ कंज कली कर हाथ उर धस्यो तिया हीर
हीर ॥ भये प्रफुलित प्रथम ही कंज निहार्‍यो फेरि ॥ १११॥ टी०
कंज की कली करि कें हीर कों देखि कीर के तिया ने हृदा पे हा-
थ धस्यो कंज पहिले ही प्रफुलित भया कंज फेरि देख्यो इ-
हाँ कंज की कली करि के रति कों मिलिवो जतायो हृदा पे हा-
थ धरि के यह जतायो तुम मेरा हृदा मे वसो हो ॥ यातें क्रि-
या विदग्धा नायका है और पहिले प्रफुलित भया कंज फेरि
निहार्‍यो कारज पहिले है कारण पीछे है ॥ यातें अत्यंतातिश-
योक्ति अलंकार है ॥ १११॥ **अथ लक्षिता तुल्य योगि-**
ता लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रीति लखें तें लक्षिता वरणेन कोइ
क धर्म ॥ होय अवरणेन को प्रथम तुल्य योगिता मर्म ॥ ११२॥
टीका ॥ प्रीति जान्या सो लक्षिता नायका है ॥ उपमेय उप-
मेय को एक धर्म होय अथवा उपमान उपमान को एक धर्म
होय सो पहिली तुल्य योगिता को मर्म है ॥ ११२॥ **अथ ल-**
क्षिता प्रथम तुल्य योगिता उदाहरण ॥ दोहा
नैन बैन बिकसात हैं आली तेरे आज ॥ क्यों मुकुलित मुख-
शशि लखत प्रात कंजन मन लाज ॥ ११३॥ **टीका ॥** हे आ-
ली आज तेरे नैन बैन बिकसावे हैं ॥ क्यों मुकुरे है मुख-
कौं देखि कै चन्द्रमा कमल को मन में लाज लगे है ॥ यहाँ

सखी ने रति के चिन्ह जानि लिये- यातें लक्षिता है॥ और नैन बैन उपमेय हैं तिनको विकलावो एक धर्म है- यातें प्रथम तुल्य योगि ता है और चन्द्रमा कमल उपमान को लाजवो एक धर्म है यातें प्रथम तुल्य योगिता है॥११३॥ **अथ कुलटा द्वितीय तु- ल्य योगिता लक्षण॥ दोहा॥** बहुत नरन सों जो रमैं सो कुलटा तिय मान॥ वृत्ति तुल्य हित अहित में तुल्य योगिता जा न॥११४॥ **टीका॥** जो बहुत पुरुषन सों रमै सो कुलटा तिय- को प्रमान है॥ हित अहित में समान वृत्ति होय सो दूसरी तुल्य योगिता है॥११४॥ **अथ कुलटा द्वितीय तुल्य योगि ता उदाहरन॥ दोहा॥** ऊंच नीच हित अहित में करै न तन क बिचार॥ घालक पालक नरन में करै सुरत उपचार॥११५॥ **टीका॥** ऊंच नीच में और हित अहित में तनक सो विचार न हीं करै मारवा वाला- पालवा वाला आदमीन में सुरत को जतन करै है॥ यहां घणा पुरुषन सें सुरत चाहे है॥ यातें कुलटा नायि का है॥ और मारवा- पालवा वालान में रति करिवो समान व्यव हार है- यातें द्वितीय तुल्य योगिता है॥११५॥ **अथ प्रथ- म अनुसयाना तृतीय तुल्य योगिता लक्षण॥ दोहा॥** बर्तमान संकेत को बिगरत देखि डराय॥ कम गुन को अति गुनन संग बर्नन तीनिय कहाय॥११६॥ **टीका॥** बर्त्त मान मकान के ताई बिगड़तो देखि डरपै सो पहिली अनुशय ना नायिका है॥ कमगुणी को अत्यंत गुणी के संग बर्नन हो य सो तीसरी तुल्य योगिता है॥११६॥ **अथ प्रथम अनु सयाना तृतीय तुल्य योगिता उदाहरन॥ दोहा॥** वृंदावन अरु चैत्ररथ नंदन सम सर सात॥ र [illegible] संतु सम [illegible]
[illegible]

पतझार द्रो वासों संकेत बिगर्यो यातें प्रथम अनुसयाना है
और चैत्र रथ नंदन बड़े हैं॥ तिनकी समान वृंदावन को बनै
न है॥ यातें तृतीय तुल्य योगिता है। अथ द्वितीय अनु-
सयाना दीपक लक्षण॥ दोहा॥ होनहार संकेतको
को सोचे सोन अभाव॥ दीपक वर्ण्य अवर्ण्य की धर्म एक-
ता पाव॥ २१८॥ टीका॥ होन वाला संकेत को अभाव मा-
नि करि के सोचे सो दूसरी अनुसयाना है॥ वर्ण्य अवर्ण्य का ध
र्म की एकता होय सो दीपक अलंकार है ॥२१८॥ अथ-
द्वितीयानुसयाना दीपक उदाहरन॥ दोहा॥ स-
खी निहारे सासरे है वन ताल अपार॥ तहँ मराल उत्तम पुरुष
क्रीड़ा करत अपार॥ २१९॥ टीका॥ यहाँ नायिका ने आ
गला संकेत को सोच कर्यो ताकों सखी नैं समुझाई यातें दूस
री अनुसयाना है॥ और मराल उपमान उत्तम पुरुष उपमेय क्री
ड़ा करवो एक धर्म है यातें दीपक है॥ २१९॥ अथ तृती
यानुशयाना प्रथम दीपका वृत्ति लक्षण॥ दो-
हा॥ पिय सहेट गो सैन गइ योंग निरत्यागे धृति॥ पद की
आवृति होय सो प्रथम दीपका वृत्ति॥ २२०॥ टीका॥ प्रीत-
म सहेट में गयो मैं नहीं गई यों गनि करि के धीरज त्यागे सो
तीसरी अनुसयाना नायिका है॥ पद की आवृत्ति होय सो पहि
ली दीपका वृत्ति है॥ २२०॥ अथ तृतीयानुसयाना-
प्रथम दीपका वृत्ति उदाहरन॥ दोहा॥ हरी छ-
री कर माल उर धरि आवत नंदलाल॥ सरसाने लखि विकल भ
इ सरसाने लौं बाल॥ २२१॥ टीका॥ कर में हरी छरी हृदा
में माला धारि करि कै नंदलाल कों सरसाया हुया आवता दे-
ख कै ताकया तीर की तरह विकल भई॥ यहाँ नायिका कों स-

हेट में सों आयो देखि कै दुख पाई यातें तीसरी अनुसयाना है
और सरसाने लरसाने पद एक है अर्थ न्यारो न्यारो है यातें प्र
थम दीपका वृत्ति है॥१२१॥ अथ मुदिता द्वितीय दी
पका वृत्ति लक्षण॥ दोहा॥ लखि चित चाही होत
मन हर्षे मुदिता मान॥ द्वितिय दीपका वृत्ति है अर्था वृत्ति प
छानि॥१२२॥ टीका॥ चित की चाही होती देखि करि कै
मन में हर्षे सो मुदिता नायिका मानों॥ अर्थ की आवृत्ति हो
य सो दूसरी दीपका वृत्ति पिछानो॥१२२॥ अथ मुदिता
द्वितीय दीपका वृत्ति उदाहरन॥ दोहा॥ रहि है
इकली घर बधू जे हैं सगरे प्रान॥ बिकसे तिय के दृग सुनत
ले सगरे गात॥१२३॥ बधू है सो एकली घर रहेगी सवेरे सब जावेंगा सुनतां
ही तिय के नेत्र बिकसे सब गात फूल्या यहां एकली रहवासों प्रसन्न भई
यातें मुदिता नायिका है और विकस्यो फूलवो पद न्यारा २ है अर्थ एक है
१२३॥ अथ गनिका तृतीय दीपका वृत्ति लक्षन
दोहा॥ धन दे जासों रति करे सो गनिका परिमान॥ आवृ
त्ति जु पद अर्थ की तीजी जानि सुजान॥ ११२४॥ टीका॥
धन दे जासों रति करे सो गनिका को परिमान है॥ पद अर्थ की
आवृत्ति होय सो तीसरी दीपका वृत्ति जानों॥ १२४॥ अथ
गनिक तृतीय दीपका वृत्ति उदाहरन॥ दोहा॥
धन दायक की बात सुनि श्रवन तृप्त हो जात॥ घर आवत ले
खि नयन मन तृप्त होत हर्षात॥ १२५॥ टीका॥ धन देवा
वाला की बात सुनि कै श्रवन तृप्त हो जावे हैं घर आवता देखि
के नेत्र मन हर्षावें है यहां धन दायक सें हर्षावा तें गनिका है
और तृप्त तृप्त पदवी एक है॥ अर्थ वी एक है यातें तीसरी दीप
का वृत्ति है॥ १२५॥ अथ अन्य नायिका लक्षण॥

दोहा ॥ मुग्धादिक भेद हीन जे स्वकिया परकीयारु ॥ सा-
मान्या मैं होत ये तीन नायिका चारु ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥
अन्य संभोग दुःखिता जानों ॥ पुनि वक्रोक्ति गर्विता ठानों ॥
ब्रह्मस्यों मान बती उर आनों ॥ तीन नायिका ये सब मानों ॥
१२७ ॥ **अथ अन्य संभोग दुःखिता प्रति बस्तूप**
मा लक्षण ॥ दोहा ॥ निज नायक सों आन तिय रमी सो
नि मन माहिं ॥ अन्य सुरत दुखिता कही दुखित होय लखि
ताहि ॥ १२८ ॥ **टीका** ॥ अपना नायक सें और स्त्री कों रमी
मानि करि कै मन में दुखित होय सो अन्य सुरत दुःखिता ना
यिका है ॥ १२८ ॥ **दोहा** ॥ उपमानरु उपमेय जुग वाक्य धर्म
इक होय ॥ बरनत प्रति बस्तूपमा भिन्न भिन्न पद जोय ॥ १२९ ॥
टीका ॥ उपमान उपमेय दोनू वाक्यन को एक धर्म होय ताकों
प्रति बस्तूपमा बनै है न्यारा न्यारा पद देखि कै ॥ १२९ ॥
अथ अन्य संभोग दुखिता प्रति वस्तूपमा उदा
हरन ॥ दोहा ॥ बिचले भूषन बसन कों सौतिन सोहिं सुहा-
त ॥ अधिक लौंन की दारि वर कैसे हू नहिं भात ॥ १३० ॥ **टी॰**
बिचल्या जरा भूषन बसन की सौति सोकों नहीं सुहावै ॥ घ-
णा लौंन की सुंदर दाल कैसे भी नहीं भावे यहां सौति के सुरत
चिन्ह देख्या यातें अन्य संभोग दुःखिता नायिका है और पू-
र्वार्द्ध में उपमेय वाक्य है उत्तरार्द्ध में उपमान वाक्य है ॥ तिन
को न सुहात नहीं भात धर्म एक है पद न्यारे न्यारे हैं यातें
प्रति बस्तूपमा है ॥ १३० ॥ **अन्यच्च ॥ नीति मंजरी** ॥
दोहा ॥ स्तुति कीने दुष्टजन रीझे कबहूं न कोय ॥ साँख
न ससले नर मनहि लोह सलाका होय ॥ १३१ ॥ आवृत्ति दी
पक भूषन तु नहीं होय वै धर्म्य ॥ होयहि प्रति वस्तूपमा है

ष्टांत तुवे धर्म्य ॥२३२॥ अथ भूषण चंद्रिकावै धर्म्य प्रति वस्तूपमा उदाहरन ॥ दोहा ॥ बुधही जानत बुधन को परम परिश्रम ताहि ॥ प्रबल प्रसव की पीर को बंध्या जाने नाहिं ॥ २३३ ॥ टीका ॥ बुधन का घणा परिश्रम को पढ्यो अर्थ पंडित ही जाने है ॥ प्रबल जो संतान हो वाकी पीड़ा है ताकों बाँझ स्त्री नहीं जाने ॥ यहाँ पूर्वार्द्ध में जाने उत्तरार्द्ध में नहीं जाने यह न्यारो धर्म है यातें वै धर्म्य प्रति बस्तूपमा है ॥ २३३ ॥ दोहा ॥ गुणी बंश में हू मनुज पुजे सुसंगति पाय ॥ तुंबी बिन जग मान नहिं बीणा दंड लहाय ॥ २३४ ॥ टीका ॥ गुण वान बंश में भी भयो आदमी संगति पाकरि के पुजे ॥ तुंबान बिना जगत में बीणा को दंड आदर नहीं पावे ॥ यहाँ पुजे और मान नहीं पावे यह बिरुद्ध धर्म है यातें वै धर्म्य प्रति बस्तूपमा है ॥ २३४ ॥ अथ गर्बिता भेद ॥ दोहा ॥ प्रेम गर्बिता एक है रूप गर्बिता दोय ॥ निज रूप रू पति रूप को गर्ब करे तें होय ॥ २३५ ॥ षट विधि है गुन गर्बिता निज पति विद्या बुद्धि ॥ पति सूरत्व उदारता जानि लेत मन शुद्धि ॥ २३६ ॥ दोय भाँति कुल गर्बिता निजकुल पिय कुल गर्व ॥ कोरे कहे वक्रोक्ति करि है ग्यारह भिद सर्व ॥ २३७ ॥ अथ प्रेम गर्बिता दृष्टांत लक्षण ॥ दोहा ॥ गर्ब करे पति प्रेम को प्रेम गर्बिता गाय ॥ होय बिंब प्रति बिंब ते दृष्टांत सु दरसाय ॥ २३८ ॥ टीका ॥ पति का प्रेम को गर्व करे सो प्रेम गर्बिता गावो ॥ बिंब प्रति बिंब करि कै होय सो दृष्टांत दरसावे है ॥ २३८ ॥ अथ प्रेम गर्बिता दृष्टांत उदाहरन ॥ दोहा ॥ सजनी पि-

य की प्रीति अति मोहिं निरंतर भात ॥ जैसे सरद मयंक की सन
कों जोन्ह सुहात ॥ २३८ ॥ टीका ॥ हे सजनी पिय की अत्यंत
प्रीति मोकों निरंतर भावे है ॥ जैसे सर्द का चंद्रमा की चाँदनी सब
कों सुहावे है- यहाँ पिय की प्रीति बहुत भावे है याते प्रेम ग
र्विता नायिका है- और नायक की प्रीति बिंब है चंद्रमा की चाँ
दनी प्रति बिंब है ॥ याते दृष्टांत अलंकार है ॥ २३९ ॥ नीति च
दू ॥ दोहा ॥ सब जग के व्यवहार की नीति बिना थित नाहिं
भोजन बिन प्रारानि की ज्यों तनु थित नहिं आहिं ॥ २४० ॥
टीका ॥ सम्पूर्ण संसार का व्यवहार की नीति बिना थिति न-
ही ॥ जैसे भोजन बिना प्रारानि का तनु की थिति नहीं ॥ यहाँ
नीति और व्यवहार की थिति बिंब है भोजन और प्राराणि के त
नु थिति प्रति बिंब है ॥ याते दृष्टांत अलंकार है ॥ २४० ॥ अ

थ भूषण चंद्रिका वै धर्म्य दृष्टांत उदाहरन ॥

दोहा ॥ गर्व समुख सन करत तुव अरि सन सकल नसात ॥ ज
ब लों रवि को उदय नहिं तब लों तम ठहरात ॥ २४१ ॥ टीका
तेरे गर्व के सामने मन करता हो संपूर्ण बैरी नास कों प्राप्त होवे
है ॥ जब ताईं सूरज को उदय नहीं है तब ताईं तम ठहरावे है
यहाँ नशावो ठहरावो विरुद्ध धर्म है यातें वै धर्म्य दृष्टांत है ॥
२४१ ॥ अथ निज रूप गर्विता निदर्शना लक्षण ॥
दोहा ॥ गर्व करे जब रूप को रूप गर्विता सोय ॥ जुग वाक्यन
की एकता निदर्शना सो होय ॥ २४२ ॥ टीका ॥ जब रूप को ग
र्व करे सो रूप गर्विता नायिका है दोनू वाक्यन की एकता होय
सो निदर्शना अलंकार है ॥ २४२ ॥ अथ निज रूप गर्वित
निदर्शना उदाहरन ॥ दोहा ॥ जो मधुराई सुभगता राज-
त तो मुख माहिं ॥ येरी अली मयंक में यहाँ विमलता आहिं ॥

२५३॥ टीका ॥ जो मधुरता और सुभगता मेरा मुख में राजे है अरी सखी चंद्रमा में यही निर्मलता है॥ यहां सुंदरता को अभिमान है॥ यातें रूप गर्विता नायिका है और सुभगता मधुराई है सोई चंद्रमा में निर्मलता है यह दोनूं वाक्यन की एकता है यातें निदर्शना अलंकार है॥२५३॥ अथ द्वितीय निदर्शना लक्षण॥ दोहा॥ वृत्ति पदारथ की जहां और ठोर ठहराव॥ यह निदर्शना दूसरी कवि गुलाब मन भाव॥ २५४॥ टीका॥ जहां पदार्थ की वृत्ति और ठोर ठहरावे यह दूसरी निदर्शना गुलाब कवि का मन में भाव है अर्थात् पदार्थ वृत्ति नाम एक वस्तु की लीला गुन धर्म की है२५४॥ अथ पिय रूप गर्विता द्वितीय निदर्शना उदाहरन॥ दोहा॥ पिय चष खंजन चरित गहि मन रंजन करि देत॥ बचन पियूष विलास लहि काहि मोल नहि लेत॥ २५५॥ टीका॥ पीतम का चष है सो खंजन का चरित गह करि के मन कों राजी करि देहें॥ पिय का बचन अमृत का बिलास कों प्राप्त हो कोईकै कौन कों मोल नहीं ले॥ यहां पिय का रूप को गर्व है॥ यातें पिय रूप गर्विता नायिका है॥ और खंजन की लीला नैनन ने लीनी अमृत का गुन बैनन नें लीना यातें दूसरी निदर्शना है॥ २५५॥ अथ तृतीय निदर्शना लक्षण॥ दोहा॥ क्रिया असत सत करि करे औरन को उपदेश॥ तीनों द्विविधि निदर्शना बर्नत सकल बुधेश॥२५६॥ टीका॥ असत सत क्रिया करि के औरन कों उपदेश करें सो तीसरी दो प्रकार की निदर्शना संपूर्ण बुधन के ईश बर्नने हैं॥२५६

अथ भूषण चंद्रिका नायिका सहित असदर्थ निदर्शना उदाहरन॥ दोहा॥ राज विरोधी नशत है

यों जग कों दरसात॥ चंद उदय मैं नम निकर छिन छिन छीजत जात॥१४४॥ टीका॥ राज का बिरोधीन से है॥ ऐसे जगत कों दरसातो भयो चंद्रमा का उदय में नम को समूह छिन छिन में छीजतो जाय है यहां नम छीजिवो असत किरिया है यातें अ-सदर्थ निदर्शना है॥१४४॥ अथ निज गुन गर्बिता स-दर्थ निदर्शना उदाहरन॥ दोहा॥ निज गुन बस करि पियहि मैं सौतिन शिक्षा देत॥ सब ही पिय बस करन हित सीखो गुन चित चेत॥१४५॥ टीका॥ अपना गुनसैं मैं पीतम कों ब-स करि के सौतिन कों शिक्षा द्यो हूं सब ही पीतम का बस कर वाके वास्ते चित का चेत सें गुन सीखो यहां गुन सों मे पीतम कों बस करी हों ऐसें कहै यासें निज गुन गर्बिता नायिका हैं और गुन जो सत अर्थ तासों सौतिन कों शिक्षा दीनो यातें स-दर्थ निदर्शना अलंकार है॥१४५॥ अथ मान वती व्यति-रेक लक्षण॥ दोहा॥ अपर तिया के दरस तें नाम कढ़े तें जा-य॥ संगासादि करि मान सैं मानवती तिय होय॥१४६॥ टीका और तिया के दर्श वे नाम कढ्यो ते देखो संगासादिक करि के मा-न सें मान वती नायिका होय है॥१४६॥ दोहा॥ उपमान रु उपमेय मैं वै लक्षण व्यतिरेक॥ अधिक न्यून सम भाव करि ताको त्रिविधि विवेक॥१४७॥ टीका॥ उपमान उपमेय में विशेषता होय सो व्यतिरेक अलंकार है॥ अधिक न्यून सम भाव करि के ताको तीन प्रकार को ज्ञान है॥१४७॥ अथ स्व किया मानिनी अधिक व्यतिरेक उदाहरन॥ दोहा॥ लखि पिय बिनती रिस भरी चितवे चंचल भाय॥ तब खंज न से दृगन मैं लाली अति छबि छाय॥१४८॥ टीका॥ पिय की बीनती देखि के रिस की भरी चंचल भाय सैं चितवै॥

तब खंजन से दृगन में लाली अत्यंत छबि मैं
यहाँ पिय की बीनती तें रिस की भरी हुई मौं
याते स्वकीया मानिनी है॥ और नेत्र उपमेय
तें घरी छबि छाई याते अधिक व्यतिरेक है॥२४८॥
अथ परकीया मानिनी न्यून व्यतिरेक उदाहरन
दोहा ॥ सापराध लखि पियहि तिय जब दृग देत न-
वाय॥ तब खंजन से चखन से चंचलता न रहाय॥२४९॥
टीका॥ तिय है सो पिय कों अपराध सहित देखिके
जब दृगन कों नवा देहै तब खंजन से नैनन मैं चंच-
लता नहीं रहै॥ यहाँ पीतम कों अपराध सहित दे-
खि के दृगन कों नवावे है॥याते परकीया मानिनी है
और नैनन में चंचलता नहीं यह न्यूनता है याते न्यू-
न व्यतिरेक है॥२४९॥ अथ गनिका मानिनी स-
म व्यतिरेक उदाहरन॥ दोहा॥ सा[illegible] लखि धन
दानि कों मौंन गहै मन मारि॥ तब शशि तो मुख बा-
ल को होय प्यामता धारि॥२५०॥ टीका॥ धन दानी
कों अपराध सहित देखि के मन कों मारि के मौंन कों ग-
है॥ तब चंद्रमा शशी को बाल को मुख श्यामता धारि
के होय यहाँ धन दानी कों देखि के मौंन गहे है याते
गनिका मानिनी॥ और शशि के मुख के समता है॥
याते सम व्यतिरेक अलंकार है॥२५०॥ अथ दश
विध नायिका बर्ननं॥ दोहा॥ प्रोषित पतिका खंडि-
ता कलहां तरिता जानि॥ विप्र लब्ध उत्कंठिता वासक स-

१५२॥ चौपाई ॥ दस्रस आग मिष्यत पतिका लहि॥
एकादश आगत पतिका कहि॥ पति स्वाधीन द्वादश
वासा॥ मैं वर्नी लखि ग्रंथ ललासा॥१५३॥ अथ प्रो
षित पतिका लक्षण॥ दोहा॥ गये पीय परदेश
मैं विरह विकल जो होय॥ सो है प्रोषित भर्तृका द-
सौं दशा जुत जोय॥१५४॥ दश दशा नाम॥ दो०
अभिलाष रु चिंता स्मरन गुन कथन रु उद्वेग॥ जड़ता व्या
धि प्रलाप उन्माद मरन जुत वेग॥१५५॥ अथ मुग्धा
प्रोषित पतिका लक्षण॥ दोहा॥ ह्यौं पंचक मुग्धा
दि को पूरव लक्षण धारि॥ वर वर्नन है साथ करि सो
सहोक्ति निर्धारि॥१५६॥ टीका॥ यहां मुग्धा मध्या
प्रौढा परकीया सामान्या को पहिलो लक्षण धारो॥ सा
थ शब्द करि के सुन्दर बर्नन होय सो सहोक्ति निर्धारो
१५६॥ अथ प्रोषित पतिका सहोक्ति उदाहरन।
दोहा॥ कछु दुबराई लखि परी पिय वियोग की पीर
॥१५७॥ टीका
दुबराई संग सेनता छाई सकल शरीर॥१५७॥ टीका
थोरी सी दुबराई जानि परी पीतम का वियोग की पीड़ा
सैं दुबराई के साथ सेतता सम्पूर्ण शरीर में छाई॥ इ
हां थोडी दुबराई सैं मुग्धा प्रोषित पतिका है॥ और
दुबराई के साथ सेतता वर्नी यातें सहोक्ति है॥१५७॥
अथ विनोक्ति लक्षण॥ दोहा॥ सो विनोक्ति प्र
स्तुत जहां होय कछुक विन हीन॥ द्वितिय विनोक्ति
कछु विना पावे सोभ नवीन॥१५८॥ टीका॥ जहां
प्रस्तुत कछु बिना हीन होय सो विनोक्ति है कछु बि-
ना नवीन शोभा पावे सो दूसरी विनोक्ति है॥१५८॥

अथ मध्या प्रोषित पतिका प्रथम विनोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ बिरहा नल कल जर निशि पर रखी री कि प्रवीन ॥ तउ जानी आलीन ने बिन लाली छवि छीन ॥ २५९ ॥ टीका ॥ बिरहानल की झलकी जरीन प्रवीन ने जीव में रोके राखी ॥ तो भी सखीन नें ने लाली बिना छीन छवि जानी ॥ यहाँ बिरह की झर नायिका ने रोकी सखीन ने जानी याते मध्या प्रोषित पतिका नायिका है और ललाई बिन छवि छीन भई याते पहिली विनोक्ति है ॥ २५९ ॥ अथ प्रौढा प्रोषित पतिका द्वितीय विनोक्ति उदाहरन दोहा ॥ सब तनु लाली दुरि गई जरि बिरहानल ताप ॥ त-उ मन मोहत आलिन को पीरी प्रभा अमाप ॥ २६० ॥ टीका ॥ सम्पूर्ण तन में लाली छिप गई बिरहानल की ताप से जरि कारे के तोभी अलीन को मन मोहे है अमाप पीरी प्रभा है सो यहाँ पूरण बिरह सें प्रौढा प्रोषित पतिका नायिका है लाली बिना पीरी प्रभा ने अधिक शोभा पाई याते दूसरी विनोक्ति है ॥ २६० ॥ अथ समा शोक्ति परि कर लक्षण ॥ दोहा ॥ समा शोक्ति प्रस्तुत विषे अप्रस्तु फुरि जाय आशय कढे विशेषणादि सो परि कर ठहराय ॥ २६० ॥ टीका ॥ प्रस्तुत पद के विषे अप्रस्तुत फुरे सो समा शोक्ति अलंकार है विशेषण पद में आशाय कढे सो परिकर अलंकार ठहरावो है ॥ २६१ ॥ अथ परकीया प्रोषित पतिका समा शोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उद्धव देषउ आ... है है कपटी वे पीर ॥ तीज वर बिमला मालती सेवन कला

पाली कों सेवै है ॥ यहाँ कपटी वे पीर कहि यातैं परकीया प्रोषित पतिका नायिका है ॥ और भव रोगालनी कनीर कोकली आसंगिक हैं याते समाशोक्ति अलंकार है ॥ २६२ ॥

अथ गनिका प्रोषित पतिका परिकर उदाहरन

दोहा ॥ पाती प्रीतम धनद की बांचित प्रिया प्रवीन ॥ लखि लखि हिमकर बदन नें सखि गन शीतल कीन ॥ २६३ ॥ टीका ॥ प्रीतम धनद की पाती प्रवीन प्रिया नें बाचतां हिमकर बदन सें देखि देखि के सखीन को गन शीतल कर्यो यहाँ धनद की पाती सें गनिका प्रोषित पतिका नायिका है और हिमकर विशेषण पद सें शीतल करवो आशय है याते परिकर अलंकार है ॥ २६३ ॥

अथ खंडिता लछन

दोहा ॥ अन्य तिया संभोग के चिन्ह धारि निज गात ॥ ले खंडिता जासु के आवै पिय परभात ॥ २६४ ॥ दूजा पूछी लाव सुनो अनुकूल सेना ॥ चेष्टा हैं निश्वास अरु आदि अनुहालाप ॥ २६५ ॥

अथ परिकरांकुर श्लेस लछन

॥ दोहा ॥ आशय सहित विशेष्य पद परिकर अंकुर सोय ॥ बहुत अर्थ पद में कछू श्लेस अलंकृति होय ॥ २६६ ॥ टीका ॥ विशेष्य पद आशय सहित होय सो परिकरांकुर अलंकार है ॥ पद में बहुत अर्थ कहै सो श्लेष अलंकार होय है ॥ २६६ ॥

अथ मुग्धा खंडिता परिकरांकुर उदाहरन

॥ दोहा ॥ प्रात आय निशि बस को आन बताया धाम ॥ भोले लाल लखि लाल को रही नाय सिर वाम ॥ २६७ ॥ टीका ॥ सवेरे ही आकीर के रात्र में बस वाको और धाम बतायो लाल को भोले लाल देखि के वाम है सो शिर नवाय रही यहाँ सापराध देखि शिर नवो यासूं मुग्धा खंडिता

नायिका है और भाल विशेष्य पद में सापराध पर्यो जाय है ॥ यातै परि करांकुर अलंकार है ॥ १६७ ॥ दोहा ॥ श्लेषसु वर्ण्य रु वर्ण्य करि॰ वर्ण्य अवर्ण्य विजोय ॥ तृतिय अवर्ण्य अवर्ण्य करि कवि गुलाब मत होय ॥ १६८ ॥ टीका श्लेष अलंकार है सो उपमेय उपमेय करि कै उपमेय उपमान करि कै और तीसरा उपमान उपमान करि कै गुलाब कवि का मत मैं होय है ॥ १६८ ॥ अथ मध्या खंडिता वर्ण्य वर्ण्य श्लेष ॥ दोहा ॥ दंपति कंपत विरस बस-बोलत करत न लाग ॥ इक टक चितवत चलत नहि अरे खरे हग राग ॥ १६९ ॥ टीका ॥ दंपति जो नायिका नायक है सो विरस के वस सैं कांपते हैं ॥ विरस को अर्थ नायिका में विना रस नायक में विशेष रस बोले नहीं मिलाप करे नहीं इक टक देखै है चलै नहीं नेत्र खरे राग सैं अरे हैं [illegible] को और रंग को है ॥ यहां नायक की [illegible] विरस भई लाज से बोलि नहीं सकी यातैं मध्या खंडिता है और दोनू उपमेय हैं विरस और [illegible] राग पद के दोय अर्थ हैं यातैं वर्ण्य वर्ण्य श्लेष है ॥ १६९ ॥ अथ अवर्ण्य अवर्ण्य श्लेष ॥ दोहा ॥ द्विज कपि हित कर पीन घर अरि हारक रण धीर ॥ [illegible] प्रयास रघुवीर ॥ २७० ॥ टीका ॥ और रघुवीर कैसे हैं द्विज ब्राह्मण कपि भगवान सैं हित करे है पीन के घर हैं अरिन के हारक हैं रण मैं धीर हैं [illegible] पालक हैं ॥ प्रयास रघुवीर कैसे हैं ॥ द्विज पक्षी जटायु [illegible]

उपमान हैं याते वराये वराये श्लेष है ॥ २७० ॥ कापिनीसि
लह के सारवा सृगेच मधुसूदने ॥ इति मेदिनी ॥ दो०
सुखद मदन दर वीर्य घर राज राज हित धीर ॥ उपमा ज
तज शुचि भूति धर गिरिजा पति रघुवीर ॥ २७१ ॥ टीका
गिरिजा पति कैसे हैं सुख स्वर्ग का दाता है मदन कामदे
व का विदीरी करवा वाला है ॥ वीर्य जो शुक्र प्रभाव तेज
सामर्थ्य इनके घर हैं ॥ राज राज कुबेर सौं हित हैं धीर धी
रज वान है ॥ उमा पार्वती जलज चन्द्रमा। शुचि अग्नि। सू
ति भस्म। इन कों धारण करवा वाला है ॥ रघुबीर कैसे हैं।
सुख आनंद का दाता है मद नहीं है। दर भय नहीं है। वी
र्य जो तेज सामर्थ्य के घर है ॥ राजान के राजा जो सार्व भौम
जिनसैं हित है ॥ धीर पंडित और धीरज वान है उमा जो की
र्त्ति कांति ॥ जलज मोती ॥ शुचि श्रृंगार शुद्ध मंत्री। भूति सं
ति। इन कों धारन करने वाले हैं ॥ यहाँ रघुवीर उपमेय है
गिरिजा पति उपमान हैं ॥ याते वराये वराये श्लेष है ॥ २
सुखं शर्म्मशाना केच ॥ वीर्य्यं शुक्रे प्रभावेच ॥ तेजः सा
यो र्यपि ॥ राज राजः कुबेरे पि सार्व भौमे सुधा करे ॥ धी
न्विते स्वैरे बुधे स्त्री वंतु कुंकुमे ॥ उमा । तसी हे म व
कीर्त्ति कान्ति सु ॥ शुचि ग्रीष्माग्नि श्रृङ्गारे प्या स
मन्त्रिणि ॥ इति मेदिनी ॥ चिंता तंत्रे
श्लेष ॥ दोहा ॥ वाहक बृष दाहक
अन चाहक काम ॥ अति चाहक वन चरन के
बास ॥ २७२ ॥ टीका ॥ राम कैसे हैं धर्म के चलावे
हैं ॥ अधर्म के दाहक हैं कामना के अत्यंत अन
॥ वानरान के अति चाहक हैं ॥ वाम कैसे हैं बेल के

हक हैं। अकल्यान के दाहक हैं॥ कामदेव के अत्यंत अ-
न चाहक हैं॥ भूत पिशाचादिक के अति चाहक हैं॥ ऐ-
से राम वाम मैंने नहीं सुमरे॥ यहाँ राम और शिव उपमान
है याते अवरार्थ अवरार्थ श्लेष है॥ १७२॥ अथ अप्र
स्तुत प्रशंसा लछण॥ दोहा॥ जहँ प्रस्तुत के कार-
णे अप्रस्तुतहि प्रशंस॥ होय तहां भूषन यहे अप्रस्तुत
प्रसंस॥ १७३॥ टीका॥ जहाँ प्रस्तुत के वास्ते अप्रस्तुत
कों प्रसंसे तहाँ अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार होय है॥ १७३
छप्पय॥ बरनि अप्रस्तुतहि माँहि जहँ प्रस्तुत निकसे॥
आस संबंध हि माँहि अलंकृति यह निति विकसे॥ समरू
रूप के माँहि जहाँ सम रूप जु निकरे॥ सो सारूप्य निबं
ध नाँहि मिद पहिलो उघरे॥ निकसे विशेष सामान्य में
सो सामान्य निबंधना॥ सामान्य विशेषहि में कढ़े सुहे
विशेष निबंधना॥ १७४॥ दोहा॥ कारण में कारज कढ़
ै हेतु निबंधन सोय॥ कारज में कारण कढे काय निबंध
न होय॥ १७५॥ अथ प्रौढा खंडिता सारूप्य नि
बंधन उदाहरन॥ दोहा॥ बक धरि धीरज कपट क
रि जो बनि रहे मराल॥ उघरे अंत गुलाब कबि अपनी बो
लनि चाल॥ १७६॥ टीका॥ बक है सो धीरज धरि कर
के कपट करि के जो मराल बनि के रहे है गुलाब कबि कहे
है अंत में उघड़े अपनी बोली चाल सें। यहाँ सदोष ना-
यक सों नायिका चतुराई करि कहे है याते प्रौढा खंडिता
है। और बक हंस वर्ण वामें समान रूप मूरख का पंडि
त बणवो निकसे है। याते सारूप्य निबंधना है। १७६
अथ परकीया खंडिता सामान्य निबंधना॥

निकसे है याते कारन निबंधना है ॥२७९॥ अथ कार्य
निबंधना उदाहरन ॥ दोहा ॥ तुव पद नख की द्युति
कछुक गइ धोवन जल साथ ॥ तेहिं कन मिलि दधि मथनमें
चंद भयो है नाथ ॥ २८०॥ टीका ॥ तुम्हारा पद का नख की
कछुक द्युति धोवन जल के साथ गई ताका कनका मिलि करि
के दधि का मथवामें हे! नाथ चन्द्रमा बन्यो है ॥ यहाँ चंद्र
मा कारज को बर्नन में नख द्युति कारन की बड़ाई है याते
कार्य निबंधना है ॥२८१॥ अथ कलहाँतरिता ल-
क्षण ॥ दोहा ॥ पिय आयें मानें नहीं फिरि पाछे पछि-
ताय ॥ कलहान्तरिता नायिका ताही कोविद सुरस गाय ॥२८२
भ्रांति और संताप पुनि सम्मोह रु निश्वास ॥ ज्वर रु प्रलापादि
क सकल याकी चेष्टा आस ॥२८३॥ अथ प्रस्तुतांकुर
लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रस्तुत वर्णन करि अपर प्रस्तुत द्यो
तन होय ॥ तहाँ प्रस्तुतांकुर कहत कवि गुलाब बुध लोय
२८४॥ टीका ॥ प्रस्तुत को बर्नन करिके प्रस्तुत को प्रका
स होय गुलाब कवि कहै है बुध लोग है सो तहाँ प्रस्तुतां
कुर अलंकार कहै है२८५॥ अथ मुग्धा कलहाँतरि-
ता प्रस्तुतांकुर उदाहरन ॥ दोहा ॥ अली न रोके
मालती अली अनत जब जाय ॥ ता पाछे मन मानि दुख कली
काहि कुम्हिलाय ॥२८६॥ टीका ॥ हे अली अली और पै
र जावे जब मालती नहीं रोके ताके पाछे मन में दुख मानि
करि के कली क्यों कुम्हिलावे ॥ यहाँ नायक गये पै पछिता-
ती नायका सों सखी ने कली कही याते मुग्धा कलहाँतरि-
ता नायिका है ॥ और कली भी विद्यमान है ता प्रस्तुत में ना-
यिका प्रस्तुत निकसे है याते प्रस्तुतांकुर अलंकार है ॥२८७

अथ पर्यायोक्त लक्षण ॥ दोहा ॥ जहं रचना सों वात सों पर्यायोक्त प्रकार ॥ जहं मिस करि कारज करें द्वितिय भेद निर्धार ॥ १८६ ॥ टीका ॥ जहां रचना सौं बात होय सो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ जहां मिस करि कै कारज सधे सो दूसरो भेद है निर्धार निश्चय ॥ १८६ ॥ अथ मध्या कलहांतरिता उदाहरन ॥ दोहा ॥ नम्बर दर्शन लाख लघु आदि अंक को भाव ॥ सादर राख्यो ते नसो अली आज नहि आव ॥ १८७ ॥ टीका ॥ नंबर दर्शन लाख लघु इन च्यारोंन का आदि अंक को भाव तैने आदर सहित नहीं राख्यो सो हे अली आज नहीं आवे ॥ यहां नायिका नें नायक कौ बुलावो चाह्यो यातें मध्या कलहांतरिता नायिका है और नंबर को नं। दर्शन को द। लाख को ल। लघु को ल। कयातें नंदलाल नामनिकस्यो यह रचना सौं बात कही यातै पर्यायोक्त अलंकार है ॥ १८७ ॥ अथ प्रौढा कलहांतरिता द्वितीय पर्यायोक्त उदाहरन ॥ दोहा ॥ जब नांहि मान्यौं मोर मत क्यौं अब तचत निकाम ॥ सो पिारम (?) र कत प्रीति सें ले अे हों घन श्याम ॥ १८८ ॥ टीका ॥ जब मेरो मत नही मान्यो अब बिना काम क्यों तचे है मेरो शरीर भर कै हे आराम भया पै घनश्याम कौं लियाऊंगी यहां तब वासों और सखी को कह्यो नही मानि वासौं प्रौढा कलहांतरिता भर क वाका मिस करि के नहीं जावो कारज साध्यो याते दूसरो पर्यायोक्त अलंकार है ॥ १८८ ॥ अथ व्याज स्तुति लक्षण ॥ दोहा ॥ इक की निंदा सतुति मिस स्तुति निंदा जहं जोय ॥ पर की निंदा सतुति सें पर स्तुति निंदा होय ॥ १८९ ॥ टीका ॥ जहां एक की निंदा और

अस्तुति का मिस करि के वाही की अस्तुति निंदा देखो पैला की निंदा अस्तुति से पैला की अस्तुति निंदा होवै॥ २८८॥ दोहा॥ पर की अस्तुति से जवै पर की अस्तुति साज॥ व्याज स्तुति यौं पाँच बिधि कहत सकल कबिराज॥ १८०॥ टीका॥ पैला की अस्तुति सें जब पैला की अस्तुति साजे ओसें व्याज अस्तुति पाँच प्रकार सें सम्पूर्ण कबिराज कहें हैं॥ २८०॥ **अथ वाही की निंदा सें वाही की स्तुति॥ दोहा॥** रंक सुदामादिकन के भरि दीने भंडार॥ कंसादिक कीने निधन हे हरि बिनहि बिचार॥ **टीका॥** हे हरि सुदामादिक कंगालन कों घणो धन दीनो कंसादिक कों नाश कर्‍यो बिना ही बिचार यहाँ कृष्ण की निंदा में स्तुति है याते प्रथम व्याज स्तुति है॥ २८१॥ **अथ पर कीया कलहाँ तरिता वाही की स्तुति सें वाही की निंदा दोहा॥** तेरी सुघराई सखी मो पै कही न जाय॥ पर भय भरि बोलो न तब अब कर मलि पछिताय॥ २८२॥ **टीका** हे सखी तेरी चतुराई मो पै कही नही जाय॥ तब पैला का भय में भरि करि के बोली नही अब हाथ मसलि करि के पछितावे है॥ यहाँ पर भय सें परकीया कलहाँ तरिता है और सुघराई स्तुति में प्रगट निंदा निकसे है याते द्वितीय व्याज स्तुति है॥ २८३॥ **और की निंदा सें और की स्तुति॥ दोहा॥** दश शिर कुमति करान ने कर्‍यो राम अपकार॥ तज्यो बिभीषन ताहि सो कीनो काम उदार॥ २८४॥ **टीका॥** काल कुमति वालो दश शिर है ऊने राम को अपकार कर्‍यो॥ ताको बिभीषन ने तज्यो सो बड़ो काम कर्‍यो यहाँ रावन की निंदा से बिभीषन की अस्तुति है याते ...

री व्याज स्तुति है ॥ २८३ ॥ और की स्तुति सें
और की निंदा ॥ दोहा ॥ धन्य विभीषन राम कौ आ
यो सरन सुजान ॥ धिक है जाने अनुज आस दियो निकासि
निदान ॥ २८४ ॥ टीका ॥ विभीषन कौं धन्य है सुजान रा
म के सरनैं आयो ताकौ धिक्कार है जानें ऐसा भाई कौं नि
श्चय निकासि दियो यहां विभीषन की अस्तुति सें रावण
की निंदा है यातें चौथो व्याज अस्तुति है ॥ २८४ ॥ और की
स्तुति सें और की स्तुति ॥ दोहा ॥ धन्य धन्य है
राधिका पाये पति भगवान ॥ धन्य राधिका मात जिहि जाई
सुता सुजान ॥ २८५ ॥ टीका ॥ राधिका कौं धन्य है धन्य है
भगवान पति पाया राधिका की माता कौं धन्य है जौंनें सु
जान सुता जाई यहां राधिका की स्तुति सौं राधिका की माता
की स्तुति है यातें व्याज अस्तुति को पांचवों भेद है ॥ २८५ ॥

अथ व्याज निंदा लक्षण ॥ दोहा ॥ पर की निन्दा
सें जहां पर की निंदा होय ॥ तहां व्याज निंदा इकहि भेद कह
त कबि लोय ॥ २८६ ॥ टीका ॥ जहां पैला की निंदा सें पैला
की निंदा होय तहां व्याज निंदा को एकही भेद कबि लोग क
हे है ॥ २८६ ॥ अथ [illegible] व्या
ज निंदा उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुर तरु सम पिय तजि
गयो करि बिनती उपचार ॥ भाल और तू निंद्य है निंद्य तोहि
धिक्कार ॥ २८७ ॥ टीका ॥ कल्प वृक्ष की समान पीतम हो सु
तजि करि के गयो बीनती जतन करि कै है मेरा भाल तू निंद्य
और तेरी लिखि कराबा वालो निंदा लायक है यहां धनबान
श्र या मैं पांचनावै है यातें कौनका काल हां तीस्ता है और भा
कौ निंदा सें ब्रह्मा की निंदा है यातें व्याज निंदा अलंकार

२९७॥ अथ विप्रलब्धा लक्षण॥ दोहा॥ तिय
संकेत निकेत से जाय न देखै पीय॥ कही विप्रलब्धा यहै
दुखित होय अति जीय॥ २९८॥ निर्वेद रु निस्वास पुनि स
खिन उराहन आनि॥ अश्रुपात चिंतादि ही याकी चेष्टा जा
नि॥ २९९॥ अथ प्रथम द्वितीयाक्षेप लक्षण॥
दोहा॥ आक्षेप सु कहि आपु ही फेरै बात विचारि॥ क
हि वच कैरै निषेध सो द्वितिया क्षेप निहारि॥ २००॥ टी॰
आपही कछु करि कै विचार करि कै बात कौं फेरै सो प्र
थमा क्षेप है॥ वचन कहि करि कै निषेध करै सो दूसरो
आक्षेप है॥ २००॥ अथ मुग्धा विप्रलब्धा प्रथमा
क्षेप उदाहरन॥ दोहा॥ अबही घर चलि कै गली उ
दय होन दै चंद॥ यों कहि भोरी भामिनी परी सेज दुति
मंद॥ २०१॥ टीका॥ अबही घर चलि कै गली चंद्रमा
को उदय होवा दै॥ ऐसे कहि करि कै भोरी भामिनी है सो
मंद दुति सैं सेज पै परी॥ यहाँ अबही चलि कै चंद्रमा
को उदय होवा दै या पराधीन बात सैं मुग्धा विप्रलब्धा
नायका है॥ और अब ही चलि यों बात कहि करि कै फे
री चंद्रमा उदय होया दै यातै प्रथमा क्षेप है॥ २०१॥ अ
थ मध्या विप्रलब्धा उदाहरन॥ दोहा॥ आई
नहीं सहेट में आली भूली चाल॥ भाषि बचन कछु कोप क
रि मौन गही बर बाल॥ २०२॥ टीका॥ सहेट में नहीं
आई है आली चाल भूली हौं यों वचन भाषि करि कै कछु
कोप करि के सुंदर बाल ने मौन गही यहाँ काम सैं थोड़ो
कोप कर्यो और लाज सैं मौन गही यातै मध्या विप्रलब्धा
नायका है और सहेट मैं आवो कहि करि कै निषेध कर्यो

याते दूसरो आक्षेप है ॥२०२॥ **अथ तृतीया क्षेप बिरोधाभास लक्षण ॥ दोहा ॥** गुप्त निषेध प्रकाश बिधि तृतिया क्षेप निकास ॥ है न विरोध विरोध सो भास बिरोधाभास ॥२०३॥ **टीका ॥** छिपि वातो मने कीर वो होय आक्षर में कर वो होय सो तृतीया क्षेप को निकास है बिरोध तो नहीं होय बिरोध सो भासे सो बिरोधाभास अलंकार है २०३॥ **अथ प्रौढा विप्र लब्धा तृतीया क्षेप उदाहरन ॥ दोहा ॥** आली घर चलि चलतही कीरि हैं प्रान पयान ॥ पहुंचत ही घर होय गो येरी मोहि ससान ॥२०४॥ **टीका ॥** हे आली घर चलि चलतों ही प्रान पयान करेगा पहुंचता ही येरी मोकों घर मसान होय गो यहां उत्कर्ष बचन बोले हे याते प्रौढ़ा विप्र लब्धा नायिका है और घर चलि यह बिधि बचन है घर चलती ही मरि जाऊं गी याते मति चले यह निषेध छिप्यो है याते तीसरो आक्षेप है ॥२०५॥ **अथ परकीया विप्र लब्धा बिरोधाभास उदाहरन ॥ दोहा ॥** सास ननद या तान कों आई नीति [illegible] वाय ॥ अब आली घर गमन की सुधि आये सुधि जाय ॥२०५॥ **टीका ॥** सास ननद द्योरानी जिठानी नकों नीति सुवा करि के आई हे आली अब घर चलि वाकी सुधि आया सों शरीर की सुधि जात है ॥ यहां द्योरानी जिठानीन कों सुवा करि के आई ऐसे यह बालों परकीया विप्र लब्धा नायिका है ॥ और सुधि आवा से सुधि जावो बिरोध सो भासे है विरोध नहीं याते बिरोधाभास अलंकार है ॥२०५॥ **अथ गनिका विप्र लब्धा विरोधाभास उदाहरन ॥ दोहा ॥** आई वर सत ला-

री मैं करि घन आसा धाम॥ भई बिहाल निरास लखि घन श्यामन घन श्याम॥२०६॥ टीका॥ बरसता जल में घन की आसा करि के ई धाम में आई विहाल भई निरास भई घन श्याम जो मेघ हैं उनकौ देखि के घन श्याम जो श्री कृष्ण उनकौं नहीं देखि के यहां धन की आसा करि के धाम में आई याते गनिका विप्र लब्धा नायिका है और घन श्याम है सो घन श्याम नही यह वि रोध सो दीख्यो याते विरोधाभास अलंकार है॥२०६॥ अथ उत्कंठिता लक्षण॥ दोहा॥ संकेत स्थल में गई पी-वन आयो होय॥ ताको कारन चिंत वे उत्का कहिये सो-य॥२०७॥ जंभा अगराई असित कंप रुदन संताप॥ स्था-वस्था कथनादि ये याकी चेष्टा थाप॥२०८॥ अथ विभावना लक्षण॥ दोहा॥ कारन बिन जह काज है तहं विभावना मानि॥ लघु कारण ते काज है दूजो भेद सुजानि॥२०९॥ टीका॥ जहाँ कारन विना काज होय तहाँ विभावना मानो॥ छोटो कारण सें कारज होय सो दूसरो भेद जानों॥२०९॥ अथ मुग्धा उत्कंठिता विभावना उदाहरन॥ दोहा॥ पिय ऐहैं ऐहैं न वा सोचत रहित उमंग॥ पिय रानी लाये बिना केसर के-सर रंग॥२१०॥ टीका॥ पीतम आवेगा अथवा नहीं आवेगा उमंग रहित सोचतां केशर लगाया विना केशर के रंग सी पीली जई। यहां पीतम आवेगा अथवा नहीं आवेगा ऐसें उमंग रहित सोचे है याते मुग्धा उत्कंठित नायिका है॥ और केसर कारन है ताका लगाया बिना केस र के रंग पीलो होवो कारज भयो याते प्रथम विभावना है

२२०॥ अथ मध्या उत्कंठिता द्वितीय विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ खानि सनेह सकोच की सूनों सदन निहारि ॥ भई विकल मृदु शशि किरनि भई पार उर फारि ॥ २२१॥ टीका ॥ सनेह सकोच की खानि है सो सूनों घर देखि कै विकल भई चंद्रमा की कोमल किरनि है सो हृदा कौं फाड़ि करि कै पार भई यहाँ सकोच सनेह की खानि सैं मध्या उत्कंठिता नायिका है ॥ और चंद्रमा की कोमल किरनि थोड़ा कारण सैं पार होवो वड़ो कारज भयो यातै दूसरी विभावना है ॥ २२१ ॥ अथ तृतीय चतुर्थ विभावना लक्षण ॥ दोहा ॥ कारज पूरन होय जहं अति बंधक हू होत ॥ अवय अकारन वस्तु तें कारज करे उदोत ॥ २२२ ॥ टीका ॥ जहाँ अति बंधक जो रोकवा वालो है ताके होता सता वी पूरन कारज होय सो तीसरो विभावना है ॥ अकारन वस्तु तैं कारज उदोत कर सो चौथी विभावना है ॥ २२२ ॥ अथ प्रौढा उत्कंठिता तृतीय विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ बरसत वारि बयार तउ भुरसि गई विन नाह ॥ आये पिय किंहि हेतु नहि यौं सोचत चित चाह ॥ २२३ ॥ टीका ॥ वारि बरसै है वयार चलै है तौभी नाह विना वलि गई पीतम कौंई कारन नहीं आयो ऐसैं चित्त की चाह सैं सोचै है ॥ यहाँ भुरसि वासैं चित्त की चाह सैं प्रौढा उत्कंठिता नायिका है ॥ और बरसिवो वयार चालिवो रोकिवा वालो है तैभी भुरसवो पूरन कारज भयो यातैं तीसरी विभावना है ॥ २२३ ॥ अथ परकीया उत्कंठिता चतुर्थ विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ मै आई घ

घर काम तजि आये नहिं नंदलाल ॥ यौं कहि सो-
वत कलिन पै बाढै स्वेद विशाल ॥ २१४ ॥ टीका ॥
मैं घर को काम तजि करि कै आई नंदलाल नही आये
यौं कह करि कै फूलन की कलीन पै सोवतो घणो स्वेद
बढ्यो यहां घर को काम तजि वासौं परकीया उत्कंठिता
नायिका है ॥ और फूलन की कली अकारन वस्तु तें पसे-
व कारज भयो यातें चौथी विभावना है ॥ २१४ ॥ अ-
थ पंचम छठी विभावना लक्षण ॥ दोहा ॥
कारज हेतु विरुद्ध तें होय सु पंचम भाव ॥ कारज तें कार
न जनम षट विभावना भाव ॥ २१५ ॥ टीका ॥ विरुद्ध
कारण सें कारज होय सो पंचम विभावना है ॥ कारज
सें कारन को जनम होय सो छठी विभावना को भाव है
२१५ ॥ अथ परकीया उत्कंठिता पंचम विभा
वना उदाहरन ॥ दोहा ॥ कुल नारिन भय ताप स-
हि आई शीतल धाम ॥ ह्यां पिय विन हिमकर अली
जारत मोहि निकाम ॥ २१६ ॥ टीका ॥ कुल की स्त्री-
न को डर और दुख सह करि कै सीतल घर में आई है
अली यहां पीतम विना हिमकर चन्द्रमा है सो मोको
विना काम जलावे है ॥ यहां कुल नारीन का भय और
ताप सह वासौं परकीया उत्कंठिता नायिका है और
हिमकर सें जलावो विरुद्ध कारज भयो यातें पंचम वि
भावना है ॥ २१६ ॥ अथ सामान्या उत्कंठिता द्व
तीय विभावना उदाहरन ॥ दोहा ॥ धन दायक
आयो नही किंहि कारन ईहि थाम ॥ यौं भाषत चपक
अन तैं सींतना बही अजान ॥ २१७ ॥ टीका ॥ धन को

नहीं आयो ऐसें
देवा वालो ई घर में काई कारण सैं नहीं आयो ऐसें
भावना चल कथन से अमान करता वही यहाँ धन
को देवा वालो नहीं आयो ऐसें कह वासों गनिका
उत्कंठिता नायिका है ॥ और मच्छी कारज सैं सो कारे
ना कारन आयो यातें छठी विभावना है ॥ २१७ ॥ अ-
थ वासक सज्जा लक्षण ॥ दोहा ॥ पिय आव
न को अह दिवस मेरो ऐहै आज ॥ वासक सज्जा जानि
ये सजे सुरत को साज ॥ २१८ ॥ दूती प्रश्न मनोरथरु
सामग्री दर्शन आस ॥ सामग्री संपादन रु जानि सखी पी
हास ॥ २१९ ॥ अथ विशेषोक्ति असंभव लक्षण ॥
दोहा ॥ विशेषोक्ति और हेतु है तऊ काज नहि होय
कारज बिन संभावना होय असंभव सोय ॥ २२० ॥ टी०
अत्यंत हेतु होय तो भी काज नहीं होय सो विशेषो-
क्ति अलंकार है ॥ विना संभावना कारज होय सो असंभ-
व अलंकार है ॥ २२० ॥ अथ मुग्धा वासक सज्जा
विशेषोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सोई सोहन से
ज पै लोचन मूंदि विशाल ॥ पिय मग देखन चाहत
उ खोलै नैन न बाल ॥ २२१ ॥ टीका ॥ सखाय मान सेज
के ऊपर सूती विशाल नेत्रन कौ मूंद करि कै प्रीतम काम
ग देखवा की चाह है तो भी बाल ऐसो नेत्रन कौं नहीं खो
लै ॥ यहाँ नेत्र नहीं खोलै यासैं मुग्धा वासक सज्जा ना-
यिका है और प्रीतम की मग देखबा की चाह कारण है
तो सो देखबो कारज नहीं भयो यातें विशेषोक्ति अलं-
कार है ॥ २२१ ॥ अथ मुग्धा वासक सज्जा असं-
भव उदाहरन ॥ दोहा ॥ को जानै हो यह दिवस मेरे

थ सैं दियो पवन में धरि दियो ॥ यहाँ दियो बयार में धरि वासों पर कीयो वासक सज्जा नायिका है ॥ और दिया को काम विना पवन की ठौर में धरि वाको है सो पवन की ठौर में धर्यो यातें दूसरी असंगति है ॥२२५॥ अथ तृतीय असंगति प्रथम विषम लक्षण ॥ दोहा ॥ आन करत आनहि करै तृतिय असंगति जानि ॥ अन मिलते के संग में प्रथम विषम मन मानि ॥ २२६ ॥ टीका ॥ और करतां और करै सो तीसरी असंगति जानों ॥ अन मिलते के संग में मन में प्रथम विषम मानों ॥२२६॥ अथ गनिका वासक सज्जा तृतीय असंगति उदाहरन ॥ दोहा ॥ सेज साजि भूषन वसन धरि उतारि उमाहि ॥ नथ पहरत किहिं कारने हरखि मन माहि ॥ २२७ ॥ टीका ॥ सेज साजि के मन में हरख करि के भूषन वसन धरि के नथ पहरता काई वास्ते उमंग करि के उतारि धरी। यहाँ नथ ले वाके वास्ते उतार धरी याते गनिका वासक सज्जा है नथ पहरता उतारि धरिवो और काम कर्यो याते तीसरी असंगति है ॥२२७॥ अथ स्वाधीन पतिका लक्षण ॥ दोहा ॥ आशय में सानि रहै सदा आज्ञाकारी पीय ॥ सु स्वाधीन पतिका कही कविन नियम करि तीय ॥ २२८ ॥ वन बिहार आदिक जिले मदनोत्सव में प्रीति ॥ मद रु मनोरथ प्राप्त पुनि अहंकार है रीति ॥२२९॥ अथ मुग्धा स्वाधीन पतिका प्रथम विषम उदाहरन ॥ दोहा ॥ सकल कला निधि लाल कित कित यह भोरी बाल ॥ अन मिल को जोति मेल ह्याँ अली लख्यो लिपि भाल ॥ २३० ॥

टीका ॥ सम्पूर्ण कल्सन की खानि लाल कहाँ यह भोरी वाल कहाँ यहाँ ग्रन मिल को ग्रत्यंत मेल है सो हे ग्रली ग्राल की लिपि सें जान्यौं यहाँ भोलापन सें मुग्धा है ग्रौर मेल हो वासै स्वाधीन पतिका नायिका है ॥ ग्रौर ग्रन मिल ता को संग है यातै प्रथम विषम है ॥२३०॥ ग्रथ द्वितीय त्तीय विषम लक्षण ॥ दोहा ॥ कारन कारज भिन्न रंग द्वितिय विषम गण नीय ॥ भले उद्यम ते ग्रभल फल होय सु बिषम तृतीय ॥२३१॥ टीका ॥ कारन को ग्रौर रंग होय कारज को ग्रौर रंग होय सो दूसरो विषम गणो भला उद्यम सें बुरो फल होय सो तीसरो बिषम है २३१॥ ग्रथ मध्या स्वाधीन पतिका द्वितीय विषम उदाहरण ॥ दोहा ॥ खुले ग्रन खुले चष निरखि रंगे लाल रंग श्याम ॥ ता लाली की झलक ते भयो सौति मुख श्याम ॥२३२॥ टीका ॥ खुल्या ग्रन खुल्या चक्षुन से देखि करि के श्याम को लाल रंग सें रंग्या तिस लाली को झलक सें सौतिन को श्याम मुख भयो यहाँ खुल्या ग्रन खुल्या चक्षुन सें मध्या स्वाधीन पतिका नायिका है ॥ ग्रौर लाली की झलक कारन को रंग लाल है सौतिन को मुख श्याम कारज श्याम रंग है यातै दूसरो बिषम है २३२॥ ग्रथ प्रौढा स्वाधीन पतिका तृतीय विषम उदाहरण ॥ दोहा ॥ केलि कला रस रीति करि मैं बालम बस कीन ॥ ग्रब ग्राली संतत मेल तें बोलि न सकौं ग्रलीन ॥२३३॥ टीका ॥ केलि कला रस की रीति करि कै मैंने वालम कों वस कर्यो है ग्रली ग्रब निरंतर मेल सें ग्रलीन सें नहीं बोलि सकौं यहाँ केलि कला करि

झनकार॥ प्रमुदित प्रफु
अद्भुत उज्जल वेष धर करि नूपुर झनकार॥ प्रमुदित प्रफु
लित सुख प्रगट चार मुखी अभिसार ॥२८५॥ अथ मु
रधा अभिसारिका विचित्रा उदाहरन ॥ दो
हा ॥ पिय पैं जात सखीन सँग सलाज सलोनी जोय॥
ज्यौं ज्यौं नीचो होत अति त्यौं त्यौं ऊंचो होय ॥२८६॥
टीका ॥ सखीन का संग में पिय पै जाती लाज सहित
नायिका जैसे जैसे अत्यंत नीची होय है तैसे तैसे ऊँची
होय है यहाँ सलज जावा सें मुग्धा अभिसारिका नायि-
का है और नीचा हो वासौं ऊँचो होवो उलटो फल भयो
याते विचित्र अलंकार है॥२८६॥ **अथ प्रथम द्वि**
तीय अधिक लछन ॥ दोहा ॥ अधिक अधिक
आधार तें आधे जसु अधिकाय॥ द्वितिय अधिक आधे
य ते जब आधार बढ़ाय ॥२८७॥ **टीका** ॥ बड़ा आध
र में आधेय अधिकावे सो पहिलो अधिक है॥ जब आ
धेय में आधार बढे सो दूसरो अधिक है॥ २८७॥ **अथ**
मध्या अभिसारिका प्रथम अधिक उदाह-
रन ॥ दोहा ॥ सानी लाज सनेह की तिया पिया पैजा
त ॥ तिहि लखि बढ़यौ अलीन मन त्रिभुवन मे न समा-
त ॥ २८८॥ **टीका** ॥ लाज सनेह को सनो भई तिया
है सो पिया पै जाय है ताकों देखि करि के अलीन को म
न बढ्यौ सो तीनों भवन में नही मावे यहाँ लाज और
सनेह की भरी भई तिया है सो पिया पे जाय है याते
मध्या अभिसारिका नायिका है॥ और त्रिभुवन आ
धार है तामें अलीन को मन आधेय नही मयो याते
प्रथम अधिक है ॥२८८॥ **अथ प्रौढा प्रेमाभि**

सारिका द्वितीय अधिक उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रेम पगी अति मंद गति चली अलीन मकार ॥ उजियारी मुख चंद की भरी गलीन अपार ॥ २४९ ॥ टीका ॥ प्रेम की पगी हुई अत्यंत मंद गति सें अलीन का वीचि मे चली मुख चंद्रमा की उजियारी गलीन मे अपार भरी यहाँ प्रेम से चली याते प्रौढा प्रेमाभिसारिका नायिका है और मुख चंद्रमा की उजाली आधेय है सो गली आधार मे मा गई याते दूसरो अधिक है ॥ २४९ ॥ अथ अल्प अन्योन्य लक्षण ॥ दोहा ॥ अल्प अल्प आधेय सें अल्प होय आधार ॥ अन्योन्य हि उपकार ते अन्योन्यालंकार ॥ २५० ॥ टीका ॥ अल्प जो आधेय है उसूं आधार अल्प होय सो अल्पालंकार है परस्पर उपकार से अन्योन्यालंकार है ॥ २५० ॥ अथ प्रौढा गर्वाभिसारिका अल्प उदाहरन ॥ दोहा ॥ कोरति जा निज भवन मे तुम्हे बुलावन आहि ॥ सुनि सुख भयो सु लाल के मन मे मायो नाँहि ॥ २५१ ॥ टीका ॥ राधिका अपना मकान मे हे लाल तुमकों बुलावे हे ॥ सुनि कोरति के सुख भयो सो लाल के मन मे नहीं माघो यहाँ पति कों अभिमान के वस से बुलावे है याते प्रौढा गर्वाभिसारिका नायिका है ॥ और सुख है सो आधेय है मन आधार है सो सुख छोटा आधेय तें छोटो है याते अल्प अलंकार है ॥ २५१ ॥ अथ प्रौढा कामाभिसारिका अन्योन्य उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलत लली के लगि गये कीच लपटि अहि पाय ॥ अहि छवि छाई पगन तें तिन ते छवि भइ पाय ॥ २५२ ॥ टी० लली के चलता कीच मै लपटि कारे के अहि हैं सो पगन

से लोप गया पगान से सर्पन की छबि छाई सर्पन से प
गन की छबि छाई यहाँ कामांधा तासे पगान मे सर्प ल
न्या को ठीक नहीं पड्यो याते प्रौढा कामाभिसारिका
है और परस्पर उपकार है याते अन्योन्यालंकार है॥

२५२॥ अथ प्रथम द्वितीय विशेष लक्षण॥

दोहा ॥ विना ख्यात आधार के रहे आधेय विशेष॥
एक वस्तु कों बहुत ठौं वरनत दूजो वेष॥२५३॥ **टीका**
विख्यात आधार विना जहाँ आधेय रहे सो प्रथम वि
शेष अलंकार है॥एक बस्तु कों बहुत ठाम वरने सो दू
सरो विशेष है ॥२५३॥ **अथ परकीयाभिसारिका**
उदाहरन ॥ दोहा ॥ दुरि दुरि गुरु वनितान से चली ल
ली हित धारि॥पै डरि डरि पग मग धरत वन नभ कुसु
म निहारि॥२५४॥ **टीका ॥** गुरु बनितान सें छिपि छि
पि कार के लली है सो हित धारि के चली॥परन्तु डरि ड
रि के मग मे पग धरे है वन में आकास को फूल देखि
के यहाँ दुरि दुरि के जा वासों परकीया भिसारिका नायि
का है और आकास का फूल को बिना आधार वर्नन है
याते पहिलो विशेष है ॥२५४॥ **अथ कृष्णाभिस**
रिका द्वितीय विशेष उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्य
स बसन भूषन प हरि चली अमावस राति॥ घने वन त
निज मनन में सखिन लखी छबि कांति॥२५५॥ **टी**
का॥ काला वसन और भूषन प हरि के अमावस की र
में चली तब नायिका है सो घन मे वन मे तम मे अ
मनन मे सखीन ने छबि को छाई छई देखी यहाँ क
कपड़ा पहरि वासों कृष्णाभिसारिका नायिका है और

एक वस्तु नायिका की छबि है सो घन बनादि में बसी याते दूसरो विशेष है ॥२५५॥ अथ तृतीय विशेष प्रथम व्याघात लक्षण ॥ दोहा ॥ अलघुल भ लघु जतन ते तृतीय विशेष सु ख्यात ॥ वरने हित कर वस्तु सें अहित सु है व्याघात ॥२५६॥ टीका ॥ छोटा जतन सें बडोलाभ हो जाय सो तीसरो विशेष है हितकारी वस्तु सें अहित वने सो व्याघात है ॥२५६॥ अथ शुक्लाभिसारिका तृतीय विशेष उदाहरन ॥ दोहा ॥ रजनी राका सरद की चली सेत साजि साज ॥ जिहि लखि जानी सखिन नें लखी शारदा आज २५७॥ टीका ॥ सरद की पुन्यों की राति में सुपेद साज साजि के चली यहां जिसकों देखि कै सखीन ने जानी आज शारदा देखी ॥ यहां सेत साज साजि के चली याते शुक्लाभिसारिका नायिका है और नायिका का देखि वासों सारदा को देखवो अधिक लाभ भयो यातें तृतीय विशेष है ॥२५७॥ अथ दिवाभिसारिका प्रथम-व्याघात उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुरंग वसन आभरन साजि चली मध्य दिन बाल ॥ मग में घन आये घुमड़ि लखि कुम्हिलानी हाल ॥२५८॥ टीका ॥ लाल वसन आभरन सजि करिके बाल है सो दुपहरा ए चली गैला में घन घुमडि आया तुरत ही देखि करि के कुम्हिलाई ॥ यहां दिन में चल वासों दिवाभिसारिका नायिका है और घन घुमडिवो हित कर वस्तु सें अहित वन्यो यातें प्रथम व्याघात है ॥२५८॥ अथ द्वितीय व्याघात प्रथम कारण माला लक्षन ॥ दोहा

अथ द्वितीय कारन माला एकावली लक्षन

दोहा ॥ कारन माला दूसरी कारज कारन माल ॥ गहि गहि पद छौंड़े जहाँ एकावली रसाल ॥ २६२ ॥ टीका कारज और कारन की माल होय सो दूसरी कारन माला है जहाँ पद कों गह गह करिकै छोड़ै सो एकावली है सुंदर ॥ २६२ ॥ अथ गर्विताभिसारिका द्वितीय कारन माला उदाहरन ॥ दोहा ॥ जाती मन हुलसावनी कहती भरी उमंग ॥ गुन श्रम संग धन गुनसँग हि सकल काम धन संग ॥ २६३ ॥ टीका ॥ जाती हुई मन कों हुलसावती हुई उमंग की भरी हुई कहती है गुन है सो श्रम के संग है धन है सो गुन के संग है संपूर्ण काम है सो धन के संग है ॥ यहाँ धन की बड़ाई करै है यातै गर्विता भिसारिका नायिका है ॥ और पहिले गुन कारज कह्यो फेरि श्रम कारन कह्यो फेरि धन कारज कह्यो गुन कारन कह्यो यातै दूसरी कारन माला है ॥ २६३ ॥ अथ प्रवत्स्यत्पतिका लक्षण ॥ दोहा ॥ अगले छिन में जाहि को जैहे पीव परदेश ॥ ताहि प्रवत्स्यत्प्रेय सी बरनत सुकवि असेष ॥ २६४ ॥ कातर प्रेक्षण काकु वच निर्बेदरु संताप ॥ संमोहरु निश्वास पुनि गमन विघ्न को थाप ॥ २६५ ॥ अथ मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका एकावली उदाहरन दोहा ॥ आली पीव पयान दुख सोच भरि है परभात मन तें मुख मुख तें नयन अधिक अधिक मुरझात ॥ २६६ ॥ टीका ॥ हे आली पीतम का पयान को दुख वैसे ही जानि पड़ै गा ॥ मन तें मुख मुख तें नयन अधि

क अधिक मुरझावै है ॥ यहाँ मुरझावो थोड़ो दुख है या
ते मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है और मन को छो
ड़ि करि के मुख मुख को छोड़ि करि के नयन गहे या-
ते एकावली है ॥ २६६ ॥ अथ माला दीपक प्रथ
म सार लछन ॥ दोहा ॥ मिलि दीपक एकावली
माला दीपक चार ॥ सरस सरस बरनें अपर निरस निर-
स सो सार ॥ २६७ ॥ टीका ॥ दीपक और एकावली मि
ल्या ये माला दीपक अलंकार है चार सुंदर ॥ अधिक
अधिक बनै और कम कम बनै सो सार अलंकार हो
य है ॥ २६७ ॥ अथ मध्या प्रवत्स्यत पतिका
माला दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात गमन पि
य को कहत भो सखि मुख छबि छीन ॥ सखि मुख ल-
खि भौ तुरतही राधा बदन मलीन ॥ २६८ ॥ टीका ॥
सवेरे ही पीतम को गमन कहता सखी को मुख छीन
छबि भयो सखी को मुख देखि करि के राधा को मुख
तुरत ही मलीन हो गयो यहाँ काम से मुख मलीन-
भयो लाज से कछु बोली नही याते मध्या प्रवत्स्यत
पतिका नायिका है ॥ और सखी को मुख राधा को मुख
यह तो एकावली दोनूंन की अन्वय मलीनता में है ॥
याते माला दीपक है ॥ २६८ ॥ अथ प्रौढा प्रव-
त्स्यत्पतिका प्रथम सार उदाहरन ॥ दोहा
मांगत विदा विदेश कों सुनि भइ प्रिया उदास ॥ चिं
ता बढि दृग जल बढे तिन ते अधिक उसास ॥ २६९ ॥
टीका ॥ पीतम कों विदेश की विदा मांगतो सुनि
करि के प्रिया उदास भई चिंता बढि करि के दृगन मे

जल बढे तिन सैं अधिक उसाँस बढै ॥ यहाँ पीतम से बिछुटिवा सौं प्रौढा प्रवत्स्यतपतिका नायिका है और चिंता से दृग जल अधिक है तासौं उसास अधिक है याते प्रथम सार है ॥ २६९ ॥ **अथ परकीया प्रवत्स्यत्पतिका द्वितीय सार उदाहरन ॥ दोहा ॥** प्रात परोसी गमन को सुन्यौं नारि नैं नाम ॥ भई भूष ते प्यास सुधि तातें मति अति छाम ॥ २७० ॥ **टीका ॥** सवैरै ही परोसी का गमन को नारि ने नाम सुन्यौं भूष ते प्यास की सुधि छाम भई ताते मति अत्यंत छाम भई ॥ यहाँ परोसी को गमन सुनि वासौं परकीया प्रवत्स्यत्पतिका नायिका है और भूष ते प्यास छाम भई प्यास ते सुधि छाम भई ताते मति अत्यंत छाम भई याते दूसरो सार है ॥ २७० ॥ **अथ यथा संख्य लछन ॥ दोहा ॥** क्रम सैं कहे पदार्थ को क्रम से कथन जु होय ॥ यथा संख्य तासौं कहत कवि गुलाव बुध लोय ॥ २७१ ॥ **टीका ॥** जो क्रम से कहे ज्ञये पदार्थ को क्रम से कथन होय ॥ गुलाव कवि कहे है बुध लोग है सो तासौं यथा संख्य अलंकार है ॥ २७१ ॥ **अथ गणिका प्रवत्स्यत्पतिका उदाहरन ॥ दोहा ॥** माँगी विदा विदेश पिय गहि तिय कर कर बीचि ॥ करा मुंदरी लीन तिय कर अँगुरिन ते खींचि ॥ २७२ ॥ **टीका ॥** पिय ने विदेश की विदा माँगी तिय का कर को कर का बीचि मे गहि करि के तिय ने करा मूंदरी ले लिया कर अँगुरिन से खींचि करि के यहाँ करा मूंदरी ले वा

सगुन देखि काम के वससेंदीठि लगाई लाज के वस सै अधिक नही हर्षाई याते मध्या आगामिष्यत्पतिका नायिका है ॥ और एक दीठि मुजा मे और काक मे लगी याते दूसरो पर्याय है ॥ २७६ ॥ **अथ परिवृति परि संख्या लछन ॥ दोहा ॥** परि वृत्ति सु पलटो करे अधिक न्यून को कोय ॥ परि संख्या थल आन तजि इक थल जो थित होय ॥ २७७ ॥ **टीका ॥** अधिक न्यून को कोई पलटो करै सो परि वृति अलंकार है ॥ जो और थल कौं तजि करि के एक थल मै थित होय सो परि संख्या अलंकार है ॥ २७७ ॥ **अथ प्रौढा आगामिष्यत्पतिका परि वृति उदाहरन ॥ दोहा ॥** उठतहि प्रात उमंग भरि बोली प्रिया प्रवीन ॥ आली अधिक उछाह दे बिदा काक ने लीन ॥ २७८ ॥ **टीका ॥** सवेरे उठतें ही उमंग मे भरि करि कै प्रवीन प्रिया बोली है आली अधिक उछाह दे करि कै काक ने बिदा लीनी यहाँ अधिक उछाह सों प्रौढा आगामिष्यत्पतिका नायिका है और काक ने अधिक उछाह दे करि कै बिदा लीनी याते परिवृति अलंकार है ॥ २७८ ॥ **अथ परकीया आगामिष्यत्पतिका परि संख्या उदाहरन ॥ दो॰** सुनत परोसिनि को पिया ऐहै आजहि साझ ॥ रही कचन ही स्यामता कृशता कटि ही माझ ॥ २७९ ॥ **टी॰** परोसीन को पिया आज ही साँझ कौं आवेगो कालाप नो है सो बालन ही मे रह्यौ दुवराई कमरि में ही रही यहाँ परोसीन का पति से परकीया आगामिष्यत्पतिका नायिका है ॥ और कचन मै स्यामता रही कटि मे कृशता

रही॥ याते परिसंख्या अलंकार है॥२७९॥ **अथ विकल्प प्रथम समुच्चय लछण॥ दोहा॥** सम वल जुगल विरोध को कथन विकल्प वखानि॥ बहु भावन को संग कथन प्रथम समुच्चय जानि॥२८०॥ **टीका॥** समान वल दोनूं विरोध को कथन होय सो विकल्प बखानो॥ बहुत भावन को संग कथवो होय सो प्रथम समुच्चय जानों॥२८०॥ **अथ गनिका आगमिष्यत्पतिका विकल्प उदाहरन॥ दोहा॥** अवधि दिवस गनि आवती बोली हिय हर्षानि॥ आज राति दुख भानि है जमराज कि धन दानि॥२८१॥ **टीका॥** अवधि का दिनन कों गनि करि कै आवती जई हिया मे हर्षा करि कै बोली आज राति मे दुख भाने गो जमराज कै धन दानी कर्यो यहाँ या वासौं गनिका आगमिष्यत्पतिका नायिका है॥ और जमराज धन दानी समान वल है तिन मे मारिवो जिवावो विरोध है याते विकल्प है॥२८१॥ **अथ आगतपतिका लछण॥ दोहा॥** जाको पिय परदेश ते आयो तवही होय॥ आगतपतिका नायिका हर्षति जिय मे जोय॥२८२॥ **टीका॥** जाको पीतम परदेश ते तवही आयो होय सो आगतपतिका नायिका जीव मे हर्षती देखो॥२८२॥ **अथ मुग्धा आगतपतिका प्रथम समुच्चय उदाहरन॥ दोहा॥** पिय आये लखि नवल तिय हंसी जंभाय॥ कंपी अनुरागी बहुरि बैठी सिमटि लजाय॥२८३॥ **टीका॥** पिय कों आयो देखि कै नवलनी य है सो हर्षी हंसी जंभायी ली कंपी अनुरागी फेरि सिम

दि लज्जा कीर के बैठी यहाँ लाज वासे मुग्धा आगत प
तिका नायिका है ॥ और नायिका से हर्षादिक बहुत
भाव है याते प्रथम समुच्चय है ॥२८३॥ अथ द्वितीय समुच्चय लक्षण ॥ दोहा ॥ हौं पहिले हौं प
हल यौं बहुत मानि मन माँहि ॥ करे सिद्धि इक काज
को द्वितिय समुच्चय आहि ॥२८४॥ टीका ॥ हम प
हिलें हम पहिले ऐसे बहुत है सो मन मे मानि कीर
के एक काज को सिद्धि करे सो दूसरो समुच्चय है ॥२८४
अथ मध्या आगत पतिका द्वितीय समुच्चय उदाहरन ॥ दोहा ॥ पिय आये परदेश सें भेटत परि
जन भीर ॥ तनु चष श्रवनन चाह ने वाढि तिय करी अ
धीर ॥२८५॥ टीका ॥ पीतम परदेश तें आये कुटुंब
का समूह सों मिलतां तनु चष श्रवन की चाह ने वाढि
कीर के तिय कों अधीर करी यहाँ पहिले लाज से धीर
धरि रही फेरि काम से शरीरादि की चाह नें वाढ कीर
के अधीर करी ॥ याते मध्या आगत्पतिका नायिका है
और तनु चष श्रवनन की चाह ने वाढि कीर के अधी
रता एक कारज कर्यो याते दूसरो समुच्चय है ॥२८५॥
अथ कारक दीपक समाधि लक्षण ॥ दोहा
कारक दीपक बहु क्रिया क्रम से कारक एक ॥ आन हे
तु सें काज की सिद्धि समाधि विवेक ॥२८६॥ टीका ॥
क्रम से बहुत क्रियान को कारक एक होय सो कारक
दीपक अलंकार है ॥ और हेतु सें कारज की सिद्धि होय
सो समाधि है ॥२८६॥ अथ प्रौढा आगतपति
का कारक दीपक उदाहरन ॥ दोहा ॥ भजनी क

ही विदेश तैं प्रिया पिया ह्याँ आत ॥ दौरी फिरीरवरी रही पुनि पूँछी कुशलात ॥ २८७ ॥ **टीका** ॥ सजनी ने कही विदेश तें हे प्रिया ह्या पिया आवे हे दौरी फिरी रवरी रही फेरि कुशल पूछी यहाँ घरी हर्षी या ते प्रौढा आगत पतिका नायिका है ॥ और दौरी आदि अनेक भाव एक नायिका मे भये याते कारक दीपक अलंकार है ॥ २८७ ॥ **अथ परकीया आगत पतिका समाधि उदाहरन ॥ दोहा ॥** पारोसी परदेश तें आयो जिहि निशि माँहि ॥ घर के सब उत्सव मैं गये राखि घर ताहि ॥ २८८ ॥ **टीका** ॥ पारोसी परदेश तें आयो जो रात्रि मे घर के सब उत्सव न मैं गये ता नायिका कों घर राखि के जाकी पारोसी सैं प्रीति ही ॥ यहाँ पारोसी का परदेश सें आवा मे परकीया आगत पतिका नायिका है ॥ और घर का न को जावो अन्य कारज मे सिलाय कारज भयो याते समाधि अलंकार है ॥ २८८ ॥ **अथ प्रत्यनीक का व्यार्थापत्ति लक्षण ॥ दोहा ॥** प्रबल शत्रु के मित्र पै प्रत्यनीक बल घात ॥ यों है तो यह है कहा सो काव्यार्थापत्ति ॥ २८९ ॥ **टीका** ॥ प्रबल शत्रु के मित्र पै बल की घात होय सो प्रत्यनीक अलंकार है ॥ यों है तो यह काई है ऐसे होय सो काव्यार्थापत्ति अलंकार है ॥ २८९ ॥ **अथ गनिका आगत पतिका प्रत्यनीक उदाहरन ॥ दोहा ॥** आवत पति परदेश से लखि सासरन अमंद ॥ भे प्रसन्न मुख मैन नव कमलन मूँदे चंद ॥ २९० ॥ **टीका** ॥ पतिका परदेश से

आवता गहरगान सोहित देखि कै मुख नैन प्रसन्न भये तब चंद्रमा ने कमल मूंदे यहां नायक कों गहरगान सोहित देखि वासौंग निका आगत पतिका नायिका है और चंद्रमा ने मुख का पती कमल न कौं मूंद्या याते अत्यनीक अलंकार है ॥२८०॥ **अथ पति स्वाधीना लछण ॥ दोहा ॥** रूप प्रेम गुन आदि करि ह्वै पतिके वस नारि ॥ पति स्वाधीना कहत तिहिं कवि कोविद निर्धारि ॥ २८१ ॥ **टीका ॥** रूप प्रेम गुन आदि करि कै नारि पति के वस होय ॥ ताकौं पति स्वाधीना कहैं हैं कवि कोविद निर्धारि करि के ॥ २८१ ॥ **अथ मुग्धा पति स्वाधीना काव्यार्थापति उदाहरन ॥ दोहा ॥** आली मुख लखि लाल को रति ह्वै रहे लुभाय ॥ मैं वस भई तजि लाज सो गिनती गिनी न जाय ॥२८२॥ टी० हे आली लाल को मुख देखि के रति ह्वै लुभा करि के रहे ॥ मैं लाज कौं तजि करि के वस भई सो गिनती नहीं गिनी जाय यहां लाज कौं मुख माने है पति के वस है याते मुग्धा पति स्वाधीना नायिका है और जो कौं देखि के रति भी लुभा रहे तो मैं कांई हौं ऐसे कह्यो वासौं काव्यार्थापति अलंकार है ॥ २८२ ॥ **अथ काव्य लिंग लछण ॥ दोहा ॥** अर्थ समर्थन योग्य जो तासु समर्थ न होय ॥ काव्य लिंग भूषन तहां कवि गुलाब मत जोय ॥ २८३ ॥ **टीका ॥** समर्थन योग्य जो अर्थ ताकौ समर्थन होय तहां गुलाब कवि कास ते काव्य लिंग अलंकार है ॥२८३॥ **अथ मध्या पति स्वाधीना काव्य लिंग उदाहरन ॥ दोहा ॥** सोलि लई सी लखि रही बोलि न सकौ सचैन ॥ मोते रति आति व्यून है पति सोहन

मोलि लई सी लाख रहौं हों
या हेत ॥२८४॥ **टीका** ॥ मोलि लई सी लाख रहौं हौं या हेत अत्यंत न्यून
चेत सहित नहीं बोलि सकौं मोसे रति अत्यंत न्यून
है मोहन पति है या वास्ते यहाँ मोलि लई सी कारन
है बोलि न सकौं यह लाज है याते मध्या पति स्वाधी
ना नायिका है और मेते रति अति न्यून है यह बात
समर्थन योग्य है ताको समर्थन कियामेरो पति मोहन
है या वास्ते काव्य लिंग अलंकार है ॥२८४॥ **अथ
अर्थांत रन्यास लक्षण ॥ दोहा ॥** कै सामान्य
विशेष जब तब अर्थांत रन्यास ॥ दूजो गुण वत संग
तें लघु गुरु होय प्रकास ॥२८५॥ **टीका** ॥ सामान्य
होय फेरि विशेष होय तब अर्थांत रन्यास अलंकार
है ॥ गुण वत संग तें लघु गुरु प्रकास होय सो दूसरो
अर्थांत रन्यास है ॥२८५॥ **अथ प्रौढा पतिस्वा
धीना प्रथम अर्थांत रन्यास उदाहरन ॥ दो
हा ॥** सब के पति है सुभग पर मो पति सम कहुँ हैन
देखत स्याम सुरूप मुख औ चख तनक रुपैन ॥२८६
टीका ॥ सब के पति सुंदर है परंतु मेरा पति की स-
मान कहीं भी नहीं है स्याम को स्वरूप और मुख
देखतां मेरा चख तनक भी नहीं रुपे यहाँ पति कों
इक टक देखि वासौं प्रौढा पति स्वाधीना नायिका है
और सब के पति सुंदर है यह सामान्य वचन है
मेरा पति की समान कोई भी नही है यह विशेष
बचन है याते प्रथम अर्थांत रन्यास है ॥२८६॥
**अथ परकीया पति स्वाधीना द्वितीय अर्थांत
रन्यास उदाहरन ॥ दोहा ॥** रहौं ध्यान धरि चिन

सुन सुन हियो ऊलसाय ॥ यरी मुरली लाल की मो
चित लियो चुराय ॥ २८७ ॥ टीका ॥ बिना ही सुन्य
ध्यान धरि कै रह्यो हौं सुन्या सौं हियो ऊलसावै है
येरी लाल की मुरली नें मेरो चित्त चुरा लियो यहां
मुरली का सुन वासें वस भई याते परकीया पति-
स्वाधीना नायिका है और कृष्ण के जोग सें मुरलीनें
बडाई पाई याते दूसरो अर्थात रन्यास है ॥ २८७ ॥

अथ विकस्वर प्रौढोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥

विकस्वर सु विशेष पुनि ह्वै सामान्य विशेष ॥ प्रौ-
ढोक्ति जु कारन करै अकारनहि गनि वेष ॥ २८८ ॥
टीका ॥ विशेष होय सोमान्य होय फेरि विशे-
ष होय सो विक स्वर अलंकार है ॥ अकारन कौं वे
ष मानि कै कारन करै सो प्रौढोक्ति अलंकार है ॥ २८८

अथ गनिका पति स्वाधीना विकस्वर उदा

हरन ॥ दोहा ॥ आली लावत लाल धन जगतन की
अनुहारि ॥ तिहि लै वारौं दुगुनु धन आनन अमल-
निहारि ॥ २८९ ॥ टीका ॥ हे आली लाल धनल्य
वे है जगत काजन की अनुहारि ताकों लै वारि देउ
गुनु धन वारोंनि मल मुख देखि करि कै यहां दुगुनु
धन वार यासौं गनिका पति स्वाधीना नायिका है
और लाल धन लावत यह विशेष है जगत काजन
की अनुहारि यह सामान्य है फेरि लाल पै दुगुनु
धन बार वो यह विशेष है यातें बिक स्वर है ॥ २८९ ॥

अथ उत्तमा लक्षण ॥ दोहा ॥

अन हित कारी पीय पै हित ही करै जु वाम ॥ याकी चेष्टा उत्तम हि

जानि उत्तमा नाम ॥३००॥ टीका ॥ अनहित कारी पीय
पै जो वास अहित करै ॥ याकी चष्टा उत्तम है यातै उत-
मा नाम जानौ ॥३००॥ अथ उत्तमा प्रौढोक्ति उदा
हरन ॥ दोहा ॥ आये प्रीतम प्रात घर लाय महावर भा
ल ॥ तउ तनु जमुन तमाल द्युति लखि भइ हर्षित बा-
ल ॥३०१॥ टीका ॥ प्रीतम है सो सवैरे ही घर आया
भाल मै महावर लगा करि कै तो भी तनु मै जमुना को
तमाल की द्युति देखि कै बाल हर्षित भई ॥ यहाँ सापरा-
ध नायक कौ देखि कै हर्षित भई यातै उत्तमा नायिका
है और जमुना को तमाल अधिक श्यामता को कारन न
ही ताकौ कारन कयौ यातै प्रौढोक्ति अलंकार है ३०१
अथ मध्यमा लक्षण ॥ दोहा ॥ पिय के हित तै
हित करै अहित अहित तै होय ॥ चेष्टा हैं व्यवहार
सम जानि मध्यमा सोय ॥३०२॥ अथ संभावना मि
थ्याध्यवसित लक्षण ॥ दोहा ॥ जो यौं होय
तु होय यौं सु संभावना जानि ॥ मिथ्या हित मिथ्या कथ
न मिथ्याध्यवसित मानि ॥३०३॥ टीका ॥ जो यौं हो
य तो यौं होय असे होय सो संभावना अलंकार है
मिथ्या के वास्ते मिथ्या को कहबो होय सो मिथ्या
ध्यवसित मानौ ॥३०३॥ अथ मध्यमा संभाव-
ना उदाहरन ॥ दोहा ॥ प्रात पिया पा परत लखि
बोली रिसौहि नशाय ॥ राति जो न उत जावते तो क्यौं
परते पाय ॥३०४॥ टीका ॥ सवैरे ही पीतम कौं पग
न मै पडतो देखि कै रिस कौं नशा करि कै बोली जोरा
ति मै उत कौं नही जावते तो पगन मै क्यौ पडते ॥

यहाँ पीतम नै अपराध कस्यौ तब रोस कस्यो और पीतम पायन मे पड्यो तब राजी ह्रई याते मध्यमा नायिका है और जो राति मे उनकौं नही जावते तो पगन मे क्यौं पडते ऐसै कहु वासों संभवना अलंकार है॥ ३०४॥ अथ अधमा लछरा॥ दोहा॥ हितकारी हू पीय पै अहित करे जो नारि॥ चेष्टा याकी अधम यों अधमा कही विचारि॥३०५॥ टीका॥ हितकारी सौ पीतम पै जो नारि अहित करै याकी चेष्टा अधम है ऐसैं विचारि करि कै अधमा कही है॥३०५॥ अथ अधमा मिथ्या ध्यवसित उदाहरन॥ दोहा॥ पिय कर बिनती भाषता बोली अधिक रिसाय॥ नभ फूलन की माल जो धरै सु तुम्है पत्याय॥३०६॥ टीका॥ पीतम कौं सुंदर बीनती भाषता अधिक रिसा करि कै बोली जो नभ का फूलन की माल कौं धारण करै सो तुमकौं पत्यावै॥ यहाँ बीनती भाषता कठिन बोली याते अधमा नायिका है और नायक कौं विश्वास मिथ्या मानि नभ फूलन की माल को धर वो मिथ्या है याते मिथ्या ध्यवसित है॥३०६॥ अथ ललित लछरा॥ दोहा॥ जो कछु प्रस्तुत धर्म सै वर्नीय हुत्तात॥ अप्रस्तुत प्रति विंव करि वर्नत ललित सुख्यात॥३०७॥ टीका॥ जो कछु प्रस्तुत का धर्म को वर्नीय जोग्य वृतांत होय॥ अप्रस्तुत को प्रतिविंव करि कै वर्नन होय सो ललित है ख्यात जाहर ३०७॥ अथ अधमा ललित उदाहरन॥

दोहा ॥ वर्जत निशि मे गवन करि दीनौ माल ग-
माय ॥ भोर भये वर्जकन के काँहें पकरे पाय ॥ ३०८
टीका ॥ वर्जना निशि मे गमन करि के माल गमादि
यो भौंर भया पे वर्जवा वालान के पगान मे पड्या सौं का
ई है यहाँ नायक ने पग पकड्या तो भी नही मनी
याते अधमा नायिका है ॥ और माल गुमावा वाला
प्रस्तुत को वर्णन करि के नायक को वृत्तांत जनायो या
ते ललित अलंकार है ॥ ३०८ ॥ अथ नायक लक्ष
ण ॥ दोहा ॥ सुन्दर शील जु वासु घर केलि कला कु
ल वान ॥ शुचि उदार गुन वाने तिँहि नायक कहत
सुजान ॥ ३०६ ॥ अथ प्रथम द्वितीय प्रहर्षन
लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रहर्षन सु बिन जतन ही वाँछि-
तार्थ हो जाय ॥ वाँछित तें अधिकार्थ की सिद्धि सु द्वित
य गनाय ॥ ३१० ॥ टीका ॥ बिना जतन ही वाँछित
अर्थ हो जाय सो प्रहर्षन है ॥ वाँछित सें अधिक अ
र्थ की सिद्धि होय सो दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३१० ॥
अथ नायक प्रथम प्रहर्षन उदाहरन ॥
दोहा ॥ कर मुरली पट पीत धर शीश मुकट उर मा
ल ॥ वन तें आवत मग निरखि अति हर्षित ब्र
ज वाल ॥ ३११ ॥ टीका ॥ हाथ में मुरली पीता
म्बड़ा कौ धारण कर्या ऊया शीश पे मुकट हृदा में माल
धारा ऊया वन ते आवता मग में देखि के व्रज वाल
अत्यंत हर्षी यहाँ जतन बिना ही नायक कौ देखि-
वो वाँछित अर्थ होगयो याते प्रथम प्रहर्षन है ॥
३१२ ॥ अथ त्रिविधनायक लक्षण ॥ दोहा ॥

परन्यौं पीत उपपति सुनौ पर नारिन मे लीन ॥ वैसिक गनिका नाह यौं भाषत त्रिविध प्रवीन ॥ ३१२ ॥ टीका परन्यौं ऊयो पति है पैला की स्त्री न मे लीन होयसे उपपति नायक है वेश्या को पति वैसिक है यौं तीन प्रकार को भाषे है प्रवीन है सो ॥ ३१२ ॥ अथ प ति नायक द्वितीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दो० धनुष भंजि सब सें सरस लखि गहे निज पीय ॥ प्रापत दुर्लभ लाभ में अति हर्षानी सीय ॥ ३१३ ॥ टीका ॥ सब सें सरस धनुष भंजि के अपना पीत म कों ठाढ़ा देखि के दुर्लभ लाभ में प्राप्त हो के सीता अत्यंत हर्षाई ॥ यहाँ राम चंद्र पति नायक है और राम चंद्र की प्राप्ति वाँछित सें अधिक है यातें दूसरो प्रहर्षन है ॥ ३१३ ॥ अथ पति भेद ॥ दो० अनुकूल रु दछिरा रु शठ धृष्ट चारि पति मूल ॥ परनी इकहा नारि को हितकारी अनुकूल ॥ ३१४ ॥ टी० अनुकूल दछिरा शठ धृष्ट ये चारि पति के भेद हैं परनी ऊई एक ही स्त्री को हितकारी होय सो अनुकूल है ॥ ३१४ ॥ अथ तृतीय प्रहर्षन विषादन लछन ॥ दोहा ॥ जतन वस्तु जिहि हेर तें वही मिलै सु तृतीय ॥ वाँछित तें उलटो मिलै विषादन सु गनानीय ॥ ३१५ ॥ टीका ॥ वस्तु को जतन हेरतें वाही वस्तु मिलै सो तीसरो प्रहर्षन है ॥ वाँछित सें उलटो मिलै सो विषाद न गनो ॥ ३१५ ॥ अथ अनुकूल तृतीय प्रहर्षन उदाहरन ॥ दोहा ॥

पिय फुल वन हित सखी सग ... ॥

तवही सने सनेह में ज्ञान लखे मग राग ॥३१५॥ टी॰
त्रिय है सो पिय कों बुलावा के वास्ते धाम में सखी
को मग देखे ही तवही सनेह में सने ङये राम मग
में ज्ञाते देखे यहां राम ज्ञनुकूल नायक है ज्ञोर राम
का बुलावा कों सखी की वाट देखना राम ही मिले या
तें तीसरो प्रहर्षन है॥३१५॥ ज्ञथ दछिरा बि-
षादन उदाहरन ॥ दोहा ॥ गई बुलावन निजभ
वन बङत प्रिया पिय धाम॥ सब को सम सनमान की
ये वन में घनश्याम॥३१७॥ टीका॥ ज्ञपना भवन
में बुलावा के वास्ते बङत प्रिया है सो पिय के धा-
म गई॥ सब को बराबर सन्मान करि के घन श्याम
हैं सो वन में गये यहां सब को सनमान समान क-
र्यो यातें दछिरा नायक है॥ ज्ञोर कृष्णा कों बुला-
वा गई वे उलटा बन कों चल्या गया यातें विषाद
न है॥३१७॥ ज्ञथ उल्लास लछरा॥ दोहा॥
गुन दोषन करि एक के ज्ञानहि है गुन दोष॥ चारि
भेद उल्लास के वर्नत कवि मति कोष॥३१८॥ टीका
एक के गुन दोष करि के ज्ञोर को गुन दोष होय॥
उल्लास के चारि भेद वर्नें है॥ मति के भंडार कवि हैं
सो॥३१८॥ ज्ञथ शठ प्रथम उल्लास लछरा॥
दोहा॥ मिठ वचनी कपटी वहै शठ नायक पर
कास॥ इक के गुन सें ज्ञान कों गुन होय सु उल्ला
स॥३१९॥ टीका॥ मीठा वचन वोलवा वालो हो
य॥ कपटी होय सो शठ नायक है प्रकास ज्ञा हर॥

है ॥३१९॥ अथ शठ प्रथम उल्लास उदाहरन ॥ दोहा ॥ तुव अधरा मृत ध्यान धरि बचै प्रिया निशि प्रान ॥ अब अधरा मृत ध्यान धरि ह्वै हौं अमर निदान ॥३२०॥ टीका ॥ तेरा अधरन का अमृत को ध्यान धरिकै हे प्रिया रात्रि में प्रान बच अब अधरा मृत पान करिकै अमर होऊंगी निदान निश्चय यहाँ कपट सैं सीधी बात करै है यातैं शठ नायक है और नायिका का अधरामृत का गुन सैं नायक कौं गुन भयो यातैं प्रथम उल्लास है ॥३२०॥ अथ धृष्ट द्वितीय उल्लास लक्षण ॥ दोहा ॥ निलजनि डर अपराध कर नायक धृष्ट गनीय ॥ होय दोष पर दोष सैं सो उल्लास द्वितीय ॥३२१॥ टीका ॥ लाज रहित डर रहित अपराध करै सो धृष्ट नायक गनौं ॥ पैला का दोष सैं दोष होय सो दूसरो उल्लास है ॥३२१॥ अथ धृष्ट द्वितीय उल्लास उदाहरन ॥ दोहा ॥ पायनरत पाय परि बोले लाल सुजान ॥ तो वियोग मो भाल मैं क्यों विधि लिख्यो अपान ॥३२२॥ टीका ॥ पायन की आरता लगा पगन मैं पड़िके सुजान लाल बोल्या तेरो वियोग मेरा भाल मैं अपान विधि ने क्यौं लिख्यो यहाँ निलजनि डर है यातैं धृष्ट धृष्टक है और आरि वो नायिका का दोष सैं ब्रह्मा का दोष है यातैं दूसरो उल्लास है ॥३२२॥ अथ धृष्ट तीय चतुर्थ उल्लास लक्षण ॥ दोहा ॥ इक के गुन सैं आन को दोष सु तृतिय प्रकास ॥ होय दोष लै गुन जहाँ है चौथो उल्लास ॥३२३॥ टीका ॥ एक के

गुन से और कौं दोष होय सो तीसरो उल्लास है ज
हां दोष से गुन होय सो चौथो उल्लास है ॥३२३॥

अथ उपपति तृतीय उल्लास उदाहरन ॥

दोहा ॥ प्रेम रूप गुन रस भरी है वृषभानु किशोरि ॥
मिलै निकुंजन एकली सो न सीव की खोरि ॥३२४॥

टीका ॥ प्रेम रूप गुन रस की भरी जई वृषभानु की
बेटी है सो निकुंजन में येकली नही मिलै सो भाग
को दोष है यहाँ राधिका सें निकुंजन मे मिलवाकी
चाहै है याते उपपति है और राधिका का गुन से
नसीव को दोष है याते तीसरो उल्लास है ॥३२४॥

अथ वैसिक चतुर्थ उल्लास उदाहरन ॥ दो॰

पति से अति रागी रहै धन लालच लगि बाल ॥ याही
कारन ते मुदित रहै विहारी लाल ॥ ३२५॥ टीका ॥
पति मे अत्यंत रागी रहे है धन का लालच मे लगि
कारि के बाल है सो याही कारन सें विहारी लाल प्र
सन्न रहे है यहाँ धन लालच वाली से मुदित रहै या
ते वैसिक नायक है और धन लालच दोष से विहा
री लाल से मुदित हो वो गुन है याते चौथो उल्लास है
३२५॥ दोहा ॥ और त्रिविधि नायक यहाँ मानी
प्रथम पिछानि ॥ वचन चतुर है तीसरो क्रिया चतु
र उर आनि ॥३२६॥ अथ मानी अवज्ञा लक्ष
ण ॥ दोहा ॥ मान करै अभिमान से मानी नायक सो
य ॥ अवज्ञा सु गुन दोष करि जहँ गुन दोष न होय
३२७॥ टीका ॥ अभिमान से मान करै सो मानी नाय
क है गुन दोष करि कै गुन दोष नही होय सो अव-

ज्ञा है ॥ ३२७॥ **अथ मानी अवज्ञा उदाहरन॥**

दोहा ॥ दोष गनि हठ ठानिवो किल सीखे ये ख्या
ल॥ रीरु खीज वर बाल की मन नहिं आनौं लाल॥
३२८॥ **टीका** ॥ दोष ठानि करिके हठ ठानिवो ये
ख्याल कहाँ सीखे सुंदर वाल की रीरु खीज है ला-
लमनमैं नहीं आनौं यहाँ हठ सौं मानी नायक है औ-
र नायिका का रीरु खीज गुन दोष नही लख्या यातें
अवज्ञा अलंकार है ॥ ३२८॥ **अथ बचन चतुर०**
अनुज्ञा लक्षण ॥ दोहा ॥ करै बचन में चातुरी
बचन चतुर पहिचानि ॥ दोषहि कौं गुन मानि चहै
नहीं अनुज्ञा जानि ॥ ३२९॥ **टीका** ॥ बचन में चातु-
राई करै सो बचन चतुर पहिचानौं दोष कौ गुन
मानि के चाह करै तहाँ अनुज्ञा जानौं ॥ ३२९॥
अथ बचन चतुर अनुज्ञा उदाहरन ॥ दो०
गये सकल घर के अनत मै ही रह्यो निदान ॥ अब
डरि जागि हरि सुमिरि हौं मानि याहि कल्यान॥
३३०॥ **टीका** ॥ सब घर के और ठौर गयेमै ही र-
ह्यौ निदान निश्चय अब डरपि के जागि के हरि कौं
सुमरों गो याकौं कल्यान मानि के यहाँ पर कीया
नायिका कौं सुनावे है मैं अकेलो हौं यातें बचन च-
तुर है ॥ और यकला रहवा डर वा दोष कौं गुन मा-
नि अंगीकार कर्यो यातें अनुज्ञा है ॥ ३३०॥ **अथ**
क्रिया चतुर लेष लक्षण ॥ दोहा ॥ करै कि-
या से चातुरी क्रिया चतुर सो वेस ॥ गुन दोषन मै दोष
गुन कल्याना सु है लेस ॥ ३३१॥ **टीका** ॥ क्रिया मे चतु

राई करै सो क्रिया चतुर नायक है॥गुन दोषन मे दोष गुन को कल्पना होय सो लेस अलंकार है॥३३१॥

अथ क्रिया चतुर गुन मे दोष लेस उदाहरन॥दोहा॥ आली बक्रत तियान मे मोहि निरखि नंदलाल॥विहसि कौल शिर धरत निति रूप भयो जंजाल॥३३२॥टीका॥ हे आली बक्रत तियान में मोकों देखि के नंदलाल है सो विहसि के नित्य शिर पै कमल धरै है मेरो रूप है सो जंजाल भयो यहाँ नायक ने कमल माथा पै धरि कै प्रगास जनायो याते क्रिया चतुर नायक है और परिणाम गुन है ताकों दोष मान्यो याते लेस है॥३३२॥ **अथ प्रोषित दोस मे गुन लेस उदाहरन॥दोहा॥** प्यारी बिन परदेश मे करते प्रान पयान॥पै यह मोरि कठोरता नित्य जिवावत जान॥३३३॥टीका॥ प्यारी बिना परदेश मे प्रान पयान करते परन्तु यह मेरी कठोरता नित्य जिवावे है न आन और नहीं जिवावैहै यहां परदेश मे है याते प्रोषित नायक है॥और कठोरता दोष से जीवो गुन है याते लेस अलंकार है॥३३३॥ **अथ अनभिज्ञ मुद्रा लक्षण॥ दोहा॥** नहि समुझे तिय रसन मे सो अनभिज्ञ वखानि॥प्रकृत अर्थ मे और हू कढे सु मुद्रा मानि॥३३४॥टीका॥ तिय के रसन में नहीं समुझे सो अनभिज्ञ वखानौ॥ प्रकृत अर्थ में और भी कढे सो मुद्रा अलंकार जानों॥३३४॥ **अथ अनभिज्ञ उदाहरन॥दोहा॥** राधे लखत प्रभात गए बन मे कोहु

भय बैन ॥ श्याम कही कौं गर गहत ह्यांत न क-
छु भय है न ॥ ३३५ ॥ टीका ॥ राधिका है सो श्या
म का गला सौं लपटी बन मै भय का बचन कह
करि के ॥ श्याम ने कही गलो कौं गहे है ह्यांत
नक भी भय नही है ॥ यहाँ राधा को प्रेम कृष्णा
ने नही जान्यौं सो अनभिज्ञ नायक है ॥ और श्या
म गर बन मैं ॥ इन अक्षरन मैं कारो जहर पानीसे
यह अर्थ निकसै है याते मुद्रा है ॥ ३३५ ॥ अथ
उत्तम नायक रत्नावली लक्षण ॥ दोहा ॥
करे जतन तिय मान हर सो उत्तम जिय जानि ॥
प्रस्तुत पद क्रम से कहै रत्नावली बखानि ॥ ३३६ ॥
टीका ॥ तिय है सो मान कौं हर वाको जतनक
रै सो जीव मै उत्तम जानौं क्रम से प्रस्तुत पद कहै
सो रत्नावली बखानौं ॥ ३३६ ॥ अथ उत्तम ना-
रत्नावली उदाहरन ॥ दोहा ॥ बानी श्री
निरखि गौरी की नंदलाल ॥ भाषि बचन म-
धुरे सरल खुस करि लीनी हाल ॥ ३३७ ॥ टीका ॥
गौरी की वानी और श्री वदली देखिके नंदलाल
ने मधुरे और सरल बचन भाषि के तुरत खुस कर
यहाँ बाल को प्रसन्न करि लीनी यातें उत्तम ना
यक है और बानी श्री गौरी उत्पति पालन प्रलय
क्रम से निकसी याते रत्नावली अलंकार है ॥ ३३
अथ मध्यम नङ्गन लक्षण ॥ दोहा ॥ कर
न रस रिस रिस चैनी तिय सौं मध्यम सोय ॥
निज गुन तजि संगति गुनहि गहे सो तङ्गुन हो-

य॥३३८॥ टीका॥ रस वाली तिय सौं प्रेम रोमु नहीं करै सो मध्यम नायक है॥ अपना गुन कों तजि के संगति का गुन कौं गहे सो तद्गुन अलंकार है॥३३८॥ अथ मध्यम तद्गुन उदाहरन॥ दोहा॥ तिय अन बोली लखि तुरत ठठकि रहे ब्रजनाथ॥ पुनि हसती लखि जाय ढिंग भये हरित भरि बाथ॥३३९॥ टीका॥ तिय कों तुरत अन बोली देखि के ब्रज नाथ ठठकि रहे फेरि हसती देखि के ढिंग जा करि के बाथ भरि के हरित भये यहाँ अनबोली देखि ठठके बोली तब मिलि गये याते मध्यम नायक है और बाथ भर वामे हरे भये सो पीला से कालो मिले तब हर्यो होय है याते तद्गुन है॥३३९॥ अथ अधम पूर्व रूप लछन॥ दोहा॥ कोल समय अधमने लखै लाज भीति तजि देय॥ पूर्व रूप गहि संग गुन तजि पुनि निज गुन लेय॥३४०॥ टीका॥ कोल का समय मे लाज भीत तजि दे सो अधम नायक है॥ संगति का गुन लेकरि फेरि ऊंकूं तजि के अपना गुन कौं ले सो पूर्व रूप अलंकार है॥३४०॥ अथ अधम पूर्व रूप उदाहरन॥ दोहा॥ पिय लखि शशि बरनी प्रिया होत लाल रँगि राग॥ पुनि कर पकरत सखिन ने होत सेत तजि राग॥ ३४१॥ टीका॥ पिय कौं देखि करि शशि बरनी प्रिया है सो राग मे रँगि के लाल होय है फेरि सखीन ने कर पकरता राग कौं तजि के सेत होयहै

यहाँ बिना समय हाथ पकडि वासौं अधम ना यक है और पीतम का गरा का संग सौं लाल रंग लियो फेरि हाथ पकडि ते आप को सेत रंग लि- यो याते पूर्व रूप है ॥३५१॥ अथ धीर ललि तोद्वितीय पूर्व लक्षण॥ दोहा॥ सुखी कला नि- धि निः फिकर धीर ललित जिय जोय॥ मिटें व- स्तु निंहि गुन रहे पूर्व रूप भिद दोय ॥३५२॥ टीका ॥ सुखी होय कला निधि होय निः फिक र होय सो जीव मै धीर ललित देखौ जो वस्तु का मिट्या सुँ गुन रह जाय सो पूर्व रूप को दूसरो भे द है ॥३५२॥ अथ धीर ललित पूर्व रूप उदाहरन ॥ दोहा॥ धीर कला निधि सुखस- दन राम प्रताप प्रकास॥ अस्त भये रवि के रहत छाय धरा आकास ॥३५३॥ टीका ॥ धीर और कलान की निधि सुख का घर जो राम हैं उनका प्रताप को प्रकास है सो सूरज के अस्त भये पैं पृथ्वी आसमान मैं छायो रहे है यहाँ धीर ललि त नायक है और रवि अस्त तम हो वाको कारन भयो तो भी तम न मिट्यो यातें दूसरो पूर्व रूप है ॥३५३॥ अथ धीरोद्धत अ तदगुन लक्ष ण ॥ दोहा ॥ धीरोद्धत गर्वी छली निज गुन वक्ता जोय ॥ अतद्गुन सु संग हु भये गुन ताके नहि लेय॥ ३५४॥ टीका ॥ धीरोद्धत है गर्वी है छली है अ- पना गुन को वक्ता जानों ॥ संग भी भया पैं ताके गुन नहीं लेय सो अतद्गुन अलंकार है ॥३५४॥ अथ

धीरोद्धत अतद्गुन उदाहरन ॥ दोहा ॥
गर्वी लला वडाय ला हौ थिर मोर छलीन ॥ वसत
राग घर बाल मन तउ अनुराग न लीन ॥ ३४५ ॥
टीका ॥ हे लला गर्वी हौ वड़ाय लाहौ छलीन कौ
थिर मोर हौ राग को घर जो बाल को मन है ऊँमें
वसै हौ तो भी अनुराग नही लियो यहाँ गर्वो छली
है याते धीरोद्धत नायक है ॥ और राग को घर जो
बाल को मन है तामैं वसै है तो भी अनुराग न-
ही लियो याते अतद्गुन अलंकार है ॥ ३४५ ॥ अ
थ धीर शांत अनुगुण लक्षण ॥ दोहा ॥
धीर शांत शुचि अति गुनी विनयी नायक गाय ॥
अनुगुन सो संगति भये पूरव गुन अधिकाय ॥
३४६ ॥ टीका ॥ शुचि होय अति होय गुनी हो
य विनयी होय सो धीर शांत नायक गावो संग
ति भयें पै पूरव गुन अधिकावै सो अनुगुन है ॥
३४६ ॥ अथ धीर शांत अनुगुण उदाहरन
दोहा ॥ धीर शांत शुचि नय सदन लहि संगति र-
घुवीर ॥ विनयी अरि हर लखन भो अति विजयी
रण धीर ॥ ३४७ ॥ टीका ॥ धीर धीरज वान शांत
शुचि पावन नीति के घर लक्षमण है सो रामचंद्र
की संगति पा करि कै विनय वान भयो बैरीन कों
मारवा वालो भयो अत्यंत विजयी भयो रण धीर
भयो यहाँ नायक धीर शांत है और लक्ष्मण में रघु-
वीर की संगति सें पहिला गुन अधिक भयो याते
अनुगुन अलंकार है ॥ ३४७ ॥ अथ धीरोदा-

क्षमा लित लक्षण ॥ दोहा ॥ क्षमा गंभीर सत ब्रत रु विजयी धीरो दात ॥ मीलि नमीलित मैं जहाँ भेद न नेक लखात ॥ ३४८ ॥ टीका ॥ क्षमावान होय गंभीर होय अच्छा ब्रत सहित होय विजयी होय सो धीरो दात है ॥ मीलित में जहाँ नेक भेद नहीं लखावै सो मीलित अलंकार है ॥ ३४८ ॥

अथ धीरो दात मीलित उदाहर ॥ दोहा

विजयी क्षमी गंभीर अति कोप्यो समर सकार ॥ तब न लखन के लखि पर्यो चंदन लाल लिलार ॥ ३४९ ॥ टीका ॥ विजयी विजयवान क्षमी क्षमावान अत्यंत गंभीर समर का बीचि में कोप्यो तब लक्ष्मण का लिलार में लाल चंदन को तिलक नहीं देखि पर्यो यहाँ नायक धीरो दात है ॥ लिलार का रंग में चंदन मिलि गयो याते मीलित है ॥ ३४९

अथ दर्शन ॥ दोहा ॥ देखे तिय पिय हित सहित दर्शन ताहि बिचारि ॥ श्रवन स्वप्न पुनि चित्र कहि साक्षात सु विधि चारि ॥ ३५० ॥ अथ सामान्य उन्मीलित लक्षण ॥ दोहा ॥ सो सामान्य समान में नहि न विशेष लखाय ॥ जब मीलित मैं भेद ह्वै उन्मीलित तब गाय ॥ ३५१ ॥ टीका समान मैं विशेषन ह्वो लखावै सो सामान्य है जब मीलित मै भेद होय तब उन्मीलित गावो ॥ ३५२ ॥

अथ श्रवण दर्शन सामान्य उदाहरन ॥

दोहा ॥ सुनि गुपाल गुन बाल के मुख अति लाली आत ॥ तब ससाल मुख बाल को भिन्न न जान्यो

त ॥ ३५२ ॥ टीका ॥ गुपाल कें गुन सुनि करि के बा
ल के मुख मैं अत्यंत लाली आवे है तब मसाल
और बाल को मुख न्यारो नहीं जान्यो जाय यहां
मसाल बाल मे भेद नहीं याते सामान्य है ॥ ३५२ ॥

अथ स्वप्न दर्शन उन्मीलि उदाहरन ॥ दो॰

स्वप्न मेल ते मिलि रहे केसर लागी भाल ॥ जागत
ही जानी परे होत सेत रंग बाल ॥ ३५३ ॥ टीका ॥
स्वप्न का मेल सौं भाल में लगी केसर है सो मिलि
रहे जागतां ही बाल को सेत रंग होता जानी परे
है यहां मिली केसर जानि परी याते उन्मीलित
है ॥ ३५३ ॥ अथ विशेषक गूढोत्तर लछन

दोहा ॥ है विशेष सामान्य मे वह विशेषक
मानि ॥ उत्तर दीनें भाव तें गूढोत्तर पहिचानि ॥
३५४ ॥ टीका ॥ सामान्य मे विशेष होय वह वि
शेषक मानों भाव सें उत्तर दिया पें गूढोत्तर पहि
चानो ॥ ३५४ ॥ अथ चित्र दर्शन विशेषक

उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखत चित्र नंदलाल को
भई चित्र वत नारि ॥ नीठि पिछानी जाति है
आवत सास निहारि ॥ ३५५ ॥ टीका ॥ नंदलाल
को चित्र देखता नारि है सो चित्र की नाई भई
उसासन कों आवता देखि के नीठि पिछानी जाय
है यहां दो चित्रन मे उसास ले वासों नायका जा
नी याते विशेषक अलंकार है ॥ ३५५ ॥ अथ

साछात दर्शन गूढोत्तर उदाहरन ॥ दोहा

प्रथम निरखि अभिलाखनी वाता हिय हुलोय ॥

लाल लगात न लैर वा आज हमारी गाय ॥ ३५६ ॥ टीका ॥ पहल पहल देखि के अभिलाखिनी है सो हिया में हर्ष करि के बोली हे लाल आज हमारी गाय है सो वछड़ान कों नहीं लगावे ॥ यहाँ वाछरान कों ने लगावो नाम ले करि भीतर गयो चाहे है यातें गूढोत्तर है ॥ ३५६ ॥ अथ सखी वर्णन ॥ चौपाई ॥ जासों प्रिया दुरावन राखे ॥ तातिय कों सजनी सम भाखे ॥ मंडन सिक्षा ताके काम उपालंभ परि हास ललामा ॥ ३५७ ॥ अथ चित्र सूक्ष्म लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रश्नहि में उत्तर कढे सो चित्रालंकार ॥ पर आशय लखि जहँ क्रिया करे सु सूक्ष्म विचार ॥ ३५८ ॥ टीका ॥ प्रश्न में उत्तर कढे सो चित्रालंकार है ॥ पैला का आशय कों देखि के जहाँ क्रिया करे सो सूक्ष्म अलंकार विचारो ॥ ३५८ ॥ अथ मंडन चित्र उदाहरन ॥ दोहा ॥ अंजन दे विंदुली दई नथ पहिराय सुढार ॥ नख सिख साजि सिंगार पुनि का कीनें उपहार ॥ ३५९ ॥ टीका ॥ अंजन दे करि के विंदुली दई सुढार सुंदर नथ पहरा करि के नख सों लेकरि के सिखलाई सिंगार साज के काई उपहार कस्यो हार यहाँ का उपहार कस्यो हार उपहार कस्यो यह उत्तर निकस्यो यातें चित्र अलंकार है ॥ ३५९ ॥ अथ सिक्षा सूक्ष्म उदाहरन ॥ दोहा ॥ चील अलि पिय सों मिलन हित करि अति रति हित सांधि ॥ यों सुनि सजनी ओर तिय चितई भृगी बाँधि

३६०॥ टीका॥ हे अलि प्रिय सों मिल वाके वा
सें चलि हित कों साधि करि कै अत्यंत रति करि
ऐसे सुनि करि कै सजनी की ओर तिय है सो मूं-
ठी बाँधि करि कै काँकी यहाँ मूँठी बाँधि वासों यों
जतायो कमल मुंदेंगा जव मिलोंगी याते सूक्ष्म
अलंकार है॥३६०॥ अथ पिहित व्याजोक्ति
लक्षण॥ दोहा॥ पिहित जानि पर बात को आ
शय सहित जनाव॥ व्याजोक्ति सु पर हेतु कहि
जहँ आकार दुराव॥३६१॥ टीका॥ पैला की
बात को आशय सहित जनावे सो पिहित अलं
कार है॥ पैला को हेतु कह करि कै जहाँ आकार
कों छिपावे सो व्याजोक्ति अलंकार है॥३६१॥
अथ उपालंभ पिहित उदाहरन॥ दोहा॥
प्यारी प्यारी सखिन सों मुकुर भूलि कहाय॥ यों
कहि अति हर्षाय हिय दीनों मुकुर दिखाय॥३६२
टीका॥ हे प्यारी प्यारी सखीन सों मुकुर वो है
सो भूल कहावे है॥ ऐसे कह करि कै हिया मैं अ-
त्यंत हर्ष करि कै काच दिखा दियो यहां दर्पन
दिखा कै सुरत चिन्ह दिखाया याते पिहित अलं
कार है॥३६२॥ अथ परिहास व्याजोक्ति
उदाहरन॥ दोहा॥ पान खवावन विन सम-
य कह्यो प्रिया सहि सार॥ शीत पवन तें परिग
ई आली अधर दरार॥३६३॥ टीका॥ बिना-
समय पान खवावना प्रिया ने सार सह करि कै क
ह्यो शीत का पवन से आली अधरन मे दरार

परि गई यह्हां सखी ने दंत क्षत देखि बिना समय पान खवायो यह्ह सखी को परिह्हास जानि नायिका ने सीत पवन की दरार कह्हि करि आकार छिपायो या ते व्याजोक्ति अलंकार हे ॥३६३॥ दूती वर्नन ॥
दोह्हा ॥ तिय पिय के संदेश वच कह्हे सु दूती बाम बिरह्ह निवेदन सिलव नाह्ह दे दूती के काम ॥३६४॥
अथ उत्तम दूती गूढोक्ति लच्छन ॥ दो० उत्तम दूती मन हरे भाषि मधुर वर बात ॥ गूढो क्ति तु मिस आन के कह्हे आन से बात ॥३६५॥
टीका ॥ मधुर और सुन्दर बचन भाषि करि के मन कों ह्हरे सो उत्तम दूती हे ॥ और के मिस से औरसों बात कह्हे सो गूढोक्ति अलंकार हे ॥३६५॥ अथ उत्तम दूती गूढोक्ति उदाह्हरन ॥ दोह्हा ॥ सखि राधे कों मात ढिंग काह्ह कीरति से बाम ॥ स्वामिनि आज निकुंज मे करि हे कौतुक स्याम ॥३६६॥
टीका ॥ राधिका कों माता के ढिग देखि के बाम ने कीरति से कही हे स्वामिनि आज निकुंज मे स्याम कौतुक करे गे यहाँ मधुर बचन से उत्तम दूती हे और राधा की माता से कह्हे हे राधा कों सुनावे हे याते गूढोक्ति अलंकार हे ॥३६६॥ अथ मध्यम दूती विह्हतोक्ति लच्छन ॥ दोह्हा ॥ मध्यम दूती परुष मृदु बोले बचन बनाय ॥ श्लेष छिप्यो प्रगटाय जब तह्हँ विह्हतोक्ति कहाय ॥३६७
टीका ॥ कठोर और कोमल बचन बना करि के बोले सो मध्यम दूती हे जब छिप्या ज्या श्लेष कों

प्रगटावे तहाँ विवृतोक्ति कहावे है ॥ ३६७ ॥ अथ म-
ध्यम दूती विवृतोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ उम
गि उमगि बहु दिनन से घेरि रहे सब ठाम ॥ विष-
म वात उतपात ते अब छीजे हैं घन श्याम ॥ ३६८ ॥
टीका ॥ बहुत दिनन से उमगि के सब ठाम घेरि रहे
भयंकर पवन और उतपात ते अब घन श्याम छीजे
हे यहाँ मीठा कठिन बचन से मध्यम दूती है और
घन श्याम काला बादल बिषम पवन से छीजे या म
र्थ में श्लेष छिप्यो रह्यो परंतु उतपात शब्द से घन
श्याम को अर्थ कृष्ण और बिषम वात को अर्थ नि
न्दा के बचन निकसे याते विवृतोक्ति है ॥ ३६८ ॥
अथ अधम दूती युक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ करि
दूत ना परुष कहि अधमा दूती सोय ॥ मर्म छिपावे
करि क्रिया युक्ति अलंकृति होय ॥ ३६९ ॥ टीका
कठोर बचन कहि करि के दूतता करे सो अधमा दूती
हे ॥ क्रिया करि के मर्म कों छिपावे सो युक्ति अलं-
कार होय है ॥ ३६९ ॥ अथ अधमा दूती युक्ति
उदाहरन ॥ दोहा ॥ श्रमित देखि पिय सों रमी
मानि रही अनखाय ॥ वेग चली कहि दूतिका कर
की सास बढाय ॥ ३७० ॥ टीका ॥ श्रमित देखि के
पिय सों रमी मानि के अनखा रही जलदी चली ऐ-
से कहि करि के दूतिका है सो सास बढा करि के कडु
का यहाँ सास बढा के कडुको याते अधमा दूती है
और श्रम सों रमिवो सास बढावो क्रिया करि के
दूतिका सों रमिवो छिपायो याते युक्ति अलंकार है ॥

३७०॥ अथ विरह निवेदन लोकोक्ति ल-
च्छन॥ दोहा॥ तिय पिय को जु वियोग दुख भा
षै मन हित मानि॥ कथे लोक कहना वतौ सो लोको
क्ति वखानि॥३७१॥ टीका॥ जो तिय पिय का वि
रह को दुख मन मे हित मानि करि के भाषे लोककी
कहना वतौ कथे सो लोकोक्ति वखानौं॥३७१॥ अथ
प्रिय विरह निवेदन लोकोक्ति उदाहरन
दोहा॥ निरखत मग तेरौ लली तो विन दुखित गुपा
ल॥ चलि जलदी मिलि मनि चलै आज काल की
चाल॥३७२॥ टीका॥ हे लली तेरौ मग देखे है तो
बिना गोपाल दुखी है जलदी चलि के मिलि आज
काल की चाल मनि चले यहां आज कालि लोको
क्ति है॥३७२॥ अथ छेकोक्ति [illegible] लोको
[illegible]॥ दोहा॥ और अर्थ लोकोक्ति मे कढै हो
छेकोक्ति॥अर्थ फिरे स्वर श्लेष सौं जानि लेऊ व
क्रोक्ति॥३७३॥ टीका॥लोकोक्ति मे और अर्थ
है सो छेकोक्ति अलंकार है॥ स्वर सौं श्लेष सौं अ
र्थ फिरै सो वक्रोक्ति जानि ल्यो॥३७३॥ अथ
[illegible]य विरह निवेदन उदाहरन॥ दोहा॥ भ
विकल अति दूबरी बिरह वावरी वाल॥भोलऊ
[illegible] लखौ न तुम शुक लोयन की चाल॥३७४॥ टीक
[illegible]
विकल भई अत्यंत दूबरी भई वाल है सो विरह
वावरी भई है लाल तुम भोलापन मे भी नही देख
हो लो लाका नेत्रन की सी चाल है यहां शुक
यन की चाल यह लोकोक्ति है और ई मे यह अ

निकस्यो जैसे सुवो नेम बदल ले है तैसे तुम बदल स्यो हो यह वक्रोक्ति है ॥ ३७४ ॥ अथ मिलाप वक्रोक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥ लाई आज दरा ज सखि रति से लीनी बाल ॥ इहि रस बस ह्वै रमि नि- शा याहि भूल हो लाल ॥ ३७५ ॥ टीका ॥ आज ब- डी सखि कीरति से सुंदर बाल लाई हों ई का रस मैं बस होकरि के रात्रि मैं रमि करि के हे लाल याको भूलो गा अर्थात् नही भूलोगा यह स्वर सों श्लेष फेर्यो याते वक्रोक्ति है ॥ ३७५ ॥ अथ सखा ब र्णन ॥ दोहा ॥ पीठ मर्द विट चेटक रु कर्म सचि व पहिचानि ॥ बहुरि विदूषक पाँच बिधि नायक सखा बखानि ॥ ३७६ ॥ अथ पीठ मर्द स्वभा वोक्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ मानवती हिस नासके पीठ मर्द निर्धारि ॥ वर्णन जाति स्वभाव को स्वभा वोक्ति लंकार ॥ ३७७ ॥ टीका ॥ मानवती के मान्है मनासके सो पीठि मर्द नायक है ॥ जाति को और स्वभाव को वर्नन होय सो स्वभावोक्ति अलंकार है ॥ ३७७ ॥ अथ पीठि मर्द स्वभावोक्ति उ दाहरन ॥ दोहा ॥ मुकुट लकुट पट पीत धरला ल लली घर हाल ॥ पायन पारि मुरारि कौं हर्षित की- नी बाल ॥ ३७८ ॥ टीका ॥ मुकुट और लाकड़ी पीत पट कौं धारन करि के ललीके घर तुरत ही ला करि के मुरारि कौं पगन मे पटकि के बालकों हर्षित करी यहाँ जाति को बरनन है याते जाति अलंकार है ॥ ३७८ ॥ दोहा ॥ स्योरी मौन मरोरि धरि लखि बैठी शिर नाय

बात बनाय विनोद की लीनी वेग बुलाय ॥ ३७९ ॥
टीका ॥ त्योरी और मौंन सरोरि धरिकै शिर नवाये हृय वैठी देखी कै विनोद की बात बना करि कै जलदी बुला लीनी जहां त्योरी मौंन सरोरि धरि वो सुभाव है याते स्वभावोक्ति अलंकार है ॥ ३७९ ॥ अथ
विट भाविक लक्षण ॥ दोहा ॥ बिट सो काम कथान मै चतुराई सरसात ॥ भाविक भावी भूत को जहं वर्णन साक्षात ॥ ३८० ॥ टीका ॥ काम कथान मै चतुराई सरसावे सो विट है भावी भूत को जहां साक्षात वर्णनहोय सो भाविक अलंकार है ॥ ३८० ॥ अथ
विट भाविक उदाहरन ॥ दोहा ॥ चलौ लाल लालच भरी ललना तुम्हे बुलात ॥ लखौ लाडली सदन मै रमा सदन छबि छात ॥ ३८१ ॥ टीका ॥ हे लाल चलौ लालच की भरी भई ललना तुमकौं बुलावे है लखौ लाडली का सदन मै रमा कासा सदन की छबि छावे है यहां रमा को सदन पहिलै हो और आगे रहेगो सो राधिका का भवन मै वर्तमान काल मै बन्यौ याते भाविक अलंकार है ॥ ३८१ ॥ अथ चेटक
मै सचिव लक्षण ॥ दोहा ॥ चेटक चतुर मिलाप मै जानि कार तिय चित्त ॥ नर्म सचिव हरि कौ सखा दे मिलाय तिय मित्त ॥ ३८२ ॥ अथ उदात्त
लक्षण ॥ दोहा ॥ पर के श्लाघ्य चरित्र को चिन्ह जनावन हार ॥ बर्नन संपति चरित को द्विविध उदात उदार ॥ ३८३ ॥ टीका ॥ पेला का श्लाघ्य चरित्र का चिन्ह को जनावा वालो संपति रू

...नेन होय सो उदात्त है सो दो तरह को है है उदार ॥
३८३॥ अथ चेटक प्रथम उदात्त उदाहरन
दोहा॥ लली चली कित जात है भूलि गैल सग मो
हि॥ भली भाँति धसि देखि हरि रास ठाम यह आहि
३८४॥ टीका॥ हे अली कहाँ चली जाय है गैल
लि के मग के माँहि भली भाँति सौं धसि करि के देखि
यह हरि को रास ठाम है यहाँ रास स्थान कृष्ण का
श्लाघ्य चरित्र को बर्नन है याते प्रथम उदात्त है॥
३८४॥ अथ नर्म सचिव द्वितिय उदात्त उ-
दाहरन॥ दोहा॥ ले गोरो रस लेन मिस राधे कों
भुलवाय॥ रमानाथ सम सदन थित हरि लखि रही
लुभाय॥ ३८५॥ टीका॥ गोरस लेवा का मिस सौं
राधे कों भुलवाय के ले गयो॥ विष्णु का भवन स-
मान भवन मे कृष्ण कों वेख्या देखि के ललचा रही
यहाँ गोरस लेवा का मिस सौं भुलवा करि ले गयो या
ते नर्म सचिव है॥ और कृष्ण का संपति चरित्र को ब
र्नन है याते दूसरो उदात्त है॥ ३८५॥ अथ विदू
षक अत्युक्ति लक्षण॥ दोहा॥ वेष रूप ब
चनादि कौं बदलि करे जो हास॥ हरि राधा के मे
ल मे कहत विदूषक तास॥ ३८६॥ टीका॥ वेष रू
प बचनादिक कों जो बदलि करिके हास्य करे
हरि राधिका का मेल मे ताकों विदूषक कहै है॥
३८६॥ दोहा॥ अद्भुत कूठ उदारता सूरतादि को
लोय॥ जहं वर्नन अत्युक्ति सो वड प्रकार की ...
... सूरतादि को कूठो

वर्नन होय सो बहुत प्रकार की अत्युक्ति है ॥३८७॥

अथ विदूषक अत्युक्ति उदाहरन ॥ दो०

चहुं घा लगी निकुंज के वन मे अति शय लाय ॥ बै ठे मूंदि किवार तुम मै कीटि देहु भुजाय ॥३८८॥

टीका ॥ वन मे निकुंज के च्यारो ओर मे घणी- लाय लगी है तुम किंवार जुडि करि के बैठो मै क- टि कै बुझा द्यो हौं यहां लाय को अति शय वर्नन है याते अत्युक्ति है ॥३८८॥ अथ दूत वर्नन ॥ दोहा ॥ दूत निस्तष्टार्थ तु प्रथम द्वितिय मि तार्थ उदार ॥ सु संदेश हारक तृतिय कवि गुलाब निर्धार ॥३८९॥ अथ निस्तष्टार्थ निरुक्ति लछन ॥ दोहा ॥ जानि दुहून को भाव वर दे उत्तर शुभ उक्ति ॥ अन्य अर्थ के योग तें नामन को सुनि रुक्ति ॥३९०॥ टीका ॥ दोनून को श्रेष्ट भाव जानि के शुभ वचन से उत्तर दे और का जोग सें नामन को और अर्थ होय सो निरुक्ति है ॥३९०॥ अथ निस्तष्टार्थ निरुक्ति उदाहरन ॥ दोहा ॥

तू अति चाहत राम कौं तुहि अति चाहत राम ॥ तुम हर्षे तौ होयगो सांचो रावन नाम ॥३९१॥

टीका ॥ तू राम कौं अत्यंत चाहती है तोको रा- म अत्यंत चाहते हैं तुम प्रसन्न होवोगी सांचो रावन नाम होयगो यहां जानकी का हरन जोग सें रावण को रोवणो सांचो नाम भयो याते निरुक्ति है ॥३९१॥ अथ मितार्थ प्रतिषेध लछन ॥ दोहा ॥ कोय प्रमाण काज है करे सो मितार्थ

चानि॥ कथन निषेध प्रसिद्ध को प्रति षेध सु उर-
श्रानि ॥३८२॥ टीका॥ प्रसारा कहि करि के काज
करे सो सिताय है प्रसिद्ध निषेध को कथन होय
सो प्रति षेध हृदा से आनो॥ ३८२॥ अथ प्रति
षेध प्रति षेध उदाहरन॥ दोहा॥ चलि निकुं-
ज में लखि लली नाचत दे दे तार॥ सोहन नंद कुमा
र नहि है मन्मथ अवतार॥३८३॥ टीका॥ हे
अली निर्कुंज में चलि के देखि ताल दे दे करि के नाचे है मोह
न है सो नंद कुमार नहीं है कामदेव का अवतार है यहा कृष्ण
को निषेध करि के कामदेव को अवतार ठहरायो याते प्रतिषेध
अलंकार है॥३८३॥ अथ संदेश हारक विधि लक्षण॥
दोहा॥ सु संदेश हारक कहै कही बात है सोय॥
सिद्ध करे जब सिद्ध कौं तब बिधि भूषण होय॥
३८४॥ टीका॥ कही बात कौं कहे सो संदेश हा
रक है॥ जब सिद्ध कौं सिद्ध करे तब बिधि अलंका
र होय है॥३८४॥ अथ संदेश हारक विधि
उदाहरन॥ दोहा॥ लाल कह्यो करि लालसा
आज रास में आज॥ प्यारी प्यारी होय गी जब दे
है तजि लाज॥३८५॥ टीका॥ लाल ने चाह करि के
कह्यो आज रास में आवो हे प्यारी लाज कौं तजेगी
तब प्यारी होय गी यहाँ प्यारी सिद्ध अर्थ को फेरि
सिद्ध करी याते बिधि अलंकार है॥३८५॥ अथ हे
तु लक्षण॥ दोहा॥ कारन कारज संग है हेतु सु
प्रथम पिछानि॥ कारन कारज एक है हेतु द्वितीय ब-
खानि॥३८६॥ टीका॥ कारन कारज साथ होय सो

पहिलो भेद पिछानौं ॥ कारन कारज एक होय सो दूसरो भेद बखानौं ॥ ३८६ ॥ दोनून के उदाहरन ॥ दोहा ॥ होत दूर दुख तुरत ही लेत श्याम को नाम ॥ है गुलाब हरि जनन के कृष्णा कृपा सुख धाम ॥ ३८७ ॥ टी॰ ॥ श्याम को नाम लेता ही तुरत दुख दूर होय है गुलाब कवि कहे है हरि जनन के कृष्णा की कृपा है सोई सुख को घर है यहाँ श्याम को नाम लेता ही दुख दूर होय है ई में कारन कारज संग है यातें प्रथम हेतु है और कृष्णा की कृपा है सोई सुख को घर है ईमें कारन कारज एक है यातें दूसरो हेतु है ॥ ३८७ ॥ छप्पय ॥ रसवत १ प्रेयस २ दोय तृतिय ऊर्ज ३ स्वित जानों ॥ चवथ समा हित ४ नाम पन्चम भावोदय ५ मानौं ॥ भाव संधि ६ षट भाव शबलता ७ सप्तम कहिये प्रत्यक्ष ८ अनुमान ९ दशम उपमान १० निबहिये ॥ पुनि शब्द ११ अर्थापत्ति १२ पुनि अनुपलब्धि १३ संभव १४ लहो ॥ रीति हृय १५ सहित सब पंच दश कवि गुलाब भूषण गहो ॥ ३८८ ॥ रसवत लक्षण ॥ दोहा ॥ इक रस रसको अंग कै कै स्थाई को होय ॥ कै व्यभिचारी भाव को अंग सु रस वत जोय ॥ ३८९ ॥ टी॰ ॥ एक रस दूसरा रसको अंग होय अथवा स्थाई भाव को अथवा व्यभिचारी भाव को अंग होय सो रस वत अलंकार है ॥ ३८९ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ जयति जयति योगींद्र मुनि कुंभज महा अनूप ॥ देखे ताके चुलु मैं कच्छप मत्स्य स्वरूप ॥ ४०० ॥ टीका ॥ जोगीन्द्र महा अनूप अगस्त्य मुनि सर्वोत्कर्षेण वर्तते ॥ जाके चुलु मैं कच्छप मत्स्य अवतारनकों देखे ॥ यहाँ

सुनि विषय करति भाव को अंग अद्भुत रस है या-
तें रसवत है ॥ ४०० ॥ **प्रेय लक्षण ॥ दोहा ॥** भा-
व होय अंग भाव को के रस को अंग चार ॥ सु है प्रेय
कहैं याहि कों कवि भावालंकार ॥ ४०१ ॥ **टीका ॥** भा-
व को अंग भाव होय अथवा रस को अंग भाव होय
सो प्रेयो अलंकार है याही कों कवि हैं सो भावालंकार कहे हैं
है ॥ ४०१ ॥ **उदाहरण ॥ दोहा ॥** कब वसि सीध
वाराणसी धरि कोपीनहि चीर ॥ हे हर शिव शंकर ज
पत फिरि हों गंगा तीर ॥ ४०२ ॥ **टीका ॥** कोपीन मात्र
चीर धारण करि के कासी में वसि के । हे हर । हे शिव हे
शंकर । ऐसे जपतो गंगा तीर पै कब फिरोंगो ॥ इहां-
शांत रस को चिंता संचारी अंग है यातें प्रेयस है ॥
४०२ ॥ **ऊर्ज स्वित लक्षण ॥ चंद्रायण ॥** रसाभा
स जहँ अंग भाव को होय वर ॥ अथवा भावाभास भाव
को अंग तर ॥ सो ऊर्जस्वित होय भाव रस अनुचितहि
भावाभास रु रसाभास कस सोहित लहि ॥ ४०३ ॥
टीका ॥ जहां भाव को अंग रसाभास होय अथवा
भाव को अंग भावाभास होय सो ऊर्जस्वित अलंकार
होय है ॥ अनुचित भाव है सो भावाभास है ॥ और अ-
नुचित रस है सो रसाभास है ॥ ४०३ ॥ **उदाहरन ॥**
दोहा ॥ बन बन भीलन संग रमत तुव वैरिन की बाम ॥
अरु भीलहु तुव गुन गनत निति प्रबल प्रतापी राम ॥ ४०४
टीका ॥ हे प्रबल प्रतापी राम तेरे बैरीन की स्त्री भी-
लन के संग बन बन में रमती है यहां प्रभु विषय कर-
ति भाव को अंग रसाभास है यातें ऊर्जस्वित है ॥ शां

तेरे और तेरे गुन सदा गानते हैं ॥ इहाँ प्रभु विषयक रति भाव को अंग भावा भास है । यातें ऊर्जस्वित अलंकार है ॥ ९०४ ॥ **समाहित लक्षण ॥ दोहा ॥**
अंग होय रस को जहाँ भाव शांति के होय ॥ भाग शांति अंग भाव को जानि समाहित सोय ॥ ९०५ ॥ **टी०**
जहाँ रस को अंग भाव शाँति होय अथवा भाव को अंग भाव शाँति होय सो समाहित जानो ॥ ९०५ ॥ **उदाहरन ॥ दोहा ॥** पिय ठाढे भे मान लखि तिय इत रही विजोय ॥ देखत हँसि दीनों ललन तिय तब दीनौं रोय ॥ ९०६ ॥ **टीका ॥** मान देखि करि कै पिय हैं सो ठाढ़े ह्वै रहे इत कों तिय है सो विसेस देखि रही ॥ देखते पिय ने हँसि दियो तब तिय ने रोय दियो इहाँ शृंगार रस को अंग कोप शाँति है याते समाहित है ॥ ९०६ ॥ **भावोदय लक्षण ॥ दोहा ॥**
होय अंग रस को जहाँ भावोदय के होय ॥ भावोदय अंग भाव को है भावोदय सोय ॥ ९०७ ॥ **टीका ॥**
भाव को उदय होय सो भावोदय ॥ जहाँ रस को अंग भावोदय होय अथवा भाव को अंग भावोदय होय सो भावोदय अलंकार है ९०७ ॥

उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुनि गुन मोहन के रहे हिय झलसी अति बाम ॥ चहत विचारि बिचारि उर कब मिलि है घन श्याम ॥ ९०८ ॥ **टीका ॥** मोहन के गुन सुनि के बाम है सो हिया में झलसी रहै है ॥ उर में विचारि विचारि के चाहती है घन श्याम कब मिलैं गे ॥ इहाँ शृंगार रस को अंग है औत्सुक्य संचारी को उदय है याते भावोदय है ॥ ९०८ ॥

याते अनुमान है ॥ ५१६ ॥ उपमान लक्षण ॥ दोहा ॥ उपमा को सादृश्य तें बिन देख्यो उपमेय ॥ जानि परै उपमान सो अलंकार है जेय ॥ ५१७ ॥ टीका ॥ उपमान की सादृश्य सें बिना देख्यो उपमेय जानि परै सो जानिवे जोग्य उपमान अलंकार है ॥ ५१७ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ मन्मथ सम सुन्दर लसै रवि सम तेज विशाल ॥ सागर सम गंभीर है सो दशरथ को लाल ॥ ५१८ ॥ टीका ॥ कामदेव की समान सुंदर लसै है सूर्य समान विशाल तेज है समुद्र समान गंभीर है सो रामचंद्र है इहां कामादि उपमानन सें रामचंद्र जाने गये याते उपमान है ॥ ५१८ ॥ शब्द लक्षण ॥ दोहा ॥ जहां शास्त्र अरु लोक को बचन प्रमाण बखानि ॥ सो शब्दालंकार है भाषत सु कवि सुजान ॥ ५१९ ॥ टीका ॥ जहां शास्त्र और लोक का बचन का प्रमाण को बखान होय सो शब्दालंकार है सु कवि सुजान हैं सो भाषते हैं ॥ ५१९ ॥ उदाहरण ॥ दोहा ॥ धर्म विना नहि सुख लहै गुरु बिन लहै न ज्ञान ॥ ज्ञान बिना नहि मुक्ति है पांच पचि मरै अजान ॥ ५२० ॥ टीका ॥ धर्म बिना सुख नहि मिलै गुरु बिना ज्ञान नहि मिलै ज्ञान बिना मुक्ति नहि होय। अज्ञान है सो पांच पचि कै मरै है ॥ इहां शास्त्र प्रमान है। यातें शब्दा है ॥ ५२० ॥ अथ अर्थापत्ति लक्षण ॥ दोहा ॥ जहां व्यर्थ से अर्थ को और जोग सें थाप ॥ १ ॥ त्ति अलंकृति सु भाषत सु कवि सद्राप ॥ ५२१ ॥ जहां व्यर्थ भये अर्थ को और जोग सें थापे सो

पत्ति अलंकार गर्व सहित सुकवि भाषते है ॥ ३२ ॥
उदाहरण ॥ दोहा ॥ तिय तेरे कटि है यहै तें की नौं निर्धार ॥ जो न होय तो को धरै विपुल पयोधर-भार ॥ ५२१ ॥ टीका ॥ हे तिय तेरे कटि है यह मैंने निश्चय कियो है जो नहि होय तो भारी कुच भार कों कौन धारै है इहाँ नहि यह व्यर्थार्थ कुच धारण योग करि ठहरायो याते अर्थापत्ति है ॥ ५२१ ॥ अथ अनुपलब्धि संभव लक्षण ॥ दोहा ॥ जानि परै नहि वस्तु कछु अनुपलब्धि है सोय ॥ जँहँ संभव है वस्तु को संभव नाम सु होय ॥ ५२२ ॥ टीका ॥ जहाँ कछु वस्तु नहि जानि परै सो अनुपलब्धि अलंकार है जहाँ वस्तु को संभव होय सो संभव नामक अलंकार होय है ॥ ५२२ ॥ अथ अनुपलब्धि उदाहरन ॥ दोहा ॥ नहि तेरे कटि सब कहत कुच थिति बिन आधार ॥ इन्द्र जाल यह काम को लोक करत निर्धार ॥ ५२४ ॥ टीका ॥ तेरे कटि नहि है ॥ सब कहते हैं कुचन की स्थिति बिना आधार है ॥ यह कामदेव को इंद्रजाल है रासें लोक निश्चय करते हैं इहाँ कटि को अभाव है ॥ याते अनुपलब्धि है ॥ ५२४
अथ संभव को उदाहरण ॥ दोहा ॥ सुनी न देखो तुव सदृश हे वृषभानु कुमारि ॥ जानत हौं कहुँ होयगी विपुला धरनि विचारि ॥ ५२५ ॥ टीका ॥ हे वृषभानु कुमारि । तो समान देखी है न सुनी है परंतु पृथ्वी बड़ी विचारि के जान्यौं हौं कोई होयगी । इहाँ वस्तु को संभव है याते संभावालंकार है

४२५॥ अथ रीतिरूप लक्षण ॥ दोहा ॥ सुरीति रूप प्राचीन की उचलि आई जु कहानि ॥ ताको वक्ता प्रगट को नहि न परै पहिचानि ॥ ४२६॥ टीका ॥ जो कोई प्राचीन कहानी चली आई होय ताको प्रथम वक्ता न ही पहिचान्यो परै सो रीति रूप अलंकार है ॥ ४२६॥
उदाहरण ॥ दोहा ॥ हे सीता उर धीर धरि जनि धरि मन अपघात ॥ जीवत सो नर सुख लहै यहै लोक की बात ॥ ४२७॥ टीका ॥ त्रिजटा की उक्ति ॥ हे सीता हृदय मैं धीरज धरि। मन मैं अपघात मति धरै ॥ जो आदमी जीवै सो सुख पावै। यह लोक की बात है इहाँ जीवत सो नर सुख लहै यह लोक कहानी है॥ याते रीतिरूप है ॥ ४२७॥ इति प्रमाणालंकार ॥ अथ संसृष्टि संकर लिख्यते ॥ दोहा ॥ भूषण शब्द रु अर्थ के आपस में मिलि जाहि ॥ संसृष्टि रु संकर तहाँ ये जुग नाम कहाहिं ॥ ४२८॥ टी० ॥ जहाँ शब्द और अर्थ के अलंकार आपस में मिलि जाहि तहाँ संसृष्टि और संकर ये दो नाम कहावै हैं ॥ ४२८॥ अथ संसृष्टि लक्षण ॥ दोहा ॥ एक अलंकृति को रहै नहि दूसर की चाह ॥ बाँध कहू इकन को होय नहि किहू राह ॥ ४२९॥ जुदे जुदे भासे सकल अपनी अपनो वास ॥ तिल तंडल की रीति करि है संसृष्टि सु नाम ॥ ४३०॥ टीका ॥ एक अलंकार कों दूसरे अलंकार की चाह नही रहै और एक अलंकार दूसरे अलंकार को बाधक भी किसी राह सें नहीं होय ॥ ४३०॥ तिल तंडुल की रीति करि कै सब अपनी

अपनी ओर पर जुदे जुदे भासें सो संसृष्टि नाम है॥४३०॥ अथ संसृष्टि भेद॥ दोहा॥ अर्थ अर्थ के भूषण रु शब्द शब्द के होय॥ अर्थ अर्थ के होंय यों त्रय संसृष्टि विजोय॥४३१॥ टीका॥ अर्थ अर्थ के अलंकार होय और शब्द शब्द के अलंकार होंय और अर्थ शब्द के अलंकार होंय ऐसे तीन संसृष्टि देखौ॥४३१॥ अथ शंकर लक्षण॥ दोहा॥ पय पानी की रीति करि होंय परस्पर लीन॥ ताकों संकर नाम ही भाषत परम प्रवीन॥४३२॥ टीका॥ दूध जल की रीति करि के अलंकार परस्पर लीन होंय ताकों परम प्रवीन हैं सो संकर नाम भाषते हैं॥४३२॥ अथ शंकर भेद॥ दोहा॥ है अंगा गी भाव १ अरु सम प्राधान्य २ वखानि॥ संदेह ३ रु इक वाचकानु प्रवे ४ चव सानि॥४३३॥ टीका॥ अंगा गी भाव शंकर है और सम प्राधान्य शंकर वखानो संदेह शंकर ३ और एक वाच कानु प्रवेश शंकर जानों ये चारि भेद हैं॥४३३॥ अथ अंगागी भाव लक्षण॥ दोहा॥ वीज वृक्ष के न्याय करि इक इक को अंग होय॥ सो अंगागी भाव है कवि गुलाव मति जोय॥४३४॥ टीका॥ वीज वृक्ष के न्याय करि के एक अलंकार दूसरे अलंकार को अंग होय सो अंगागी भाव शंकर है गुलाव कवि के मत में देखो॥४३४॥ अथ सम प्राधान्य शंकर लक्षण॥ दोहा॥ दिन दिन पति के न्याय करि संग प्रगटै संग भासै॥ नाम सम प्राधान्य ही कवि गुलाव कहु तास॥४३५॥ टीका॥ दिन स न्याय करि अलंकार साथ ही प्रगटै

रिकै घूसरी देह है॥ क्यों नटे है। पिछानी परै है॥ सुख सौं
सनेह मैं सनी है॥ इहाँ यमक छेकानु प्रास शब्दालंकारन
की संसृष्टि है॥४३९॥ **तृतीय संसृष्टि को उदा-
हरन ॥ दोहा ॥** दृग से दृग हैं याहि के मुख सो मुखही
आहि ॥ कर से कर कुच से कुचहि उपमा उपजे काहि॥४४०
टीका ॥ याके दृग से याके ही दृग हैं॥ मुख सो मुख ही है
कर से कर ही हैं॥ कुच से कुच ही हैं॥ उपमा कौन कौं उप
जैं॥ यहाँ छेकानु प्रास अनन्वय शब्दार्थालंकार की संसृ
ष्टि है॥४४०॥ **इति संसृष्टिः॥ अथ अंगांगी
भाव शंकर उदाहरन ॥ दोहा ॥** हलत पवन मैं
तरुन तर दीखत छांह अनूक॥ शशि हरि ने तम गजहि
ने मानहु तिनके टूक॥४४१॥ **टीका ॥** पवन सें हालते
द्रुमन के नीचे जो अनूक छाया दीखती है सो मानों शशि
सिंह ने तम रूप हाथी मारे हैं तिनके टूक हैं॥ यहाँ श-
शि हरि तम गज रूपक है सो उत्प्रेक्षा को अंग है याते
अंगांगी भाव शंकर है॥४४१॥ **अथ सम प्राधान्य
शंकर उदाहरन॥ दोहा ॥** लंघन तुंग पयोधर
सुर तुरगावलि चार॥ मध्य अरुन नायक मनहु न-
भ श्री मरकत हार॥४४२॥ **टीका ॥** ऊंचे मेघन कौं उ-
लांघती उड़ै सूर्य के घोड़न की पंक्ति है सो हमारी र-
क्षा करो सो मानों मध्य मैं है लाल मणि जाके ऐसो आ
काश लक्ष्मी को पन्ना को हार है॥ इहाँ श्लेष उत्प्रेक्षा
समासोक्ति साथ ही प्रगटते हैं साथ ही भासते हैं या-
तैं सम प्राधान्य शंकर है॥ नभ श्री मैं नायिका व्यव-
हार को आरोप है॥ सो समासोक्ति है॥ नायक नाम मा-

यों और हार की मांग को है ॥ नायको नेतोर भूषे हार
मध्यसरा व प्रीति विस्वा: ॥ ४४२ ॥ अथ संदेह शं
कर उदाहरण ॥ दोहा ॥ अमृत सिंधु मथि काम
रति बिधि अनुसासन जोय ॥ काढै शशि अकलंक तौ
राधा मुखसम होय ॥ ४४३ ॥ टीका ॥ काम और रति है
सो ब्रह्मा की आज्ञा देख के अमृत के समुद्र को मोथ
के कलंक रहित चंद्रमा को काढै तो राधा के मुख की समा
न होय ॥ यहां जो यों होय तो यों होय असा वर्णन सें
संभावना अलंकार है और असो चंद्रमा होय न राधा
का मुख की बराबरि होय यह मिथ्या वर्णन है या-
तें मिथ्याध्यवसिति है ॥ ४४३ ॥ पुन: ॥ दोहा ॥
सर्प महा विष उगलतो बसत मूल के माहि ॥ तो वरफल
जुत सुतरु तें कहा प्रयोजन आहि ॥ ४४४ ॥ टीका ॥
बहुत जहर कों उगलतो ज्यो सर्प मूल में वसे है तो श्रे
ष्ट फल सहित सुंदर वृक्ष सों काई प्रयोजन है ॥ यहां
प्रस्तुत सर्प वृत्तांत वर्णन में अप्रस्तुत राजा के पास रहि
वे वारे खल को वृत्तांत की प्रतीत होय है यातें समासो
क्ति है ॥ अथवा प्रस्तुत खल वृत्तां त जनायवे व
स्ते अप्रस्तुत सर्प वृत्तांत कथन है यातें अप्रस्तुत प्र
शंसा है ॥ अथवा वर्ण्य मात्र सर्प के वृत्तांत कहिवे तें
पास रहिवे वारे खल को वृत्तांत प्रगट होय है ये दोनू
प्रस्तुत हैं यातें प्रस्तुतांकुर है निश्चय भयो यातें सं
देह संकर है ॥ ४४५ ॥ अथ
वे संकर ॥ दोहा ॥ हे हरि दयालु
तो सिर नाय ॥ तुव पद पंकज आसरै मन मधुकर लगि

जाय ॥ ८६५ ॥ टीका ॥ हे हरि दीन दयाल मैं यह सिर नवाय करि कै माँ-गौ हौं तुम्हारे चरणकमल के आसरे मेरो मन भ्रमर लगि जाय ॥ इहाँ पद प्र-काश मन मधुकर में रूपक छेकानुप्रास है यातैं एक वाचकानुप्रवेश संक-र है ॥ काहू के मत में शब्दार्थालंकार को ही एक वाचकानुप्रवेश होय है काहू के मत में अर्थालंकारन कोवी होय है ॥ जहाँ शब्दार्थालंकार जु-दा जुदा होय तहाँ संसृष्टि है अरु जहाँ एक पद मैं दोनूँ होय तहाँ एक वाचकानु प्रवेश संकर है ॥ ८६५ ॥ दोहा ॥ चंद्रकला टीका करी मोती-लाल सहाय ॥ मोती शंकर ने लिख्यौ सोधि ग्रंथ सुख दाय ॥ ८६६ ॥

इति वनिता भूषण सम्पूर्णम् शुभम् ॥

वनिता भूषण का अशुद्ध शुद्ध पत्र लिख्यते ॥

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
	१	नहा	नहीं	२१	२३	सैन	सैन
	१०	अनन्वय	अनन्वय	२२	६	आहुल रुयो	आहुल रुयो
	३	नायका को	नायका को	२२	२१	सांदेह	संदेह
	२२	डर सैं	डर मैं	२२	३३	कासांधा	कासांधा
				२३	२५	साची	सांची
	२०	अवगर्य	अवगर्य	२३	३	मन	मैन
	८	मलक	झलक	२३	८	पतिको	पति कौं
	१०	न्यवत रूप	न्यूँनत रूप	२३	१२	छिपावे	छिपायें
				२३	२५	दरवाज़ा	दरीज़ा
	२८	जोवत	जावत	२४	७	सखी को	सखी को
	१४	देवर	देवर	२४	२८	तिहिंपति	जिहिं पति
	२६	मध्यी	मध्या	२८	२०	जाने	माने
	२६	यावना	योवना	२७		नानक	मानक
	७	डराय	डराय	२७	२५	आस पसु	आस्पद सु
	८	खा लखा	खो लखावे	२७	२२	अधर मैं	अधर में

नामसिंधुकोषको

द्वितीय भाग

अर्थात

गुलाब कोश को संक्षेप अमरकोश द्वितीय कांड

क्वचिद्विशेष

श्रीयुत चहुवाण वंशावतंस हड्डुकुल कलशबूंदी

न्द्र महाराजाऽधिराज महाराव राजाजी श्री श्री

श्री श्री श्री १०८ रामसिंहजी के कवि राव जी श्री

गुलाबसिंहजी कृत

आगरा

नगरे बेलनगंजे श्री पण्डित केशव प्रसाद शर्म्म

द्विवेदि प्रबंधेन विद्यारत्नाकर यंत्रे मुद्रितः

सादनं सदनं अगार ॥५॥ भवनं निकाय्य निकेतनं रु निशां तपस्त्ये रु गेह ॥ आलये निलये सभा कुटी शाला वास हले ह॥ ६॥ चौसाला के २ मुनि घर के २ यज्ञ शाला के ३ हयशाला के १ नाम ॥ दोहा॥ चतुश्शाल संजवनं जु गउवज पर्णशालं हि । चैत्य आयतनं मखसदनं, मन्दु रं तु हय ठौंहि॥७॥ सुनारादि घर के ३ जलशाला के ३ नाम॥ दोहा ॥ होय शिल्पिशाला द्वितिय आवेश नं सुदुकान॥ जु पानीय शाला सु तौ प्रपा रु प्याऊ नाम ॥ ८॥ विद्यार्थी परिव्राजकादि स्थान के १ मध्य घर के १ घर भीतर घर के २ नाम ॥ दोहा ॥ मठ तु थान शिष्यादि को गर्ज मादिरा स्यान ॥ गर्भागारं तु वासगृह भाग मध्य घर जान ॥ ९ ॥ जन्म स्थान के २ झरोखे के २ मंडप के २ धनवान के घर के १ नाम ॥ दो० अरिष्टं तो सूतिका गृह वातायन तु गवाक्ष ॥ मंडप सु तो जनाश्रय हि हर्म्य धनिक गृह दक्ष ॥ १० ॥ सुरनृप घर के १ राजसदन के ४ नाम ॥ दोहा ॥ सुरनृप गृह प्रसाद ही राजसदन तो सौध ॥ उपकार्या उपकारिका अ थ नृप घर भिद शोध ॥ ११ ॥ चतुर्द्वार तोरण के १ अ नेक मजला को १ गोलाकार को १ बिसौरा सुन्दर के १ १ नाम॥ दोहा ॥ स्वस्तिक एक हि सर्वतोभद्र हि नंद्यावर्त ॥ अथ विच्छन्दक आदि इक ईश्वर गृह भिदवर्त

ो. हस्ति नख अरर कपाट किंवार ॥ अर्गल इक आरोह ण
तु सोपान हि निर्धार ॥ १९ ॥ नसैनी को १ बारी झाडूके २
। किंजोडा के २ । नाम ॥ दोहा ॥ निश्रेणी तु अधिरोहणी
संमार्जनी तु जानि ॥ शोधनी हु अवकर सुतो संकर कू
डा मानि ॥ २० ॥ निकलने द्वार के २ । अच्छा स्थान के
२ । गांव के ४ । घर बनाने की भूमि के २ । नाम ॥ दो
हा ॥ मुख निःसरण निवेशन तु सन्निवेश दो होय ॥
ग्राम सुतो संवसथ जुग वास्तु वेश्म भू होय ॥ २१ ॥ गोर
वाँ । वा । पडोस के २ । हद के २ । अहीर का गांव के २
नाम ॥ दोहा ॥ उपशल्यं तु ग्रामांत जुग सीमा सीम न धी
र ॥ जुआभीरपल्ली सुतो घोष हि ग्राम अहीर ॥ २२ ॥ जंगलि
यों के गांव के ३ नाम ॥ दोहा ॥ पक्कण तो शबरालयो हि
भिल्लग्राम जुग जोय ॥ शबर तु बन चांडाल ही कोविंदु स
व मत होय ॥ २३ ॥

इति पुरतरंगः

अथ शैलतरंग लिख्यते ॥ ५ ॥

पर्वत १३ नाम ॥ दोहा ॥ शैल महीध्र अहार्य गिरि शि
खरी क्ष्माभृत ... ॥ अचल शिलोच्चय गोत्र धर पर्वत स
द्रि कहाव ॥ १ ॥ जो ... त पृथ्वी को घेरे है ताके २ लो
का गिरि के २ । अस्ताचल के २ । उदयाचल के २
पर्वत भेद भिन्न भिन्न ७ । पत्थर के ८ नाम । दो

पर्वतलोकालोक सो चक्रवाल हूजानि ॥ त्रिककुत त्रिति
य त्रिकूट अथ चरमक्ष्मास्त मानि ॥ २ ॥ अस्तौ जुगल उदय
तु द्वितिय पूर्व पर्वत हि जानि ॥ पारियात्रिक रु विंध्य गिरि
माल्यवान हिमवान ॥ ३ ॥ निषध गंधमादन अपर जानि है
मकूटादि ॥ अप्रमे ग्रावे प्रस्तर उपल शिला दृषद षटवादि
॥ ४ ॥ गिरिकी चोटीके ३ । पर्वतसें जल गिरनेका
स्थानके ३ । गिरिमध्यके २ । नाम ॥ दोहा ॥ कूटतु शि
खर रु शृंग त्रय भृगु तो अतट प्रपात ॥ कटक तु अद्रिनितं
ब सौ मध्य भाग गिरितात ॥ ५ ॥ पर्वतकी समान पृथ्वी
के ३ । झरनाका स्थानके २ । झरनाके ३ । नाम ॥
दोहा ॥ पर्वत सम भू भाग तो सानुप्रस्थ स्नु हि आह ॥ उत्स
प्रस्रवरा निर्झर तु झर त्रय वारिप्रवाह ॥ ६ ॥ बनाई गुफा
के २ । विनाबनाई गुफाके ४ । भारी पत्थरको १ ना
म ॥ दोहा ॥ दरी कंदरा मनुज कृत देवखात विल सोतु ॥
गुहा और गह्वर अथो गंडशैल इक होतु ॥ ७ ॥ खानिके
२ । पर्वतपासके छोटे पर्वतके २ । पहाडीकी नीच
ली भूमिको १ । ऊपरली भूमिको १ । नाम ॥ दोहा
खनि आकर जुग पाद तो प्रत्यन्त पर्वत आहि । गिरि तरभू
मि उपत्यका अधित्यका ऊर्ध्वाहि ॥ ८ ॥ पहाड
की वस्तुको १ । कुंजके २ । नाम ॥ दोहा ॥ धातु
पित्त आदि है गैरिक त्यों जोय ॥ कुंज निकुंज

रि आच्छा दिन ही होय ॥ ८ ॥

इति शैलतरंगः

अथ वनौषधितरंग लिख्यते ॥

वन के ८ । बडे वन के २ नाम ॥ दोहा ॥ कानन गहन अरण्य वन अटवी विपिन कुमानि ॥ सोय अरण्यानी अपर महारण्य हु जानि ॥ १ ॥ ग्रह के समीप बाग के ३ बाग के २ राज मंत्री और वेश्या का बाग को १ नाम दोहा ॥ निष्कुट ग्रह आराम जुग उपवन तो आराम ॥ बाग जुगनि का मंत्रिन को हस वाटिका नाम ॥ २ ॥ राजक्रीडा बाग के ४ । राजा राणी क्रीडा के बाग को १ नाम ॥ दोहा ॥ आक्रीड रु उद्यान जुग साधारण वन राज ॥ सोय प्रमद वन होय जहँ क्रीडत राणी राज ॥ ३ ॥ पंक्ति के ७ लकीर के २ । वनसमूह को १ । नाम ॥ दोहा ॥ श्रेणी आवलि पंक्ति पुनि वीथी आलि रु रवानि ॥ लेखा राजी जुग ल अथ वन्या वनगन मानि ॥ ४ ॥ अंकुर के २ वृक्ष के १३ नाम ॥ दोहा ॥ अभिनवोद्भिद अंकुर द्विदल महीरुह हो य ॥ शाखी विटपी शाल तरु पादप कुट द्रुम सोय ॥ ५ ॥ अग म पलाशी अनोकह दु जुत त्रयो दश जानि ॥ वल्ली तो व्रतती लता प्रतानि रु बेलि वखानि ॥ ६ ॥ फैली बेलि के ३ । वृक्षादि की उचाई के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ उलप तु वीरुत गुल्मिनी फैली लता वताय ॥ उच्चता तु उत्सेध पुनि उच्छ्राय

कालीसीसमको१ चम्पाके ७।नाम॥दोहा॥निंबस
र्वतोभद्र पिचुमंद हिंगनिर्यास॥मालके नीव अरिष्ट अ
घ अगुरु पिंछा पो भास॥२३॥पिच्छिला हु कपिलो तुसे
रक्ताभस्सगर्माहि॥हेमपुष्प चांपेय पुनि चंपक चंपा आहि
॥२४॥चम्पाकी कली को १ वौलसिरी के २।आम
ला के २।अनारके ३।तमालके ३।घुंइयांके २।ना
म॥दोहा॥गंधफली चंपाकली वकुलतु केसर जानि॥
वंजुलसुतो अशोक अथ दाडिम करकं वषानि॥२५॥शु
कवल्लभ हू तीन अथ कालस्कंध तमाल॥तापिच्छ हु
श्री हस्तिनी भूरुंडी हिरसाल॥२६॥जूहीके ५।पीलेफू
लकी जूही को १।चमेलीके ३।नाम॥दोहा॥जुही
मागधी यूथिका अंवष्ठा गणिका हि॥हेमपुष्पिका जाति तो
मालती सुमना हि॥२७॥कुन्दके २।दुपहरयाके ३।
कनेरके ३।नाम॥दोहा॥कुन्द तु माघ्य हि रक्तक तु वंधु
जीवक सुधीर॥वंधूक हु हयमारक तु शत प्रास करवीर॥
२८॥करीरके ३।धतूरके ७।नाम॥दोहा॥ग्रंथिल त्र
क करीर॥अथ कितव धूर्त धत्तूर॥कनकाह्वय मातुलम
दन अरु उन्मत्त मस्तूर॥२९॥धतूरके फलको १
के ३।आकके ७।श्वेत आकके २ नाम॥दोहा॥ति
हिं फल मातुलपुत्रक हि वान्हिसंज्ञक तु चार॥
वसुक तो अर्काह्वय मंदार॥३०॥अर्कपर्ण

विकीरा रु गरा रूप ॥ श्वेत अर्क तौ अलर्क १ द्वितिय प्रता
पस रूप ॥ ३१ ॥ गिलवै के ७ । नाम ॥ दोहा ॥ छिन्न रुह
वत्सादनी मधुपर्णी अमृतारु ॥ सु सोम वल्ली विशल्य
जीवंतिका रु चारु ॥ ३२ ॥ पीपर के ९ नाम ॥ दोहा ॥ कृ
ष्णा उपकुल्या करा वैदेही चपला रु ॥ पौंडी कोला ऊष
णा त्वक्, मागधी चारु ॥ ३३ ॥ गज पीपर के ५ । चव्यु
के २ । नाम ॥ दोहा ॥ कपि वल्ली करिपिप्पली वशिर
श्रेयसी जोय ॥ सु कोल वल्ली पंचमी चव्य तु चविका दो
य ॥ ३४ ॥ दारव के ५ । बड़ी इलायची के ५ । छोटी इ
लायची के ३ । नाम दोहा ॥ दासा स्वादी मधुरसा गो
स्तनी मृद्वीका हि ॥ एला बहुला निष्कुटी रु चंद्रबाला आ
हि ॥ ३५ ॥ पृथ्वीका तुत्या सुतो उपकुंचिका वखानि ॥ को
रंगी रु इलायची दीरघ लघु पहिचानि ॥ ३६ ॥ गुलाब के
३ । नाम ॥ दोहा ॥ पुंडरीक तु पोंडर्य अरु स्थलपद्म प्र
काश ॥ औषधि फल वा कांत मे औषध रोग विनाश ॥ ३७
शाक को १ । चौलाई के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ शाक तु दल
पुष्पादि सो भोजन साधन जानि ॥ तंडुलीय चौलाई अरु
अल्पमारिष हु मानि ॥ ३८ ॥ प्याज के २ । लसुन के ६ । के
हला के ३ । काकड़ी के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ सुकंदक सु
पलांडु ही लताक ढ कुम दोय ॥ महाकन्द रसोन लसुन
जानि रसोनक सोय ॥ ३९ ॥ वल्ली और महौषध हि रूपा

अथसिंहादितरंगलिख्यते॥ ८॥

सिंहके ५। बघेराके ७। नाम॥ दोहा॥ हरि म्रगेन्द्र पंच
स्यपुनि केसरी हर्यक्ष॥ व्याघ्र तु द्वीपी बाघअरु शार्दूल
हु प्रत्यक्ष॥ १॥ तेंदुवाके २। शूकर के ९। वानर के ७।
नाम॥ दोहा॥ म्रगादने क्षुतरक्षु अथ शूकर घ्रष्टि वराह
॥ पोत्री दंष्ट्री कोल किटि रु स्तब्धरोमा राह॥ २॥ घोणीकि
रि म्रूदार पुनि क्रोड है वानर कीश॥ प्लवग वनौकं वलीमुख
रु शाखाम्रग कपि दीस॥ ३॥ रीछके ५। गैंडाके ३। भैंसा
के ५। श्याल के १०। विलाव के ४। नाम॥ दोहा॥ भल्लू
कं तु भालूक पुनि ऋक्षभल्ल अरु अच्छ॥ गंडक खड्गी
खड्ग अथ कासर सैरिभ स्वच्छ॥ ४॥ वाहद्विषत लुलाय पु
नि महिष हि जंबुक सोतु॥ भूरिमाय गोमायु म्रगधूर्त्तक
फेरव होतु॥ ५॥ वंचक क्रोष्टु श्रगाल पुनि शिवा फेरु दशाढ
रा॥ ओतु विडाल रु आखुभुक वृष दंशक मार्जार॥ ६॥ न्वि?द
न गोह के ४। सेहीके २। ताके रोम के ३। नाम॥ दोहा॥
गोधेय तु गोधिका त्मजौ गौधेर रु गौधार शल्य तुश्वाविध
शललं शलं शलली च्य तेहि वार॥ ७॥ वातप्रमी के २।
भिडहाके ३। हीराके ४। नाम॥ दोहा॥ वातप्रमी तु
वातम्रग वृक ईहामृग कोक म्रग कुरंग वातायु पुनि अजि
न योनि विनरोक॥ ८॥ रोमायु १। रोसा १। नाम॥ दोहा॥
हरिणी के चर्मादि तो रोमायु है पहिचानि॥ हरिण हु के

चर्मो दिसो ऐसा एकही जानि ॥ ९ ॥ हरिणाभेदों के ९ ना
म ॥ दोहा ॥ प्रियक तु कदली कंदली चीन चमूर बखानि
अरु समूरु यद हरिणा ये अजिन योनि उर आनि ॥ १० ॥ ह
रिणाभेदके १२ । नाम ॥ दोहा ॥ शंबर रौहिष रंकु रुरु
कृष्णसार गोकर्ण ॥ न्यंकु चमर रोहित पृषत न्टष्य
एसा मृगवर्ण ॥ ११ ॥ मृगभेद के ७ नाम ॥ दोहा ॥
शरभ राम सृमर रुगवय प्राशक शशो रु गंधर्व ॥ इत्यादि
रु सिंहादि मृगनि गो आदिक पशु सर्व ॥ १२ ॥ मूसाके ६
मूसीके २ । किरकोंटके २ । नाम ॥ दोहा ॥ मूषिक उं
दुरु आखु हक पुंध्वज खनक हि भास ॥ गिरिका तु बाल
मूषिका सरट सुतौ कृकलास ॥ १३ ॥ कापकीके २ । म
करीके ४ । नाम ॥ दोहा ॥ मुसली तो गृहगोधिका मर्क
टक तु लूतोरु ॥ ऊर्णनाभ मकरी जगत तंतुवाय हू चा
रु ॥ १४ ॥ मोनकिरवाके २ । कानखजूरके २ । कसा
रीके २ । विच्छूके ३ । नाम ॥ दोहा ॥ नील गु तु हामे शत
पदी कर्ण जलौका होय ॥ प्रकृकीट दृश्चिक अलि तु दु
णा दृश्चिक त्रय होय ॥ १५ ॥ कबूतर के ३ । बाजके ३ । उ
ल्लूके ३ । नाम ॥ दोहा ॥ पारावत तु कपोत त्रय कलरव प
त्रीसो तु ॥ श्येन प्राशादन पेचक तु धूक उलूक हि होतु ॥ १६ ॥
खंजनके २ । भर्दुलके २ । कंक बडके २ । चासके २ ।
नाम ॥ दोहा ॥ खंजरीट खंजन अथो भरद्वाज व्याघ्राट ॥

लोहपृष्ट तो कंक जुग चाष किकी दिवि थाट ॥ १७ ॥ भुजकपल
वो भुजेटाके ३ । काठ फोराके २ । पपीहाके ३ । नाम ॥ दो
हा ॥ धूम्याट तु कालिंग पुनि भृंग हुदावो चाट ॥ शतपत्र दं
सारंग तो स्तोकक चातक थाट ॥ १८ ॥ कूकड़ाके ४ । चिड़ा
को १ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ ताम्रचूड चरणायुध रु कुक्कुटपुनि
हृकवाकु ॥ चटका तु कलविंकहि तियाताकी चटकीताक ॥
तिनके बच्चा १ बच्चीको कंवारेटके २ । करककेश ना
म ॥ दोहा ॥ चाटकैर बच्चो तिनहि चटका बच्ची तास ॥ काको
दूतोकरदुहि कृकर तु क्रकरा हि भास ॥ २० ॥ कोकिलके ४
काकके १० । डोडकाकके २ । कालका काकके २ । नाम ॥
दोहा ॥ वन प्रिय तु परभृत रु पिक कोकिल ध्वांक्ष तु का
क ॥ करट अरिष्ट सकृत्प्रजा वायस वलिभुक ताक ॥ २१ ॥
आत्मघोष वलिपुष्ट दश परभृत अथ का कोल ॥ ॥ द्रोण
काक दाग्धह तो कालकराठ कहु वोल ॥ २२ ॥ चीलके २ । गी
धके २ । सुवाके २ । क्रौंचके २ । बुगलाके २ । नाम ॥ दो
हा ॥ आतापी तो चिल्ल अथ गृध्र हि तिय दाक्षाय्य ॥ कीर शु
क हि क्रुङ् क्रौंच जुग वक तो कङ्क कहाय ॥ २३ ॥ सारसके २
चकवा चकवीके ३ । नाम ॥ दोहा ॥ पुष्कराह्व तो सारस हि
चक्रवाक तो कोक ॥ रथांगाह्वय कोकदेव तो जुग कलहंस अरे
का ॥ २४ ॥ कुररीके २ । हंसके ४ । हंसभेदके ३ । नाम ॥
दोहा ॥ कुरर तु उत्क्रोश हि अयो श्वेतगरुत चक्रांग ॥ हंस

मान सौकस घोराज हंस सर्वांग ॥ २५ ॥ श्वेतहि लालतु चूंच
गमल्लिकासंतु गनाय ॥ मलिन चूंचपग प्रधाम तौ, धार्त
ष्ट्र मुखपाय ॥ २६ ॥ आडीके ३। वगुला की दूसरी जाति
२। हंस की स्त्रीको नाम ॥ दोहा ॥ राटि तुराडि प्रारि
विसकंठिका तु, दोय ॥ वलाका हि, तिय हंस की, वरटा न
हिहोय ॥ २७ ॥ सारस की स्त्री को १। बागल के २। चा
रीके २ नाम ॥ दोहा ॥ सारस की तिय, लक्ष्मणा तेल
काआहि, ॥ परो ष्णी हजतुका सुतो, द्वितिय, आजिन प
॥ २८ ॥ मांखीके ३। स हत की मांखीके २। मधुम
का विशेष के २। नाम ॥ दोहा ॥ तीन, वर्वणा मक्षि
ला सरघासोतु ॥ मधुमक्षिका हि पुत्तिका पतंगिका जुग हो
तु ॥ २९ ॥ डांसके २। लघुडांसके २। झींगुरके ४। नाम ॥
दोहा ॥ दंशं सुतो, वन मक्षिका लघु दंश तु दंशी हि ॥ चारि झि
ल्लिका चीरु कोचीरी भृंगारी हि ॥ ३० ॥ वरडे के २।
के २। जुगनू के २। भंवर के १२। नाम ॥ दोहा ॥ वरट
घोली जुगल, शलभ द्वितीय, पतंग ॥ खद्योत तु,
मधुकर मधुलिह भृंग ॥ ३१ ॥ भ्रमर मधुव्रत मधुप आलि अ
ली पुष्पालिह और ॥ षटपद वहरि द्विरेफ सव द्वादश
क भौर ॥ ३२ ॥ मोरके ८। ताकी वाणीको १ ॥ नाम ॥ दो
हा ॥ केकी शिखी भुजंगभुक नीलकण्ठ रु मयूर ॥
हिं शिखावल तिहिं बर्हिण केकी पूर ॥ ३३ ॥ चंदोवाके २।

ताकी चोटीके २। ताकी पांखके ३ नाम॥दोहा॥चन्द्रक मेचक सोय अथ, चूडा शिखा बखानि॥ वर्ह तु, पिच्छ शिखण्ड त्रय, थोर पंख जग जानि॥३४॥पक्षीके २७ नाम॥दोहा॥पक्षी विहग विहंगम रु, शकुन विहायस मानि॥ शकुनि शकुंति शकुंत खग पतन पत्ररथ जानि॥३५॥वाजी पत्री द्विज पतग विष्किर विकिर वि सोय॥ नभसंगम नीडोद्भव रु, नगौकापि त्सन होय॥३६॥पतत्री रु अंडज वहुरि, गरुत्मान रु, विहंग॥ अरु, पतत्रि सब नाम गनि विंशति सप्त प्रसंग॥३७॥भिन्न भिन्न पक्षीन के नाम॥दोहा॥कांडव प्लव मद्गु पुनि, क्रौञ्च टिट्टिक हारीत॥तित्तिरि कुक्कुभ टिट्टिभक जीवंजीव पुनीत॥३८॥लाव रु, वर्त्तक वर्त्तिका चकोरादि पहिचानि॥भिन्न २ पक्षी सकल नाम एक इक जानि॥३९॥पांखके ६। पांखकी जडके २। चूंचके ३ नाम॥दोहा॥गरुत तनूरुह पत्र छद पतत्र पिच्छ जानि॥ पक्ष मूल तौ पक्षति हि चंचु त्रोटि जुग जानि॥४०॥पक्षीन की गति भेद के ३। नाम दोहा॥खगगति क्रिया प्रडीन अरु, उड्डीन रु, संडीन॥ तिरछी, ऊंची, अरु भली क्रमतें लखो प्रवीन॥४१॥अंडाके ३। घूंसलाके २। शिशु मात्रके ७ नाम॥दोहा॥पेशी कोश रु अंड त्रय नीड कुलायहि होत॥ पृथुक तु शावक डिंभ शिशु अर्भक पाक रु, पोत॥४२॥स्त्री पुरुषके जोडेके २। दोके ३। समूहके २२। समूह भेदोंके। नाम॥दोहा॥द्वंद तु मिथुन हि तिय पुरुष॥

मन्दा कांता मानिनी ललना रमणी देखि ॥ ३॥ पुनि नितंबिनी सुन्दरी रामा इकइक जानि ॥ कोपना तुजुग भामिनी मनकोपि नी मानि ॥ ४॥ सुवरारोहा उत्तमा वरवर्णिनी विचारि ॥ महिषी कृतअभिषेक न्रप अन्य भोगिनी धारि ॥ ५॥ विवाहिता स्त्री के ७। नाम ॥ दोहा ॥ पत्नी पाणिग्रहीति अरु सहधर्मिणी रु दार ॥ द्वितीया रु जाया वहुरि भार्या सात उदार ॥ ६॥ पत्तिपुत्र वाली के २। सती के ४। प्रथम व्याही स्त्री के २। स्वयम्व र वाली के ३। कुलवती के २। पांच वर्ष की कन्या के २। नाम ॥ दोहा ॥ कुटंविनी तौ पुरंध्री सती तु साध्वी देखि ॥ सु चरित्रा रु पतिव्रता अध्यूढा तौ पेषि ॥ ७॥ अधिविन्ना हि पतिं वरा स्वयंवरा वर्या हि ॥ कुलस्त्री तु कुलपालिका कुमारी तु क न्या हि ॥ ८॥ दश वर्ष की कन्या के २। प्रथम रजस्वला के २ । जुवान स्त्री के ४। पतोहू के ३। नाम ॥ दोहा ॥ नग्निका तु गौरी जुगल दृष्टरजा मध्यमा हि ॥ युवति तु तरुणी सुतवधू वधू जनी रु स्नुषा हि ॥ ९॥ जुवान पीहर मै होय उसके २। धनादि की इच्छा वाली के २। मैथुनेच्छा वाली के २। नाम ॥ दोहा ॥ जुचिरंटी सु सुवासिनी इच्छावती तु जोय ॥ कामुका हि अर्थ काम की कामुक स्यंती होय ॥ १०॥ कामातुरा के पति के पास जाने वाली को १। व्यभिचारिणी के ८। विनु पुत्र वाली को १। पति पुत्र रहित को १। रंडा के २। नाम ॥ दोहा ॥ जायवहै अभिसारिका पुंश्चली तु कुल

टारु॥ सोय स्वैरिणी इत्वरी असती सुपांशुलांक॥ ११॥ आठ धर्षिणी
वंधकी अशिषु आशिष्वी आहि॥ अवीरा तुपति सुतरहित विधवा वि
श्वस्ता हि॥ १२॥ साथन के ३। बूढी के २। सुहागिन के २ कु
ळ समुभ्कदार स्त्री के २ नाम॥ दोहा॥ सखी वयस्या आलि
त्रय पलिक्नी तु वृद्धा हि॥ पति पत्नी तु सभर्त्र का प्राज्ञी प्रज्ञा आ
हि॥ १३॥ अतिवुद्धि मती के २। शूद्री को १ शूद्रा को १ नाम
॥ दोहा॥ धीमती तु प्राज्ञा तिया शूद्रकि शूद्री सोय॥ विजाती
हु निज जाति तो शूद्रा निज पर जोय॥ १४॥ अहीरिनी के २। क्ष
त्रियानी के २। बनियानी के २ नाम॥ दोहा॥ आभीरी पतिजा
तिकरि सु महा शूद्री आहि॥ द्वि क्षत्रियाणी क्षत्रिया अर्याणी
अर्या हि॥ १५॥ पढाने वाली के २। मंत्र का अर्थ करने वाली
को १ नाम॥ दोहा॥ दोव उपाध्यायी उपाध्याया आप पढाव॥
इक आचार्या नारि जो आप हि मंत्र सिखाव॥ १६॥ पति योग में
पांच नाम॥ दोहा॥ आचार्यानी क्षत्रियी अर्यी पतिकी जोय
रु उपाध्यायानी उपाध्यायी पंचम होय॥ १७॥ पोटा को १।
वीरभार्या के २। वीरमाता के २। नाम॥ दोहा॥ पोटा नरतिय
रूप अथ जु वीरभार्या होय॥ सु वीरपत्नी वीरसू रु वीरमाता
दोय॥ १८॥ प्रसूतिका के ४। नंगी स्त्री के २। नाम॥ दोहा॥
प्रसूतिका तौ प्रसूता जाता पत्या मानि॥ प्रजाता हु अथ नग्निका
द्वितिय कोटवी जानि॥ १९॥ दूती के २। कात्यायनी को १ ना
म॥ दोहा॥ दूती तो संचारिका कात्यायनी जोय॥ अर्द्ध वृद्ध भ

गिवा नसन संजुत विधवा होय॥१९॥सैरंध्री १।असिक्नी१नाम ॥दोहा॥सैरंध्री परसदन थित स्ववश शिल्प कृत जोय॥प्रेष्यांतः पुरचारिणी ज्वान असिक्नी होय॥२०॥पातुर के ४।वारमुख्या के १ नाम॥दोहा॥रूपाजीवा रु.गणिका वारस्त्री वेश्या हि॥सो सत्कृत जनन करि सु है.वारमुख्या हि॥२१॥कुटनी के २।शु-भाशुभ जानने वाली के ३।नाम॥दोहा॥दोय.कुट्टनी शंभली परतिय पुरुष मिलानि॥ईक्षणिका विप्राश्निका दैवज्ञा त्रय जानि॥२२॥रजस्वला के ७।नाम।दोहा॥रजस्वला तो.ऋतुमती पुष्पवती अवि जोय॥उदक्या रु.मलिनी तथा.आत्रेयी हू होय॥२३॥स्त्रीरज के ३।गर्भ के वससें अन्नादि की विशेष अभिलाषा वाली के २।रजरहित स्त्री के २।नाम।दोहा ॥रज तु.पुष्प आर्त्तव त्रय हि दोहदवती तु.देखि॥श्रद्धालु हि विगतार्त्तवा तो.निष्कला परेखि॥२४॥गर्भिणी के ४।देश्य समूह को १।गर्भिणी समूह को १।जुवती समूह को १। नाम॥दोहा॥अंतर्वत्नी गर्भिणी सु आपन्नसत्वा रु॥गुर्विणी हु गार्भिण्य गर्भ गार्भिण यौवत चारु॥२५॥दो बार विवाही के २।ताके पति को १।विशेष पति को १।नाम।दोहा॥पुनर्भू रु.दिधिषू जुगल.दोवर परणी नारि॥तिहिं पति.दिधिषु हि द्विजसु तो.अग्रेदिधिषु विचारि॥२६॥बिन व्याही का पुत्र के २।सुभगा का पुत्र के २।नाम॥दोहा॥दोय कन्यका जात सुतु.पुनि.कानीन वखानि॥जु सौभागिनेय सु द्वितिय

सुभ गासुत पहिचानि ॥ २७ ॥ पराई स्त्री के पुत्र को १ भुवा को पुत्र के २ नाम ॥ दोहा ॥ इक पारस्त्रैणेय अरु पितु भगिनी सुत ज्ञेय ॥ सोय पैतृष्वस्त्रीय अरु दूजो पैतृष्वसेय ॥ २८ ॥ मौसी के पुत्र के २ सौतेली मा के पुत्र के ३ कुलटा के पुत्र के ५ भिखारिनी के पुत्र के २ नाम ॥ दोहा ॥ तथा मातृष्वस्त्रीय अरु जानहु मातृष्वसेय ॥ वैमात्रेय रु मातृज हि बंधुल दांधकिनेय ॥ २९ ॥ कौलटेर कौलटेय रु असतीसुत पच ज्ञेय ॥ कौलटेय तौ भिक्षुकी सति सुत कौलटिनेय ॥ ३० ॥ पुत्र के ६ पुत्री के ५ नाम ॥ दोहा ॥ तनय पुत्र सुत आत्मज रु बेटा सूनु बखानि ॥ बेटी पुत्री आत्मजा दुहिता तनया मानि ॥ ३१ ॥ पुत्री और कन्या के २ औरस पुत्र के २ पिता के ३ माता के ४ बहिन के २ ननद को १ पोती के ३ नाम ॥ दोहा ॥ तोकं अपत्य उरस्य तो औरस हू निज जात ॥ तात पिता जनक हि प्रसू तो जनयित्री मात ॥ ३२ ॥ जननी अंब भगिनी स्वसा ननंदा तु पति भगिन ॥ पौत्री सुता सुतात्मजा नप्त्री त्यतिय सुजान ॥ ३३ ॥ दिवरानी जिठानी को १ भौजाई के २ नाम ॥ दोहा भ्रातृवर्ग की भार्या यातां आप समाहि ॥ जु है भ्रातृभार्या सुतौ प्रजावती ही आहि ॥ ३४ ॥ मामी के २ सासू को १ सुसरा को १ काका को १ नाम ॥ दोहा ॥ जु मातुलानी मातुली श्वश्रू पति तिय मात ॥ पितु पति तिय को श्वशुर है पितृव्य पितु को भ्रात ॥ ३५ ॥ मामा को १ शाला को १ देवर के ३

नाम॥ दोहा॥ मातुल भ्राता मातके श्वसुर तिय को भ्रात॥ देवा तो॰ देवर द्वितिय पति को छोटो भ्रात॥ ३६॥ भानेज के २। जंवाई के २। पिता मह्यादि के। नाम॥ दोहा॥ भागिनेय स्वस्रीय अथ पुत्री पति जामतो दोय पिता मह पितृ पितो प्रति नाम है तिहि तात॥ ३७॥ सात पुस्त भीतर के २। सगा भाई के ४। नाम। दोहा॥ त्यौं माता मह आदि हैं दोय सपिंड सनाभि॥ समानोदर्य सोदर्य सो सहज सगर्भ्य हु लाभि॥ ३८॥ गोतीन के ६ नाम। दोहा॥ वांधव ज्ञाति सगोत्र पुनि स्वजन वंधुस्व हु ज्ञेय॥ तिन को मन तौ वंधुता भाव जानि ज्ञातेय॥ ३९॥ पति के ४। परपति के २। कुंडको १। नाम॥ दोहा॥ धव प्रिय पति भर्त्ता चतुर उपपति सो तो जार॥ जीवत पति जारज तनय कुंड नाम संसार॥ ४०॥ गोलक को १। भतीजे के २। द्विवचनवालों के। नाम। दोहा॥ मरे होत गोलक जुगतु भ्रात्रज अरु भ्रात्रीय॥ भ्रात भगिनि कौं एक करि जानि भ्रातरौ जीय॥ ४१॥ पितरौ माता पितु समुझि माता पितरौ दोय॥ श्वश्रुरौ सासु सुसुर सुत सुता तु पुत्रौ होय॥ ४२॥ स्त्रीपुरुषके ४। जेरके २। नाम॥ दोहा॥ चारि दंपती जंपती भार्यापती बखानि॥ जायापती जरायु तो गर्भाशय जुग जानि॥ ४३॥ शुक्रशोणित एकत्र होके जो कुछ बनता है उसके २। जन्ममासके ३। गर्भके २। नपुंसक के ४। नाम। दोहा॥ उल्ब कलल द्वै जनन तो सूति मास जुग मुंड॥ भ्रूण तु गर्भ हि षंढ तो क्लीव नपुंसक षंढ॥ ४४॥

लडकपन के ३। जवानी के २। बुढापा के २। बुढापा स
मूह को १ नाम ॥ दोहा ॥ शैशव वाल्य शिशुत्व त्रय योवन
जुगता रु तार्य ॥ वृद्धत्व तु स्थाविर गनतु तिनको वार्द्धक गणय
॥४५॥ अति बुढापा को १। बुढाई के २। दूध पीने वाले व
च्चे के ७ नाम ॥ दोहा ॥ पलित तु कन्दकी सेलता। जरा विस्रसा
दोय ॥ स्तनप डिंभ उत्तानशाय स्तनंधयी जव होय ॥४६॥ बाल
क के २। ज्वान के ३। बूढा के ६। नाम ॥ दोहा ॥ वाल तु मा
णवक हि तरुण। युवा वयस्थ त्रिजानि ॥ स्थविर वृद्ध जीर्ण स
जरन प्रवयां जीनं क्रमानि ॥४७॥ अति बूढा के ३। वडे भा
ई के ३। नाम ॥ दोहा ॥ दशमी वर्षीयान त्रय ज्यायान हु अति
जीन ॥ पूर्वज अग्रिय अग्रिज हि ज्येठो भ्रात प्रवीन ॥४८॥ छोटे
भाई के ५। दूबला के ३। बलवान के २। नाम ॥ दोहा ॥
अनुज जघन्यज अवरज रु पांच। कनिष्ठ यवीय ॥ दुर्बल छात
अमांस त्रय अंसल मांसल वीय ॥ ४९ ॥ दूंदला के ४। नक
चपट के ४। नाम ॥ दोहा ॥ वृहत्कुक्षि तु पिचिंडल रु तुंदी
तुंदिक थाट ॥ नत नासिक तु अवभ्रट रु अवटीट रु अवनाट ॥
५०॥ अच्छे वार वाले के ३। सिमटी चाम वाले के २।
कम अधिक अंग वाले के २ वावना के ३। नाम ॥ दोहा ॥
केशी केशव केशिक हि वलिन वलिभ जुग सर्व ॥ विकलांग
तु पोगंड जुग ह्रस्व तु वामन खर्व ॥५१॥ तीखी नाक का के
२। नकटा के २। लम्बी चौड़ी चिपटी नाक का के २। दूर दूर

जांघ का के २। नाम ॥ दोहा ॥ स्वरसो तु स्वरास' विग्रै तो गतन
सिकं जुगजोय ॥ खुरसा खुरणस' मज्जु तो। प्रगत जानुकं' हि होय
॥ ५२ ॥ ऊंची जांघ का के २। मिली जांघ का के २। बहिरा
के २। कूबडा के २। टूंटा के २। नाम ॥ दोहा ॥ उर्द्ध जानुक
र्द्धज्ञु जुग संहत जानुकं संज्ञु ॥ एडं वधिर' कुब्ज तु गडुलं कुकुर
तुकुर। जुग संज्ञु ॥ ५३ ॥ छोटे अंग का के २। पांगला के २।
मूंड मुंडाये के २। कंजा के २। लंगडा के २। नाम ॥ दोहा
पृश्नि अल्पतनु श्रोरा तो पंगु हि मुंडित मुंड ॥ वालिर तु केकरं
खोड तो खंजी हि जुग जुग फुंड ॥ ५४ ॥ लहसना के ३। तिल
वाला के २। निरोगी के २। नाम ॥ दोहा ॥ जदुल तु कालकं
पिप्लुस हि तिलकालक तु द्वितीय ॥ तिलक हि होय अनामयं
तु जुग आरोग्यें गनीय ॥ ५५ ॥ इलाज करने के २। इलाज
के ५। रोग के ७। क्षयी के ३। नाक रोग के २। छींक के ३
नाम ॥ दोहा ॥ चिकित्सा तु रुक्प्रतिक्रिया औषध भेषज अ
धि ॥ अगद जायु भैषज्यं पच रोग रुजा रुक व्याधि ॥ ५५ ॥ ग
द आमय उपताप हीं क्षय तो यक्ष्मा प्रोवं ॥ प्रतिश्याय पीनस
नय सुत क्षुत क्षव हि अदोव ॥ ५६ ॥ खांसी के २। सूजन के ३
बिवाई के २। सेहुंवां के २। नाम ॥ दोहा ॥ कास तु क्षवथु
हि शोफ तो शोथ रु श्वयथु दखानि ॥ पादस्फोट विपादिका
सिध्म किलास हि मानि ॥ ५७ ॥ खाजु रोग के ४। खुजाल
के ३। फोडा के २। नाम। दोहा ॥ पामा पामन विचर्चिका क

च्छू कंडू सोतु॥ खर्जू कंडूया विकट तो विस्फोट हि होतु॥ ५७
घावके ४। नसूर को १ कोढ के ५। श्वेत कोढ के २ खवा
सीर के २। कामला के २। संग्रहणी के २। उलटी के ३। ना
म॥ दोहा॥ व्रण तु घाव ईर्म रु अरुषं अथ नाडीव्रण होय॥
कोठ मंडलक कुष्ठ तो श्वित्र हि अर्शस सोय॥ ५९॥ दुर्नामक
आनाह तो विबंधं ग्रहणी सोतु॥ रुक् प्रवाहिका वमथु तो वमि
प्रछर्दिका होतु॥ ६०॥ व्याधि भेद के ४। मूत्रकृच्छ्र के २। ह
कीम के ४। रोग रहित के ४। रोग से दुखी के ७॥ नाम॥
दोहा॥ व्याधिभेद विद्रधि रु ज्वर मेह भगंदर च्यार॥ मूत्रकृ
च्छ्र तो अश्मरी भिषक् तु अगदंकार॥ ६१॥ रु रोग हारी चिकित्स
क वार्त्त तु कल्य वक्खानि॥ निरामय रु उल्लाघ अथ ग्लानि
तु ग्लास्नू जानि॥ ६२॥ रोगी के ४। खसरा वाला के २। ना
म॥ दोहा॥ अपटु आमयावी विकृत व्याधित आतुर सोय॥
अभ्यमित रु अभ्यांत अथ पामन कच्छुर होय॥ ६३॥ दादवा
ला के २। बवासीर वाला के २। वाय वाला के २। बहुत द
स्त वाला के २। चीपरा वा चौंधरा के ४। बावले के २। क
फ वाले के २। नाम॥ दोहा॥ जु दद्रुरोगी
अर्शवान॥ हि वातरोगी बातकी सातिसार तो आन॥ ६४॥
अतिसारकी हि चुल्ल तो चिल्ल पिल्ल क्लिन्नाक्ष
उन्मादवत् श्लेष्मल श्लेष्मण दक्ष॥ ६५॥ कूबडा के २। तुंदल
के २। तहुवां वाले के २। अंधा के २। मूर्छित के। नाम॥

दोहा॥ च्युअ मुग्न रुजं तुंडिमँ तुतुंडिल सिध्मल सोतु॥ किलासी हु अंधं तु अद्दग मूर्त्त तु मूर्छित होतु॥ ६६॥ कामके ६। पित्त के २। कफ के २। खालके २। नाम॥ दोहा॥ शुक्र तु तेजसं रेतसं रु इन्द्रिय वीर्य रु बीज॥ पित्त मायुं श्लेष्मा तु कफ असृग्धरा त्वच धीज॥ ६७॥ मांसके ६। सूखे मांसके ३। नाम। दोहा॥ मांस पलल पिशितं रु तरसं आमिष क्रव्य कुमानि॥ शुष्क मांस उत्तप्त पुनि वल्लूरं हु त्रय जानि॥ ६८॥ रुधिरके ८। हृदयके ३। नाम॥ दोहा॥ रुधिर अस्रक रक्त रु क्षतज शोणित लोहित सोय॥ लोहू अस्त्र हु हृदय तो हृदय कमल हृद होय॥ ६९॥ कलेजा के २। चरवी के ३। गले की पिछली नस को १। नाडी के २ नाम॥ दोहा॥ अग्र मांस वुक्का जुगहि। वपा वसा त्रय मेद॥ मन्या नस गल पीछली। सिरा तु धमनि द्वि भेद॥ ७०॥ तिलके २ गूदा के २। कान आदि के मलके २। आंतके २। पिलही के २। नाम॥ दोहा॥ तिलक क्लोम मस्तिष्क तो गोर्द॥ कि ट्ट म लैं दोय॥ अंत्र पुरीतत गुल्म तो प्लीहा जुग जुग जोय॥ ७१॥ नस के। कलेजा विशेष के २। लारके ३। कीचर के। नाम। दोहा स्नायु वस्नसा यकृत तो कालखंड जुग भाषि॥ लाला स्यंदिनी कास्यंदिनी दूषिका तु मल अंषि॥ ७२॥ विष्टा के ८। कपारके ३। नाम॥ दोहा॥ गूथ तु विष्टा प्राकृत विट वर्चस्क रु च्चार॥ ग्रामल्य अवस्कर कर्पूर तु जानि कपाल कपार॥ ७३॥ हाडके ३। पींजरा को १। रीडको १ खोपरी को १। नाम॥

दोहा॥अस्थि कुल्य कीकस अथो तनु की कस कंकाल॥कीकस पीठि कशेरुका शीश करोटि रसाल॥७४॥पसुरी को १ अंग के ३ । देहके ११ । पैरके आगे के २ । पांवके ५ । नाम । दोहा पांसू हाड तु पर्शुका अवयव अंग प्रतीक॥अपघन हू वपु गात्र तनु काय कलेवर नीक॥७५॥वर्ष्म मूर्त्ति विग्रहे तनू अरु संहनन शरीर॥प्रपद तु पादाग्र हि चरण अंघ्रि पाद पद धीर॥७६॥ घुटने के २ । रोडी को १ । जांघ के २ । जानुके ३ । निर्ईहवा जानुके ऊपरभाग के २ । टिहुनी को १ । गुदा के ३ । नाम॥दोहा॥घुटिके गुल्फ पद गांठि अथ पार्ष्णि तिनाहि तर जानि॥जंघा प्रसृता जानु तो ऊरुपर्व प हिचानि॥७७॥अष्ठीवान हि ऊरु सं तु सक्थि हि वंक्षण सो तु ता की संधि॥अपान तो गुद रु पायु त्रय होतु॥७८॥मूत्रस्थान को १ । कमर के ६ । नितंब को १ । नाम । दोहा॥वस्ति नाभि तर कटि तु कट श्रोणि फलक श्रोणी रु॥ककुद्मती हु नितंब तो तिय कटि पीछु शरीर॥७९॥स्त्री की कटि के अग्र भाग को १ । नितंब का खडा को १ । कूलाके २ । भग लिंग को १ । नाम॥दोहा॥आगल जघन कु कुंदर तु गा डज वास अधस्थ॥कटि प्रोथ तो स्फिच अथो लिंग योनि तु उपस्थ॥८०॥योनिके २ । लिंगके ५ । अंडके ३ । नाम । दोहा॥भग तु योनि अथ मेहन रु शेफ स शिश्न बखानि॥मेढ्र लिंग मुष्क तु वृषण अंडकोश त्रय मानि॥८१॥पीठवंश

के नीचे की तीन हड्डी को १। पेट के ५। कुच के २। ताकी ढीटनी के २ नाम॥ दोहा॥ पृष्ठवंश अघ त्रिक" इक हि कुक्षि तु जठर पिचंड॥ उदर तुंद" अथ कुच स्तन कुचाग्र चूचुक" मुंड"॥८२॥ वाघ्र वो गोद के २। छाती के ३। पीठ के २। कंधा के ३। नाम॥ दोहा॥ क्रोड भुजांतर" वक्षस तु उरस्स्रु वत्स" हि देषि॥ पृष्ठ तु पीठ" हि भुज शिर तु स्कंध रु अंस परेषि॥८३॥ हंसुली को १। काँख के २। बगल को १। शरीर मध्य के ३। नाम॥ दोहा॥ ताकी संधि तु जत्रु" ही बाहुमूल जुग कक्ष"॥ पार्श्व" तासु तर मध्यम तु मध्य अवलग्न" दक्ष॥८४॥ बाँह के ३। कुहनी के २। ताके ऊपर को १। कुहनी नीचे को १। नाम॥ दोहा॥ दोष तु बाहु प्रवेष्ठ त्रय कफोणि" कूर्पर" जानि॥ तिहिं ऊपर तु प्रगंड" तिहिं तरे प्रकोष्ठ" वखानि॥८५॥ गट्टा को १। मणिबंध घसैं कि गुनी लोमस लवाहि प्रदेश को १। नाम॥ दोहा॥ संधि जु पाणि प्रकोष्ठ की सो मणिबंध" वखानि॥ ताते लय कनिष्ठ लौं वाह्य करभ" पिछानि॥८६॥ हाथ के ३। प्रदेशिनी के २। अंगुली मात्र के २। नाम। दोहा॥ पंच शाख शय पाणि त्रय अग्र प्रदेशिनी सो तु॥ तर्जनी हु अथ अंगुली सो कर शाखा हेतु॥८७॥ पांचों अंगुलीन के नाम॥ दोहा॥ अथ अंगुष्ठ प्रदेशिनी" बहुरि मध्यमा" जानि॥ पुनि अनामिका" कनिष्ठा" क्रमतै पांच पिछानि॥८८॥ नुह के ४। प्रादेश १। नाम। दो॰

करसह नखर पुनर्भव रु नख संजुत गनि चारि ॥ प्रादेशं तु अं
गुष्ठ अरु तर्जनि अन्तर धारि ॥ ८९ ॥ तालको १ । गोकर्ण
को १ । वितस्ति को १ नाम ॥ दोहा ॥ तथा ताल गोकर्ण
जुग मध्य अनामा नाप ॥ छिगुनी नाप वितस्ति सो द्वादश
अंगुल थाप ॥ ९० ॥ पंजाके ३ । मिले जुग पंजान को १
नाम ॥ दोहा ॥ पाणि रु विस्तृत अंगुली प्रतल प्रहस्त चपेट
॥ सिंहतल तु जहं प्रतल जुग दक्षिण वाम विभेट ॥ ९१ ॥ प
से को १ । अंजुली को १ । चौबीस अंगुल नाप हाथके
१ नाम ॥ दोहा ॥ प्रसृत तु कुब्ज पानि अर्ध अंजलि दोय
मिलान ॥ विस्तृत कर रु प्रकोष्ठ सब हस्त हि कहत सुजा
न ॥ ९२ ॥ मूठीको २ । रत्निको १ । अरत्नि को १ । नाम ॥
दोहा ॥ मुष्टि तु मूठी ही अधोस प्रकोष्ठ मूठीसु ॥ रत्नि हि
राक अरत्नि तो छिगुनी खुले सुदीसु ॥ ९३ ॥ व्याम को १
पौरुष को १ । नाम ॥ दोहा ॥ विस्तृत कर भुज दुहुनको
तिरछो अन्तर व्याम ॥ ऊंचो विस्तृत पाणि भुजन रमित पौ
रुष नाम ॥ ९४ ॥ गलाके २ । नाडिके ३ । तीनरेखा कीना
डिको १ । नाम ॥ दोहा ॥ कंठ तु गल ग्रीवा सु तो शिरोधि
कंधर मानि ॥ कंबुग्रीवा एकसा त्रय रेखा जुत जानि ॥
९५ ॥ घेंटूके ३ । मुहके ७ । नाकके ५ होठके ४ । नाम
दोहा ॥ घाटा अवटु कृकाटिका वदन वक्त्र मुख आस्य ॥ ल
पन तुंड आनन अघोघोणा घ्राण प्रकोस्य ॥ ९६ ॥ गंधवह

अरु नासिका नासा पंच निहारि। ओष्ठ अधर रदनच्छद रुद प्रान वाससं हु चारि॥ ९७॥ चिवुक को १। गाल के २। कानपटी को १। दांत के ४। तालवा के २। नाम॥ दोहा॥ तिहिं तर चिवुक कपोल तौ गंड हनुतु परतास॥ रदनतु दशनं रु दंत रद तालु तु काकुद भास॥ ९८॥ जीभ के ३। ओंठ का किनारा को १। लिलार के ३। नाम। दोहा॥ रसना जिह्वा रसज्ञा अथो। ओष्ठ के अंत॥ सृक्किणी हि इक गोधि तौ आलिक ललाट भनंत॥ ९९॥ भौंह को १। भौंह बीच को १। आंखि का तिल के २। नाम॥ दोहा॥ भ्रू तु दृगन के ऊपरहि। कूर्च तु भ्रू नमंभार॥ अथ कनीनिका तारका जुग दृग तिल निर्धार॥ १००॥ आंखि के ९। नाम॥ दोहा॥ नयनं तु लोचनं चक्षुषं रु ईक्ष णा अक्षि वखानि॥ दृग अरु अंवकं नेत्र पुनि दृष्टि नवम पहिचानि॥ १०१॥ आंसू के ५। आंखि के किनारे को १। किनारे सें देखने को १॥ नाम॥ दोहा॥ अस्रु अश्रु नेत्रांवु पुनि रोदनं अस्त्रं हि दक्ष॥ अपांगस्तु नेत्रांत हौ तिहिं कर दर्श। कटाक्ष॥ १०२॥ कान के ६। शिर के ५। नाम॥ दोहा॥ कर्ण शब्दग्रहं श्रोत्रं श्रुति श्रवण रु श्रव षट जानि॥ उत्तमांग तौ शीर्ष शिर मूर्द्ध मस्तकं मानि॥ १०३॥ वार के ६। वालों के समूह के २। टेढे वालों के २। नाम॥ दोहा॥ चिकुर तु कुंतल वाल कच केश शिरोरुह जोय॥ [illegible] कैशप हि अलकं तौ चूर्णकुंतल रु होय॥ १०४॥ लिलार पर झुके वालों को १। कुमार कुंड

के२।पाटीके२।मोतीकीमालाआदिसैंबंधेकेशसमूह
को१।नाम॥दोहा॥भ्रमरकौरक।शिखंडकंतु।काकपक्षौंजु
गमिल्ल॥केशवेशंकवरीकचतुअतिसाजे।धम्मिल्लौ॥१०५॥
चोटीके३।जटाके२।सर्पाकाररचितकेशवेशके२ना
म॥दोहा॥अथो।केशपाशी।शिखाचूडौतीनवखानि॥जटा
सटाजुगव्रतिनकी।वेणीप्रवेणीजानि॥१०६॥साकवालोके
२।कचपर्यायसैंपरेपाश।आदितीनकेशसमूहवाची
ताके३।नाम॥दोहा॥शीर्षण्यस्तुशिरस्यजुगनिर्मलवार
प्रसंग॥पाशंपक्षंअरुहस्तंयेकलापार्थकचसंग॥१०७॥
रोमके३।मूंछडाढीको१।अलंकारकीशोभाके५।नाम
॥दोहा॥रोमतनूरुहलोमत्रयसुखकच।श्मश्रुहिकथ्य॥
वेशंप्रसाधनंप्रतिकर्मआकल्पंरुनेपथ्यौं॥१०८॥अलंकार
कर्ताके२।अलंकारयुतके५।नाम॥दोहा॥अलंकरि-
ष्णुतुजुगअलंकर्त्तामंडितंसोतु॥परिष्कृतरुभूषितंअलंकृत
रु।प्रसाधितंहोतु॥१०९॥अलंकारादिसैंअतिशोभितके
२।शृंगारके२।गहनेके५।मुकुटके२।चोटीकीमणि
के२।हारकेवीचकीवडीमणिको१।नाम॥दोहा॥
भ्राजिष्णुतुरोचिष्णुपुनिशृंगारुभूषांतु॥अलंक्रियाअभरण
तोपरिष्कारविख्यातु॥११०॥विभूषणरुमंडनंअलंकारहि
मुकुटंकिरीट॥शिरोरत्नंचूडामणि॥हितरलंबुध्दक।गुनकीट
॥१११॥चोटीकीसोनेकीपाटीके३।

नाम॥दोहा॥ वालपाश्या कनककीपटी पारितथ्यां हि॥भूषन अलिक ललाटिका द्वितिय पत्रपाश्यां हि॥११२॥ताटंक के २ कुंडल के २ कंठी वा कंठा के २ नाम॥दोहा॥तालपत्र तौ कर्णिका कर्ण वेष्टन तु आन॥कुंडल जुगये वेय तौ सुकंठ भूषा नान॥११३॥नाभि पर्यन्त लंबी कंठी के २ सोने की को १ मोतीनसें गुथी को १ नाम॥दोहा॥लम्बन द्विति य ललंतिका प्रालंबिका तु हेस॥उरसूत्रिका मुक्त की गूंथी मा लस नेम॥११४॥हारके २ हारभेदों के लड के के ४ नाम ॥दोहा॥हार जुगल मुक्तावली देवच्छंद तु जोय॥सौलर को अथ यष्टि तौ लतो रु सर लड होय॥११५॥हारभेद लड़ भेद करि गुत्स यष्टि बत्तीस॥चतुर्विंशग गुच्छार्द्ध है गोस्तन चौसर दीस॥ अर्द्धहार द्वादशलरहि माणवक तु लर बीस॥ अथ एक हि एका वली एकयष्टिका दीस॥११७॥सत्ताईस मोतीन की को १ प्रकोष्ठाभरण के ४ नाम॥दोहा॥सप्तवीस मुक्तान की सु नक्षत्रमाला हि॥कटक तु आवापक वलय पारिहार्य वं आहि ॥११८॥प्रगंड भूषण के २ अंगूठी के २ अंकित अंगूठी को १ नाम॥दोहा॥केयूर तु अंगद जुगल अंगुलीयक तु जा नि॥ऊर्मिका हि सो साक्षरा अंगुलिमुद्रा मानि॥११९॥कडा के २ स्त्रियों की कमर के भूषण के ५ पुरुषों की कमर भू षण को १ नाम॥दोहा॥कंकण कर भूषण जुगल सारसन तु रसना रु॥पांच मेखला सप्तकी कांचि हु शृंखल चारु॥१२०॥

एकलरकी को १। आठकी को १। सोलहकी को १ पच्चीसकी
को १ नाम। दोहा॥ एकयष्टि कांची कहत आठमेखला जानि।
रशाना षोडश यष्टिकी पचिस कलाप वखानि॥१२१॥ विछिया।
वा। पायजेवके ६। घुंघरूके २। वस्त्रनके कारण के ४।
अलसी आदि सें वने वस्त्र को १ कपास सें वने को १ रेस
मसें वने के २। पशुरोम सें वने के २। नाम॥ दोहा॥ तुलाक
टि पादांगद रु नूपुर अरु मंजीर॥ पादकटक हंसक अथो सुद्रं
टिका धीर॥१२२॥ किंकिणी क्षुल्लक फल क्षौम हैं कारण
वास॥ वाल्कं तु इक क्षौमादिको॥ फाल सु तो कार्पास॥ वादरत्र
यकौशेय तो कामिकोशोत्थ विभाति॥ रांकव तो मृगरोमजे हि
चारि वसन की जाति॥१२३॥ माडह्ता। वा। कोराके ४ धो
ये वस्त्रके जोडाको १ नाम। दोहा॥ नवांवर स्तु अनहत
रु तंत्रक रु निष्प्रवाणि॥ उद्गमनीय तु एक है धौत वस्त्र जुग
जाणि॥१२४॥ धोये रेसमी को १। दुसाला आदि के २। रे
समी कपडे के २। नाम॥ दोहा॥ जु है धुप्यो कोप्राय सो ह
क पत्रोर्ण वखानि॥ महाधने तु वहुमूल्य ही क्षौम दुकूल द्वि
मानि॥१२५॥ कपडाके किनारे के २। दशा वा कारण के २।
दैर्घ्य। वा। वस्त्रकी लम्वाई के २। वस्त्रकी चोडाई। वा।
पेना के २। नाम॥ दोहा॥ आहत सु तो निवीत ही दशा तु वर्ति
॥ दैर्घ्य मायाम तु आरोह जुग विशालता परिणाह ॥१२६॥
पुराने कपडे के २। चीथडा के २। वस्त्रमात्र के ६। नाम॥

दोहा ॥ जीर्णवस्त्रेतु पटच्चरौ है नक्तक कर्पट मास ॥ आच्छा
दनं अंशुक वसन चेलं सुचलेलक वास ॥ १२७ ॥ मोटे वस्त्र
के २ ओहार । वा । बेठन के २ कंबल के २ नाम ॥ दोहा ॥
स्थूलशाटकतु वराशि है प्रच्छदपट तु निचोल ॥ रल्लक से
तो कंबलौ है सब जुग जुग बुधबोल ॥ १२८ ॥ धोती आदि के ४
उत्तरीय । वा । अंगोछा । वा । दुपट्टा आदि के ४ नाम ॥
दोहा ॥ उपसंव्यान अधोंशुकं रु अंतरीय परिधान ॥ उत्तरासं
ग वृहतिको प्रवार रु संव्यान ॥ १२९ ॥ अंगिया । वा । चोली के २
रजाई । वा । ओढना को १ उटंगलहंगा को १ लंबा लहंगा
को १ नाम । दोहा ॥ चोलं तु कूर्पासकं जुगल शीत हरण नी
शार ॥ चंडातक इकतिय वसन । अप्रपदीन है चार ॥ १३० ॥
चंदवा के २ तंबू डेरा को १ कनात के ३ नाम ॥ दोहा ॥
वितानस्तु उल्लोच अथ दूष्य वसन ग्रह जानि ॥ प्रतिसीरा तो
जवनिको रु तिरस्करणी मानि ॥ १३१ ॥ रोली आदि सें अंगसं
स्कार के २ पोंछने के ३ उबटना के २ न्हाने के ३ चं
दनादि लेपन के ३ । गई गंध कों फिर करने के २ । ना
म । दोहा ॥ अंग संस्कार तु परिकर्म म्रजा मार्जना मार्ष्टि ॥
उद्वर्तन उत्सादनं है स्नानं तु आप्लव दृष्टि ॥ १३२ ॥ आप्लाव
रु चार्चिक्य तो स्थासकं चर्चा तीन ॥ प्रबोधनं तु अनुबोधनं
है गंधधरन पुनि वीन ॥ १३३ ॥ गाल आदि में कस्तूरी
आदि सें चिन्ह बनाने के २ तिलक के ४ नाम । दोहा ॥

के ८। ब्रह्मचारी को १। नाम ॥ दोहा ॥ कुलसंभव तो बीज्य हीं, सज्जन साधु कुलीन ॥ सभ्य महाकुल आर्य अथ सु ब्रह्मचारी लीन ॥ ३ ॥ गृही आदि के ३। आश्रम को १। ब्राह्मण के ५। नाम दोहा ॥ गृही वानप्रस्थ रु, चवथ, भिक्षु हु आश्रम मानि ॥ वाडव भूसुर विप्र द्विज रु, अग्रजन्मा जानि ॥ ४ ॥ षट कर्मा को १। षट कर्म के भिन्न भिन्न नाम। दोहा ॥ षट्कर्मा इक कर्म तो, याग अध्ययन दान ॥ याजन अध्यापन अपर प्रतिग्रह हु षट नाम ॥ ५ ॥ धीमान् के २१। नाम ॥ दोहा ॥ सन्त कोविद दोषज्ञ बुध पंडित कवि विद्वान ॥ सुधी विपश्चित् धीरज्ञ सु, प्रज्ञ रु संख्यावान ॥ ६ ॥ कृष्टि दूरदर्शी कृती सूरि दीर्घदर्शी सु ॥ लब्धवर्ण रु, विचक्षण सु मनीषी हु इक्कीसु ॥ ७ ॥ पढाने वाले के २। वेदपाठी के २। पितादि को १। आचार्य को १। नाम ॥ दोहा ॥ उपाध्याय अध्यापक हि श्रोत्रिय छांदस जानि ॥ निषेकादिकृत, गुरु हि अथ इक, आचार्य बखानि ॥ ८ ॥ यज्ञाध्य के ३। दीक्षित को १। नाम ॥ दोहा ॥ यजमान तु यष्टा व्रती अध्वर मे शिखदानि ॥ सोमवान मख मे यही, दीक्षित नाम बखानि ॥ ९ ॥ वारम्वार यज्ञ करन वाले के २ यज्वा को १। नाम ॥ दोहा ॥ इज्याशील तु दूसरो, या यजूक हीं जोय ॥ यज्वा सो तो विधि सहित मखकारक नर होय ॥ १० ॥ बृहस्पति यज्ञकर्त्ता को १। सोमरस पीने वाला यजमान के २ सर्वस्व दक्षिणा से विश्वजित यज्ञ कर्त्ता को १ नाम। दो॰

स्थपति तु गीष्पति मखकर॥ हि॥ जु सोमपीती सोय॥ सोमपैज
स्थपति तु गीष्पति मखकर॥ हि॥ जु सोमपीती सोय॥ सोमप जग जित मखकृत जु सु सर्ववेदा होय॥ ११॥ अनूचानको १। सा
गजित मखकृत जुसु सर्ववेदा होय॥ ११॥ अनूचानको १। स
मावृतको १। नाम दोहा॥ अनूचानै इक सांग जिहि प्रवचन
सव पदि लीन॥ समावृत्त गृह गमन हित जिहिं गुरु आज्ञा दीन॥ १२॥ अभिषवस्नान कर्त्ताको १। विद्यार्थी के ३। ना
न॥ १२॥ अभिषवस्नान कर्त्ताको १। विद्यार्थी के ३। ना
विद्यार्थी के २। सपाठीको १। नाम॥ दोहा॥ सुत्वा इक ही शि
ष्य तो अंतेवासी छात्र॥ प्राथमकल्पिक शैक्ष अथ सब्रह्मचारी
मित्र॥ १३॥ एक गुरु के पास के पढने वालान को १। अ
ग्नि के वटोरने वाला को १। परंपरा उपदेश के ३। नाम
॥ दोहा॥ एक गुरु स्तु सतीर्थ्य अथ एक अग्निचित आहि॥
परंपरा उपदेश तो ऐतिह्य इति हा हि॥ १४॥ प्रथम ज्ञानको
१। जानकर आरंभ करने को १। यज्ञ वा मखन के ६
नाम॥ दोहा॥ पहिलो ज्ञान सु उपज्ञा ज्ञात्वारंभ समाग॥ उप
क्रमै सु अध्वर तु सव सत्र वितु क्रतु याग॥ १५॥ महायज्ञको
१। नाम॥ दोहा॥ पाठ होम पूजा अतिथि तर्पण बलि पंच
कादि॥ महायज्ञ ये नाम हू पांच ब्रह्म यज्ञादि॥ १६॥ सभा
के ८। नाम॥ दोहा। भाभा समज्या समिति सद आस्थानी
आस्थान॥ गोष्ठी संपद परिषद हु नव ही नाम निदान॥ १७॥
यज्ञमंड[illegible]शाषको १। यज्ञ दशाकको १। सभामें बैठने
वालान के ४। नाम। दोहा॥ प्राग्वंशस्तु सदस्य गृह हविधि
[illegible]तु सदस्य॥ सभास्तार सामाजिक रु सभ्य समासद पण्य॥

॥१८॥ तीनौं वेद के ज्ञाता के क्रमसें येकेक। ।नाम॥ दोहा॥ उद्गाता अध्वर्यु अरु होता तीन वखानि ॥ सामयजुष ऋक वेद वित ऋत्विज क्रमतें जानि ॥ १९ ॥ ऋत्विक के २ नाम ॥ दोहा॥ धनदेरोपे वरणोहित ऋत्विज याजक जानि॥ आग्नीध्रादिक षोडशहि भिन्न भिन्न पहिचानि॥ २०॥ यज्ञवेदी को १ यज्ञ का चौंतरा के २ यज्ञ का खंभा विशेषके २ यज्ञरक्षार्थ टट्टी को १ नाम॥ दोहा॥ वेदी संस्कृतभूमि अथ स्थंडिल चत्वर दोय॥ यूपकटक तुचषाल अथ कुंबा आडरा होय ॥ २१॥ यज्ञस्तंभ के आगे के २ अग्नि निकालने की दो लकडी के २ यज्ञाग्नि तीन के ३ नाम॥ दोहा॥ तर्म सुतो यूपाग्र अथ अरणि तु मंथनदारु ॥ गार्हपत्य दक्षिणाग्नि रु आहवनीय हु चारु॥ २२॥ तीनौं अग्नि को १ यज्ञाग्नि विशेष को १ यज्ञाग्नि के स्थल के ३ नाम दोहा॥ त्रेता तीनौ अग्नि अथ संस्कृत अग्नि प्रणीत ॥ उपचाय्य तु परिचाय्य अरु समूह्य तीन हि मीत॥ २३॥ अग्नि विशेष को १ अग्नि की प्रिया के ३ नाम॥ दोहा॥ गार्हपत्य सें दक्षिणा अग्नि थाप आनाय्य ॥ स्वाहा तो हुतभुक प्रिया आग्नायी उ हराय॥ २४॥ अग्नि जलाने की ऋचा वा मंत्र के २ छंद को यज्ञ की खीर के २ नाम॥ दोहा॥ द्वि सामिधेनी रु धाय्या ऋचा वह्न अग्नि जरानि ॥ गायत्र्यादिक छंद अथ हव्य पाक चरु मानि॥ २५॥ दधि और दुग्ध मिल्या को १ यज्ञ

देहिक हि वीन॥ ३३॥ पितृदानके २। श्राद्धको १। मासिक वा। अमावस्याके श्राद्धको १। श्राद्धकालविशेषको १। नाम॥ दोहा॥ पितृदान स्तु निवाप हीशास्त्रकर्म जुत श्राद्ध॥ अन्वाहार्य तु मासिक हि कुतप तु कालजु श्राद्ध॥ ३४॥ श्राद्धमे ब्राह्मणभक्ति के २। धर्मादिके खोजने के २। विनयके २। नाम। दोहा॥ परीष्टि तो पर्येषणा अन्वेषणा रु सोय॥ गवेषणा ही सनि सुतो अध्येषणा हि होय॥ ३५॥ मागनेके ४। पूजार्थजलको १। पांवधोने के अर्थ जलको १। नाम। दोहा॥ वारि हि याञ्चा अर्थना याचना रु अभिशस्ति॥ अर्घ्य सुतो अर्घार्थजल पाद्यं पदार्थ हि अस्ति॥ ३६॥ अतिथिके निमित्तकर्मको १। अतिथिके अर्थ साधु होनेको १। महमान। वा। पाहुना के ४। नाम॥ दोहा॥ ।तिथ्य तु हित अतिथिके आतिथेय तहं साधु॥ आवेशिक आगंतु अरु अतिथि ग्रहागत साधु॥ ३७॥ अभ्यागतके २। ताजीमके २। पूजाके ६। उपासनाके ५ नाम। दोहा॥ प्राघूर्णिक प्राघुणक अथ गौरव अभ्युत्थान॥ अर्चा अपचिति सपर्या अरु अर्हणा सुजान॥ ३८॥ नमस्या रु पूजा हि वरिवस्या शुश्रूषा रु॥ परिचर्या रु उपासना पंच उपासना चारु॥ ३९॥ जानेके ५। ध्यानी। वा। मौनी को १ नाम॥ दोहा॥ अटा तु अट्या पर्यटन वज्या डालव होय॥ चर्या इकध्यानादिके सीखन कौ ध्याति सोय॥ ४०॥ आच

मनके २। चुपरहनेको १। अनुक्रमके ४। नाम ॥ दोहा
उपस्पर्श तो आचमन मौन अभाषण गाय॥ जु आनुपूर्वी अ
हतसु परिपाटी पर्याय॥ ४१॥ अतिक्रमा वा। पर्ययके २। उ
पवासादि पुण्यके २। चान्द्रायणादि उपवासके २।
प्रकृतिपुरुषके भेदजानने वा अन्यविचारके भी २
नाम। दोहा॥ उपात्ययं तु अतिपात जु गनियम तु व्रत ढंग
नेक॥ औपवस्त उपवास जु गपृथगात्मता विवेक॥ ४२॥ सदा
चार और वेदाभ्यास फलके २। वेदपाठके आदिमें शां
तिपाठकी अंजलिको १ नाम। दोहा॥ स्वाध्यायन दृढ़
तु द्वितिय ब्रह्मवर्चस हि जानि॥ पाठविषे अंजलि सु तो ब्रह्मां
जलि हि बखानि॥ ४३॥ अंजलिसें। वा।
मुखसें निकले जलकी बूंदको १। ध्यान और योग
आसनको १ नाम॥ दोहा॥ पाठ करत जल बिंदु सो। ब्र
ह्मबिंदु इक होय॥ अथो ध्यानयोगासन तु ब्रह्मासन जिय जोय॥
४४॥ विधिके ३। मुख्य विधिको १। गौण विधिको १
संस्कार पूर्वक वेद पढने को नाम। दोहा॥ कल्प तु वि
धि क्रम मुख्य तो प्रथम कल्प ही जानि॥ अनुकल्प तु तातें अ
धम उपाकर्ण इक मानि॥ ४५॥ प्रणामके २। सन्यासीके
५। नाम॥ दोहा॥ अभिवादन पादग्रहण परिव्राट तो जोय
॥ कर्मंदी पाराशरी भिक्षु मस्करी होय॥ ४६॥ तपस्वीके ३।
मुनिके २। तपस्याके क्लेशसहने वालेको १। नाम

पारिकांक्षी तपस्वी तापस अथ मुनि देषि॥ वाचंयम हू दांत तौ तप क्लेश सहलेषि॥४७॥ ब्रह्मचारी के २। ऋषि के २। वेदव्रत कौं पूरा कर गुरु की आज्ञा के पाने वाले। को २ जितेन्द्रिय के २। नाम॥ दोहा॥ जु ब्रह्मचारी सुवर्णी ऋषि तु सत्यवचं धारि॥ ॥४८॥ व्रत व पासैं भूमि पर सोने वाले के २। पवित्र के ३। पाखंडी के २। पलाश दंड को १। बांस दंड को १। ऋषि पात्र के २। ऋषि आसन को १। नाम॥ दोहा॥ स्थंडिलशायी स्थांडिल हि प्रयत तु पूत पवित्र॥ सर्वलिंगी पाखंड हि दंड पलाश तु मित्र॥४९॥ आषाढ हि अथ वेणु को दंड सुरंभ हि भास॥ कुंडी सु तो कमंडलु हि वृषी तु आसन तास॥५०॥ मृग चर्म को १। भिक्षा के समूह को १। वेदाभ्यास के २। यज्ञौषधी के कूटने के ३। नाम॥ दोहा॥ अजिन चर्म कृति भैक्ष तो भिक्षागन ही जानि॥ स्वाध्याय तु जप सवन तो सुत्या अभिषव मानि॥५१॥ अघमर्षण को १। अमावस और पूर्णिमा के यज्ञ को १। नाम। दोहा॥ सर्वपाप हर जाप कौं अघमर्षण पहिचानि॥ पौर्णमास मख पूर्णिमा॥ दर्श अमा को जानि॥५२॥ नित्य कर्म को १। कर्म विशेष को १। नाम॥ दोहा॥ तनु साधन हित नित्य को कर्म सु तो यम होय॥ नियम तु साधन बाह्य जो नित्य कर्म है सोय॥५३॥ बायें कांधे की जनेऊ के २। दहिने कांधे की जनेऊ को १। कंठ मे माला कार जनेऊ को १। नाम॥ दोहा॥ वामकं

धथित नामजुग। यज्ञसूत्र उपवीतँ॥ प्राचीनावीतँ तु दहिन। लंबित कंठ विनीतँ॥५४॥ देवतीर्थ १। प्रजापति तीर्थ १। नाम। दोहा॥ तीर्थजु अंगुरी छोरथित। दैवँ कहावै सोय॥ कायँ तु छिगुनि अनामिका मूल माहि ही होय॥५५॥ पितृतीर्थ के ३। ब्रह्मतीर्थ के २। नाम। दोहा॥ पैत्र्य पैत्र अरु पित्र्य त्रय अंगुठा वर्जनि माहि॥ अथ अंगुष्ठा मूल मै ब्राह्म ब्राह्म्यँ जुग आहि॥५६॥ ब्रह्म मै मिलने के ३। देव मै मिलने के ३। नाम। दोहा॥ ब्रह्मभूय ब्रह्मत्व अरु त्यतिय। ब्रह्मसायुज्यँ॥ देवभूय देवत्व पुनि जानि। देवसायुज्यँ॥५७॥ आचारविशेष को १। संन्यास विशेष को १। नष्टाग्नि के २। दंभ सैँ ध्यानादि करने को १। नाम॥ दोहा॥ कृच्छ्रँ तु सांतपनादि ही मायँ तु अलप्रानेम॥ वीरहा तु नष्टाग्नि हीँ कुहनाँ सुविधि अप्रेम॥५८॥ संस्कारहीन के २। वेदाभ्यासरहित के २। वह्रदपिथा। वाठग के २। नाम॥ दोहा॥ जु संस्कारहीन तु। ब्रिितय। ब्रात्यँ निराकृत सोतु॥ अस्वाध्यायँ हि लिंग वृति धर्मध्वजी हि हेतु॥५९॥ ब्रह्मचर्यहीन के २। सूर्यास्त और सूर्योदय मै सोने वाले को १। नाम। दोहा॥ अवकीर्णी तु क्षतव्रतँ हि अभिनिर्मुक्त तु भानु॥ अस्त होत जिहिँ सोवतैँ उदित। अभ्युदितँ भानु॥६०॥ प्रथम छोटो भाई ब्याहि होगया ता को १। कँवारा बडा भाई को १। नाम॥ दोहा॥ ज्येष्ठ कवारो होय अरु अनुज विवाहित सोय॥ परीवेत्ता परिवित्ति तो जेठ भ्रात सु होय॥६१॥

विवाहके ५। मैथुनके ६। त्रिवर्गको १। चतुर्वर्गको १ नाम ॥ दोहा ॥ पाणिपीडन तु उपयम रु उद्वाह रु उपयाम ॥ परिणय मैथुन तौ विषय ग्राम्यधर्म रत नाम ॥ ६२ ॥ निधुवन कृत औव्यवाय अथ धर्म अर्थ अरु काम ॥ सो त्रिवर्ग अथ मोक्षजुत चतुर्वर्ग इक नाम ॥ ६३ ॥ धर्मादि सबल होय ताको । बराती । वा । वरके सम्बन्धनको १ नाम ॥ दोहा ॥ सबल होय धर्मादि तौ चतुर्भद्र इक नाम ॥ दूलह के प्रिय मित्र सो जन्यद्र हावत आन ॥ ६४ ॥ इति ब्रह्मतरंगः समाप्तः

अथ क्षत्रियतरंग लिख्यते ॥ मूर्द्धाभिषिक्तवा रजपूतके ४। राजाके ॥ नाम दोहा ॥ बाहुज तौ राजन्य पुनि क्षत्रिय चवथ विराट ॥ न्रप तौ क्ष्माभ्रत पार्थिव रु भूप महीक्षित राट ॥ १ ॥ महाराजको १ महाराजाधिराजके २ नाम ॥ दोहा ॥ निकट भूप जिहिं वश रहे वहे अधीश्वर होय ॥ सार्वभौम सब भूमिपति रु चक्रवर्ती होय ॥ २ ॥ छोटा राजाको १ राजसूय यज्ञको कर्त्ता द्वादश मंडलको ईश और सब राजनको शिक्षक हो उसको १ नाम ॥ दोहा ॥ मंडलेश्वर तु आन न्रप सम्राट तु मखकार ॥ राजसूय न्रप शिक्षक रु बहु मंडल भर्त्तार ॥ ३ ॥ न्रप समूहको १ क्षत्रियन कोसमूहको १ मंत्रीके ३ । मंत्रीसे छोटे अन्य मुसाहिबोंको १ नाम ॥ दोहा ॥ न्रप गण राजक क्षत्रियगण राजन्यक है हि निदान ॥ अमात्य मंत्री धीसचिव कर्मसचिव सब आन ॥ ४ ॥

को ३। मित्र के ३। मित्रता के ४। नाम। दोहा॥ सख्य तु स्नि
ग्धं वयस्यौं प्रय सखा तु सुहृद रु मित्र। सख्य तु साप्तपदीन अरु मैत्री ती
न पवित्र॥२३॥ अनुकूल्य के २। हलकारा के ७। नाम
दोहा॥ अनुवर्त्तन अनुरोध अथ प्रणिधि स्पश चर चार॥ य
थार्हवर्ण अपसर्प पुनि गूढपुरुष निर्धार॥२४॥ विश्वासी
के २। ज्योतिषी के ८। प्राश्नी के ४। ओदी के २। नाम। दो
हा॥ आप्त सु तौ प्रत्ययित अथ सांवत्सर दैवज्ञ॥ ज्ञानी गणक
रु ज्योतिषिक कार्त्तान्तिक रु हातज्ञ॥२५॥ मौहूर्त्तिक मौहूर्त अ
रु अथो ज्ञात सिद्धान्त॥ तांत्रिक हू सत्री सु तौ ग्रहपति जुत जुग
शांत॥२६॥ लेखक के ३। अक्षर के ५। नाम। दोहा॥ लि
पिकार तु अक्षरचण रु अक्षरचंचु बखानि॥ अक्षर संस्थान
तु लिखित लिपि लिवि लिपी पिछानि॥२७॥ दूत के २। दूतपत्र
के २। पथिक के ४। नाम। दोहा॥ दूत सु तौ संदेशहर दूत्य
दूतपत्र गन्ध॥ अध्वनीन तौ अध्वग रु पांथ पथिक अध्वन्य॥
२८॥ राज्य के अंग के ८। नाम। दोहा॥ स्वामी सुहृद अमात्य
बल राष्ट्र दुर्ग अरु कोष॥ ये राज्यांग रु प्रकृति हू नाम कहात अ
दोष॥२९॥ षड्गुण॥ नाम॥ दोहा॥ पौरस्त्री आठ सो है रा
ज्यांग सुजान॥ संधि रु विग्रह आसन रु द्वैध रु आश्रय यान॥
३०॥ शक्तियों के ३। नीति शास्त्रोक्त त्रिवर्ग को १। नाम।
दोहा॥ प्रभावज रु उत्साहज रु मंत्रज शक्ति त्रिमानि॥ क्षय
स्थान अरु वृद्धि कौं नीति त्रिवर्ग बखानि॥३१॥ प्रभाव के २।

देय जो शुल्क एकही चीन ॥ २९ ॥ नजरिके ६। कन्यादानमैं
और भाईबन्धु आदिके देने की वस्तुके २ नाम ॥ दोहा ॥
प्रादेशनं तु उपायनं रुउप ग्राह्य उपहार ॥ प्राभृत जपदौ हरा
तो द्वितिय सु दायं प्रकार ॥ ३० ॥ वर्त्तमान काल को १ आने
वाला काल को १ तुरंत फलको १ आनेवाला फलको १
नाम। दोहा ॥ तत्काल स्तु तदात्वं अथ आयति उत्तर कालं।
सांदृष्टिक तो सद्यफलं उदर्कं उत्तरकालौ॥ ३१ ॥ अदृष्टभय
१ दृष्टभय १ अपने सहायक सें भयको १ नाम। दोहा
वन्हिजलादि अदृष्टभयं स्वपरचक्रज तु दृष्ट ॥ निजपक्ष
नभय न्टपन कौं सो तो अहिभय इष्ट ॥ ३२ ॥ कानून चला
नेको २ चंवरके २ राजगद्दीके २ स्वर्णनिर्मित को १
नाम। दोहा ॥ प्रक्रिया तु अधिकार अथ प्रकीर्णक चामरं
नेस ॥ भद्रासनं तु न्टपासनं हि सिंहासनं तत्त हेम ॥ ३३ ॥ छ
त्रीके २ राजा की छत्रीके २ पूर्णकलशके ३ नाम।
दोहा ॥ आतपत्र तो छत्रं जु न्टपलक्ष्म तु न्टपछत्रं ॥ भद्रकुं
भ तो पूर्णघटं पूर्णकुंभं ह्व अत्र ॥ ३४ ॥ सोने की झा
रीके २ नाम ॥ दोहा ॥ भृंगार कनकालुका कनकघ
टघर आनि ॥ कवि गुलाब औरीजगत नाहर नाम वखानि
३५ ॥ डेराके २ गस्तके २ सेनांगके ४ नाम। दोहा ॥
शिविरं निवेशं हि सज्जनं तु परक्षरा जु गसंग ॥ हस्ती हय
रथ पै दलं हये चारि तु सेनांगं ॥ ३६ ॥ हाथी के ४५। यूथप

दि पीकेको १ हांकने की लकरीके नाम॥ दोहा॥ प
जजंघादिक देशको पूर्वभागतौ, यात्रं॥ अवरं तु पिछलेभा
गतिहितोत्रं तुवेणुकै मान॥ ४४॥ जंजीरके ३ खूंटाको १
आंकुसके २ कमरि बांधनेकी रस्सीके ३ नाम॥ दो
हा॥ निगड तु अंदुक पदं स्खलहि वंध थंभ, आलन॥ अंकु
शौ पुणी अथवरत्रो चूषा कक्ष्या नान॥ ४५॥ तय्यार करनेके
२ गद्दी॥ वा॥ भूलके ५ लडाईके अयोग्य हाथीओ
र घोडाको १ नाम॥ दोहा॥ दोयकल्पना सज्जनौ परि
स्तोमकुथ चीन॥ वरा प्रवेणी आस्तरा वीतं तु गजहय ही
न॥ ४६॥ हाथी बांधनेके स्थानके ३। घोडा मात्रके
१३। कुलीन घोडाके। नाम॥ दोहा॥ वारी तो गजबं
धनी गज शाला हू होय॥ घोटकवीति तुरंगहय अर्वा वाजी सै
य॥ ४७॥ सप्तिवाह सैंधव तुरग अश्व तुरंगम वाजि॥ अरु
गंधर्व कुलीन तौ आजाने यहि साजि॥ ४८॥ सीरवे घो
डाको १ घोडानके भेदके ४ नाम॥ दोहा॥ शिक्षि
त चाल विनीत अथवानायुज वाल्हीक॥ पारसीक कां
बोज ये देश जात दयनीक॥ ४९॥ अश्वमेध यज्ञ यो
ग्यको १ अधिकवेगवालेको १ लदुवाके २ उ
जलाको १ रथमैं चलनेवालेको १ नाम॥ दोहा॥
अश्वमेध लायक तु ययु जवन जवाधिक जोय॥ रथ्यौ
पृष्ठ्य हि ककै सिता रथ्य तु रथ हय होय॥ ५०॥ ठकुराको

आहृतकंवल पांडु सैं पांडुकंवली नाम ॥५७॥ कंवलयुतको १ वस्त्रयुतको १। रथसमूहके २। धुरीके २। नाम। दोहा॥ कंवल आहृत। कांवलौ हि वास्त्रौ तु वसन हि लीन॥ रथ्यो रथकटया गरा हि। धूः स्तु यन मुखै चीन॥ ५८॥ तांगा। वा। रथके अवयवमात्रके २। पहियाके ४। पुट्ठीके २। नाह के। नाम॥ दोहा॥ अपस्कर स्तु रथांग हीं चक्र रथांग पिछा नि॥ नेमि तु प्रधि तिहिं अन्त ही॥ नाभि पिंडिका जानि॥ ५९॥ कुलावाके २। लोहके परदाके २। जूडाके काठके २। नाम॥ दोहा॥ जु अक्षाग्र कीलक सु आरी वरूथ स्तु रथगु प्ति॥ कूवर स्तु तो युगंधर हि दो दोवे असुप्ति॥ ६०॥ रथके नीचे के काष्ठको १। जूडाको १। वाहनके ५। नाम॥ दोहा॥ अनुकर्ष तु तरकाष्ठ ही प्रसंग युग अन्य॥ यानं तु, वाहन युग्य पुनि धोरण पत्र हि मन्य॥ ६१॥ कहारादि वाहनों को १ महावतके ४। नाम॥ दोहा॥ कहारादि वैनीतक हि ह स्त्यारोह तु जोय॥ निषादी रु आधोरण सु न्चयय हस्तिपक होय॥ ६२॥ रथवानके ८। स्यंदनारोह वा। रथमै चढि के लडने वालेको १। नाम॥ दोहा॥ सन्ता यंता प्राजितां द क्षरा स्य सव्येष्ट॥ सूत नियंता सारथी हि रथी तु रथ थित इष्ट ॥६३॥ सवारके २। लडने वालेके ३। गस्त वालेके २। फौजमै मिलेके २। नाम॥ दोहा॥ सादी अश्वारोह अ भट तो योद्धा योध॥ सेना रक्षक सैनिक हि सैन्य तु सैनिक श्रे

ध॥६४॥ हजार सिपाही के मालिक के २। दंडनाय
क के २। फौज के मालिक के २ नाम॥ दोहा॥ सहस्री
तु साहस्र जुग परिचर तौ परिधिस्थ॥ सेनानी तौ वाहिनीपति
ही जुग जुगस्थ स्थ॥६५॥ बखतर के २। कमरिपही के २
दीपक के २ नाम॥ दोहा॥ वार वाण कंचुक अथो सारसनं
तु अधिकांग॥ शीर्षरायं तु शीर्षक अपर। त्वतिय। शिरस्त्र प्रसं
ग॥६६॥ कवच के ७। कंचुक आदि पहिने हुये के ४।
अन्य दिसें कवच धारण किये के ४। कवच समूह को १
नाम॥ दोहा॥ वर्म उरश्छद कंकटक जागर दंशन उक्त॥ क
वचं तनुत्रं पिनद्ध तौ अमुक्त रु प्रातिमुक्त॥६७॥ आपिनद्ध
सन्नद्ध तौ वर्मित दंशित सज्ज॥ व्यूढकंकट हि तासु गण तौ।
कावचिक हि भज्ज॥६८॥ पैदल के ७। प्यादान के समूह
को १। नाम॥ दोहा॥ पत्ति तु पदग पदातिक रु पादिक रु प
द पदाजि॥ अरु पदाति पादात तौ पत्ति संघात हि साजि॥
६९॥ शस्त्राजीवी के ३। अच्छे तीरन्दाज के ३। नाम॥
दोहा॥ कांडपृष्ठ तौ आयुधिक अयुधीय त्रयशस्त्र॥ सु प्रयोग
विशिख तु अपर कृतपुंख रु कृतहस्त॥७०॥ निशाने से ती
र चूकि जाय उसको १। निषंगी। वा। धनुर्द्धर के ४ ना
म॥ दोहा॥ स्फुक अपराद्ध पृषत्क सो चूक्यो तीर निशान॥
धनुष्मान धानुष्क पुनि अस्त्री धन्वी मान॥७१॥ कैवत लवा
शाधारी के २। बरछी वाले के २। लाठी वाले के। नाम॥

दोहा॥ कांडवान् कांडीर अथ शाक्ति हेतिक सुजोय॥ शाकीकहु याष्टीक तो याष्टि हेतिक हि होय॥७२॥ फरसा वाले को १ तलवार वाले के २। सांग वाले को १ भाला वाले को १ ढलैत के २ नाम। दोहा॥ पारश्वधिक तु परशुधर॥ नैस्त्रिंशिक आसिपारि॥ प्रासिक कौंतिक एक इक चर्मी तु फलकपारि॥७३॥ निशान वाला के २। सहायक के ४। अगुवा के ८ नाम॥ दोहा॥ पताकी तु वैजयंतिक अनुचर सो तु सहाय॥ अनुप्लव रु अभिसर अथो। एष्ठ पुरोग गनाय॥७४॥ अग्रेसर अग्रतः सर सोय। पुरस्सर जोय॥ रु पुरोगामी अग्रसर अठम पुरोगम होय॥ ७५॥ धीरे धीरे चलने वाले के २ जल्दी चलने वाले के २। हलकारा के २ नाम॥ दोहा॥ जु मंदगामी मंथर सु आतिजव तो जंघाल॥ जांघिक तो जंघाकरिक जुग जुग नाम रसाल॥७६॥ जल्दी मात्र के ६ जीतने शक्य को १ जीतने योग्य को १ नाम॥ दोहा॥ वेगी प्रतवी जवन जव त्वरित तरस्वी ज्ञेय॥ जीति शक्य तो जय्य ही जीति जोग्य तो जेय॥७७॥ जीतने वाले के २। शत्रु के सन्मुख लडने को जाने वाले के ३। नाम॥ दोहा॥ जैत्र तु जेता ही अथो। तीन। अभ्यमित्रीण॥ और। अभ्यमित्रीय पुनि। अभ्यमित्र्य पर वीरा॥७८॥ पहलवान के २। बडी छाती वाले के २। रथ वाले के ४। यथेष्ट गमन शील के २ अति गमन शील को १। जयन शील के ३। बहादुर

के ४। दिप्पति के ३। हथियार के ४। धनुष के ७। नाम। दोह
श्रीतौ लक्ष्मी संपदं रु सम्पत्ति इ. गाने चारि॥ आपदं विपदं वि
पत्तिं अथ आयुध प्रहरणं धारि॥ ८७॥ अस्त्रं शस्त्रं हू धनुषं तौ
धन्वं शरासनं चाप॥ कोदंड रु इष्वास पुनि कार्मुकं सप्तम था
प॥ ८८॥ राजा कर्ण धनुष को १। अर्जुन के धनुष के २।
धनुष के किनारे के २। नाम॥ दोहा॥ काल पृष्ठ धनु कर्ण
को, अर्जुन को गांडीव॥ गांडिवं हू अटनी सुतौ, कोटि अंतध
नुसींव॥ ८९॥ दास्तान। बिशेष के २। धन्वा के मध्य को
१। धनुष के चिल्ला कौं नाम॥ दोहा॥ गोधां तलं ज्याघात
को वारण॥ लस्तकं सोतु, ध धनुर्मध्य॥ मौर्वी तु ज्या शिंजिनी रु
गुण हेतु॥ ९०॥ धनुर्द्धर के आसन भेद के ५। नाम॥ दो
हा॥ समपदं अरु वैशाखं पुनि मंडलं प्रत्यालीढं॥ धनुधारिन
के पगन के थान सहित, आलीढं॥ ९१॥ निशाना के ३। बाण
सीखने के २। तीर के १३। लोहिया तीर के २। नाम॥ दोहा
लक्ष्य शरव्यं रु लक्षं त्रय शर अभ्यासं तु, ओप॥ उपासनं हु
बाणं तु विशिखं मार्गणं पत्री रोप॥ ९२॥ खग कलंबं इषु ए
षत्कं रु, शरं रु, शिली मुखं बाण॥ अशुग और, अजिह्मगौं
है प्रक्ष्वेडन नाराच॥ ९३॥ फौंक के २। चलाये तीर को १।
जहरी बाण के ३। तरकस के ६। तरवारि के ९। कब्जा
को १। नाम दोहा॥ पक्ष बाजं जु ग. चालित शर तौ निरस्तं
रु क धीर॥ लिप्तक दिग्धं विषाक्तं ही उपासंग तूणीर॥ ९४॥

तूणी इषुधि निषंग षदतूणाँहु असि तु कृपाण ॥ मण्डलाग्र के
सियके रु नंदकिरु खड्ग सुजान ॥ ९५ ॥ चन्द्रहास करपाल अरु करवा
लंहु नव जानि ॥ खड्गादिक की मूंठि तो । त्सरु एक ही मानि ॥
९६ ॥ परतला को १ ढाल के ३ । हथकडा को १ । मु
दगर के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ तिहिं बंधन तो । मेखलाँ फल
रु चर्म फलाँ तीन ॥ तिहिं मुठि । संग्राह हि । घन तु सुद्गरंहु
घणाँ प्रवीन ॥ ९७ ॥ खांडा के २ । गोफण के २ । लोहथी
के २ । फरसा । वा । कुल्हारी के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ इलीं
तो । करवालिकाँ भिंदिपाल स्रग चीन ॥ परिघ तु । परिघात
नैं परशु स्वधिति परस्वधँ तीन ॥ ९८ ॥ छुरी के ४ । फल के
२ । गुर्ज के २ । सांग को १ भाला को १ खड्गादि की नौं
क के ४ । फौज की तयारी । वा । जमाव के ३ । नाम ॥ दो
हा ॥ असिपुत्री असिधेनुका शस्त्री छुरिका भास ॥ शल्य तु
शंकु हि । तोमर तु सर्वला हि । अथ । प्रास ॥ ९९ ॥ कुंत हु कोण
तु पालि अरु अश्रि कोटि मति आर्य ॥ जु सर्वाभिसार तु सर्वस
न्नहन रु सर्वौघ ॥ १०० ॥ शस्त्र पूजन के । शत्रु पर
के । नाम ॥ दोहा ॥ जु लोहाभिसार सु विधा पूजन शस्त्र ॥
हि जोय ॥ अरिपै सेना गमन सतु अभिषेण नं इक होय ॥
१०१ ॥ यात्रा के ४ । फौज के फैलाव के २ । चली फौज के
२ । नाम ॥ दोहा ॥ प्रस्थान तु । यात्रा गमन
सारा ॥ आसार तु प्रसरण जु नाहि । १ ले

निडर होकर शत्रुन के सन्मुख जाने को १ स्तुतिकर
के प्रातःकाल राजा के जगाने वालों के २ घरियारी
के २ नाम॥ दोहा॥ अभयगमन रण शत्रुपै नाम जाति
क्रम सोय॥ वैतालिकं तो वोधकर घाण्टिकं घांटिकैँ होय
॥१०३॥ रावोवा। भाटके २ जागा दडवा के २ लडा
ई सैं जोन हीभागै ताको १ नाम॥ दोहा॥ वंदी तो स्तु
तिपाठकैं हि मगधं तु मागधैं होय॥ संशप्तकं तो शपथक
रि जुध अनिअर्वर्त्ती होय॥१०४॥ धूलि के ४ चून के २
अकुलाने के २ वैजयंती। वा। भंडा के ३ नाम॥ दो
हा॥ रेणु तु धूलिं रु पांशु रज चूर्णं तु क्षोदं हि आहि॥ संभ्रमें
जपिंजलं ध्वजं तु केतन रु पताका हि॥१०५॥ भयानक
रणभूमि को १ हम पहिलैं लडैंगे उस लडाई को १
नाम॥ दोहा॥ बीरा शंसन युद्ध की भूमि जु अति भय दा
नि॥ हम पहिलैं हम पहिलथौं अहंपूर्वि का जानि॥१०६
हम ही पुरुष हैं ऐसैं कहैं उसको १ हम ही लडैंगे ऐ
सैं कहै उस लडाई को १ नाम॥ दोहा॥ इक है आहो
पुरुषिका संभावन जो दर्प॥ अहंकार जो परस्पर अहम
हमिका सु यर्प॥१०७॥ पराक्रम के १० अति पराक्रम
के २ नाम॥ दोहा॥ शक्ति द्रवीण सह तरस वल शौर्य परा
क्रमं स्थाम॥ शुष्म प्राणं विक्रम सु तो अति शक्ति तौ हि नाम
॥१०८॥ रण के परिश्रम निवारणार्थ न खाने पीने को

लडाई के ३१ बाहुयुद्धके २ नाम॥ दोहा॥ बीरपाणं मदपान रण भूत भविष्याति माहि॥ युद्ध जन्य मृधं प्रधनं रणं आयोधन कालि आहि॥ १०९॥ प्रविदारण आस्कंदनं रु विग्रह कलह अनीक॥ सांपरायिक रु समरं युध आजि रु समितिं समीकं॥ ११०॥ समाघातं संस्फोटं पुनि संप्रहारं संग्राम॥ अभ्यागम अभ्यामर्द संख्युं आहव नाम॥ १११॥ संख्ये समितं समुदाय अरु संयति अभिसंपातं॥ बाहुयुद्ध तो नियुद्धं हि दोय नाम विख्यात॥ ११२॥ रणव्याकुलताके २। बीरों के गर्ज्जने के २। हाथीन की कतार के २। बीरों के निंदा पूर्वक पुकारने को १ नाम॥ दोहा॥ तुमुलं तु रण संकुलं हि अथ सिंहनाद क्ष्वेडा हि॥ घटा तु घटना कंदनं तु जोधन कोरव आहि॥ ११३॥ हाथीन के गर्जने को १। धनुषके शब्दको १। जुझाऊ नगारा के शब्दको १ हठ के ३ नाम॥ दोहा॥ करिगर्ज्जित तो बृंहितं हि धनुष शब्द विस्फार॥ पटह तु आडंबर हठ तु प्रसभ अरु बलात्कार॥ ११४॥ धोखा देने के २। उत्पात के ३। मूर्च्छा के ३। शस्यादिसंपन्न देशकों परचक्र सें पीडने के २ नाम॥ दोहा॥ स्खलित छलं हि उत्पात तो त्रय उपसर्ग अजन्यं॥ मूर्च्छा कश्मल मोह अवमर्द तु पीडनं गन्य॥ ११५॥ धोखे सें दबानेके २। जीत। वा। फते के २। बैर मिटाने के ३। भागने के ८ नाम। दोहा॥ जु है अभ्यवस्कंदनं सु अभ्यासादनं जानि॥

जयो विजयो हि वैर शुद्धिं तु प्रतीकार पहिचानि ॥११६॥ त्वलियवै
र निर्यातनौ हि विद्रव द्रव संद्राव ॥ प्रद्राव रु अपयान अपक्रम
रु द्राव संद्राव ॥११७॥ हारिके २। हारे हुये के ३। छिपे हु
ये के २। नाम ॥ दोहा ॥ पराजय तु रणभंग तौ पराभूत तौ जा
नि ॥ पराजित हि जु अनश्यतौ तिरोहित हि पहिचानि ॥११८॥
मारवे के ३०। मौतके ९। मूर्छा के ४। चिता के २। बिना
कुंड वाले को १। नाम ॥ दोहा ॥ प्रमापण विशरण निवर्ह
ण उन्मथ परो जानि ॥ निर्वासन रु परासन रु पिंजन निषूदन
मानि ॥११९॥ निग्रंथन रु प्रवासन रु घात निकारण सोय ॥
निस्तर्हण निर्हनन पुनि वध रु अपासन होय ॥१२०॥ परि
वर्जन रु निहिंसन सु मारण विशर विचारि ॥ उज्वासन संज्ञ
पन पुनि विशासन प्रमथन धारि ॥१२१॥ निर्वापण शसि घा
तन रु उद्वासन उन्माथ ॥ आलंभौ कुम्मृत्यु तु प्रलय नाश पं
चता साथ ॥१२२॥ मरण अंत अत्यय निधन काल धर्म दि
ष्टान्त ॥ प्रेत प्राप्तपंचत्व मृत परासु संस्थित शान्त ॥१२३॥
सात. परेत प्रमीत अथ चित्या चिति रु चिता हि ॥ विनाशिर त
नु क्रिया सहित सो कबंध इक आहि ॥१२४॥ श्मशा
न के ५। निर्जीव शरीर के २। बंधुवा वा कैदी के ३। जे
लखाने को १। नाम ॥ दोहा ॥ पितृवन सु तो श्मशान जु
ग कुणप तु शव हि सुजान ॥ बंदि उपग्रह प्रग्रह हि कारा बं
धनस्थान ॥१२५॥ प्राण के २। श्वास के ५। उभार के २।

जियाने को १ नाम ॥ दोहा ॥ असु तु प्राण असुधारण तु जीव हु जीवित काल ॥ सु तौ आयु जीवातु सत जीवनौषधहि चाल ॥ १२६ ॥

इति क्षत्रियतरंगः

अथ वैश्य तरंग लिख्यते ॥ ५ ॥

भूमिस्टक बनिया के ४ । जीविका के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ भूमिस्टक ऊरव्य विट ऊरुज अर्य हि ध्याति ॥ आजीव तु वार्त्ता अपरव र्तन जीवन वृत्ति ॥ १ ॥ वृत्ति भेद के ३ । पराधीनी के ३ । खेती के २ । बजार उठने पर के अन्न वीनने के । कृसिला के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ पाशुपाल्य वाणिज्य कृषि भिन्न वृत्तित्रय जोय ॥ श्ववृत्ति सेवा अन्त कृषि उंछ तु शिल ऋत होय ॥ २ ॥ मृत को १ । अमृत को १ । बनियई के २ । कर्ज के २ । व्याज के ४ । उत्सवादि में जो भूषणादि मांग के ले जाय उसको १ । नाम ॥ दोहा ॥ मृत जु वस्तु मांग मिले अमृत अमार्गे जानि ॥ वाणिक भाव सत्यानृत हि पर्युदंचन तु मानि ॥ ३ ॥ ऋण हू अर्थप्रयोग तो वृद्धि जीविका जोय ॥ चव उद्धार कुसीद अथ याचितक सु इक होय ॥ ४ ॥ बादे से वा । बदले सैं मिलै उसको १ । बौहरा को १ । कर्जदार को १ । नाम ॥ दोहा ॥ मिलै वस्तु जो नियम सैं आपमित्यक कहि आहि ॥ उत्तमर्ण ऋणदायक हि अधमर्ण तु ऋणग्राहि ॥ ५ ॥

ब्याज दिया के ४ । किसान के ४ । नाम ॥ दोहा ॥

कृषीदिकं तु वार्द्धुषिकं चव. वार्द्धुषिं इ आजीव ॥ कृषीवल तु

कर्षक कार्षिक चतुर्थ. सेनाजीव ॥ ६ ॥ व्रीहि होने वाले

को १ धान होने वाले को १ जव होने वाले को १ को

टेजो होने वाले को १ नाम दोहा ॥ व्रीहि उपज. ब्रै है

य इक शालि उपज. शालेय ॥ यव्यं यवक्यं रुषाष्टैक्य सु

उपज यवादिक ज्ञेय ॥ ७ ॥ तिल २ उड़द २ अल

सी २ भांग २ होनेवाले । नाम ॥ दोहा ॥

तिल्य औरतैलीन जुगमाष्य दोय माषीन ॥ उम्य सुतो.

ओमीन जुग भंग्य जुगल भांगीन ॥ ८ ॥ अणु के २ कोद्र

१ मूंग ५ गोहू १ चरा १ क्यवरा

२ होने वाले को नाम ॥ दोहा ॥ आणवीन तौ अणव्यं हि

कोद्रीणं मैद्दीन ॥ गोधूमीन हु चणा कीं अरु है कालायीन ॥

काकुनि १ कुरथी २ होने वाले को नाम ॥ दोहा ॥ प्रि

यंगवीन सु और हू कौलत्थीन वखानि ॥ भिन्न भिन्न करि क्षेत्र ये

इत्यादिक पहिचान ॥ १० ॥ बो कर जुते खेत १ स ॥ हांकनी

करने के २ जुते खेत के ३ तीन वार जुते खेत के ४ ना

म ॥ दोहा ॥ उप्तकृष्ट बीजाकृत हि सीत्य तु कृष्ट रु हल्य ॥ त्रि

गुणाकृत रु त्रीय कृत चारि त्रिसीत्य त्रिहल्य ॥ ११ ॥ दो वार जु

ते खेत के ५ नाम ॥ दोहा ॥ द्विगुणाकृत तु द्विहल्य पुनि द्वि

तिया कृत सु पिछानि ॥ पुनि द्विसीत्य शंबा कृत हू पांचे नाम बख

आनि ॥ १२ ॥ द्रोण भर जिस में बोया जाय और आढक भ

धान्य माषादि॥ शूक धान्य तौ यवादि हि शालि सुतौ कलमादि॥ २७॥ तिन्नी वा मुनि अन्न के २। स्येंहु वा के २। मूसल के २। ओखली के २। नाम॥ दोहा॥ नीवार तु तृणधान्य गवेधु गवेधुका हि॥ मुसल अयोग्र उदूखल तु उलूखल हि जुग आहि॥ २८॥ सूप। वा। छाज के २। चलनी के २। थैली। वा। बोरा के २। चौलड़ा के। वा। छाबड़ा के २। नाम दोहा॥ शूर्प तु प्रस्फोटन तितउ सुतौ। चालनी मानि स्यूत प्रसेव हि पिट सुतौ। कंडोल हि पहिचानि॥ २९॥ चटाई के २ रसोई के ३। रसोई पाती को १। नाम॥ दोहा॥ कट तु किलिंज क रसवती सो तौ। पाकस्थान॥ महानस हु पौरोगव तु ता को मालिक नान॥ ३०॥ रसोईदार के ७। नाम॥ दोहा॥ सूपकार आरालिक रु सूद औदनिक जानि॥ आंधसिक रु वल्लव गुण सुपाक हि कर्त्ता मानि॥ ३१॥ पूवा आदि बनाने वाले के ३। चूल्हा के ४। नाम॥ दोहा॥ भक्ष्यकार आपूपिक रु कांदविक हि उद्धान॥ अधिश्रयणी अश्मंत पंच चुल्लि अंतिका नाम॥ ३२॥ अंगीठी के ४। अंगार को १। लुकाठ के २। नाम दोहा॥ हसिनी अंगारधानिका अंगार प्राकटी तान॥ हसंती हु अंगार इक उल्मुक सुतौ अलात॥ ३३॥ खपरी के २। भट्ठी। वा। भार के। वा। कराही के २। मांट के २। करवा। वा। गडुवी के ३। नाम। दोहा॥ अंबरीष तो भ्राष्ट अथ कंडु स्वेदनी आहि॥ मारी के अलिंजर कर्करी तु आलुगलंतिका हि॥ ३४॥ घट

लोहीके ४। घडाके ४। तवाके २। सरावा। वा। ढकना के २। नाम॥ दोहा॥ पिठर कुंड स्थाली उखा घट कुट कलशं निपाव॥ पिष्टपचने तु ऋजीष अथ वर्द्धमानकं सराव ३५॥ कटोराके २। कुप्पाके २। कुप्पीके २। बर्त्तनमात्रके ४। कर्छुलीके ३। डोवाके २। सागके ३। नाम॥ दोहा॥ पानं भाजनं तु कंस अथ कुतू सीघडो अत्र॥ कुतुपं सीघडी भाजनं तु भांड रु पात्र अमत्रं॥ ३६॥ आवपनं रु कंबी तु दर्वि खजा काहु नयताक॥ तर्दू तु दारुहस्तकौ हि शीयंत्र हरितकशा कौ॥ ३७॥ शाकके दंडके २। मसालाके २। खूकके ३। नाम॥ दोहा॥ दंड कालंबं कडं वैति हिं उपस्कार तु अतिशुक्र॥ वेसवार तु साम्ल तो तिंतिडीक नय चुक्र॥ ३८॥ मरिच के ६। जीराके ४। नाम॥ दोहा॥ धर्मपत्तनं तु कोलकं षषरा कृसे मरीचं॥ वेल्लनं जरणा तु अजाजी जीरक करा अपीच॥ ३९॥ कालाजीराके ६। अदरकके २। नाम॥ दोहा॥ पृथु कालां उपकुंचिका पृथ्वी सुखवी सोय॥ कारवी हु आर्द्रक सुतौ शृंगवेर जुग जोय॥ ४०॥ धनियांके ४ सोंठिके ४। नाम॥ दोहा॥ वितुन्नके तु कुस्तुंबुरं छत्रं ववा धान्याक॥ नागरं विश्व महौषध शृंगिरुवेभेषजं हि ताक॥ ४१॥ कांजीके ७। नाम॥ दोहा॥ कुंजलं कुल्माषाभि षुतं धान्याम्लं रु सौवीर॥ आरनालकं रु कांजिक सु अवन्ति सोम हु धीर॥ ४२॥ हींगके ५। हींगवृक्षकी पातीके ४ नाम

दोहा ॥ वाल्हीकं तु रामठ जतु केसहस्रवेधि रु हिंगु ॥ पद्मी
कद्वरी वाष्पिका कारवी हु दलहिंगु ॥ ४३ ॥ हरदी के ३ समुद्र
फेन के ३ नाम ॥ दोहा ॥ निशा ह्वा तु वरवर्णिनी कांचनी
सुपीतांरु ॥ हरिद्रा हि अब्धि वे तो वशिरं समुद्र जे चारु ॥ ४४ ॥
सैंधव के ४ सांभरि के २ खारी के ३ नाम ॥ दोहा ॥
सैंधव सिंधुज शित शिवं रु मारि सं पर्थ चत्वारि ॥ रोमक व सु
कं हि पाक्यं तो बिड रु कृतक त्रय धारि ॥ ४५ ॥ सौंचर के ३
कालानोंन को १ राव । वा । खांड के २ पक्की चीनी । वा
। मिश्री के २ नाम ॥ दोहा ॥ अक्ष तु सौवर्चल रु चवं ति
लकं तु असिते पिछानि ॥ मत्स्यंडी फाणितं जुगल सितां प्राक
रो मानि ॥ ४६ ॥ दही दूध मिला पदार्थ के २ सिखरनि
। वा । चटनी के २ कढी के २ शूलपक्व मांस के ३
बहुवा मे पके के २ रासि आव के २ घृत सें बनी वस्तु
पूरी आदि के २ नाम ॥ दोहा ॥ क्षीरविकृति तो कूर्चिका
रसाल मार्जिता हि ॥ निष्ठानं तु तेमनं जुगल शूला कृत तो अ
हि ॥ ४७ ॥ शूल्यं भटित्र हि पेठरं तु उरव्यं द्रिउपसंपन्नं ॥ तो प्र
णीतं ही मयस्तं तु सुसंस्कृतं हि अछन्न ॥ ४८ ॥ पानि हा व्यं
जन के २ वीना अन्न के २ चिकना के ३ छोंका के २
नाम ॥ दोहा ॥ पिच्छिल विजिलं हि पो धित तु सम्मृष्टं हि
जुग जोय ॥ मसृणं तु चिक्कणं स्निग्धं ही भावितं वासितं दोय
॥ ४९ ॥ मुरमुरा । वा । हाबुस के २ । बावर को १ । लावा को

च्यवडाकेय। धानी। वा। वाहुरीको १। वरा। वा। पूवा
को ३। दहीसाना सत्तू के २। भातके ६। नाम॥ दोहा॥
आपक्वं तु अभ्यूष त्रय पौलि हि अक्षतैं लाजैं॥ चिपिटक तो
पृथुकैं हि जो मुने धाना पूपं तु साज॥ ५०॥ अपूप पिष्टकैं करंभ
तु दधि सक्तु हि जुग उक्त॥ भिस्सा ओदन अन्न पट दीदिवि
धसूं भक्त॥ ५१॥ जलाअन्न। वा। भातके २। माँड को १।
भाँत माँड के ३। नाम॥ दोहा॥ दोय भिस्सटा दग्धिका
मंड अग्ररस अन्न॥ आचामं तु निस्रावंअरु मासरँ हू त्रय गन्न
॥ ५२॥ तपसी के ५। गोसैं उत्पन्न सेयला को १। गोबर
के। नाम॥ दोहा॥ तरला क्षारा उशिा को पांच यवागू सो
य॥ विलेपी हु गव्यं तु इकाहे गोविट् गोमयं होय॥ ५३॥ उ
पला को। वा। कारा। को १ दूधके ३। घी आदि को १।
पतला दही को नाम॥ दोहा॥ सकोयही करीषं अथ दुग्ध
तु पयसं रु क्षीर॥ घृत दध्यादि पयस्य अथ द्रप्सं तील दधि ध
र॥ ५४॥ घृत के ४। लूण्या के २ तुरत का लूण्या के २।
नाम॥ दोहा॥ आज्यं तु सर्पिंष घृत हविषं नवोद्धृत तु नव
तौं॥ सो गोदो हो द्भव घृतं तु हैयंगवीनं मीत॥ ५५॥ ॥
॥ * ॥ * ॥ माठा मात्र के ४। माठा भेद के ३। नाम॥ दोहा
कालशेय दंडाहत रु अरिष्ट गोरस चारि॥ तक्रं उदश्वित्
तौं येचौथ अर्द्ध विन वारि॥ ५६॥ दही के जलको १। पीयू
षको १। भूख के ३। ग्रास के २। नाम॥ दोहा॥ दधि मंड

मंडतु मस्तु इक पीयूष तु नवक्षीर ॥ सुदअशनाया तु क्षुधा
सेतुं कंबलं हि धीर ॥ ५७ ॥ साथ पीने के २। साथ खाने के २
प्यास के ४। भोजन को ७। अघाने को ७। जूठा को १ नाम।
दोहा ॥ तुल्यपान तु सपीति हि सहभोजन तो सग्धि ॥ तर्ष
पिपासा उदन्या तृट् अथ भोजन जग्धि ॥ ५८ ॥ जेमन आहा
र निघस लेप रु न्याद वखानि ॥ सौहित्य तु तर्पण तृप्ति फेल
औं वहि जानि ॥ ५९ ॥ चाह के ५। आहीर के ५। नाम ॥ दोह
पर्याप्त इष्ट यथेप्सित रु काम निकाम प्रकाम ॥ बल्लव गोप
हीर गोसंख्य रु गोधुक् नाम ॥ ६० ॥ चौपाये को १। गाय के
मालिक के ३। गो सम्बन्धि समूह के २। नाम ॥ दोहा ॥
पादबंधन तु गवादि हि गवीश्वर तु गोमान ॥ गोसी तीनगव
व्रज तु गोकुल गोधन नाम ॥ ६१ ॥ जहां पहिले गायों ने
खाया उसको। बैल के ९। बैल समूह को १। गायों के
के २। नाम ॥ दोहा ॥ पूर्व चरती गो जहां सो आशितंगवीन
॥ वलीवर्द ऋषभ रु वृषभ उक्षा भद्र प्रवीन ॥ ६२ ॥ अनड्
न सौरभेय रु वृष अरु गौ न वहोय ॥ वृषगण औक्षक गोगण
तु गव्या गोत्रा दोय ॥ ६३ ॥ बछड़ों समूह को १। धेनु
समूह को १। बड़ा बैल को २। बूढ़ा बैल के २। कुल। १
नाम ॥ दोहा ॥ वात्सक [illegible] निज गण हि महा तु उक्ष तु म
होक्ष ॥ जरद्गव तु वृद्धोक्ष सो उत्पन्न तु जातोक्ष ॥ ६४ ॥ नया
बछड़ा के २। छोटा बछड़ा के २। नाटा के २। बधि

रनेलायककोश नाम ॥दोहा॥सद्यजाते तौतर्णकैं हिव
त्से प्राकृतकरिसम्य ॥दम्ये वत्सतर षंडता थोग्य सुतौ आर्षम्य
॥६४॥सांडके ३।कांधको १।गलकंवरीके २। नथुवाबै
लके २ नाम ॥दोहा॥षंडतु गोपति इट्चरौं हि स्कंधदे
श्र वहईहोत ॥सास्नी गलकंवलौं अथो नस्तितनुगनस्योतौं॥
६६॥घसीटाके २।जोतने योग्य बैल केश्नाम॥दोहा॥
पष्ठवाह युग पार्श्वगौं हि अप सा संग्यै बखानि ॥प्राकटै युग्य हि बै
लत्रय भिन्न वाहके जानि॥६७॥हलमे चलने वाले के २।जो
तू बैलके ५ नाम॥दोहा॥खनतिरु याको वहत तैं हालिकै
सैरिकज्ञेय॥धुर्य धूरीणरु धूर्वह सु धुरंधर रु धौरेयौ॥६८॥ए
क धुरके वहने वाले के ३।सब भारमे चले उसके २ ना
म॥दोहा॥एकधुरीणतु एकधुर एकधुरावह जानि॥सर्व
धुरावह तौ द्वितिय सर्वधुरीणौं बखानि॥६९॥गायके ९ नाम
दोहा॥माहेयी गौ शृंगिणी उस्रा माता आहि॥रु सौरभेयी
अर्जुनी रोहिणी रु अघ्न्या हि॥७०॥उत्तमा गायकोश गाय
विशेषके ५ नाम॥दोहा॥उत्तमातु है नैचिकी प्रावली धवलौं जोय॥कृष्णौं कापिलौं पाटलौं पंचरंग करि होय॥७१॥
एकवर्ष। दोवर्ष। चारिवर्ष। तीनवर्ष कीगायकेयेके
कानाम॥दोहा॥एकहायनी वर्षकी द्विहायनी दो साल॥
चतुर्हायणी च्यारिकी त्रिहायणी त्रय साल॥७२॥बांझ गा
यके २।अकस्मात पतितगर्भाके २।गर्भिणीके २।

वृषकेउपगमनसैंपातितगर्भाको१नाम॥दोहा॥ वशांतु वंध्यौं अयस्त्रवदगर्भा अवतोकौंहि॥वृषसंगमातुसंधि नीवैहतौंगर्भगिराहि॥७३॥उचितसमयवैलकेपासजा नेवालीके२प्रथमगाभिनिके२सीधीगायके२ना म॥दोहा॥काल्याउपसर्याजुगलवालगर्भिणीसोतु॥प्रष्ठौही सुकरासुतौ।द्वितिय।अचंडीहोतु॥७४॥वहुतवेतवियानीके २।बकेनिगायके२तुर्तकीब्याईके२नाम॥दोहा बहुसूतिवलु।परेष्टुकौंवष्कयणीतौजानि॥चिरसूतौंनवसूति कोसेतो।धेनुंपिछानि॥७५॥दुहनेमैसुशीलाके२मो टेथनवालीके२।द्रोणसेरदूधकीके२गहनेधरीको१ वर्षब्यावनीको१नाम॥दोहा॥सुखसंदोह्यासुव्रतौंपीव स्तनीतुजोय॥पीनोध्नीशुरुथनीअथद्रोणक्षीराहोय॥७६॥ सुसेताकुध्नौंअयधरीगहनैधेनुष्यौंहि॥वर्षव्यावनीगायतें समाससमीनौंआहि॥७७॥थनके२।खूंटाके२रस्सीके २वकुतगौठेथुतपशुबांधनेकीरस्सीके।नाम।दो हा॥ऊधसआपीनैहिशिवकेकीलकौंअथसंदान॥द्विति य।दामंपशुरज्जुतौद्वितिय।दामनीनाम॥७८॥रइके४र ईबांधनेकेखंभके२मथानी।वा।महेडाके२ऊंट केदके वचाको१छोटेबच्चे काठमैबंधैउस को१नाम॥दोहा॥मंथदंडकेतुमंथपनि।वैशाखरू।मं थानौं॥कुठरूंडवकुंभौंजुग अथमथनीसुजान॥७९॥गर्गो

रीं हु उष्ट्रं तु मये रु क्रमेलक सु महांग ॥ प्रीसुतु करभ पगबंध जुत सो प्रंस्वलकैं असंग ॥ ८० ॥ बकरी के २। बकरा के ५। भेड वा। गाडर के ७ ऊंट। भेड। बकरा। इनके समूह के ३। नाम ॥ दोहा ॥ अजा तु छागी छगलके तु अज शुभ वस्त रु छाग ॥ मेढ्रं दृष्णि एडक उरण अरु ऊर्णायु समाग मेषं उरभ्रं हि औष्ट्रकं तु औरभ्रकं अरु जानि ॥ आजकं हू ये तीन तो तिनके गन मै मानि ॥ ८२ ॥ गदहा के ५। क्रयविक्रयीं सैं वर्त्तमान साहूकार। वा। व्यवहारिया के ८। व्योपारी वा। बेचने वाले के २। नाम ॥ दोहा ॥ गर्दभ चक्रीवान खर रासभ पचवालेयं ॥ सार्थवाह वैदेहकं रु नैगम वाणिज ज्ञेय ॥ ८३ ॥ पण्याजीव रु वाणिक पुनि क्रयविक्रयिक विचारि ॥ आपणिकं हु विक्रायिक तो विक्रेता जुग धारि ॥ ८४ ॥ लेने वाले के २। बनियापन के २। मोल के ३। मूल धन के ३ ब्याज। वा। नफा के २। अदलाबदली। वा। लेनदेन के ४। नाम ॥ दोहा ॥ क्रायकं क्रायिकं हि वणिज्या तौ वाणिज्य बिचारि ॥ मूल्यं तु वस्नं अवक्रयं हि नीवी परिपण धारि ॥ ८५ मूलधनं हि अथ अधिक फल लाभं कहावत नान ॥ परीवर्त्त नैमेय पुनि निमय चारि परिदानं ८६ ॥ निक्षेप। वा। धरो हर के २। फेरदेने को १। बेचने को फैलाई को १। बेचने योग्य के २। नाम ॥ दोहा ॥ उपनिधिं न्यासं हि फेरनो तौ प्रतिदानं हि ज्ञेय ॥ क्रय्यं तबेचन हित धरी क्रेतव्यं त है क्रेयं ८७

विक्रेय क्रियकर्म के ३ साई के ३ विक्रय क्रियकके २ नाम ॥ दोहा ॥ विक्रेयतु परीतव्य नय पराप्तहु सत्यंकार ॥ सत्याकृति सत्यापनौ हि विपर्णो विक्रयो हि चार ॥ ८८ ॥ तोल प्रमान पके ४ तोल भेदके ३ नाम ॥ दोहा ॥ मानं पाय्यं पौतवहु वर्षो भेदतु तुलौ वखानि ॥ अंगुलि अस्थहि दील करि भिन्न भिन्न अहिचानि ॥ ८९ ॥ तुला मान ॥ दोहा ॥ आद्यमाषके गुंजन पञ्च सोलह मासा सोतु ॥ अक्षं कर्ष तोलौ विदित चव तोला पल होतु ॥ ९० ॥ अक्ष कनक को सुवर्ण कविस्त सुसुदर्णे खिलान ॥ कुरुविस्तु पल कनक को सो पल तुलौ सुजान ॥ ९१ ॥ बीस तुला को भार है आचित तो दश भार ॥ आचित शाकट भार है कार्ष प्रमानतु उदार ॥ ९२ ॥ कार्षिक रुपयो विदित जग तेतांम्रको होय ॥ तो पण पैसो जगत मै तुलामान इति सोय ॥ ९३ ॥ आढकादि ४ के मूठी भर को १ पाव भर को १ सेर भर को १ नाम ॥ दोहा ॥ आढक कुडव द्रोण पुनि खारी वाह वखानि ॥ अथो निकुंचक कुडव पुनि प्रस्थ आदि पहिचानि ॥ ९४ ॥ चौपाई को १ वांट के ३ धनके १३ चांदी सोना दोनों के २ नाम ॥ दोहा ॥ पाद तु चौथो भाग है अंशतु वंटक भाग ॥ रिक्थ ऋक्थ धन वित्त वसु अरु स्वापेत सभाग ॥ ९५ ॥ द्रव्य हिरण्य रु रै द्रविण विभव द्युम्न अरु अर्थ ॥ हेम रूप्य कृत अकृत मै कोश हिरण्य समर्थ ॥ ९६ ॥ ताम्रादि द्रव्य को १ तांबा रूपा के मेल को १

लौ हि अमलअभ्रक गिरिजौ हु तीन ॥ १०५ ॥ सुरमाके ७ । तू
तियाके ५ । रसोत । वा । रसांजन को ७ । नाम ॥ दोहा
कापोतांजन यामुन रु स्त्रोतांजन सौवीर ॥ शिखिग्रीव तुत्थां
जन रु ओर वितुन्नक धीर ॥ १०६ ॥ पांच मयूरक कर्परी तार्क्ष्य
शैल तौ मानि ॥ तुत्थ रसगर्भ दार्विकौ क्वाथोद्भव पहिचानि ॥
१०७ ॥ गंधकके ३ । काला सुरमाके ३ । अंजन बिप्राष
के ४ । हरितालके । नाम ॥ दोहा ॥ गंधाश्मा सौगंधिक
रु गंधक चक्षुष्या तु सुकुलाली रु कुलत्थिका कुसुमांजन तु क
हतु १०८ ॥ तिपुष्प पौष्प कं चवथ पुष्प केतु अथ ताले ॥ ह
रितालक पुनि पीतन रु पिंजर पंचम आलै ॥ १०९ ॥ शिला
जितके ५ । गंधरसके ५ । नाम ॥ दोहा ॥ शिलाजतु तु अ
श्मज सुपञ्च गिरिज अर्थ्य गैरेयँ ॥ बोल गंधरस प्राण पञ्च पिं
ड गोपरसै ज्ञेय ॥ ११० ॥ समुद्रफेनके ३ । सिंदूरके २ । सी
साके ४ । रांगके ४ । रुईके २ । कुसुंभके ३ । नाम ॥ दोहा
अब्धिकफ तु हिंडीर त्रय फेनँ हु अथ सिंदूर ॥ नाग संभवौ है ना
ग तौ सीसक वप्र मसूर ॥ १११ ॥ योगेष्टँ हु पिच्चट तु त्रपु रंग वंग पि
चु तूलँ ॥ कमलोत्तर तौ वह्नि शिख महारजत त्रिक तूल ॥ ११२ ॥
कंबलके २ । रवरगोसके । रोमवस्त्रके २ । सहतके ३ । मो
मके २ । नाम ॥ दोहा ॥ मेषकंबल तु दूसरो ऊर्णायु हि प्राव
लोम ॥ प्रावार मासिक क्षौद्र मधु भघूच्छिष्ट तौ मोमँ ॥ ११३ ॥
मैनसिलके ४ । नेपालीमैनशिरके ३ । नाम ॥ दोहा ॥

नाग जिह्विका मनोह्वा २ मनोगुप्ता आहि ॥ मनःशिला कुनटी सुतो नेपाली गोला हि ॥ ११४ ॥ जवखार के ३। सज्जी के ३। नाम ॥ दोहा ॥ यवाग्रज तु यवक्षार त्रय पाक्य हि अथ कापोत ॥ औरसार्जिका क्षार त्रय सुखवर्चक जुत होत ॥ ११५ ॥ सोंचर के २। वंशलोचन के ३। श्वेत मरिच शोभंजन के २। नाम ॥ दोहा ॥ रुचक तु सौवर्चल जुगल वंशरोचना सो तु ॥ त्वक्क्षीरी ही शिग्रुज तु श्वेत मरिच जग होतु ॥ ११६ ॥ ऊरव की जड को १। पीपला मूल के ३। जटामासी के ३। प तंग के २। मिले सौंठि मिरच पीपरि के। ३। मिले हरर बहेरा आवरा के ३। नाम ॥ दोहा ॥ मोरट तो जड ऊखकी अथो पिप्पली मूल ॥ ग्रंथिक चटका शिर त्रय हि गोलोमी तु कबूल ॥ ११७ ॥ भूतकेशी पत्रांग तो रक्त चन्दन हि आहि ॥ त्रिक टु तु त्र्यूषण व्योष त्रय फलत्रिक तु त्रिफला हि ॥ ११८ ॥

इति वैश्य तरंगः

अथ शूद्र तरङ्ग लिख्यते ॥

शूद्र के ३। करणादि से चंडाल तक के। नाम ॥ दोहा ॥ शूद्र जघन्यज वृषल पुनि अवर वर्ण चत्वारि ॥ संकीर्ण तु चंडाल लौं करणादिक निर्धारि ॥ १ ॥ शूद्र स्त्री और वैश्य से उत्पन्न को १। वैश्य स्त्री और ब्राह्मण से उत्पन्न को १। शूद्र स्त्री क्षत्री से उत्पन्न को १। नाम ॥ दोहा ॥ शूद्रा विशज तु सुत करण वैश्या द्विज अंबष्ठ ॥ शूद्र मे क्षत्रिय

ज.तो उग्र नामजगतिष्ठ ॥ २ ॥ क्षत्रिया स्त्री वैश्य सैं उत्पन्न को १ क्षत्रिया स्त्री शूद्र सैं उत्पन्न को १ नाम । दोहा ॥ मागधं विप्र क्षत्रियात्मज अर्योक्षत्रिय तात ॥ माहिष्य हिक्ष त्तां सुतो अर्योशूद्रजतात ॥ ३ ॥ ब्राह्मणी स्त्री मे क्षत्रिय सैं उत्पन्न को १ ब्राह्मणी मे वैश्य सैं उत्पन्न को १ नाम ॥ दोहा ॥ ब्राह्मणीमेक्षत्रियजतो सूतं नाम विख्यात ॥ ब्राह्मणी ही मे वैश्यजतु है वैदेहकं तात ॥ ४ ॥ शूद्रा वैश्य की लडकी मे वैश्या और क्षत्रिय के लडके सैं उत्पन्न को १ ब्राह्मणी मे शूद्र सैं उत्पन्न को १ नाम ॥ दोहा ॥ रथकारं तु माहिष्य तैं करणी मे उपजात ॥ चंडालं तु विप्राणी मे वृषलतनय विख्यात ॥ ५ ॥ चितेरा आदि के २ सब का सजातीयसमूह को १ उनकुलों के प्रधान के २ माली के २ नाम दोहा ॥ शिल्पीकारु हि श्रेणी तो तिहिं सजाति गण चारि ॥ कुलक कुलश्रेष्ठी हि अथ मालिक मालाकार ॥ ६ ॥ कुम्हार के २ राजके २ कोली के २ दरजी के २ रंगसाज के २ शिकलीगर के २ चमार के २ नाम ॥ दोहा ॥ कुंभकार तु कुलाल अथ लेपक तो पलगंड ॥ तंतुवाय तु कुविंद जुग तुन्नवाय तो मंड ॥ ७ ॥ सौचिकं रंगाजीव तो चित्रकर हि निर्धार ॥ शस्त्रमार्ज असिधावक हि पादूकृत चर्मकार ॥ ८ ॥ लुहार के २ सुनार के ५ नाम ॥ दोहा ॥ व्योकार तु लोहकारक रुक्मकारक तु चार ॥ स्वर्णकार नाडिंधम रु पंच कलाद सुनार ॥ ९ ॥

वैश्य स्त्री क्षत्रिय सैं उत्पन्न को १

चूरिहार के २। ठठेरा के २। खाती के ४। नाम॥ दोहा॥ प्रांखिक कांविक हि जुगल। ताम्रकुट्टक तु दोय॥ शौल्विक तसाकाष्ठतट त्वष्टा वर्द्धकि होय॥ १०॥ गांव के खाती को १ प्रधान खाती को १ नाई के ४॥ नाम॥ दोहा॥ ग्रामतक्षतौ ग्रामवस। कौटतक्ष स्वधीन॥ दिवाकीर्त्ति मुंडी क्षुरी नापितं चारि प्रवीन॥ ११॥ धोबी के २। कलार के २। गडरिया के २। नाम॥ दोहा॥ रजक तु निर्णेजक अथो मंडहारक सुदेय॥ शौंडिक हू जाबाल तौ अजाजीव जुग जोय॥ १२॥ पंडा वा पुजारी के २। इन्द्रजाल के २। इन्द्रजाली के २। नाम दोहा॥ देवाजीवी देवल हि। सांवरी तु माया हि॥ जुगजुग मायाकार तौ प्रात्यहारक हि आहि॥ १३॥ नट के ६। कथक के २। नाम॥ दोहा॥ शैलाली भर्त्ता नट रु कृशाश्वी रु शैलूष॥ जायाजीव हि चारणा तु कुशीलव हि सजल्प॥ १४॥ मृदंग बजाने वाले के २। ताली बजाने वाले के २। बांसुरी बजाने वाले के २। बीणा बजाने वाले के २। नाम॥ दोहा॥ मार्दंगिक मौरजिक जुग पाणिघ तु पाणिवाद॥ वेणुध्मा वैणविक जुग वैणिक वीणावाद॥ १५॥ चिडीमार के २। जालिक के २। कसाई के ३। नाम॥ दोहा॥ जीवांतक शाकुनिक जुग जालिक वागुरिका हि॥ वैतंसिक तौ कौटिक रु मांसिक तीन निदान हि॥ १६॥ मजूर के ४। संदेसिहा के २। बोझिया के २। नाम॥ दोहा॥ भृतक तु भृति भुक् कर्मकर वै

तानिकौं हि चवराह ॥ दैवधिक तुवार्त्तावह हि भारिक तु भारवाह
॥ १७ ॥ **नीचेके १० नाम ॥ दोहा** ॥ प्राकृत पामर नीच पुनि
अपसद जाल्म निहीन ॥ क्षुल्लक विवरण द्वथगजन इतर हु द
ग्रामप्रवीन ॥ १८ ॥ **दास वा टहलवाके ९ नाम ॥ दोहा**
भृत्य प्रेष्य परिचारक रु दासेर रु दासेय ॥ भुजिष्य गोप्य
क नियोज्य रु चेटक किंकर ज्ञेय ॥ १९ ॥ **दूसरे सें पालेहु**
ए के ४ । सुस्तके ६ । चतुर । वा । तेजके ५ । चांडालके १०
म्लेच्छभेदके ३ । नाम ॥ दोहा ॥ पराचित स्तु परेधित रु
परिस्कंद परिजात ॥ मंद तुंद परिमृज अलस अनुष्ण शीत
कजात ॥ २० ॥ आलस्य रु पेशल तु पटु दक्ष उद्यम सूत्थान ॥
दिवाकीर्त्ति चांडाल प्लव श्वपच जनंगम आन ॥ २१ ॥ अंतेवा
सी पुक्कस रु सो निषाद मातंग ॥ दप्र चंडाल किरात तो शावर
पुलिंद प्रसंग ॥ २२ ॥ **व्याधके ४ । कूकरके ७ । बावला
कुत्ताके । १ । सिकारी कुत्ताको १ । कुतियाके २ । नाम**
। **दोहा** ॥ व्याध मृगवधाजीव पुनि मृगयु रु लुब्धक चा
रि ॥ सारमेय मृगदंशक रु शुनक भषक श्वा धारि ॥ २३ ॥ कौ
लेयक कुक्कुर अथो अलर्क जोगित जानि ॥ विश्वकद्रु मृग
य कुलश सरमा शुनी हि मानि ॥ २४ ॥ **गांवसूकरको १ ।
ज्वानपशुको १ । सिकारके ४ । नाम । दोहा** ॥ विट्चर
सूकर गांव को वर्कर तो पशु ज्वान ॥ आक्षोदन आखेट च व मृगव्य
मृगया नान ॥ २५ ॥ **दाहिने अंगमे घावबाला मृगको १ । चो**

रके १० चोरी के ३ नाम॥ दोहा॥ सुदक्षिणो मौं दाहिन अंग लुब्धयोग मृगमार॥ ऐकागारिक तस्कररु स्तेन दस्यु निर्धार॥ २६ चौर भलिम्लु चौ मोषकरु पाटच्चर प्रतिरोधि॥ परास्कंदि दस्रास्ते पत्तो स्तैन्य चौरिका शोधि॥ २७॥ चोरी के मालको १ बाधों की सामग्री को १ फंदाके २ नाम॥ दोहा॥ लोप्त्रं तु चोरी के धनहि अथ मृगपाक्षिन साथ॥ वंधवस्तु वीतंसं अथ कूटयंत्र उन्माथ॥ २८॥ मृगवंधन जालके २ रस्सी के ४ रहटके २ नाम॥ दोहा॥ वागुरा तु मृगवंधनी शुल्व वराटक रज्जु॥ व टी गुण हि उद्‌घाटनं तु घटीयंत्र जगसज्जु॥ २९॥ वुनने के दंडके २ सूतके २ वुनने के २ लीपना आदि को १ गुडियां गुडवाके २ नाम॥ दोहा॥ वायदंड वेमौ जुगलसू त्रंतंतु अथवाणी व्यूति हु पुस्तं हि पुत्रिकातु पांचालिका जानि ॥ ३०॥ संदूखवा। पेटी के ४ वहगी। वा। कावरे के २ शिकहर। वा। छीका के २ नाम॥ दोहा॥ पेटा ते वेट र पिटक मंजूषा चत्वारि॥ भारय ष्टि तु विहंगिका शिक्य तु का चै निहार॥ ३१॥ पनही। वा। जूताके ३ मोजा को १ वाध के ३ नाम॥ दोहा॥ तीन उपानद पादुका पादू अथ पदमान ॥ सुअनुपदीना वरत्रा नध्री वध्री नान॥ ३२॥ जेरवंद को १ कोगीरी के ३ नाम॥ दोहा॥ कशा हया दिक ताडनी चांड लिका तु अरृ हि॥ सुचांडाल वल्लकी त्रय रु कंडोलवीणा हि॥ ३३॥ सुनारके ८ टांके ३ कशौटी के २ नाम॥ दोहा॥

नाराची कंचन तुला रषारीको अथप्रारा ॥ निकष कष दृढ़कहुँ सुतो पत्रपरशुजुग जार ॥ ३४ ॥ सलाईके २ धातु गलानेकी घरियाके ३ भाथीके २ वर्मांके २ कतरनीके २ करवतके २ नाम ॥ दोहा ॥ दोय तूलिका ईषिका मुषा तुमूषा चार ॥ तृतिय तैजसावर्त्तनी चर्म प्रसेविका रु ॥ ३५ ॥ भस्त्रा जुग आस्फोटनी वेधनिका जुग अत्र ॥ दोय कृपारगी कर्तरी क्रकच सुतो करपत्र ॥ ३६ ॥ वांकी वा वसूला के २ टांकी के २ नाम दोहा ॥ जु वृक्ष भेदी सो द्वितिय वृक्षादन ही होय ॥ जु पाषाण दारण सुतो टंक द्वितीय विजोय ॥ ३७ ॥ आरीके २ लोहकी प्रतिमा के ३ कारीगरी को वा सबकी चतुराईको १ नाम ॥ दोहा ॥ आरा चर्मप्रभेदिका लोहप्रतिमा सो तु ॥ सूर्मी स्थूणा शिल्प तो कर्म कलादिक होतु ॥ ३८ ॥ प्रतिबिंब के वा तसवीर के नाम ॥ दोहा ॥ प्रतिमा प्रतिकृति प्रतिनिधि रु प्रतिबिंब रु प्रतिमान ॥ अरु अर्चा प्रतियातना रु प्रतिच्छाया नन ॥ ३९ ॥ मिसाल और जिसकी मिसाल दीजाय उसके २ बराबर के नाम ॥ दोहा ॥ उपमा तो उपमान जुग सम तु सदृक्ष समान ॥ साधारण सदृश रु सदृक तुल्य हु सात सुजान ॥ ४० ॥ उत्तर पद स्थित समानार्थके ५ नाम ॥ दोहा ॥ प्रतीकाश संकाश निभ नीकाश रु उपमादि ॥ उत्तर पदमें थित इते समानार्थ कहिवादि ॥ ४१ ॥ मजूरी के ११ नाम ॥ दोहा ॥ विधा भर्म वेतन रु भृति कर्मराया भृत्या रु ॥ भरण भरण्य रु मू

ल्यंपुनिपरा॥निवेशाँहिन्वारु॥४२॥दारूके१३॥मद्यपीनेमें रुचिबढ़ानेवालेको१॥मद्यपानस्थानको१॥नाम॥
दोहा॥हलिप्रिया हालो सुरागंधोत्तमांइरांरु॥परिस्तुतंरुवरु णात्मजांमद्यं कश्य मदिरांरु॥४३॥परिस्रुतांकादंबरीऔर प्रसन्नांनान॥तहंभक्षणाअवदंशाँ मदस्थान,तुशुंडापान॥४४॥
मद्यपीनेकेसमयके२॥महुवाकीमद्यके३॥इक्षुशा कादिजन्यमदिराके३॥नाम॥दोहा॥मधुकमंतुमधुवा रंअथमध्वासवंमाध्वीकं॥माधवकंहिमैरेयंतो,आसवंशीधु हिनीक॥४५॥मदिराकल्ककेनी॥वा॥काढ़ाके२॥मदिरा बनानेके२॥सुराबीजको॥वा॥मतवालेहोकेपुकार नेके२॥मदिराफूलके२॥नाम॥दोहा॥मेदकंजगलाँहि अभिषवंतुसंधानंहि किण्वंस्तु॥नग्नहूँकिरोत्तरंतु,सुरामंडजुग वस्तु॥४६॥मद्यपीनेकीसभाके२॥मद्यपीनेके पात्रके२ मदिरापीनेके२॥नाम॥दोहा॥पानगोष्ठिकातो द्वितिय आ पानंहिचषकंस्तु॥पानपात्रंहूसरकंतो अनुतर्षणांजुग अस्तु॥
४७॥जुआरीके५॥जा नेके२॥नाम॥दोहा॥धूर्तेतुकै तवरुद्यूतकृतंरुअक्षदेवी२..४॥अक्षधूर्त्त प्रतिभूंसुतोलग्न कँजामिनहोय॥४८॥जुवांकरानेवालेके२॥जुवांके४॥
बाजीलगानेके२॥नाम॥दोहा॥सभिकद्यूतकारकँजु लद्यूतंतुकैतवमानि॥अक्षवतीपणाँहू अथो,पणाँअरुग्लहँजु गजानि॥४९॥पाशाके३॥गोटिकेचलनेको१॥चौपडके१

जीवोंके लडाने की वाजीको १ नाम ॥ दोहा ॥ असे तु देव न पाशकों हि॰ शारिचाल॰ परिणायें ॥ अष्टापदै तो॰ शारिफ॰ल॰म माहूयें तु पणाभाय ॥ ५० ॥

इति शूद्र तरंगः समाप्तः

इति गुलाबसिंहस्य कृतौ नामानुप्रासने ॥ द्वितीयो भागो ऽभू स्यादिः समय एव समार्थितः १

द्विवेदनन्दाजमिते ऽत्र वर्षे

नभस्य शुक्ले दशमी तिथौ च

मुद्रांकितः केशव शर्म्मणायं

गुलाबसिंहेन कृतोहि कोशः ९

हस्ताक्षर क्षेमकरण ब्राह्मण गौड़ का ॥ शुभम्

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	वसंधरा	वसुंधरा	१२	१२	भागधी	मागधी
२	४	मत्तलउ	मत्तल्ला	१२	२४	माध्याहि	माध्याह्नि
२	६	ऊर्वरा	उर्वरा	१३	१५	ओषघिफल	ओषधिफल
२	९	स्थलीस्थल	स्थलीतुस्थल			पाकान्तमें	पाकान्तमें
२	१६	तत्यंत	अत्यंत	१३	१६	प्याजके२।	प्याजके २।
४	१९	[illegible] मित्ति	प्राचीन भित्ति				हरितप्याजके
५	५	उठज	उटज	१३	२०	दुद्रुम	दुर्द्रुम
५	१७	प्रसाद	प्रासाद	१४	३	कन्दहू	कन्दहु
७	२२	घोषहि	घोषहि	१४	८	भस्कर	मस्कर
८	२	क्ष्माम्टल	क्ष्माभ्टत	१४	१४	प्राध्य	प्राच्य
८	६	सौमध्य	सोमध्य	१४	१९	घोंय	घोंटा
८	१६	भूभि	भूमि	१४	२०	नाली	ताली
८	१९	उर्ध्वाहि	ऊर्ध्वाहि	१५	६	स्तव्धरोमा	स्तब्धरोमा
९	४	वडेवनके१	वडेवनके२	१५	१२	गोभायु	गोमायु
९	६	मंत्रिनको	मंत्रिको	१५	१४	आतु	ओतु
९	१५	वृक्षके१३।०	वृक्षके१३।वि	१६	१	ऐसो	ऐसा
			लिके५।	१६	२	चमूरु	चमूरु
९	१८	अनोकहु	अनोकह	१६	३	पद्व	पट्ट
९	२१	उच्छ्राय	उच्छ्रय	१६	६	एसा	एसो
१०	६	त्रिफिका	त्रिफका	१६	१०	वृक	वृष
१०	१८	काचाफल	कान्वेफल	१६	११	भूषिका	भूषिका
११	५	पारिभद्र	पारिभद्र	१६	१६	होय	दोय
११	१९	भूतवास	भूतावास	१६	१८	परावत	पारावत
११	२०	अरुवकय स्था	अरुकायस्था	१७	५	बिडाको१।।०	बिडाके२बिडि को१।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	६	कालिविंक	कलविंक	२४	८	भिस्सुकी	भिस्सुकी
१७	९	मास	भास	२४	११	पुत्री और	पुत्रऔर
१७	१८	चक्रवाचक वीके ३०	चकवाचककीके ३ावतकके २१	२५	१	श्र्यान्तु	श्यालतु
				२५	४	जामत	जामात
				२५	७	सोसहज	सहज
१७	१८	पुष्कराह्न	पुष्कराह्न	२५	२१	मुंड	मंड
१७	२१	उत्क्राश	उत्क्रोश	२६	६	स्तनष	स्तनप
१८	१	मानसौकस श्री	मानसौकसअ श्री	२६	१९	वालिनि	वालिन
				२७	४	उर्ध्वजानु	ऊर्ध्वजानु
१८	१९	भोर	भोरें	२७	१७	नघसुत	नधुसुत
१९	५	एकुंत	आकुंत	२९	१	तुंडिमतु	तुंडिभतु
१९	२१	भेदोंका	भेदोंके	२९	७	उन्तपप्न	उत्तप्न
२०	९	कापोतादि	कपोतादि	२९	१८	मलआधि	मलआधि
२०	१४	पुरुषके ४।	पुरुषके ५	२९	२०	कर्पूरतु	कर्परतु
२०	१८	माहिला	महिला	३०	२	कशेरका	कशेरुका
२१	१४	तरुणीसुतव वधू	तरुणीसुतवधू	३०	६	अंध्रि	अंघ्रि
				३०	२०	मेढ़	मेढ्र
२१	१५	धूजनी	वधूजनी	३०	२१	पीठवंश	पीठवंश
२१	१८	कामकी	कामुकी	३१	६	अस	अंस
२१	१९	हाके	होने	३१	१३	मणिवंधधसैं	मणिबंध
२२	५	वुद्धा	वृद्धा	३२	१	पुनर्मव	पुनर्भव
२२	१९	आजाता	मजाता	३४	१८	आट	विभ्राटदु
२२	२१	कात्यायनी ज्ञेय	कात्यायनीतु ज्ञेय	३४	१८	अभरण	आभरण
२३	९	आत्रेयी	आत्रेयी	३५	५	नामि	नाभि
२३	१५	गर्भिणी	गर्भिणी	३६	१०	रांकव	रांकव

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५७	३	कावलहि	कांवलहि
५७	४	यनमुख	यानमुख
५७	६	कालक	कीलक
५७	१०	दो देखि	दो दो देखि
५७	१२	प्रसंगयुग	प्रासंग तुयुग
५७	१४	काहारादि	कहारादि
५७	१८	दक्षरणास्थ स वेष्ठ	दक्षिणास्थसव्ये ष्ट
५८	१०	अमुक्त	आमुक्त
५८	१६	अयुधीय	आयुधीय
५९	८	सुहाय	सहाय
५९	१५	प्रतवी	प्रजवी
६०	१७	रथहुडकी स	रथहु डकीस
६०	१९	पत्ति	पति
६०	२०	अर	अरु
६०	२१	मिलितकह	मिलितकहि
६१	२	मनिचारि	गनिचारि
६१	११	धनुद्धरके	धनुर्द्धरके
६१	१७	अपुग	आशुग
६२	८	झ्ली	ईली
६२	९	भिंदिपाल	भि[illegible]पाल
६३	७	होय	दोय
६३	८	अनिअवर्ती	अनिवर्ती
६३	२१	नसरवाने	नसारवाने

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६४	१६	प्रास्यदि	
६६	१२	ज	जीवातु
६६	१	अमृत	अमृत
६६	२०	ऋणादापक	ऋणापायक
६६	२०	ऋणग्रहि	ऋणग्राहि
६७	७	होनेवाले	होनेवालेके
६७	१५	पहिचान	पहिचानि
६७	१९	सनि	पुनि
६८	५	क्षेत्र	क्षेत्र
६८	७	लेष्ठ	लेष्टु
६९	८	असुरी	आसुरी
६९	१०	ढूंडावा	ढूंढावा
७०	१५	पंच	पेंच
७०	१६	नाम	नाम्न
७०	१९	मारके	भारके
७०	२१	आलुगालानिका	आलुगलातिका
७१	१८	चवा	चव
७१	१८	विश्वमेषज	विश्वभेषज
७१	२०	धान्यम्ल	धान्याम्ल
७१	२०	अंबाति	अंबाति
७१	२१	सोमूह	सोमहु
७१	२१	हींगरके	हींगके
७२	२	समुद्र	समुद्र
७२	२१	हावुसक ३।	हावुसके ३

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७३	१	वाहुरीको १।	वह्नरीको १।
७३	२	पूवाको ३।	पूवाके ३।
७३	३	चिपटका	चिपटक
७३	६	अंधस्त्	अंधस्
७३	८	भासर्	मासर्
७३	९	तपसीके	लपसीके
७३	१७	घ्नंतु	घ्नतु
७३	१९	कालशाय	कालशेय
७४	४	तर्पे	तर्ष
७४	१७	वकुडोंसमूह को	वकुडों के समूह को
७५	२	वत्सवर्	वत्सतर्
७६	२	वप्रां	वप्रा
७६	१७	रइके ४।	रईके ४।
७६	२१	मंपान	मंथान
७६	२१	मथुली	मंथनी
७७	१	करस	करभ
७८	१	कुष्य	कुप्य
७८	२	अश्मगर्भ	अश्मगर्भ
७८	१०	मर्म	भर्म
७९	१८	मेडूर	मंडूर
८०	१	अभल	अमल
८०	२	रसांजनकः ४	रसांजनके ४।
८०	८	नःसुष्पातुसु	नसुष्पातु।।सु
८०	१०	लोभ	लोभ
८०	२०	भधूच्छिष्ट	मधूच्छिष्ट
८१	५	श्रो भंजनकं	प्रो भांजनके
८१	२१	प्रद्रू मे	प्रद्रा मे
८३	५	स्वधीन	स्वाधीन
८४	५	प्रोष्य	पैष्य
८४	१०	जात	तात
८४	१८	कुलश	कुशल
८४	२०	भगव्य	मगव्य
८५	३	भलिम्लु ३	मलिम्लुप
८५	३	भातिराधि	प्रतिरोधि
८५	११	वायदंड	वापदंड
८५	१५	भंजूषा	मंजूषा
८६	८	अरीके २।	आरीके २।
८६	१४	प्रातिबिंब	प्रतिबिंब
८७	१२	मग्नहृहि	नग्नहृहि
८८	१	ममाहृय	समाहृय

नामसिंधुकोश

द्वितीय भाग

अर्थात

गुलाब कोश को संक्षेप अमरकोश द्वितीयकांड

कविहितैषि

श्रीयुत चन्द्रवंशावतंस हड्डकुल कलशबूंदी

नृ. महाराजाधिराज महा राव राजा जी श्री श्री

श्री श्री श्री १०८ रामसिंह जी के कवि राव जी श्री

गुलाबसिंह जी कृत

आगरा

नगरे बेलनगंजे श्री पण्डित केशव प्रसाद शर्म्म

द्विवेदि प्रबंधेन विद्यारत्नाकर यंत्रे मुद्रितः

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसरस्वत्यैनमः॥

अथनामसिंधुकोद्वितीय भाग लिख्यते

दोहा

उमारमा सीता गिरा राधा रमन मनाय॥
रच्यौंभाग दूजो गुरु हि वार २ शिर नाय१॥
तजि गुलाब निज कोशको विस्तर सार सम्हारि
कर्यौभाग दूजो समुझि तिलक अमरके वारि २

अथ तुकांत नियम दोहा

होतुरु लाभि असुप्नि गुन कीट संद्यु इक्कीसु॥
धीजरु मिल्ल भक्कुन्न अति मुक्क कहातुरु दीसु ३॥
भज्जारु ज्जु अरु घातिपुनि ध्वांनि आदि पहिचानि
भाषा वदलरु स्वर वदल कि यतुकांत हित जानि ४

भूमि'रूपुर'गिरि'वनौषधि'सिंहादि'करुन्द'मानि॥ब्रह्म'क्षत्र'विट'शूद्र'येदपातरंगह्यौंजांनि॥५॥ अथ भूमि तरंग लिख्यते॥ भू के २७। मिट्टी के २। अच्छी मिट्टी के २। ॥ दोहा॥ भू अचला विश्वंभरा भूमि अनंता होय॥ स्थिरा र

धरणी। क्षिति धरा क्षोणी वसुधा होय॥ ६॥ उर्वी पृथिवी ज्या
रसो सर्व सद्दो कुं जानि॥ क्ष्मारु, धरित्री काश्यपी अवनिमेदि
नी मानि॥ ७॥ पृथ्वी गोत्रा वसुमती वसंधरा माहिं पेषि॥ म्टत
तु, म्टत्तिका सुन्दरतु, म्टत्सा म्टत्स्नउ देखि। ८। सवसस्य
युक्त को १। लोनी मट्टी के २। ऊषरके २। नाम॥ दो
ऊर्वरा तु, सवसस्यप्रद, क्षार म्टत्तिका सो तु,॥ ऊष
नौ॥ द्वितिय ऊषवान ही होतु॥ ९॥ स्थान के २। निर्जल
के २। विन जोते के २। भूतल के ५॥ नाम॥ दोहा॥
स्थली स्थल धन्वा तु, मरु खिल तु अप्रहत होय॥ जगत लो
क विष्टप भुवन जगती पांचहि होय॥ १०॥ हिन्दुस्तान को
१। प्राच्य को १। नाम॥ दोहा॥ भारतवर्ष तु लोक यह अ
ध शरावती कार॥ पूर्व रु दक्षिण देश सो
॥ ११॥ उदीच्य को १। म्लेच्छ देश के २।
त्तर हिमालय सें दक्षिण कुरु क्षेत्र सें पूर्व प्रयाग से
श्चिम देश के २। नाम॥ दोहा॥ अथ उदीच्य हद
पश्चिम उत्तर देश॥ म्लेच्छ देश तत्यंत जु गमध्यम
॥ १२॥ आर्य्या वर्त्त के २। राज्य वा देश के २। देश
के ३। नडाधिकादि ३ के। नाम॥ दोहा
र्य्यावर्त्त विंध्य हिमाचल मांहि॥ नीवृत जनपद
देश तु विषय रु आहि॥ १३
ड्वान॥ कुमुद प्राय, कुमुद्वान वड्वत सवेतस्वान॥ १

घासजुत देश को १। कीच्चजुत को १। सजल के २ ना
म॥ दोहा॥ शाद हरित, शाद्वल इकहि पंकिल तु सजंबाल॥
जलप्राये तु अनूप अथ त्यौंही कच्छ रसाल॥ १५॥ कंकरीजु
त देश के २। देशादिके २। बालूजुत देश के २। देशादि
के २। नाम॥ दोहा॥ शर्करा तु शार्करिल जुग दोय शर्करावान
॥ शार्कर सिकता सिकतल हि सैकत सिकतावान॥ १६॥ नदी
मात्रिक। देव मात्रिक। नाम॥ दोहा॥ नदी वृष्टिजलतैं
भई कृषि कर पालित देश॥ नदीमात्रक रु क्रम सहित, देवमा
त्रक हि देश॥ १७॥ सुनृप देश। सामान्य नृप देश
॥ नाम दोहा॥ उत्तम नृप जुत देश सो राजन्वान बखानि॥
राजवान तौ और सब देश नृपन के जानि॥ १८॥ ग्वाड़ा के
२। पहिले ग्वाड़ा को १। नदी पर्वतादि के समीप की
भूमि के २। पुल के २। नाम॥ दोहा॥ गोस्थान कं तौ गो
ष्ठं है सु भो पूर्व, गोष्ठीन॥ परिसर तौ पर्यन्त भू सेतु तु आलु प्र
वीन॥ १९॥ बांबी के ४। मार्ग के १७। नाम॥ दोहा॥ वा
मलूर वल्मीक पुनि, नाकु रु, बांबी चारि॥ मार्ग अयनं पद
वीं सरणि पद्धति पंथा चारि॥ २०॥ एकपदी स्रुति वर्त्मनि
सुवर्त्म रु अध्वा देषि॥ वाट रु पद्या पथ विदित, गैल राह म
ग पेषि॥ २१॥ सुमार्ग २। कुमार्ग के ५। नाम॥ दोहा॥
सत्पथ अतिपंथा त्यतिय सुपंथा इ वर राह॥ विपथं कदध्वां
कापथ रु व्यध्व दुरध्व कुराह॥ २२॥ चौराहा के २। कव

टके २। दूर और सूना को १। कठिनको। नाम ॥ दोहा ॥
शृंगाटक जुग चतुष्पथ अपथ अपंथा चारि। अंतर तो सू
नें। परे दुर्गम मग कांतार ॥ २३ ॥ दो कोश को १। च्यारसै
हाथ को १। राजमार्ग के २। पुर मार्ग को। नाम। दो
गव्यूति स्त्रूक्रोश युग नल्वं तु कर पात चारि ॥ घंटा पथ
संसरणा जुग उपनिष्कार पुर धारि ॥ २४ ॥

इति भूमि तरंगः

अथ पुर तरंग लिख्यते ॥ राजधानी के ७। नाम।
हा ॥ पूः पत्तन नगरी पुरी पुटभेदन स्थानीय ॥ निगम
सात त्यप नगर तैं भिन्न जु पुर गरा नीय ॥ १ ॥ उप नग
र को १। वेश्याघर के २। वाजार के ४। नाम ॥ दोहा
शाखा नगर हि वेश तो है वेश्याजनस्थान ॥ हट्ट
आपण हु सो वाजार जिहान ॥ २ ॥ गुदड़ी के २।
४। नाम ॥ दोहा।
वरहीन ॥ प्रतोली तु विशिखा गली रथ्या चारि प्रवीन।
॥ खाई सैं निकसी मट्टी के कूढा के। वा
र के २। डंडा के। वा। कोट के ३। वाडि के २।
नाम ॥ दोहा ॥ चयं तु वप्र जुग शाल तो वरण त्रितय:
कार ॥ प्राचीन तु प्राचीर जुग भित्ति तु कुड्य उदार ॥ ४.
जुत भीति को १। मंदिर के २१। नाम ॥ दोहा
तु है हाड जुत मंदिर तो आगार

सादनं सदनं अगार ॥५॥ भवन निकाय्य निकेतन रु निशां तपस्त्य रु गेह ॥ आलय निलय सभो कुटी शाला वास हु ले ह ॥६॥ चौसाला के १ मुनि घर के २ यज्ञ शाला के ३ हय शाला के १ नाम ॥ दोहा ॥ चतुश्शाल संजवनं जु गउकज पर्णशालों हि ॥ चैत्य आयतनं मख सदनं, मन्दु री तु हय ठौंहि ॥७॥ सुनारादि घर के ३ जलशाला के ३ नाम ॥ दोहा ॥ होय शिल्पि शाला द्वितिय आवेश ने सु दुकानं ॥ जु पानीय शाला सु तो प्रपा रु प्याऊं नाम ॥ ८॥ विद्यार्थी परि व्राजकादि स्थान के १ मध्य घर के १ घर भीतर घर के २ नाम ॥ दोहा ॥ मठ तु छात्र शिष्यादि को गंजा मादिरा स्थान ॥ गर्भागारं तु वास ग्रह हीं भाग मध्य घर जान ॥९॥ जन्म स्थान के २ झरोखा के २ मंडप के २ धनवान के घर के १ नाम ॥ दो॰ अरिष्ट तो सूति का ग्रह वातायन तु गवाक्ष ॥ मंडपं सु तो जनाश्रयं हि हर्म्यं धनिक ग्रह दक्ष ॥१०॥ सुरन्दप घर के १ राज सदन के ४ नाम ॥ दोहा ॥ सुरन्दप ग्रह प्रसाद ही राज सदन तो सौध ॥ उपकार्या उपकारिका अ थ न्त्रप घर भिद शोध ॥११॥ चतुर्द्वार तोरण के १ अ नेक मजला के १ गोलाकार के १ बिना सीढी सुन्दर के १ ॥१॥ नाम ॥ दोहा ॥ स्वस्तिक एक हि सर्वतोभद्र हि नंद्यावर्त ॥ अथ विच्छंदक आदि हू ईश्वर ग्रह भिद वर्त

॥१२॥ रनिवास के ४। अटारी के २। दरवाजे सें बाहर का चौंतरा। वा चौपारि के ३। नाम॥ दोहा॥ अन्तः पुर अवरोध पुनि अवरोधन शुद्धान्त॥ अट्ट तु क्षौम प्रघाण तो प्रघण आलिंद निशांत॥१३॥ देहली के २। अंगना के ५। चौकठ मै नीचले काठ को १। नाम॥ दोहा॥ गृहावग्रहणी देहली अंगन अंगण चारु॥ प्रांगण च त्वर अजिर पचाशिला तु नीचल दारु॥१४॥ चौकठ मे ऊपर के काठ को १। खिडकी के २। गुप्त द्वार के २। नाम॥ दोहा॥ नासा दारु जु ऊपरि को अंत द्वार तु दोय॥ प्रछन्न हु पक्षक सु तो पक्षद्वार हि होय॥१५॥ चैलाली के ३। छानि के २। नाम॥ दोहा॥ नीध्र वलीक रु तीसरें पटल प्रांत वखानि॥ पटल सु तो छदि लोक मै जाहर छानि पिछानि॥१६॥ छावने के अर्थ जो वक्र काष्ठ ता के २। कबूतर आदि के घर के २॥ नाम॥ दोहा॥ वलभी तो गोपानसी वक्र जु छादन दारु॥ है कपोत पालिका सु तु द्वितिय विटंक हि चारु॥१७॥ द्वार वा पोलि के ३। द्वार के बाह्य भाग के २। वेदी वा चौंतरा के २। नगर द्वार के २। नाम॥ दोहा॥ प्रती हार द्वा द्वार त्रय तोरण तु वहि द्वार॥ वितर्दि सो तो वेदिका गोपुर जु गपुर द्वार॥१८॥ पुरद्वार का खुरा को १। किंवाड के ३। आगल को १। सीढी पगथ्या के २। नाम॥ दोहा॥ तहां खुरा

सो. हस्ति नखं अरर कपाट किंवार ॥ अर्गल इक आरोहण तु सोपान हि निर्धार ॥ १९ ॥ नसैनीकौ झ्वारी झाडूके २ । कजोडा के २ । नाम ॥ दोहा ॥ निश्रेणि तु अधिरोहिणी संमार्जनी तु जानि ॥ शोधनी रु अवकर सु तो संकर कूडा मानि ॥ २० ॥ निकलने द्वार के २ । अच्छा स्थान के २ । गांव के २ । घर बनाने की भूमि के २ । नाम । दोहा ॥ मुख निःसरण निकर्षण तु सन्निवेश दो दोय ॥ ग्राम सु तो संवसथ जुग वास्तु वेश्म भू होय ॥ २१ ॥ गोरवां । वा । पडोस के २ । हद के २ । अहीर का गांव के २ नाम ॥ दोहा ॥ उपशल्यं तु ग्रामांत जुग सीमा सीमन धीर ॥ जु आभीरपल्ली सु तो घोष हि ग्राम अहीर ॥ २२ ॥ जंगलियो के गांव के २ नाम ॥ दोहा ॥ पक्कण तो शबरालय हि भिल्लग्राम जुग जोय ॥ शबर तु वन चांडाल ही कवि गुल्व मत होय ॥ २३ ॥

इति पुरतरंगः

अथ शैलतरंग लिख्यते ॥ ५ ॥

पर्वत १३ नाम ॥ दोहा ॥ शैल महीध्र अहार्य गिरि शिखरी क्ष्माभृत ग्राव ॥ अचल शिलोच्चय गोत्र धर पर्वत अद्रि कहाव ॥ १ ॥ जो पर्वत पृथ्वी कौं घेरे है ताके २ । लंका गिरि के २ । अस्ताचल के २ । उदयाचल के २ पर्वत भेद भिन्न भिन्न ७ । पत्थर के ८ नाम । दोहा

पर्वत लोका लोक सो चक्रवाल है जानि ॥ त्रिककुत द्विति
य त्रिकूट अथ चरम क्ष्माभ्रत मानि ॥ २ ॥ अस्त जुगल उदय
तु द्वितिय पूर्व पर्वत हि जानि ॥ पारियात्रिक रु विंध्यगिरि
माल्यवान हिमवान ॥ ३ ॥ निषध गंधमादन अपर जाने हे
म कूटादि ॥ अश्म ग्राव प्रस्तर उपल शिला दृषद पटवादि
॥ ४ ॥ गिरि की चोटी के ३ । पर्वत सें जल गिरने का
स्थान के ३ । गिरि मध्य के २ नाम ॥ दोहा ॥ कूट तु शि
खर रु शृंग त्रय भृगु तो अतट प्रपात ॥ कटक तु अद्रिनितं
ब सो मध्य भाग गिरि तात ॥ ५ ॥ पर्वत की समान पृथ्वी
के ३ । झरना का स्थान के २ झरना के ३ । नाम ॥
दोहा ॥ पर्वत सम भू भाग तो सानु प्रस्थ स्नु हि आह ॥ उत्सं
प्रस्रवण निर्झर तु झर त्रय वारिप्रवाह ॥ ६ ॥ वनाई गुफा
के २ । बिना वनाई गुफा के ४ भारी पत्थर को १ ना
म ॥ दोहा ॥ दरी कंदरा मनुजकृत देवखात बिल सो तु ॥
गुहा और गह्वर अथो गंडशैल इक होतु ॥ ७ ॥ खानि के
२ पर्वत पास के छोटे पर्वत के २ । पहाड़ी की नीच
ली भूमि को १ । ऊपरली भूमि को १ नाम ॥ दोहा
खनि आकर जुग पाद तो प्रत्यन्त पर्वत आहि । गिरि तर भू
मि उपत्यका अधित्यका उर्ध्वा हि ॥ ८ ॥ पहाड़ सें उत्प
न्न वस्तु को १ । कुंज को २ नाम ॥ दोहा ॥ धातु मनः
शिलादि जो गेरि है गैरिक कहू त्यों जोय ॥ कुंज निकुंज लतादिक

रि आच्छा दित हीं होय ॥ ९ ॥

इति शैलतरंगः

अथ वनौषधितरंग लिख्यते ॥

वन के ६ । बड़े वन के १ नाम ॥ दोहा ॥ कानन गहन अरण्य वन अटवी विपिन रु मानि ॥ सोय अरण्यानी अपर महारण्य हु जानि ॥ १ ॥ गृह के समीप बाग के २ बाग के २ राज मंत्री और वेश्या का बाग को १ नाम ॥ दोहा ॥ निष्कुट गृह आराम जुग उपवन तो आराम ॥ बाग जुगनि का मंत्रिन को वृक्ष वाटिका नाम ॥ २ ॥ राज क्रीडा बाग के २ राजा राणी क्रीडा के बाग को १ नाम ॥ दोहा ॥ आक्रीड तु उद्यान जुग साधारण वन राज ॥ सोय प्रमद वन होय जहँ क्रीडत राणी राज ॥ ३ ॥ पंक्ति के ४ लकीर के २ वन समूह को १ नाम ॥ दोहा ॥ श्रेणी आवलि पंक्ति पुनि वीथी आलि बखानि ॥ लेखा राजी जुग लं अथ वन्या वन गन मानि ॥ ४ ॥ अंकुर के २ वृक्ष के १४ नाम ॥ दोहा ॥ अभिनवोद्भिद अंकुर द्विदस महीरुह होय ॥ शाखी विटपी शाल तरु पादप कुट द्रुम सोय ॥ ५ ॥ अग म पलाशी अनोकह दुं गुत नगो दश जानि ॥ वल्ली तो प्र तती लता प्रतानि रु बल्लि बखानि ॥ ६ ॥ फैली वेलि के ३ वृक्षादि की उंचाई के ३ नाम ॥ दोहा ॥ उलप तु वीरुत गुल्मनी फैली लता बताय ॥ उच्च तो तु उत्सेध पुनि उच्छ्राय

कालीसीसमकोश। चम्पाके ४। नाम॥ दोहा॥ निंबस
र्वतोभद्र पिचुमंद हिंगनिर्यास॥ मालक नींव अरिष्ट अ
थ अयुक पींजूपो भास॥ २३॥ पिच्छिलाहु कापिलातुसे
रकाभस्मगर्भाहि॥ हेमपुष्प चांपेय पुनि चंपक चंपा आहि
॥ २४॥ चम्पाकी कलीको १ बौलसिरीके २। आस
पालाके २। अनारके ३। तमालके ३ चूंडयोंके २। ना
म॥ दोहा॥ गंधफली चंपाकली वकुल तु केसर जानि॥
वंजुल सुतो अशोक अथ दाडिम करकं वषानि॥ २५॥ शु
कवल्लभ हू तीन अथ कालस्कंध तमाल॥ तापिच्छ हु
श्रीहस्तिनी मुंडी हिरसाल॥ २६॥ जूहीके ५। पीलेफू
लकी जूहीको १। चमेलीके ३। नाम॥ दोहा॥ जुही
मागधी यूथिका अंबष्ठा गणिका हि॥ हेमपुष्पिका जातितो
मालती सुमना हि॥ २७॥ कुन्दके २। दुपहरयाके ३।
कनेरके ३। नाम॥ दोहा॥ कुन्द तु माध्य हि रक्तक तु बंधु
जीवक सुधीर॥ वंधूक हु हयमारक तु प्रात प्रास करवीर॥
२८॥ करीलके ३। धतूरके ७ नाम॥ दोहा॥ ग्रंथिल क्र
कर करीर॥ अथ कितव धूर्त धतूर॥ कनकाह्वय मातुलम
दन अरु उन्मत्त मदूर॥ २९॥ धतूरके फलको १। चित्रक
के ३। आकके १। श्वेत आकके २ नाम॥ दोहा॥ ति
हिं फल मातुलपुत्रक हि वन्हिसंज्ञक तु चार॥ पाठी चित्रक
वसुक तो अर्काह्वय मंदार॥ ३०॥ अर्कपर्ण आस्फोट पुनि

अथसिंहादिकोंनामलिख्यते॥ ॥

सिंहके ५।वघेराके ४।नाम॥दोहा॥हरिम्रगेन्द्रपंच
स्यंपुनिकेसरीहर्यक्षं॥व्याघ्रतुद्वीपीबाघअरु,शार्दूलं"
हम्रत्यक्ष॥१॥तेंदुवाँके २।शूकरके १२।वानरके ९।
नाम॥दोहा॥स्त्रगादनेस्तुतरक्षुंअथशूकरघ्रष्टिवाराहं
॥पोत्रीदंष्ट्रीकोलकिरिह,स्तब्धरोमारोमहा॥२॥घोणीकि
रिभूदारपुनिक्रोडहुवानरकीश॥प्लवगवनौकवलीमुख
ह,शाखाम्रगकपिदील॥३॥रीछके ५।गैंडाके ३।भैंस
के ५।श्रृगालके १०।विलावके ५।नाम॥दोहा॥भल्लू
कंतुभाल्लूकपुनि,नरक्षभल्लअरुअच्छ॥गंडकोखड्गी
खड्गंअथकासरसैरिभरुच्छ॥४॥वाहद्विषतंलुलायपु
नि,माहिषहिंजंबुकसोतु॥भ्ररिमायगोमायुम्रगधूर्तकं
फेरवंहोतु॥५॥वंचककोष्टुश्रृगालपुनिशिवाफेरवरुद्राद्य
राओतुविडालहुआखुभुकवृषदंशकमार्जारहै॥मूंद्द
नगोहके ४।सेहीके २।हाथीके ३।नाम॥दोहा॥
गोधेयतुगोधिकाअरुजगौधेरकगौधार॥शल्यतुश्वाविध्
शललंशल्लंशाल्लीचयलोहिवार॥७॥वातप्रमीकेर
मिडहाके ३।हरिणाके ४।नाम॥दोहा॥वातप्रमीतु
वातम्रगहकईहाम्रगकोकं।म्रगोकुरंगोवातायुपुनिअजि
नयोनिविनरोक॥८॥पैरोवाके १।रोझके ४।नाम॥दोहा॥
हरिणीकेचर्मोहितेएरोयैहिपहिचानि॥हरिणाहके

लोहपृष्ठ तौ कंक जुग चाषे किकीदिवि थाट ॥ १७ ॥ भुजकापल
कोभुजेटाके ३ काठकोराके २ सपींहाके २ नाम ॥ दो
हा ॥ धूम्याट स्तु कालिंग पुनि भृंगाह्नु दार्वा घाट ॥ शतपत्र के
सारंग तौ स्तौ कक चातक याट ॥ १८ ॥ कूकड़ाके ४ चिड़ा
को १ नाम ॥ दोहा ॥ ताम्रचूड चरणायुध रु कुक्कुट पुनि
हकवाकु ॥ चटक तु कालिविंकौ हि तिय ता की चटका ताक ॥
तिनके बच्चा १ बच्ची को कंकरेटके २ कैरकके २ ना
म ॥ दोहा ॥ चाटकैर बच्चो तिनहि चटका बच्ची तास ॥ कर्करे
टु तौ करेटु हि क्रकर तु क्रकरा हि भास ॥ २० ॥ कोकिलके ४
काकके १० डोडकाकके २ कालेकाकके २ नाम ॥
दोहा ॥ वनप्रिय तु परभृत रु पिक कोकिल ध्वांक्ष तु का
क ॥ करट अरिष्ट सकृत्प्रजा वायस बलिभुक ताक ॥ २१ ॥
आत्मघोष बलिपुष्ट द्रश परभृत अन्यका चौल ॥ ॥ द्रोण
काक दात्यूह तो कालकराठ कहु बोल ॥ २२ ॥ चीलके २ गी
धके २ सुवाके २ क्रौंचके २ बुगलाके २ नाम ॥ दो
हा ॥ आतापी तौ चिल्ल अथ गृध्र हि तिय दाक्षाय्य ॥ कीर शु
क हि क्रुङ्‌ क्रौंच जुग बक तौ कह्व कहाय ॥ २३ ॥ सारसके २
चकवा चकवीके ३ नाम ॥ दोहा ॥ पुष्कराह्व तौ सारस हि
चक्रवाक तौ कोक ॥ रथांगाह्वकादंब तौ जुग कलहंस अरे
क ॥ २४ ॥ कुररीके २ हंसके ४ हंसभेदके ३ ॥ नाम ॥
दोहा ॥ कुररतु उत्क्रोश हि अथो श्वेत गरुत चक्रांग ॥ हंस

मान सौकस थौराज हंस सर्वांग ॥२५॥ श्वेतहि लालतु चूंचप
ग मल्लिकाक्षतु गनाय ॥ मलिन चूंचपग श्याम तौ धार्तरा
ष्ट्र मुखपाय ॥२६॥ आडीके ३ वगुला की दूसरी जातिके
२ हंस की स्त्रीको नाम ॥ दोहा ॥ राटि तु राडि प्रारारि त्रय
विसकंठिका तु दोय ॥ वलाका हि तिय हंसकी वरटा नाम
हिहोय ॥२७॥ सारस की स्त्रीको १ । वागलके २ चाम चि
डीके २ नाम ॥ दोहा ॥ सारस की तिय लक्ष्मणा तिल पायि
का आहि ॥ परोष्णी ह्वै जतुका सुतौ द्वितिय अजिन पत्राहि
॥२८॥ मांखीके ३ सहत की मांखीके २ मधुमक्षि
का विशेष के २ नाम ॥ दोहा ॥ तीन वर्वणा माक्षिका नी
लां सरघा सोतु ॥ मधु माक्षिका हि पुत्तिका पतंगि का जुग हो
तु ॥२९॥ डांस के २ लघुडांस के २ झींगुर के ४ नाम ॥
दोहा ॥ दंश सुतौ वन माक्षिका लघु दंश तु दंशी हि ॥ चारि भि
ल्लिका चीरुका चीरी भृंगारी हि ॥३०॥ वरड के २ फतिंग
के २ जुगुनूके २ भंवरके १२ नाम ॥ दोहा ॥ वरटा गं
धोली जुगल शलभ द्वितीय पतंग ॥ खद्योत तु ज्योतिरिंगण
मधुकर मधु लिह भृंग ॥३१॥ भ्रमर मधुव्रत मधुप अलिं अ
ली पुष्पालिह और ॥ षटपद वहुरि द्विरेफ सब द्वादश लौकि
क भौंर ॥३२॥ मोरके ८ ताकी वाणी को १ ॥ नाम ॥ दो
हा ॥ केकी शिखी भुजंगभुक नीलकण्ठ रु मयूर ॥ वर्हीव
र्हिण शिखावल तिहिं वचके की पूर ॥३३॥ चंदोवाके २

ताकी चोटीके २। ताकी पंख के ३ नाम ॥ दोहा ॥ चन्द्रक मेचक होय अथ, चूडा शिखा बखानि ॥ बर्ह तु, पिच्छ शिखण्डि नयमोर पतङ्ग जानि ॥ ३४ ॥ पक्षीके २७ नाम ॥ दोहा ॥ पक्षी विहग विहंगमरु शकुन विहायस मानि ॥ शकुनि शकुन्ति शकुन्त खग पतत्र पत्ररथ जानि ॥ ३५ ॥ वाजी पत्री द्विज पतग विष्किर विकिर हि सोय ॥ नभसंगम नीडोद्भव रु नगौकापि त्सन होय ॥ ३६ ॥ पतत्री रु अंडज बहुरि, गरुत्मान् रु, विहंग ॥ अरु, पतत्रि सब नाम गनि विंशति सप्त प्रसंग ॥ ३७ ॥ भिन्न भिन्न पक्षीन के नाम ॥ दोहा ॥ कारंडव प्लव मद्गु पुनि, कोयष्टिक हारीत ॥ तित्तिरि कुक्कुभ टिट्टिभक जीवंजीव पुनीत ॥ ३८ ॥ लाव रु, वर्त्तक वर्त्तिका चकोर दिपहिचानि ॥ भिन्न २ पक्षी सकल नाम एक इक जानि ॥ ३९ ॥ पांख के ६। पांख की जडके २। चूंच के ३ नाम ॥ दोहा ॥ गरुत तनूरुह पत्र छद पक्ष पतत्र पिछानि ॥ पक्षमूल तो पक्षति हि चञ्चु त्रोटि दु जानि ॥ ४० ॥ पक्षीन की गति भेद के ३। नाम दोहा ॥ खगगति क्रिया प्रडीन अरु, उड्डीन रु संडीन ॥ तिरछी, ऊंची, अरु भली क्रमतें लखो प्रवीन ॥ ४१ ॥ अंडा के ३। घूंसला के २। शिशु मात्र के ७ नाम ॥ दोहा ॥ पेशी कोश रु अंड त्रय नीड कुलाय हि होत ॥ पृथुक तु शावक डिंभ शिशु अर्भक पाक रु, पोत ॥ ४२ ॥ स्त्री पुरुष के जोडे के २। दो के ३। समूह के ४। समूह भेदों के। नाम ॥ दोहा ॥ द्वंद्व तु मिथुन हि तिय पुरुष ॥

युग्मं युगलं युगं तीन ॥ निवहं व्यूहं संदोहं ब्रजं निकरं ओघं च
यं वीन ॥ ४३ ॥ विसरं समूहं रु. स्तोमं गणं संचयं समुदयं व्रा
तं ॥ समुवायं रु समुदायं पुनि. वारं वृन्दं संघातं ॥ ४४ ॥ संहति
और. कदम्बकं रु. निकुरंबं हि बाईस ॥ वृन्द भेद. अब कहत
हौं वर्गं समन करि दीस ॥ ४५ ॥ संघे सार्थं जु गजन्तु गन सजा
तीय कुल जानि ॥ तिर्यकू गन भे. यूथ इक पशु गन समजं ब.
खानि ॥ ४६ ॥ अन्य समूह. समाजं है सधर्मि कौतु. निकायं ॥
पुंजं कूटं उत्करं गरो अन्नादि को लगाय ॥ ४७ ॥ कापोतं रु म
यूरं पुनि तैत्तिरं शौकं हि आदि ॥ कापोतादि तिन तिनहि के ग
न मैं नाम विवादि ॥ ४८ ॥ पाले हुये पक्षी और मृगों के २
नाम ॥ दोहा ॥ क्रीडा हित जे पक्षि मृग पंजरादि मांधि होय
॥ सो कहियतु है गृह्यकं रु छेकं हु जग जिय जोय ॥ ४९ ॥

इति सिंहादितरंग

अथ नृतरंग लिख्यते ॥ मानुष के ६ पुरुष के ४

नाम ॥ दोहा ॥

मानुषं मर्त्यं मनुष्यं नरं मानवं मनुजं रु मानि ॥ पूरुषं पुरुषं
नरं पंचजनं पंच. पुमानं बखानि ॥ १ ॥ स्त्री के १० नाम । दोहा ।
॥ स्त्री योषित सीमंतिनी अबला योषा सोय. ॥ नारी अरु. महिला
वधू बामा वनिता जोय ॥ २ ॥ विशेष स्त्रीन के कोपना के २ ।
उत्तमा के ४ । पटरानी को १ । राजा की अन्य स्त्री को १ ।
नाम । दोहा ॥ भीरु अंगना कामिनी वाम लोचना लेखि ॥

प्रमदा कांता भामिनी ललना रमणी देखि ॥ ३ ॥ पुनि नितंबिनी सुन्दरी रामा इकइक जानि ॥ कोपना तु जुग भामिनी मत्तकाशि जी मानि ॥ ४ ॥ सुवरारोहा उत्तमा वरवर्णिनी विचारि ॥ महिषी कृताभिषेक नृप अन्य भोगिनी धारि ॥ ५ ॥ विवाहिता स्त्री के ७ नाम ॥ दोहा ॥ पत्नी पाणिगृहीति अरु सहधर्मिणी रु दार ॥ द्वितीया रु जाया वहुरि भार्या सात उदार ॥ ६ ॥ पति पुत्र वाली के २ सती के ४ प्रथम व्याही स्त्री के १ स्वयम्वर वाली के ३ कुलवती के २ पांच वर्ष की कन्या के २ नाम ॥ दोहा ॥ कुटुंबिनी तौ पुरंध्री सती तु साध्वी देखि ॥ सुचरित्रा रु पतिव्रता अध्यूढा तौ पेखि ॥ ७ ॥ अधिविन्ना द्विपाति वरा स्वयंवरा वर्या हि ॥ कुलस्त्री तु कुलपालिका कुमारी तु कन्या हि ॥ ८ ॥ दश वर्ष की कन्या के २ प्रथम रजस्वला के २ जुवान स्त्री के ५ पतोहू के ३ नाम ॥ दोहा ॥ नग्निका तु गौरी जुगल दृष्टरजा मध्या हि ॥ युवति तु तरुणी तु वधू जनी रु स्नुषा हि ॥ ९ ॥ जुवान पीहर मे होय उसके २ धनादि की इच्छा वाली के २ मैथुनेच्छा वाली के २ नाम ॥ दोहा ॥ सुचिरंटी सु सुवासिनी इच्छावती तु जोय ॥ कामुका हि अथ काम की रमत्व वसंती होय ॥ १० ॥ कामातुर हो के पति के पास जाने वाली को १ व्यभिचारिणी के ८ विन पुत्र वाली को १ पति पुत्र रहित को १ रंडा के २ नाम ॥ दोहा ॥ जावद है अभिसारिका पुंश्चली तु कुल

टाऊ॥सोय स्वैरिणी इत्वरी असती सुपांशुला रु॥११॥आठ धर्षिणी बंधकी अशिशु अशिश्वी आहि॥अवीरा तु पति सुत रहित, विधवा विश्वस्ता हि॥१२॥साधन के ३।बूढी के २।सुहागिन के २।कुरुमभुभदार स्त्री के २।नाम॥दोहा॥सखी वयस्या आलि नय पालिका तु, वृद्धा हि॥पति पत्नी तु सभर्तृका भाज्ञी प्रज्ञा आहि॥१३॥अतिबुद्धिमती के २। शूद्री को १।शूद्रा को १।नाम॥दोहा॥धीमती तु प्राज्ञी तिया शूद्रकि, शूद्री सोय॥ विजाती ह निज जाति तो, शूद्रा निज पर जोय॥१४॥अहीरिनी के २।क्षत्रियानी के २।वनियानी के २।नाम॥दोहा॥आभीरी पति जातिका रि सु, महा शूद्री आहि॥द्वि, क्षत्रियाणी क्षत्रिया अर्याणी अर्या हि॥१५॥पढाने वाली के २।मंत्र का अर्थ करने वाली के १।नाम॥दोहा॥दो॰ उपाध्यायी उपाध्याया आप पढाव॥इक आचार्या नारि जो आप हि मंत्र सिखाव॥१६॥पति योग मे पांच नाम॥दोहा॥आचार्यानी क्षत्रियी अर्यी पति की जोय। रु, उपाध्यायानी उपाध्यायी पंचम होय॥१७॥पोटा को १। वीरभार्या के २।वीरमाता के २।नाम॥दोहा॥पोटा नरा तिय रूप अथ जु वीरभार्या होय॥सु, वीरपत्नी वीरसू रु वीरमाता दोय॥१८॥प्रसूतिका के ५।नंगी स्त्री के २।नाम॥दोहा॥प्रसूतिका तो प्रसूता जाता पत्या मानि॥ प्रजाता हु अथ नग्निका इ लिय, कोटवी जानि॥१९॥दूती के २।कात्यायनी को १।नाम॥दोहा॥दूती तो संचारिका कात्यायनी जोय॥अर्द्ध वृद्ध भ-

॥वसन संजुत विधवा होय॥१९॥ सैरंध्री १। असिक्री १ नाम
दोहा॥ सैरंध्री परसदन थित स्ववश शिल्प कृत जोय॥ प्रेष्यांतः
वारिणी ज्वान असिक्री होय॥ २०॥ पातुर के ४। वारमुख्या के
नाम॥ दोहा॥ रूपाजीवा रु गणिका वारस्त्री वेश्या हि॥ सो ई
कृत जनन कारिसु है वारमुख्या हि॥ २१॥ कुटनी के २। शु-
भाशुभ जानने वाली के ३। नाम॥ दोहा॥ दोय कुट्टनी शंभ
ली परतिय पुरुष मिलानि॥ ईक्षणिका विप्रश्निका दैवज्ञा त्रय
नि॥ २२॥ रजस्वला के ७ नाम। दोहा॥ रजस्वला तौ स्त्र
ी पुष्पवती अवि जोय। उदक्या रु मलिनी तथा आत्रेयी हू
य॥ २३॥ स्त्रीरज के ३। गर्भ के वस सैं अन्नादि की विशेष अ
भिलाषा वाली के २। रजरहित स्त्री के २। नाम। दोहा
रज तु पुष्प आर्त्तव त्रय हि दोहदवती तु दोरि॥ निष्कला तु हि
गतार्त्तवा तौ निष्कला परेखि॥ २४॥ गर्भिणी के ६। वेश्या स
मूह को १। गर्भिणी समूह को १। युवती समूह को १। ना
म॥ दोहा॥ अंतर्वत्नी गर्भिणी सु आपन्नसत्वा रु॥ गुर्वि
णी हु गणिका य गण गार्भिण यौवत चारु॥ २५॥ दो बार वि
वाही के २। ताके पति को १। विशेष पति को १। नाम। दो
हा॥ पुनर्भू रु दिधिषू जुगल दोवर परणी नारि॥ तिहिं पति दि
धिषू हि द्विज सुतौ अग्रे दिधिषु विचारि॥ २६॥ बिना व्याही
का पुत्र के २। सुभगा का पुत्र के २। नाम॥ दोहा॥ दोय कन्य
का जात सुत पुनि कानीन बखानि॥ जु सौभागिनेय सु द्वितिय

तुभ गासुत पहिचानि.॥२७॥पराई स्त्रीके पुत्रको १भुवाका
पुत्रके २।नाम॥दोहा॥इक.पारस्त्रैणेय अथ पितुभगिनी
सुत ज्ञेय.॥सोय.पैतृष्वस्त्रीय अरु.दूजो.पैतृष्वसेय॥२८॥मौ
वसीके पुत्रके २।सौतेली माके पुत्रके १।कुलटाके पुत्र
केध।भिखारिनीके पुत्रके २।नाम॥दोहा॥तथा.मातृष्व
स्त्रीय अरु.जानहु.मातृष्वसेय॥वैमात्रेय.वि मातृज हि वंधुल
वांधकिनेय॥२९॥कौलटेर कौलटेय रु.असतीसुत पच ज्ञेय।
कौलटेय तौ भिक्षुकी सतिसुत.कौलटिनेय॥३०॥पुत्रके ६
पुत्रीके ५।नाम॥दोहा॥तनय पुत्र सुत आत्मज रु.वेटा सुनु
वखानि॥वेटी पुत्री आत्मजा दुहिता तनया मानि॥३१॥पु
त्री ओरकन्याके २।ओरसपुत्रके २।पिताके ३।माता
के ४।वहिनके २।ननदको १।पोतीके ३।नाम।दोहा॥
तोके अपत्य उरस्य तो ओरस हु निज जात॥तात पिता जनक हि
प्रसू तो जनयित्री मात॥३२॥जननी अ थ भगिनी स्वसा ननां
दा तु पति भगिन॥पौत्री सुता सुतात्मजा नप्त्री त्रितिय सुजा
३३॥दिवरानी जिठानीको १।भोजाईके २।नाम।दोह
भ्रात.वर्ग की भार्या.यातृ आप समाहि॥जु है.भ्रातृभार्या सुवे
प्रजावती ही आहि॥३४॥मामीके २।सासूको १।सुसरा
को १।काकाको १।नाम॥दोहा॥जु.मातुलानी मातुली
श्वश्रू पति तिय मात॥पितु पति तिय को.श्वशुर है पितृव्य पि
तु को भ्रात॥३५॥मामाको १।सालाको १।देवरके २।

ाम॥ दोहा॥ मातुल भ्राता मातके स्यालहु तिय को भ्रात॥ देवी
ो॰ देवर द्वितिय॰ पति को॰ छोटो भ्रात॥ ३६॥ भानेज के २ जवा
ई के २। पिता महादिके। नाम॥ दोहा॥ भागिनेय स्वस्रीय
अथ पुत्री पति जामतां दोय पितामह पितृ पिता प्रपितामह तिहिं
तात॥ ३७॥ सात पुरुष भीतर के २। सगा भाई के ४। नाम।
दोहा॥ त्यौं माता महं आदि हैं होय॰ सपिंड सनाभि॥ सम्मानोदर्य
ोदर्य सो सहज सगर्भ्य हू लाभि॥ ३८॥ गोतीन के ६ नाम। दो
हा॥ बांधव ज्ञाति सगोत्र पुनि स्वजन बंधु सं हू होय॥ तिन को
गनतो बंधुता भावजानि॰ ज्ञातेय॥ ३९॥ पति के ७। परपति के
२ कुंड को १ नाम॥ दोहा॥ धव प्रिय पति भर्त्ता चतुर उपप
तिं सौतो॰ जार॥ जीवत पति जारजतनय॰ कुंड नाम संसार॥ ४०॥
गोलक को १। भतीजे के २। द्वि वचन वालों के। नाम। दो
हा॥ मरें होत गोलक जु गतु भ्रात्रज अरु भ्रात्रीय॥ भ्रात भगि
नि कौं एक करि जानि भ्रातरौ जीय॥ ४१॥ पितरौ माता पितु
समुझि॰ माता पितरौ दोय॥ श्वश्रुरौ सासू ससुर सुत सुता तु पु
त्रौ होय॥ ४२॥ स्त्री पुरुष के ५। जेर के २। नाम। दोहा॥
चारि दंपती जंपती भार्या पती वखानि॥ जाया पती जरायु तौ ग
र्भाशय जुग जानि॥ ४३॥ झुल्ली भौ री ति एक न होके जो कु
कवनता है उसके २। जन्म मास के २ गर्भ के २। नपुंस
क के ४। नाम। दोहा॥ उल्व कलल वैजनन तौ सूति मास
जुग मुंड॥ भ्रूण तु गर्भ हि षंढ तो क्लीव नपुंसक पंड॥ ४४॥

लडकपन के ३। जवानी के २। बुढापा के ३। बुढापा सं-
युक्त को १ नाम॥ दोहा॥ शैशवं बाल्यं शिशुत्वं त्रय यौवन
जुगतारुण्यं॥ वृद्धत्वं तु स्थाविरं गन तु तिन को वार्द्धक गण्य
॥ ४५॥ अति बुढापा को १। बुढाई के २। दूध पीने वाले व-
च्चे के ४ नाम॥ दोहा॥ पलितं तु कच्च की सेतता जरा विस्त्रसा
होय॥ स्तनपं डिम्भ उत्तानशय स्तनंधयी चव होय॥ ४६॥ बाल-
क के २। ज्वान के ३। बूढा के ६। नाम॥ दोहा॥ बाल तु मा-
णवक हि तरुण युवा वयस्थ त्रिजानि॥ स्थविर वृद्ध जीर्ण स-
जरन प्रवया जीन छमानि॥ ४७॥ अति बूढा के ३। बडे भा-
ई के ३। नाम॥ दोहा॥ दशमी वर्षीयान त्रय ज्यायान हु अति
जीन॥ पूर्वज अग्रिय अग्रिज हि ज्येष्ठ भ्रात प्रवीन॥ ४८॥ छोटे
भाई के ५। दूबला के ३। बलवान के २। नाम॥ दोहा॥
अनुज जघन्यज अवरज रु पांच। कनिष्ठ यवीय॥ दुर्बल क्षात
अमांस त्रय अंसल मांसल वीय॥ ४९॥ दूंदला के ४। नक-
चपट के ४। नाम॥ दोहा॥ बृहत्कुक्षि तुंदिल जठर तुंदी
तुंदिक थाट॥ नतनासिक नु अवभ्रट रु अवटीट रु अवनाट॥
५०॥ अच्छे वार वाले के ३। सिमटी चाम वाले के २।
कम अधिक अंग वाले के २। बावना के ३। नाम॥ दोहा॥
केशी केशव केशिक हि वलिन वलिभ जुग सर्व॥ विकलांग
तु पोगंड जुग हृस्व तु वामन खर्व॥ ५१॥ तीखी नाक का के
२। नकटा के २। लम्बी वा चिपटी नाक का के २। दूरदूर

जांघ का के २ नाम ॥ दोहा ॥ खरसा तु खरसा सं विप्र तौ गतन
सिकं जुग जोय ॥ खुरसा खुरसा सं मज्जु तौ प्रगत जानुकं हि होय
॥ ५२ ॥ ऊंची जांघ का के २ मिली जांघ का के २ बहिरा
के २ कूबडा के २ टूंटा के २ नाम ॥ दोहा ॥ ऊर्द्ध जानुक
ऊर्द्ध ज्ञु जुग संहत जानुक संज्ञु ॥ एड बधिर कुब्ज तु गडुलं कुकुर
तु कुरा जुग संज्ञु ॥ ५३ ॥ छोटे अंग का के २ पांबला के २
मूंड मुंडाये के २ कंजा के २ लंगडा के २ नाम ॥ दोहा
ह्रस्व अल्पतनु स्रोरा तौ पंगु हि मुंडित मुंड ॥ बालिर तु केकर
खोड तौ खंजौ हि जुग जुग मुंड ॥ ५४ ॥ लहसना के ३ तिल
वाला के २ निरोगी के २ नाम ॥ दोहा ॥ जड़ुल तु कालक
पिप्लु सं हि तिल कालक तु द्वितीय ॥ तिलकं हि होय अनामय
तु जुग आरोग्य गनीय ॥ ५५ ॥ इलाज करने के २ इलाज
के ५ रोग के ७ क्षयी के ३ नाक रोग के २ छींक के ३
नाम ॥ दोहा ॥ चिकित्सा तु रुक् प्रतिक्रिया औषध भेषज स्व
धि ॥ अगद जायु भैषज्य पञ्च रोग रुजा रुक व्याधि ॥ ५६ ॥ ग
द आमय उपताप ही क्षय तौ यक्ष्मा शोष ॥ प्रतिश्याय पीनस
क्षव क्षुत क्षुत स्वव हि अदोष ॥ ५७ ॥ खांसी के २ सूजन के ३
बिवाई के २ सेहुंवां के २ नाम ॥ दोहा ॥ कास तु क्षवथु
हि शोफ तौ शोथ श्वयथु वखानि ॥ पादस्फोट विपादिका
सिध्म किलास हि मानि ॥ ५८ ॥ खाजु रोग के ४ खुजाल
के ३ फोडा के २ नाम ॥ दोहा ॥ पामा पाम विचर्चिका क

दोहा॥ स्थूलसुमनरु जो तुंडिभ तुंदिल सिध्मल सोतु॥ किलासी
हु अंध तु अदृग मूर्त्त तु मूर्छित होतु॥ ६६॥ कामके ६। पित्त
के २। कफके २। खालके २। नाम॥ दोहा॥ शुक्र तु तेजस
रेतस रु इन्द्रिय वीर्य रु बीज॥ पित्त मायु श्लेष्मा तु कफ अस्रग्ध
रा त्वच धीज॥ ६७॥ मांसके ६। सूखेमांसके ३। नाम। दोहा
मांस पलल पिशित रु तरस आमिष क्रव्य कु मानि॥ शुष्कमांस
उत्तप्त पुनि वल्लूर हु त्रय जानि॥ ६८॥ रुधिरके ८। हृदयके
३। नाम॥ दोहा॥ रुधिर असृक रक्त रु क्षतज शोणित लोहित
होय॥ लोहू अस्र हु हृदय तो हृदय कमल हृद होय॥ ६९॥ क
लेजाके २। चरबीके ३। गलेकी पिछलीनसको १। नाडीके
२ नाम॥ दोहा॥ अथ मांस तु क्लोम जुग हि वपा वसा त्रय मेद॥
मन्या नस गल पीछली सिरा तु धमनी द्वि भेद॥ ७०॥ तिलके २
गूदाके २। कान आदिके मलके २। आंतके २। पिलही
के २। नाम॥ दोहा॥ तिलक क्लोम मस्तिष्क तो गोर्द किट्ट म
ल दोय॥ अन्त्र पुरीतत गुल्म तो प्लीहा जुग जुग जोय॥ ७१॥ नस
के। कलेजा विशेषके २। लारके ३। कीचरके। नाम। दोहा
स्नायु वस्नसा यकृत तो कालखंड जुग भाषि॥ लाला सृणि
का स्यंदिनी दूषिका तु मल आंखि॥ ७२॥ विष्ठाके ८। कपार
के ३। नाम॥ दोहा॥ गूथ तु विष्ठा पूतिक विट वर्चस्क उच्
चार॥ शमल अवस्कर कर्पर तु जानि। कपाल कपार॥ ७३॥
हाडके ३। पींजराको १। रीढको १। खोपरीको १। नाम॥

दोहा ॥ अस्थि कुल्य की कस्थि अथो तनु की रुस केकाल ॥ कीकस पीठि कशेरुका शीरा करोटि रसाल ॥ ७४ ॥ पसुरी को १ अंग के ३ । देहके ११ । पैरके आगे के २ । पांव के ४ । नाम । दोहा ॥ पर्सू हाड तु पर्शुका अवयव अंग प्रतीक ॥ अप घनहू बपु गात्र तनु कायं कलेवर नीक ॥ ७५ ॥ वर्ष्म मूर्त्ति विग्रह तनू अरु संहनन शरीर ॥ प्रपद तु पादाग्र हि चरण अंघ्रि पाद पद धीर ॥ ७६ ॥ घुटने के २ । रोढी को १ । जांघ के २ । जानु के ३ । निरे हि वा जानु के ऊपर भाग के २ । टिहुनी को १ । गुदा के ३ । नाम । दोहा ॥ घुटिके गुल्फ पद गांठि अथ पार्ष्णि तिन्हा हितर जानि ॥ जंघा प्रसृता जानु तौ ऊरुपर्व प हिचानि ॥ ७७ ॥ अष्ठीवान हि ऊरु तु सक्थि हि वंक्षण सो तु ताकी संधि ॥ अपान तो गुद रु पायु त्रय होतु ॥ ७८ ॥ मूत्रस्थान को १ । कमर के ६ । नितंव को १ । नाम । दोहा ॥ वस्ति नाभि तर कटि तु कट श्रोणि फलक श्रोणी रु ॥ ककुद्मती हु नितंव तौ तिय कटि पीछु शरीर ॥ ७९ ॥ स्त्री की कटि के अग्र भाग को १ । नितंब का खडा को १ । कूला के २ । भग लिंग को १ । नाम । दोहा ॥ आगल जघन कुकुंदर तु गा ड जु वास अधरस्थ ॥ कटि प्रोथ तो स्फिच अथो लिंग योनि तु उपस्थ ॥ ८० ॥ योनि के २ । लिंग के ५ । अंड के ३ । नाम । दोहा ॥ भग तु योनि अथ मेहन रु शेफ स शिश्न वखानि ॥ मेढ्र लिंग मुष्कं तु वृषण अंडकोश त्रय मानि ॥ ८१ ॥ पीठ वंश

के नीचे की तीन हड्डी को १। पेट के ५। कुचके २। ताकी
वीटनी के २ नाम॥ दोहा॥ पक्ष वक्ष अथ। त्रिक॑ इकहि कु
क्षितु जठर। पिचंड॥ उदर तु है अथ कुच स्तनै कुचाग्र चूचु
क॑ मुंड॥ ८२॥ वाथ वो गोद के २। काती के ३। पीठ के २
कंधा के ३। नाम॥ दोहा॥ क्रोड भुजांतर॑ वक्ष सतु उरस
स्वत्स हि देषि॥ पृष्ठ तु पीठ॑ हि भुज शिर॑ तु स्कंध॑ असे पेषि
॥ ८३॥ हंसुली को १। कांख के २। बगल को १। शरीर
मध्य के ३। नाम॥ दोहा॥ ताकी संधि तु जत्रु॑ ही वाहु मू
ल जुग कक्ष॑॥ पार्श्व॑ तासु तर मध्यम तु मध्य अवलग्न दक्ष
॥ ८४॥ बांह के ३। कुहनी के २। ताके ऊपर को १। कुह
नी नीचे को १ नाम॥ दोहा॥ दोष तु बाहु प्रवेष्ट त्रय क
फोरिः कूर्पर॑ जानि॥ तिहिं ऊपर तु प्रगंड ति हिं तरे प्रकोष्ठ॑ व
खानि॥ ८५॥ गट्टा को १। मणि बंध पसौ कि गुनी लोंमा
सलवा है प्रदेश को १ नाम॥ दोहा॥ संधि जु पाणि प्र
कोष्ठ की सो मणिबंध॑ वखानि॥ ताते लय कनिष्ठ लौं वहि क
र कर्भ॑ पिछानि॥ ८६॥ हाथ के ३। प्रदेशिनी के २। अंगु
ली मात्र के २। नाम। दोहा॥ पंच शाख शय पाणि॥ त्रय अ
थ प्रदेशिनी सो तु॥ तर्जनी॑ है अथ अंगुली सो कर शाखा हो तु
॥ ८७॥ पांचों अंगुलीन के। नाम॥ दोहा॥ अथ अंगुष्ठ॑
प्रदेशिनी॑ बहुरि मध्यमा॑ जानि॥ पुनि अनामिका कनिष्ठिका
मते पांच पिछानि॥ ८८॥ मुट्ठ के ४। आदि प्र १ नाम॥ दो॰

कर रुह नखर पुनर्भव रु नख संजुत गनि चारि॥ प्रादेश तु अं
गुष्ठ अरु तर्जनि अन्तर धारि॥ ८९॥ ताल को १। गोकर्ण
को १। वितस्ति को १। नाम॥ दोहा॥ तथा ताल गोकर्ण
जुग मध्य अनामा नाप॥ छिगुनी नाप वितस्ति सो द्वादश
अंगुल थाप॥ ९०॥ पंजा के ३। मिले जुग पंजा न को १
नाम॥ दोहा॥ पाणि रु विस्तृत अंगुली प्रतल प्रहस्त चपेट
॥ सिंहतल तु जु है प्रतल जुग दक्षिण वाम विभेट॥ ९१॥ प
स्से को १। अंजुली को १। चौबीस अंगुल नाप हाथ को
१ नाम॥ दोहा॥ प्रसृत तु कुब्जो पानि अथ अंजलि दोय
मिलान॥ विस्तृत कर रु प्रकोष्ठ सब हस्त हि कहत सुजा
न॥ ९२॥ मूंठी को २। रत्नि को १। अरत्नि को १। नाम॥
दोहा॥ मुष्टि तु मूंठी ही अथो सप्रकोष्ठ मूठीसु॥ रत्नि कि
रा क अरत्नि तो छिगुनी खुले सु दीसु॥ ९३॥ व्याम को १
पौरुष को १। नाम॥ दोहा॥ विस्तृत कर भुज दुहुन को
तिरछो अन्तर व्याम॥ ऊंचो विस्तृत पाणि भुज नर मित
रुष नाम॥ ९४॥ गला के २। नाडि के ३। तीन रेखा को
डि को १। नाम॥ दोहा॥ कंठ तु गल ग्रीवा सुतो शिरो
कंधर मानि॥ कंबुग्रीवा एक सो त्रय रेखा जुत जानि
९५॥ घैटू के ३। मुख के ७। नाक के ५। होठ के ४। ना
दोहा॥ घाटा अवटु कृकाटिका वदन वक्त्र मुख आस्य॥ ल
पन तुंड आनन अथो घोणा घ्राण प्रकास्य॥ ९६॥ गंधवहा

अरु नासिका नासा पंच निहारि॥ ओष्ठ अधर रदनच्छद रु द
शन वासस हू चारि॥ ९७॥ चिवुक को १ गालके २ कन
पटीको १ दांत के ४ तालवा के २ नाम॥ दोहा॥ ति
हितर चिवुक कपोल तौ गंड हनुतु परतास॥ रदन तु दशन
रु दंत रद तालु तु काकुद भास॥ ९८॥ जीभके ३ ओठका
किनारा को १ लिलार के ३ नाम दोहा॥ रसना जिह्वा
रसज्ञा अधो। ओष्ठ के अंत॥ सृक्किणी हि इक गोधि तो अलिक
ललाट भनंत॥ ९९॥ भौंह को १ भौंह वीच को १ आंखिका
तिलके २ नाम॥ दोहा॥ भ्रू तु दृगन के ऊपरहि। कूर्च तु भ्रु
न मंझार॥ अथ कनीनिका तारका जुग दृग तिल निर्धार॥ १००
आंखिके ९ नाम॥ दोहा॥ नयन तु लोचन चक्षु रु ईक्ष
णा अक्षि वखानि॥ दृग अरु अंवक नेत्र पुनि दृष्टि नवम पहि
चानि॥ १०१॥ आंसू के ५ आंखिके किनारो को १ किनारो
सैं देखने को १॥ नाम॥ दोहा॥ अस्रु अश्रु नेत्रांबु पुनि रोदन
अस्र हि दक्ष॥ अंपाग स्तु नेत्रांत ही तिहिं कर दर्श। कटाक्ष॥
१०२॥ कानके ६। शिरके ५। नाम॥ दोहा॥ कर्ण शब्दग्रह
श्रोत्र श्रुति श्रवण रु श्रव षट जानि॥ उत्तमांग तो शीर्ष शिर
मूर्द्धा मस्तक मानि॥ १०३॥ वारके ६। वालोंके समूह के २
टेढेवालों के २। नाम॥ दोहा॥ चिकुर तु कुंतल वाल कच
केश शिरोरुह जोय॥ कैशिक कैश्य हि अलक तो चूर्णकुतल
हु होय॥ १०४॥ लिलार पर झुके वालों को १। कुमारचूडा

के २। पाटीके २। मोतीकी मालाआदिसैं वंधे केशसमूह
को १। नाम॥ दोहा॥ भ्रमरकैं एक। शिखंडकं तु काकपक्षौं जु
गमिल्ल॥ केशवेशे कवरी कचं तु अति साजे। धम्मिल्लं॥ १०५॥
चोटीके ३। जटाके २। सर्पाकार रचित केशवेशके २। न
म॥ दोहा॥ अथो। केशपाशी। शिखाचूडा तीन वखानि॥ जटा
सटां जुगं व्रतिनकी। वेणी प्रवेणी जानि॥ १०६॥ साफ़वालोंके
२। कचपर्यायसैं परे पाश आदि तीन केशसमूहवाची
ताके ३। नाम॥ दोहा॥ शीर्षण्यस्तु शिरस्यं जुग निर्मल वार
प्रसंग॥ पाशं पक्षं अरु हस्तं ये कलापार्थ कच संग॥ १०७॥
रोमके ३। मूंछडाढीको १। अलंकारकी शोभाके ५। नाम
॥ दोहा॥ रोम तनूरुह लोम त्रय मुखकच प्रमश्रु हि कथ्य॥
वेशं प्रसाधनं प्रतिकर्म आकल्पं रु नेपथ्यं॥ १०८॥ अलंकार
कर्ताके २। अलंकारयुतके ५। नाम॥ दोहा॥ अलंकरि-
ष्णुं तु जुग अलंकर्त्ता मंडितं सो तु॥ परिष्कृतं रु भूषितं अलंकृतं
रु प्रसाधितं होतु॥ १०९॥ अलंकारादिसैं अति शोभितके
२। शृंगारके २। गहनेके ५। मुकुटके २। चोटीकी मणि
के २। हारके वीचकी वडी मणिको १। नाम॥ दोहा॥
भ्राजिष्णुं तु रोचिष्णु पुनि भाटहु भूषां तु॥ अलंक्रिया अभरण
तो परिष्कार विख्यातु॥ ११०॥ विभूषणं रु मंडनं अलंकारं हि
मुकुटं किरीटं॥ शिरोरत्नं चूडामणि हि तरलं तु इक गुनकोट
॥ १११॥ चोटीकी सोनेकी पाटीके २। वींदी वा टीकाके २

नाम॥दोहा॥ वालपाश्या कनककीपटी पारितथ्याहि॥भूषन अलिक ललाटिकां द्वितिय पत्रपाश्याँहि॥११२॥ ताटंकके२ कुंडलके२ कंठीवा कंठाके२नाम॥दोहा॥ तालपत्र तौ कर्णिका कर्णावेष्टन तु आन॥कुंडलँजुगग्रैवेयतौ सुकंठ भूषाँनान॥११३॥ नाभिपर्यन्तलंबीकंठीके२ सोनेकी को१ मोतीनसें गुथीको१ नाम॥दोहा॥ लम्बन द्विति यललंतिकाँ प्रालंबिकातु हेम॥ उरस्सूत्रिकाँ मुक्तकी गूंथीमा लसनेम॥११४॥ हारके२ हारभेदोंकेलडकेके४ नाम ॥दोहा॥ हारजुगल मुक्तावली देवच्छंद तुजोय॥ सौलरको अथ यष्टितौ लतारुसरलड होय॥११५॥ हारभेदलड़भेद करि गुत्सँ यष्टिबत्तीस॥ चतुर्दिंपागुच्छार्द्ध हैगोस्तन चौसरदीस॥ अर्द्धहार द्वादशलरहि माणवकतु लर बीस॥ अथएकहि एका वली एकयष्टिकादीस॥११७॥ सत्ताईसमोतीनकीको१ भकोष्ठाभरणके४ नाम॥दोहा॥ सप्तवीस मुक्तानकीसु नक्षत्रमालाँहि॥ कटकतु आवापकवलय पारिहार्य वदआहि ॥११८॥ अंगदभूषणके२ अंगूठीके२ अंकितअंगूठी को१ नाम॥दोहा॥ केयूरतु अंगद जुगल अंगुलीयकतु आ नि॥ ऊर्मिकाँ हि सोसाक्षरा अंगुलिमुद्राँ मानि॥११९॥ कड़ाके २ स्त्रियोंकी कमरके भूषणके४ पुरुषोंकी कमरभू षणको१ नाम॥दोहा॥ कंकण कर भूषण जुगल सारसनं तुरसनारु॥ पांचमेखला सप्तकी कांचिहु प्रेंखलं चारु॥१२०॥

ए कालरकी को १। आठकीको १। सोलहकी को १ पच्चीसकी को १ नाम। दोहा॥ एकयष्टि कांची कहत आठमेखला जानि। रशना षोडशयष्टिकी पचिसकलाप वखानि॥१२१॥ विछिया। वा। पायजेबके ६। घुघरूके २। वस्त्रनके कारण के ४। अलसी आदि सैं वने वस्त्र को १ कपास सैं वने को १ रेसम सैं वने के २। पशुरोम सैं वने के २। नाम॥ दोहा॥ तुलाकोरि पादांगद रु नूपुर अरु मंजीर॥ पादकटक हंसक अथो क्षुद्रघंटिका धीर॥१२२॥ किंकिणी हु त्वक फलं कृमि रु रोम हु कारण वास॥ वाल्क तु इक क्षौमादिको॥ फाल सुतो कार्पास॥ वादर त्रयको प्रोय तो कामिको प्रोत्यौं विभाति॥ रांकव तो मृग रोमज हि चारि वसन की जाति॥१२३॥ मांडहार। वा। कोराके ४। धोये वस्त्र के जोडा को १। नाम। दोहा॥ नवांवरस्तु अनाहत रु तंत्रक रु। निष्प्रवाणि॥ उद्गमनीय तु एक है धौत वस्त्र जुग जानि॥१२४॥ धोये रेसमी को १। दुसाला आदि के २। रेसमी कपडे के २। नाम॥ दोहा॥ जु है धुप्यौ कोप्राय सो इक पत्रोर्ण वखानि॥ महाधन तु वहु मूल्य ही क्षौम दुकूल हि मानि॥१२५॥ कपडा के किनारे के २। दशी वा करण के २। दैर्घ्य। वा। वस्त्र की लम्बाई के २। वस्त्र की चोडाई। वा। पेना के २। नाम॥ दोहा॥ आवृत सुतो निवीत द्रैराह॥ आयाम तु आरोह हैं जुग विशालता परिणाह हैं॥१२६॥ पुराने कपडे के २। चीथडा के २। वस्त्रमात्र के ६। नाम

दोहा॥जीर्णवस्त्रेतु पटच्चरं हिनक्तकं कर्पटं भास॥आच्छा
दनं अंशुकं वसन चेलं सुचैलेलकं वासं॥१२७॥मोटे वस्त्र
के २। ओढ़ार। वा। बेठन के २ कंवल के २। नाम॥दोहा॥
स्थूलशाटकं तु वराशि हि प्रच्छदपट नुनिचोलं॥रल्लकं सो
तो कंवलं हि सब जुग जुग बुध बोल॥१२८॥धोती आदि के ४
उत्तरीय।वा।अंगोछा।वा।दुपट्टा आदि के ४ नाम॥
दोहा॥उपसंव्यानं अधोंशुकं रु अंतरीय परिधानं॥उत्तरासं
ग वृहतिका प्रवारं रु संव्यानं॥१२९॥अंगिया।वा। चोली के २
रजाई।वा।ओढ़ना को १ उटंगलहंगा को १ लंबा लहंगा
को १ नाम।दोहा॥चोलं तु कूर्पासकं जुगल शीत हरणा नी
शारं॥चंडातकं इकतिय वसन। अप्रपदीनं हु चार॥१३०॥
चंदवा के २ तंबू डेरा को १ कनात के ३। नाम॥दोहा॥
वितानस्तु उल्लोचं अथ दूष्यं वसन गेह जानि॥प्रतिसीरा तो
जवनिका रु तिरस्करणी मानि॥१३१॥रोली आदि सें अंग सं
स्कार के २। पोंछने के ३। उबटना के २ न्हाने के ३। चं
दनादि लेपन के ३। गई गंध कों फिर करने के २। ना
म।दोहा॥अंग संस्कारं तु परिकर्म म्रजा मार्जनो मार्ष्टि॥
उद्वर्त्तनं उत्सादनं हि स्नानं तु आप्लवं दृष्ट॥१३२॥आप्लाव
हु चार्च्चिका तो स्या सकं चर्च्चा तीन॥प्रबोधनं तु अनुबोधनं
हि गंध धरन पुनि नवीन॥१३३॥गाल आदि में कस्तूरी
आदि सें चिन्ह बनाने के २ तिलक के ४ नाम दोहा॥

सुपत्र लेखा सो। द्वितिय। पत्रांगुली निर्धारि ॥ चित्रकं तिलक
विशेषक रु तमालपत्रं हु चारि ॥ १३४ ॥ केशर के १३। लाख
के ६। नाम ॥ दोहा ॥ केशर कुंकुम अग्निशिख वरं वाल्ही
क रु धीर ॥ पिशुन रक्त संकोच पुनि पीतन अरु काश्मीर ॥
१३५ ॥ लोहित चन्दन जुग रु इक नाम त्रयो दश भाष ॥ राक्षा
लाक्षा यावं जतु द्रुमामय रु षट् लाख ॥ १३६ ॥ लवंग के २
पीत चन्दन के ३। नाम ॥ दोहा ॥ देव कुसुम श्रीसंज्ञ ही
अथ कालीयक जानि ॥ रु कालानुसार्य सु त्रितिय जायक
नाम वखानि ॥ १३७ ॥ अगुरु के ६। काला अगुरु के २
मंगल्य गंधि अगुरु को १ नाम ॥ दोहा ॥ राजार्ह तु जोंग
क अगुरु क्रिमिज वांशिक रु लोह ॥ कालागुरु अगुरु हि
सुजुत मंगल्या सोह ॥ १३८ ॥ राल के ५ धूपके २ नाम। दो॰। राल
सर्ज रस सर्व रस यक्ष धूप बहु रूप ॥ कृत्रिम धूपक तो द्वितिय लखि
वृकधूप अनूप ॥ १३९ ॥ लोहवान के ४। देवदारु धूप। वाता
यपान का तेल के ५। कस्तूरी के ३। कबाबचीनी के ३
नाम। दोहा ॥ सिल्ह तु पिंडक तुरुष्क रु यावन चारि प्रक
स ॥ श्रीवेष्ट तु वृक धूप पुनि सरल द्रव श्रीवास ॥ १४० ॥ पा
यस हू मृगमद सु तो कस्तूरी मृगनाभि ॥ कोशफल तु कक्को
लक रु कोलक तीन हि लाभि ॥ १४१ ॥ कपूर के ७ नाम ॥
दोहा ॥ चन्द्र संज्ञ हिम वालुका घनसार रु कर्पूर ॥ चन्द्र
और सिताभ्र पुनि सप्तम विदित कपूर ॥ १४२ ॥ मलयागि

रि चन्दनके ५। चन्दनभेदके ३। नाम॥ दोहा॥ मलयज
चन्दनै भद्रश्री गंधसार श्रीखंड॥ हरिचन्दन गोशीर्ष त्रय
तेलपर्णीकै हु मंड॥ २४३॥ रक्तचंदनके ५। जायफलके
२। नाम॥ दोहा॥ रक्तचन्दनं तु रंजनं रु। तिलपर्णी पत्रांग
॥ कुचंदनं हि जातिफल तौ जातिकोश जुग संग॥ २४४॥ कस्तूरि
मद आदिके समभागके बनाये पिंडके लेप विशेषके
१। घिसी हुई लेपन वस्तुके २। नाम॥ दोहा॥ मृगमद,
कक्कोल, रु अगुरु, कपूर, हि सम लेय॥ यक्षकर्दमै हि बरो
क तु और विलेपनं ज्ञेय॥ २४५॥ पीसे सुगंध द्रव्यके चो
वा अरगजाके २। सुगंध करनेवाले द्रव्य। वा चूर्णके
२। गंधद्रव्यसे वासित वस्तुके २। नाम॥ दोहा॥ वर्ति
गात्रअनुलेपनी चारिके जुग जुग जोय॥ वासयोग तो
चूर्ण ही भावित वासितं दोय॥ २४६॥ गंधमाला आ
दिके धारनको १। माथेकी मालाके ३। शिरके बीच
की मालाके १। नाम॥ दोहा॥ धारनमालादिकनको।
अधिवासनं डक आहि॥ माथे, माला माल्य स्रज गर्भक के ष
न माहि॥ २४७॥ सिरसें चोटीतककीको १। सिरसें लला
ट तककीको १। गलेतक लंबीको १। जनेऊके समान
छातीपर लटकी मालाको १। नाम॥ दोहा॥ प्रभ्रष्टकं तु
शिखा हि मैं ललामकै तु गतमाल॥ ऋजुलंबि तु प्रलंब है
वैकक्षकं तु रसाल॥ २४८॥ चोटीकी पहरी मालाके २॥

माला आदिके बनानेके २। नाम॥दोहा॥जोतिरछौ ऊपर है अर्थ। शिरलागत आहि॥ शेखर अरु आपीड हौ गनियें देखनौ हि॥१४९॥सब वस्तुसें परिपूर्ण के २। उशीसा वा। तकियाके २। बिछावनेके ३। नाम। दोहा॥ आभोग तु परिपूर्णता उपवर्ह तु उपधान शय्य नीय तु शाय्या शयनें त्र य बिछावना जान॥१५०॥ खटिया वा पलंगके ४। गेंदके २। दीयाके २। नाम॥दोहा॥ पर्यंक तु पल्यंक च व खट्वा में चौं हि जोय॥ गेंदुक तौ कंदुक हि अथ दीप प्रदीप हि दोय॥१५१॥ पीढाके २। डब्बा। वा। चोफुलाके २। कांघीके २। पीकदानके २। नाम॥दोहा॥ पीठ तु आसन संपुटक सुतै समुद्गक राह॥ कंकतिका तु प्रसाधनी पतद्ग्रह तु प्रतिग्राह॥१५२॥ बुक्का के २ दर्पणके ३। पंखाके २। नाम॥ दोहा॥ पिष्टात तु पटवास दौ हि मुकुर तु दर्पण सोय॥ आदर्शौ इत्र यव्यजन तो। तालवृंतकें हि होय॥१५३॥

इतिन्द्रतरंगः

अथ ब्रह्मतरंग लिख्यते॥ ८॥

वंशके ९। वर्णके १। नाम॥दोहा॥ अभिजन संतति गोत्र कुल अन्ववाय सन्तान॥ वंश जनन अन्वय वर्ण तौ वि प्रादि हि नान॥१॥ ब्राह्मणादिको १। राजवंशके २। नाम॥ दोहा॥ विप्र क्षत्र विट शूद्र ये चातुर्वर्ण्य वखानि॥ जु राजवीजो सो क्षत्रिय। राजवंश पहिचानि॥२॥ कुलीनके २। सज्जन

के ८। ब्रह्मचारीको १। नाम॥ दोहा॥ कुलसंभव तो बीज्यँ ही, सज्जन साधु कुलीन॥ सभ्य महाकुल आर्य अथ सु ब्रह्मचारी लीन॥ ३॥ गृही आदिके ३। आश्रमको १। ब्राह्मणके ७। नाम दोहा॥ गृही वानप्रस्थ रु, चवथे, भिक्षु हु आश्रमँ मानि॥ वाडव भूसुर विप्र द्विज रु, अग्रजन्मा जानि॥ ४॥ षट्कर्माको १। षट्कर्मके भिन्न भिन्न नाम। दोहा॥ षट्कर्मा इक कर्म तो, याग अध्ययन दान॥ याजन अध्यापन अपरप्रतिग्रह हु षट नाम॥ ५॥ धीमान् के २१। नाम॥ दोहा॥ सनं कोविद दोषज्ञ बुध पंडित कवि विद्वान्॥ सुधी विपश्चित् धीर ज्ञ सु, प्रज्ञ रु संख्यावान॥ ६॥ कृष्टि दूरदर्शी कृती सूरि दीर्घदर्शी सु॥ लब्धवर्ण रु, विचक्षण सु मनीषी हु इक्कीसु॥ ७॥ पढानेवालेके २। वेदपाठीके २। पितादिको १। आचार्यको १। नाम॥ दोहा॥ उपाध्याय अध्यापक हि श्रोत्रिय छांदस जानि। निषेकादिकृत, गुरु हि अथ इक, आचार्य बखानि॥ ८॥ यष्टव्यके ३। दीक्षितको १। नाम॥ दोहा॥ यजमान तु यष्टा व्रती अध्वरमे शिखदानि॥ सोमवाल मखमे यही, दीक्षित नाम बखानि॥ ९॥ बारम्बार यज्ञ करनवालेके २। यज्वाको १। नाम॥ दोहा॥ इज्याशील तु दूसरो, यायजूक ही जोय॥ यज्वा सो तो विधिसहित मखकारक नर होय॥ १०॥ बृहस्पतियज्ञकर्त्ताको १। सोमरस पीनेवाले यजमानके २। सर्वस्व दक्षिणासे विश्वजित् यज्ञकर्त्ताको १। नाम। दो॰

स्थपति तु गीष्पतिमखकर ॥ हि ॥ जु सोमपीती सोय ॥ सोमपँज
ग जित् मखकृतजु सु सर्ववेदा होय ॥ ११ ॥ अनूचानको १ स
मावृतको १ नाम दोहा ॥ अनूचानँ इक सांग जिहि प्रवचन
सव पढ़ि लीन ॥ समावृत्तँ गृह गमन हित जिहिं गुरु आज्ञा दी
न ॥ १२ ॥ अभिषवस्नानकर्त्ताको १ विद्यार्थीके ३ । नये
विद्यार्थीके २ सपाठीको १ नाम ॥ दोहा ॥ सुत्वाँ इक ही शि
ष्य तौ अंतेवासी छात्र ॥ प्राथमकल्पिक शैक्ष अथ सब्रह्मचारी
मात्र ॥ १३ ॥ एक गुरु के पास के पढ़नेवालनको १ अ
ग्नि के बटोरनेवालाको १ परंपरा उपदेशके ३ । नाम
॥ दोहा ॥ एक गुरुस्तु सतीर्थ्यँ अथ एक अग्निचितँ आहि ॥
परंपरा उपदेश तौ ऐतिह्य इति हाँहि ॥ १४ ॥ प्रथम ज्ञानके
१ जानकर आरंभकरनेको १ यज्ञ । वा मखनके ६
नाम ॥ दोहा ॥ पहिलो ज्ञान सु उपज्ञाँ ज्ञात्वारंभ सभाग ॥ व
क्रमँ रु अध्वरँ तु सर्व सप्तँ वितु क्रतु यागँ ॥ १५ ॥ महायज्ञके
१ नाम ॥ दोहा ॥ पाठ होम पूजा अतिथि तर्पण बलि पर
वादि ॥ महायज्ञ ये नाम हू पांच ब्रह्म यज्ञादि ॥ १६ ॥ सभा
के ८ । नाम ॥ दोहा ॥ भामा सभ्यस्तोसमिति सद आस्थान
आस्थान ॥ गोष्ठी संपद परिषदँ हु नवही नाम निदान ॥ १७ ॥
यज्ञ गृह विशेषको १ यज्ञ दर्शकको १ सभामें बैठने
वालनके ४ । नाम । दोहा ॥ प्राग्वंशस्तु सदस्य गृहूँ विधि
दर्शी तु सदस्यँ ॥ सभास्तार सामाजिक रु सभ्यँ समासद पश्य ॥

॥१८॥ तीनौ वेद के ज्ञाता के क्रम सैं येकेक। ।नाम॥
दोहा॥ उद्गाता अध्वर्यु अरु होता तीन बखानि ॥ सामयजुष
ऋक वेदवित ऋत्विज क्रमतैं जानि ॥ १९॥ ऋत्विक के २
नाम ॥दोहा॥ धनदेरोपे वर्यो हित ऋत्विज याजक जानि॥
आग्नीध्रादिक षोडश हि भिन्न भिन्न पहिचानि॥२०॥ यज्ञवे
दी को १ यज्ञ का चौंतरा के २ यज्ञ का खंभा विशेष के
२ यज्ञरक्षार्थ टट्टी को १ नाम॥दोहा॥ वेदी संस्कृत भू
मि अथ स्थंडिल चत्वर दोय॥ यूपकटक तुब्रषाल अथ कुंवा
आडरा होय॥२१॥ यज्ञस्तंभ के आगे के १। अग्निनिका
लने की दो लकडी के २ यज्ञाग्नि तीन के ३ ।नाम॥
दोहा॥ तर्म सुतौ। यूपाग्र अथ अरणी तु मंथनदारु॥ गार्हपत्य
दक्षिणाग्नि रु आहवनीयैं हु चारु॥ २२॥ तीनौं अग्नि को १
यज्ञाग्नि विशेष को १ यज्ञाग्नि के स्थल के ३ नाम
दोहा॥ त्रेता तीनौ अग्नि अथ संस्कृत अग्नि प्रणीत॥ उपचाय्य
तु परिचाय्य अरु समूह्य तीन हि मीत॥२३॥ अग्नि विशेष को
१ अग्नि की प्रिया के ३ नाम॥ दोहा॥ गार्हपत्य सैं दक्षि
णा अग्नि थाप आनाय्य॥ स्वाहा तौ हुतभुकप्रिया अग्नायी ठ
हराय॥२४॥ अग्नि जलाने की ऋचा वा मंत्र के २ छंद
को यज्ञ की खीर के २ नाम॥दोहा॥ दि सामिधेनी रु
धाय्या ऋच पद अग्नि जरानि॥ गायत्र्यादिक छंद अथ हव्य
पाक चरु मानि॥ २५॥ [illegible]

को बीजनो को १। दही मिल्यो घी को १। नाम॥ दोहा॥
आमिक्षा इक उष्ण पय पक्व माहि दधि साज्य॥ पवित्र मृग अन्य
चर्व्वीजनो दधि घृत युज पृष दाज्य॥ २६॥ खीर के २। देवपि
तर अन्न के येकेक। यज्ञपात्र के। नाम॥ दोहा॥ पायसतौ
परमान्न जुग देव अन्न तो हव्य॥ पितर अन्न तौ कव्य अथ पा
त्र स्रुवा दिहि भव्य॥ २७॥ स्रुव भेद के ४। यज्ञपशु को १।
नाम। दोहा॥ ध्रुवा जुहू उपभृत स्रुव रु स्रुचै हू इक इक जा
नि॥ उपाकृत तु पशु मंत्र जो मारन हित थित मानि॥ २८॥ य
ज्ञ पशु मारने के ३। मारे पशु के ३। नाम॥ दोहा॥ परंप
केतु प्रोक्षण रु प्रामन वधार्थक जोय॥ उपसंपन्न प्रमी
अरु प्रोक्षित मार्यो सोय॥ २९॥ विशेष हवि। वासाव
ल्य के २। होमी वस्तु को १। यज्ञांत स्नान को १। यज्ञयो
ग्य वस्तु को १। नाम॥ दोहा॥ हवि सान्नाय्य हि वषट्कृत
सो तो होमी चीज॥ अवभृथ तो दीक्षांत इक यज्ञिय मख की
चीज॥ ३०॥ यज्ञ कर्म को १। कूपादि कर्म को १। यज्ञशेष
को १। श्राद्ध शेष को १। नाम॥ दोहा॥ इष्ट तु मख मे कर्म इ
क। पूर्त कुवादि अशेष॥ यज्ञशेष तो अमृत इक विघस तु भो
जन शेष॥ ३१॥ दान के १३। मरे के लिये दान को १। नाम
दोहा॥ त्याग विहापित वितरण रु अंहति स्पर्शन दान॥ उत्स
र्जन रु विसर्जन सु विश्राणन रु सुजान॥ ३२॥ प्रतिपादन अप
वर्जन रु प्रादेशन दश तीन॥ जुत निर्वपण हि मृत हित तु और्द्ध

दैहिकौ हि वीन ॥ ३३ ॥ पितृदान के २ । श्राद्धको १ । मासिक वा । अमावस्या के श्राद्धको १ । श्राद्धकालविशेष को १ । नाम ॥ दोहा ॥ पितृदान स्तु निवापहीशास्त्रकर्म जु त श्राद्ध ॥ अन्वाहार्यतु मासिकहि कुतप तु काल जु श्राद्ध ॥ ३४ ॥ श्राद्धमे ब्राह्मण । भक्ति के २ । धर्मादि के खोजने के २ । विनय के २ । नाम । दोहा ॥ परीष्टि तो पर्येषणा अन्वेषणा रु सोय ॥ गवेषणा ही सनि सुतो अध्येषणा हि होय ॥ ३५ ॥ मागने के ४ । पूजार्थ जलको १ । पांव धोने के अर्थ जलको १ । नाम । दोहा ॥ चारि हि याञ्चा अर्थना याचना रु अभिशस्ति ॥ अर्घ्य सु तो अर्घार्थ जल पाद्य पदार्थ हि अस्ति ॥ ३६ ॥ अतिथि के निमित्त कर्म को १ । अतिथि के अर्थ साधु होने को १ । महमान । वा । पाहुना के ४ । नाम ॥ दोहा ॥ आतिथ्य तु हित अतिथि के आतिथेय तह साधु ॥ आवेशिक आगंतु अरु अतिथि गृहागत साधु ॥ ३७ ॥ अभ्यागत के २ । ताजीम के २ । पूजा के ६ । उपासना के ५ नाम । दोहा ॥ प्राघूर्णिक प्राघुणक अथ गौरवं अभ्युत्थान ॥ अर्चा अपचिति सपर्या अरु अर्हणा सुजान ॥ ३८ ॥ नमस्या रु पूजा हि वरिवस्या सुश्रूषा रु ॥ परिचर्या रु उपासना पंच उपासना चारु ॥ ३९ ॥ जाने के ५ । ध्यानी । वा । मौनी को १ नाम ॥ दोहा ॥ अटा तु अट्या पर्यटन व्रज्या डोलबै होय ॥ चर्या ईर्या ध्यानादि के सीखन कौं धीति सोय ॥ ४० ॥ आच

पारिकांक्षी॑ तपस्वी॑ तापस॑ अरु मुनि॑ देषि॥ वाचंयम॑ रु दांत॑ तौ तपक्लेशसह लेषि॥४७॥ ब्रह्मचारी के २। ऋषि के २ वेदव्रत कौं पूरा कर गुरु की आज्ञा के पाने वाले के २ जितेन्द्रिय के २। नाम॥ दोहा॥ जु ब्रह्मचारी॑ सुवर्णी॑ ऋषि॑ तु सत्यवचं॑ धारि॥ ॰॥४८॥ व्रत व पासैं भूमि पर सोने वाले के २। पवित्र के ३। पाखंडी के २। पलाश दंड को १। बांस दंड को १। ऋषि पात्र के २। ऋषि आसन को १। नाम॥ दोहा॥ स्थंडिलशायी॑ स्थांडिल॑ हि प्रयत॑ तु पूत॑ पवित्र॑॥ सर्वलिंगी॑ पाखंड॑ हि दंड पलाश॑ तु मित्र॥४९॥ आषाढ॑ हि अथ वेणु को दंड सु रांभ॑ हि भास॥ कुंडी सु तौ कमंडलु॑ हि वृषी॑ तु आसन तास॥५०॥ मृग चर्म को १। भिक्षा के समूह को १। वेदाभ्यास के २। यज्ञोपवीत के कूटने के ३। नाम॥ दोहा॥ अजिन॑ चर्म कृति॑ भैक्ष॑ तौ भिक्षागन ही जानि॥ स्वाध्याय॑ तु जप॑ सवन॑ तौ सुत्या॑ अभिषव॑ मानि॥५१॥ अघमर्षण को १। अमावस और पूर्णिमा के यज्ञ को १। नाम। दोहा॥ सर्व पाप हर जाप कौं अघमर्षण॑ पहिचानि॥ पौर्णमास॑ मख पूर्णिमा॥ दर्श॑ अमा को जानि॥५२॥ नित्य कर्म को १। कर्म विशेष को १। नाम॥ दोहा॥ तनु साधन हित नित्य को कर्म सु तौ यम॑ होय॥ नियम॑ तु साधन बाह्य जो नित्य कर्म है सोय॥५३॥ बायें कांधे की जनेऊ के २। दहिने कांधे की जनेऊ को १। कंठ मे माला का जनेऊ को १। नाम॥ दोहा॥ वामकं

धर्षित नाम जुग। यज्ञसूत्र उपवीत॥ प्राचीनावीतं तु दहिने लंबित

कंठ विनीत॥५४॥ देवतीर्थ १। प्रजापति तीर्थ १। नाम। दो

हा॥ तीर्थ जु अंगुरी कोरा थित। देव कहावै सोय॥ कार्य तु क्नि

नि अनामिका मूल माहि ही होय॥५५॥ पितृतीर्थ के ३। ब्रह्म

तीर्थ के २। नाम। दोहा॥ पैत्र्य पैत्र अरु पित्र्य त्रय अंगुठ तर्ज

निमाहि॥ अथ अंगुष्ठा मूल मै ब्राह्म ब्राह्म्य जुग आहि॥५६॥ ब्र

ह्म मे मिलने के ३। देव मे मिलने के ३। नाम॥ दोहा॥

ब्रह्मभूय ब्रह्मत्व अरु त्रतिय ब्रह्मसायुज्य॥ देवभूय देवत्व

पुनि जानि। देवसायुज्य॥५७॥ आचार विशेष को १। संन्या

स विशेष को १। नष्टाग्नि के २। दंभ सें ध्यानादि को ने

को १। नाम॥ दोहा॥ कृच्छ्र तु सांतपनादि ही माये तु अनशन

नेम॥ वीरहा तु नष्टाग्नि ही कुहना सु विधि अप्रेम॥५८॥ संस्का

र हीन के २। वेदाभ्यास रहित के २। बहुरूपिया। बाठ

ग के २। नाम॥ दोहा॥ जु संस्कारहीन तु द्वितिय व्रात्य निरा

कृत सो तु॥ अस्वाध्याय हि लिंग वृति धर्मध्वजी हि हो तु॥५९॥

ब्रह्मचर्य हीन के २। सूर्यास्त औ सूर्योदय मे सोने वाले

को १। नाम। दोहा॥ अवकीर्णी तु क्षतव्रत हि अभिनिर्मुक्त

तु भानु॥ अस्त होत जिहिं सोवतैं उदित अभ्युदितं भानु॥६०

प्रथम छोटे भाई व्याहो गये ता को १। कंवारे बडे

भाई को १। नाम॥ दोहा॥ ज्येष्ठ कवारो होय अरु अनुज

व्याहित सोय॥ परिवेत्ता परिवित्ति तो जेठ भ्रात सु होय॥६१॥

विवाह के ५। मैथुन के ६। त्रिवर्ग को १। चतुर्वर्ग को १ नाम॥ दोहा॥ पाणिपीडन तु उपयम रु उद्वाह रु उपयाम॥ परिणाय मैथुन तौ विषय ग्राम्य धर्म रत नाम॥ ६२॥ निधुवन व्यवाय अथ धर्म अर्थ अरु काम॥ सो त्रिवर्ग अथ मोक्ष जुत चतुर्वर्ग इक नाम॥ ६३॥ धर्मादि सबल होय ताको। बराती। वा। वर के सम्बन्धन को १। नाम॥ दोहा॥ सबल होय धर्मादि तौ चतुर्भद्र इक नाम॥ दूलह के प्रियमित्र सो जन्य कहवत जान॥ ६४॥

इति ब्रह्मतरंगः समाप्तः

अथ क्षात्रियतरंग लिख्यते॥ मूर्द्धाभिषिक्त वा रजपूत के ४। राजा के॥ नाम॥ दोहा॥ बाहुज तौ राजन्य पुनि क्षात्रिय चव य विराट्॥ नृप तौ क्ष्माभृत् पार्थिव रु भूप महीक्षित राट्॥ १॥ महाराज को १ महाराजाधिराज को २ नाम॥ दोहा॥ निकट भूप जिहिं वश रहे वहै अधीश्वर होय॥ सार्वभौम सब भूमिपति रु चक्रवर्ती होय॥ २॥ छोटा राजा को १ राजसूय यज्ञ को कर्त्ता द्वादश मंडल को ईश और सब राजन को शिक्षक हो उसको १ नाम॥ दोहा॥ मंडलेश्वर तु आन नृप सम्राट तु मखकार॥ राजसूय नृप शिक्षक रु बहु मंडल भर्त्तार॥ ३॥ नृप समूह को १। क्षात्रिन का समूह को १। मंत्री के ३। मंत्री से छोटे अन्य मुसाहिबों को १ नाम॥ दोहा॥ नृप गण राजक क्षात्रिय गण राजन्यक हितिदान॥ अमात्य मंत्री धी सचिव कर्म सचिव सब आन॥ ४॥

मुख्य मंत्री के २। पुरोहित के २। न्यायाधीश के ३॥ नाम
दोहा॥ महा मात्र तु प्रधान जुग पुरोहित स्तु पुरोधं॥ प्राड्विव
के तौ बादवित अक्षदर्शक हु सोध॥ ४॥ चोबदार के ४। द्व
वारके २। नाम॥ दोहा॥ द्वास्थ तु द्वाःस्थित दर्शक रु द्वार
पाल प्रतिहार॥ अनीकस्थ तौ दूसरो रक्षिवर्ग निर्धार॥ ५॥
अधिकारी के २। एक ग्राम के ठेके के दार के २। बहुत ग्रा
मों के ठेके दार को १। सोने का अधिकारी के २। नाम
दोहा॥ अधिकृत तौ अध्यक्ष ही स्थायुक ग्रामाध्यक्ष॥ गोप
अधिकृत बहुत को भौरिक कनकाध्यक्ष॥ ७॥ खजानची के
२। रनवासाधिकारी के २। रनवास का सेवक के ४।
नादर के २। सेवक के ३। नाम॥ दोहा॥ नैष्किक रूपाध्य
क्ष अथ अंतर वेशिक सत्य॥ अंतःपुर अधिकृत अधो सो वि
दल्ल स्थापत्य॥ ८॥ चारि हि सौ विद कंचुकी षंढ वर्षवर दो
य॥ अनुजीवी तौ सेवक रु अर्थी तीसर होय॥ ९॥ परोसी रा
जा को १। उस से अन्य को १। दोनों से भिन्न को १। नाम।
दोहा॥ सीम मिलत न्टप शत्रु है मित्र तु तिन तैं पार॥ उदासी
न तिन तै परे परस्पर हि व्यवहार॥ १०॥ अपने राज्य सैं पी
छे का के २। वैरी के १९। नाम। दोहा॥ पार्ष्णिग्राह तु पृष्ठ
स्थित रिपु तौ वैरी जानि॥ दुर्हद द्वेषण द्विषत अरि अहित अ
मित्र पिछानि॥ ११॥ शात्रव शत्रु सपत्न हित प्रत्यर्थी अभिघाति
॥ पर अकद स्युं विपक्ष पुनि परिपंथी रु अराति॥ १२॥ सखा के

के ३। मित्र के ३। मित्रता के ३। नाम। दोहा॥ सवयं तु स्नि
ग्धं वयस्यँ त्रय सखा तु सुहृद रु मित्र॥ सख्यं तु साप्तपदीन अरु मैत्री ती
न पवित्र॥२३॥ अनुकूल्य के २। हलकारा के ७। नाम
दोहा॥ अनुवर्तन अनुरोधँ अथ प्रणिधि स्पश चर चार॥ य
थार्हवर्ण अपसर्प पुनि गूढपुरुषँ निर्धार॥२४॥ विश्वासी
के २। ज्योतिषी के ८। शास्त्री के ३। मोदी के २। नाम। दो
हा॥ आप्त सु तौ प्रत्ययित अथ सांवत्सर दैवज्ञ॥ ज्ञानी गणक
रु ज्योतिषक कार्तान्तिक रु कृतज्ञ॥२५॥ मौहूर्तिक मौहूर्त्त अ
रु अथो ज्ञात सिद्धान्त॥ तांत्रिक हू सन्नी सु तौ गृहपति सु तनुग
आंत॥२६॥ लेखक के २। अक्षर के ४। नाम। दोहा॥ लि
पिकार तु अक्षरचण रु अक्षरचंचु बखानि॥ अक्षर संस्थान
तुं लिखित लिपि लिबि लिपी पिछानि॥२७॥ दूत के २। दूतपन
के २। पथिक के ४। नाम। दोहा॥ दूत सु तौ संदेशहर दूत्य
दूतपन गन्य॥ अध्वनीन तौ अध्वग रु पांथ पथिक अध्वन्य॥
२८॥ राज्य के अंग के ८। नाम। दोहा॥ स्वामी सुहृद अमात्य
बल राष्ट्र दुर्ग अरु कोष॥ ये राज्यांग रु प्रकृति हू नाम कहात अ
दोष॥२९॥ षड्गुण॥ नाम॥ दोहा॥ पौरश्रेणी आठ सो हे रा
ज्यांग सुजान॥ संधि रु विग्रह आसन रु द्वैध रु आश्रय यान॥
२०॥ शक्तियों के ३। नीतिशास्त्रोक्त त्रिवर्ग को १। नाम।
दोहा॥ प्रभाव रु उत्साहज रु मंत्रज शक्ति निमानि॥ क्षय
स्थान अरु वृद्धि कौं नीति त्रिवर्ग बखानि॥२१॥ प्रभाव के २।

उपायके ४। नाम। दोहा॥ कोश दंड भव तेज सो दोष प्रताप प्रभाव॥ साम दान अरु भेद पुनि दंड उपाय बताव॥ २२॥ दंड के २। मिलापके २। भेदके २। मंत्री आदिके कार्य को देखवा को १ नाम॥ दोहा॥ दंड तु साहस दम कह्यो हि साम तु सांत्व उदार॥ भेद सु तौ उपजाप अथ उपधा कामनिहार॥ २३॥ दो जनों की सलाह को १ एकान्त के ७ नाम। दोहा॥ अषडक्षीण तु जुगकृत हि विजन विविक्त कहात॥ निश्शलाक रहरह पुनि छन्न उपांशु हि सात॥ २४॥ एकान्त की वात वा। कर्म को १ विश्वास के २। अन्याय को। नाम। दो॰ रहमै भव सु रहस्य इक विस्रंभ तु विश्वास॥ यथा उचित तैं भ्रंश जो भ्रेष एक ही भास॥ २५॥ न्याय के ५। न्याय सैं जो वस्तु लीजा वे उसके ५। नाम॥ दोहा॥ देश रूप अभ्रेष पुनि कल्प समंजस न्याय॥ भजमान तु अभिनीत पुनि न्य औपयिक न्याय्य॥ २६॥ युक्ता ऽयुक्त परीक्षा को १। हुक्म के ७ नाम॥ दोहा॥ संप्रधारणा समर्थन अववाद तु निर्देश॥ आज्ञा शासन शिष्टि पुनि सात हि शास्ति निदेश॥ २७॥ मर्यादा के ४। अपराध वा आगस के ३। बांधने के २। नाम। दोहा॥ मर्यादा संस्था रु स्थिति धारणा नाम॥ आगस तु अपराध चय बंधन तौ उद्दान॥ २८॥ दूने दंड को १। राजभाग के ३। जगाति वा। कौडी को १ नाम॥ दोहा॥ दूगौ दंड हि पाद कर भागधेय बलि तीन॥ घट्टादिक मे

देय जो शुल्क एकही चीन॥२९॥ नजरिके १। कन्यादानमें और भाईबन्धु आदिके देने की वस्तुके २ नाम॥ दोहा॥ प्रादेशनं तु उपायनं रु उपग्राह्य उपहार॥ सुम्नत उपदा हरसं तो द्वितिय सु दायँ प्रकार॥३०॥ वर्त्तमान कालको १। आने वाला कालको १। तुरंत फलको १। आनेवाला फलको १ नाम। दोहा॥ तत्काल स्तु तदात्वँ अथ आयति उत्तरकाल॥ सांद्दृष्टिक तो सद्यफलँ उदर्क उत्तरकाल॥३१॥ अदृष्टभय १ दृष्टभय १ अपने सहायक से भयको १ नाम। दोहा॥ वन्हि जलादि अदृष्टभयँ स्वपरचक्रज तु दृष्ट॥ निज पक्षजभय न्टपन कौं सो तो अहिभयं इष्ट॥३२॥ कानून चलानेको २। चँवरके २। राजगद्दीके २। स्वर्णनिर्मितको १ नाम। दोहा॥ प्रक्रिया तु अधिकारँ अथ प्रकीर्णकं चामरं नेम॥ भद्रासनं तु न्टपासनँ हि सिंहासनं कृत हेम॥३३॥ छतुरीके २ राजाकी छतुरीके २। पूर्णकलशके ३ नाम। दोहा॥ आतपत्रं तो छत्रँ जु न्टपलक्ष्म तु न्टपछत्रँ॥ भद्रकुंभ तो पूर्णघटं पूर्णकुंभँ हु अत्र॥५॥३४॥ सोने की झारीके २ नाम॥ दोहा॥ भृंगार रु कनकालु को कनकपात्र यह जानि॥ कवि गुलाब भारी जगत नाहर नाम बखानि॥ ३५॥ डेराके २। मालके २। सेनांगके ४ नाम। दोहा॥ शिबिरं निवेशं हि लज्जनं तु परस्कारां जु संग॥ हस्ती हयँ रथँ पैदलँ हय चारि तु सेनांगँ॥३६॥ हाथीके १५। यूथप

के २। मदांध हाथीके २। नाम। दोहा॥ दंतावल गज द्वि
रद द्विप वारण दंती जानि॥ स्तंबेरम हस्ती करी इभ मतंग
जमानि॥ ३७॥ पद्मी नाग अनेकप स्तु कुंजर यूथप सोबु
यूथनाथ ही। मदकल तु द्वितिय मदोत्कट होतु॥ ३८॥ हाथी
के बच्चेको १ मदस्रवै हाथीके ३। विना मदके हाथी
के २। हाथीके झुंडके २ नाम। दोहा॥ कलभ तु करिश
वक। हि अथ गर्जित मत्त प्रभिन्न॥ उद्वांत तु निर्मद हि अप
हास्तिक गजता घटा॥ ३९॥ हथिनीके ३। हाथीके गाले
के २। मदके २। सूंडसैं निकस्या जलके २। हाथीके पि
रके मांसपिंडको १ नाम। दोहा॥ वशा तु करिणी धेनु
को गंड तु कट मद दान॥ करशीकर तौ वमथु अथ कुंभ पिं
ड शिर थान॥ ४०॥ कुंभ मध्यको १। ललाटको १। नेत्रगो
लकोके २। तलवाको १ नाम। दोहा॥ कुंभन के विच
विन्दु इक। अवग्रह तु लिलार॥ अक्षिकूट के तु ईषिका
निर्याणी तु निहार॥ ४१॥ कानकी जडको १। ललाटके
अधो भागको १। दांतोंके मध्यको १। कंधाको १ नाम
दोहा॥ करीमूल तौ चूलिका वाहित्थ्य तु कुंभाध॥ प्रतिम
नीतु बाहित्थ्यतर। आसन्न स्कंध। अवाध॥ ४२॥ कूंदसमू
हको १। बगलको १। आगाके भागको १। नाम। दोहा।
विन्दुजालक तु पद्मकौ हि पार्श्वभाग तौ जोय॥ पक्षभाग ही
अग्रतो दंतभाग गज जोय॥ ४३॥ जंघादि आगेको १। जंघ

दि पीछेको १ हांकने की लकरीके नाम ॥ दोहा ॥ ग जगंघादिक देशको पूर्वभागनो । गात्र ॥ अवरतु पिछलो भा गतिहिंतोत्र तु वेणुक मात्र ॥ ४४ ॥ जंजीरके ३ खूंटाको १ आंकुसके २ कमरि बांधने की रस्सीके ३ नाम ॥ दो हा ॥ निगडतु अंदुक शृंखल हि बंध थंभ आलन ॥ अंकु श शृणी अथ वरत्रा चूषा कक्ष्या नाम ॥ ४५ ॥ तय्यार करनेके २ गद्दी । वा झूलके १ लडाई के अयोग्य हाथी औ र घोडाको १ नाम ॥ दोहा ॥ दोय कल्पना सज्जनो परि स्तोम कुथ चीन ॥ वरी प्रवेणी आस्तरण वीत तु गज हय ही न ॥ ४६ ॥ हाथी बांधने के स्थानके ३ घोडा मानके १ ३ कुलीन घोडाके । नाम । दोहा ॥ वारी तो गज बं धनी गजशाला हू होय ॥ घोटक किशोरतु सो हय अर्व वाजी सो य ॥ ४७ ॥ सप्तिवाह सैंधव तुरग अश्व तुरंगम वाजि ॥ अरु गंधर्व कुलीन तो आजानेय हि साजि ॥ ४८ ॥ सीखे घो डाको १ घोडान के भेदके ४ । नाम । दोहा ॥ शिक्षि त चाल विनीत अथ वानायुज बाल्हीक ॥ पारसीक कां बोज ये देश जात दयनीक ॥ ४९ ॥ अश्वमेधयज्ञयो ग्यको १ अधिक वेगवालेको १ लदुवाके २ उ जलाको १ रथमें चलने वालेको १ ॥ नाम । दोहा ॥ अश्वमेध लायक तु ययु जवन जवाधिक जोय ॥ स्थौरि पृष्ठ्य हि कर्क सित रथ्य तु रथ हय होय ॥ ५० ॥ बछेरा को

१ घोडी के ३। घोडीन के समूह को १। घोडे की एक दिन की मंजिल को १। नाम॥ दोहा॥ वाल किसोरं हि तु वडवा वामी अश्वा तीन॥ तिहिं गरा वाडव हयम गतु इक दिन को अश्वीनं॥ ५१॥ घोडा के मध्य भाग को १। हींसने के ३। घोडा के गले की संधि को १। घोडान के समूह के २। नाम॥ दोहा॥ कक्ष्य तु हय को मध्य वट हेषा ह्रेषा चीनं॥ गलोद्देश तु निगालं हय गरा तु आश्वं आश्वीनं॥ ५२॥ घोडों की गति के ५। घोडा की नाक को १। नाम॥ दोहा॥ आस्कंदितं धोरितकं पुनि रेचितं वल्गितं जानि॥ प्लुतं हू गाति ये पांच अश्व घोणा प्रोथं वखानि॥ ५३॥ लगाम के २। सुम्भ के २। पूंछ के ३। बालयुत पूंछ के २। नाम॥ दोहा॥ खलीन कविका खुर तु शफं पुच्छ लूम लांगूलं॥ वाल हस्त तो वालधिं सुकेश सहित लांगूलं॥ ५४॥ लोटने के २। लडाई के रथ के ३। रथ विप्रोथ को नाम॥ दोहा॥ उपावृत्त तो लुठितं ही रथं तु शतांग सुजान॥ स्यंदनं ये त्रय जुद्ध रथ पुष्परथं तु रथ आन॥ ५५॥ जनाने रथ के ३। गाडा। वा। छकडा के २। गाडी के २। पालकी के २। नाम॥ दोहा॥ कर्णीरथं प्रवहरा हयनं शाकटं तु अनसा हि आहिं गंत्री कंवालि वाह्यकौ हि याप्य यान शिविका हि॥ ५६॥ डोली। वा। हिंडोला के २। वाघ चर्म परदा जुत रथ को १। कुछ सपेद और पीले कंबल के परदा सें जुत रथ को १। नाम॥ दोहा॥ डोल प्रेखांद्वैप ते वैयाघ्र हि लववान॥

आहृत कंबल पांडु सैं पांडु कंबली नाम ॥५७॥ कंबल युत को १ वस्त्र युत को १। रथ समूह के २ धुरी के २। नाम। दोहा ॥ कंबल आहृत। कांवलं हि बास्त्र तु वसन हि लीन ॥ रथ्या रथ कट्या गरा हि। धूं स्तु यन मुखं चीन ॥ ५८ ॥ तांगा। वा। रथ के अवयवमात्र के २। पहिया के २। पुठ्ठी के २। नांह के। नाम ॥ दोहा ॥ अपस्करं स्तु रथांग ही चक्रं रथांगं पिछानि ॥ नेमिं तु प्रधिं तिहिं अन्त ही। नाभिं पिंडिका जानि ॥ ५९ ॥ कुल्ला वा के २। लोह के परदा के २। जूडा के काठ के २। नाम ॥ दोहा ॥ जु अक्षाग्र कालकं सु आणी वरूथं स्तु रथ गुप्ति ॥ कूवरं स्तु तो युगंधरं हि। दोदेखि अ सुप्ति ॥ ६० ॥ रथ के नीचे के काठ को १। जूडा को १। वाहन के ५। नाम ॥ दोहा ॥ अनुकर्षं तु तर काष्ठ ही प्रसंगं युग अन्य ॥ यानं तु। वाहनं सु युग्यं पुनि धोरणं पत्रं हि मन्य ॥ ६१ ॥ क। हारा दि वाहनों को १। महावत के ४। नाम ॥ दोहा ॥ काहारा दिं वैनीतकं हि ह स्त्यारोह तु जोय ॥ निषादी रु आधोरणा सु त्ववय। हस्तिपकं होय ॥ ६२ ॥ रथवान के ८। स्यंदनारोह। वा। रथ मैं चढि के लडने वाले को १। नाम ॥ दोहा ॥ यन्ता यंता प्राजिता क्षत्ता स्थ सवेष्ट ॥ सूतं नियंता सारथी हि रथी तु रथ पित स्थ ॥ ६३ ॥ सवार के २। लडने वाले के ३। गस्त वाले के २। फौज मै सिले के २। नाम ॥ दोहा ॥ सादी अश्वारोह अथ भटतो योद्धा योध ॥ सेना रक्षकं सैनिकं हि सैन्य तु सैनिकं ॥

ध ॥ ६४ ॥ हजार सिपाही के मालिक के २ । दंडनायक के २ । फौजके मालिक के २ । नाम ॥ दोहा ॥ सहस्त्री तु, साहस्त्रं जुग, परिचर तौ परिधिस्थ ॥ सेनानी तौ वाहिनीपति ही जुग जुगस्व स्थ ॥ ६५ ॥ बखतर के २ । कमरिपट्टी के २ । टोपके ३ । नाम ॥ दोहा ॥ वार वाण कंचुक अयो सारसन तु अधिकांग ॥ शीर्षण्ये तु शीर्षक अपर, तृतिय, शिरस्त्र प्रसंग ॥ ६६ ॥ कवच के ७ । कंचुक आदि पहिने हुये के ४ । अस्त्रादि सैं कवच्च धारण किये के ४ । कवच समूह को १ नाम ॥ दोहा ॥ वर्म उरस्छद कंकटक जागर दंशन उक्त ॥ कवच तनुत्र पिनद्ध तौ असुक्त रु प्रतिमुक्त ॥ ६७ ॥ आपिनद्ध इ सन्नद्ध तौ वर्मित दंशित सज्ज ॥ व्यूढकंकट हितासु गण तौ कावचिक हि भज्ज ॥ ६८ ॥ पैदल के ७ । प्यादान के समूह को १ । नाम ॥ दोहा ॥ पत्ति तु पदग पदातिक रु पदिक रु पद रु पदाजि ॥ अरु पदाति प्यादा तौ पात्ति संघाति हिं साजि ॥ ६९ ॥ शस्त्रजीवी के ३ । अच्छे तीरन्दाज के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ कांडपृष्ठ तौ आयुधिक अयुधीय त्रय शस्त्र ॥ सु, प्रयोग विशिख तु अपर, कृतपुंख रु कृतहस्त ॥ ७० ॥ निशाने सें तीर चूकि जाय उसको १ । निषंगी । वा । धनुर्द्धर के ८ । नाम ॥ दोहा ॥ इक अपराद्ध पृषत्क सो चूक्यो तीर निशान ॥ धनुष्मान धानुष्क पुनि अस्त्री धन्वी नान ॥ ७१ ॥ केवलवाण धारी के २ । बरछी वाले के २ । लाठी वाले के । नाम ॥

दोहा॥ कांडवान् कांडीर अथ शाक्ति हेतिक सुजोय ॥ शाक्तीकहु याष्टीक तौ याष्टिहेतिक हि होय॥ ७२॥ फरसा वाले को १ तलवार वाले के २। सांग वाले को १। भाला वाले को १। ढलैत के २। नाम। दोहा॥ पारश्वधिक तु परशुधर॥ नैस्त्रिंशिक आसिपाणि॥ प्रासिक कौंतिक एक इक चर्मी तु फलकपाणि॥ ७३॥ निशान वाला के २। सहायक के ४। अगुवा के ८ नाम॥ दोहा॥ पताकी तु वैजयंतिक अनुचर सो तु सुहाय॥ अनुप्लव रु अभिसर अथो पुरोगगनाय॥ ७४॥ अग्रेसर अग्रतःसर सोय पुरस्सर जोय॥ रु पुरोगामी अग्रसर अठ्य पुरोगम होय॥ ७५॥ धीरे धीरे चलने वाले के २ जल्दी चलने वाले के २। हलकारा के २ नाम॥ दोहा॥ सु मंदगामी मंथर सु अतिजव तौ जंघाल॥ जांघिक तौ जंघाकरिक जुग जुग नाम रसाल॥ ७६॥ जल्दीमात्र के ६ जीतने शक्य को १ जीतने योग्य को १ नाम॥ दोहा॥ वेगी मतवी जवन जव त्वरित तरस्वी ज्ञेय॥ जीति शक्य तौ जय्य ही जीति जोग्य तौ जेय॥ ७७॥ जीतने वाले के ३। शत्रु के सन्मुख लडने को जाने वाले के ३ नाम॥ दोहा॥ जैत्र सु जेता ही अथो तीन अभ्यमित्रीण॥ और अभ्यमित्रीय पुनि अभ्यमित्र्य पर वीर॥ ७८॥ पहलवान के ३। बडी छाती वाले के २। रथ वाले के ७। यथेष्टगमनशील के २। अति गमनशील को १। जयनशील के ३। बहादुर

के ३ नाम ॥ दोहा ॥ ऊर्जस्वी ऊर्जस्वलै हि उरसिल तु उरस्वान ॥ रथी
रथिक रथिन ५. रथिरं अनुकामीन तु आन ॥ ७९ ॥ कामंगामी जुग
अथो अत्यंतीन हि शांत ॥ जेता जित्वर जिष्णु त्रय शूर वीर वि
क्रांत ॥ ८० ॥ रण कुशल को १ फौज के ११ व्यूह के २ ना
म ॥ दोहा ॥ सांयुगीन रणसाधु अथ पृतना चमू अनीक ॥
सेनां ध्वजिनी वाहिनी बल अनीकिनी नीक ॥ ८१ ॥ सैन्य रु च
क वरूथिनी व्यूह तु बल वि न्यास ॥ व्यूह भेद तो जुद्ध में दंडा
दिक बहु भास ॥ ८२ ॥ व्यूह के पीछे के २ फौज के पीछे के
३ नाम ॥ दोहा ॥ व्यूह पार्ष्णि तौ दूसरो प्रत्यासार विचारि ॥ से
न्य पृष्ठ तो प्रतिग्रह त्यतिय परिग्रह धारि ॥ ८३ ॥ फौज की सं
ज्ञा विशेष के नाम ॥ दोहा ॥ इक इभ इक रथ अश्व त्रय पै
दल पंच सु पत्ति ॥ पत्ति तीन सेनामुख हि सो त्रय गुल्म हि ध
त्ति ॥ ८३ ॥ गुल्म तीन गण गण त्रय तु नाम वाहिनी जानि ॥
सो त्रिगुणित पृतना यहू त्रिगुणित चमू बखानि ॥ ८४ ॥ तीन
चमू तु अनीकिनी त्रय अनीकिनी सोय ॥ दश अनीकिनी सो त्र
य तु अक्षौहिणी हि होय ॥ ८५ अथ अक्षौहिणी संख्या छप्प
य ॥ गज इक्कीस हजार आठ से सत्तर जानहु ॥ रथहु इक्कीस ह
जार आठ से सत्तर मानहु ॥ सैंधव पैंसाठि सहस छ से दश रथ
हय लज गिनि ॥ पत्ति इक लख नौ सहस तीन से पचाश हि भनि
जुग लाख अठारह सहस अर होत सात से जोर लहि ॥ यौं कवि
गुलाब अक्षौहिणी संख्या भिन्न रु मिलित कहि ॥ ८६ ॥ सम्प्रवि

के ४ । विपति के ३ । हथियार के ४ । धनुष के ७ नाम । दोहा ॥ श्रीतौ लछ्मी संपदं रु सम्पत्ति हु गनि चारि ॥ आपदं विपदं विपत्तिं अथ आयुध प्रहरणं धारि ॥ ८७ ॥ अस्त्रं शस्त्रं हू धनुषं तौ धन्वं शरासनं चापं ॥ कोदंड रु इष्वास पुनि कार्मुकं सप्तम थाप ॥ ८८ ॥ राजा कर्ण धनुष को १ । अर्जुन के धनुष के २ । धनुष के किनारे के २ । नाम ॥ दोहा ॥ काल पृष्ठं धनु कर्ण को । अर्जुन को गांडीवं ॥ गांडिव हू अटनी सुतौ । कोटि अंत धनुसीव ॥ ८९ ॥ दास्तान । बिशेष के २ । धन्वा के मध्य को १ । धनुष के चिल्ला के ॥ नाम ॥ दोहा ॥ गोधा तलं ज्याघात को वारण ॥ लस्तक सो तु ॥ धनुर्मध्य ॥ मौर्वी तु ज्यां शिंजिनी रु गुण होतु ॥ ९० ॥ धनुद्धर के आसन भेद के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ समपदं अरु वैशाखं पुनि मंडलं प्रत्यालीढं ॥ धनुधारिन के पगन के थान सहित आलीढं ॥ ९१ ॥ निशाना के ३ । वाण सीखने के २ । तीर के १३ । लोहिया तीर के २ । नाम ॥ दोहा ॥ लक्ष्यं प्रारव्यं रु लक्षं ग्रय शर अभ्यास तु ओप ॥ उपासनं हु वाण तु विशिखं मार्गण पत्री रोप ॥ ९२ ॥ खग कलंब इषु पत्कं रु प्रारं रु शिलीमुखं वाणं ॥ अशुग और अजिह्मगं हि प्रक्ष्वेडन नाराचं ॥ ९३ ॥ फोंक के २ । चलाये तीर को १ । जह [illegible] मारा के ३ । तरकस के ६ । तरवारि के ९ । कवज को १ । नाम दोहा ॥ पक्ष वाज जु रु चलित शर तो निरस्तं डक धीर ॥ लिप्तक दिग्धं विषाक्तं हीं उपासंग तूणीर ॥ ९४ ॥

तूराी इषुधिंनिषंगांघटतूरा हु अस्तिंतु कृपारा ॥मराडलाग्रकै
सियके स्टष्टिरु खड्ग सुजाणा ९५। चन्द्रहासे करपाले अरु कारवा
लंहुनवजानि ॥खड्गादिककीमूंठितै। त्सरु एकहीमानि॥
९६॥ परतलाको १। ढालके ३। हथकडाको १। मु
दगरके ३। नाम॥दोहा॥ तिहिंबंधन तै। मेखलां फल
कचर्म फलंतीन॥ तिहिं मुठि। संग्राहहि। घनं तुमुद्गरंद्रु
घणांप्रवीन॥ ९७॥ खांडाके २। गोफणाके २। लोहघो
के २। फरसा। वा। कुल्हारीके ३। नाम॥ दोहा॥ हली
तै। करवालिका भिंदिपालं स्टग चीन॥ परिघंतु। परिघात
नैपरशुंस्वधितिपरश्वधंतीन॥ ९८॥ छुरीके ४। फलकै
२। गुर्जके २। सांगको १। भालाको १। खड्गादिकीनौं
कके ४। फौजकी तय्यारी। वा। जमावके ३। नाम॥ दो
हा॥ असिपुत्री असिधेनुका शस्त्री छुरिका भास॥ शल्यंतु
शंकु हि। तोमरंतु सर्वलाहि। अथ। प्रासं॥ ९९॥ कुंतहु। कोग
तुपालिं अरु। अस्त्रिंकोटिंमतिओघ॥ जु सदाभिसारंतु सर्वस
न्नहनंरु सर्वौघं॥ १००॥ शस्त्रपूजनके। शत्रु परचढाई
के। नाम॥ दोहा॥ जु लोहाभिसारं सुविधा पूजनशस्त्र
हि जोय॥ अरिपैसेनागमनसतु। अभिषेरानं इकहोय॥
१०१॥ यात्राके ४। फौजकैफैलावके २। चलीफौजके
२। नाम॥ दोहा॥ प्रस्थानं तु। यात्रागमनं व्रज्या अभिनि
र्याराां॥ आसारंतु प्रसरराां जुगहि। चलित प्रचक्रै हिजारा॥१०२

निडर होकर शत्रुन के सन्मुख जाने को १। स्तुतिकर के भत्त: काल राजा के जगाने वालों के २ घरियारी के २ नाम॥ दोहा॥ अभय गमन रसा शत्रुपै नाम आति कर्म सोय॥ वैतालिकं तो बोधकरं चाक्रिकं घांटिकं होय ॥१०३॥ रावो वा। भाट के २ जागा वडवा के २ लडाई सैं जो नही भागे ताको १ नाम॥ दोहा॥ वंदी तो स्तुतिपाठकौ हि मगधं तु मागधं होय॥ संशप्तकं तो शपथकरि जुध आनि अवर्त्ती होय॥१०४॥ धूलि के ४ चून के २ अकुलाने के २ वैजयंती। वा। भंडा के ३ नाम॥ दोहा॥ रेणु तु धूलि रजं पांशु रजं चूर्णं तु सोदं हि आहि॥ ससुत्थ जं पिंजलं ध्वजं तु केतनं रूपता कौ हि॥१०५॥ भयानक रणभूमि को १। हम पहिलें लडैंगे उस लडाई को १ नाम॥ दोहा॥ वीराशंसनं युद्ध की भूमि जु अति भय दानि॥ हम पहिलें हम पहिल यौं अहंपूर्विका जानि॥१०६॥ हम ही पुरुष हैं ऐसे कहैं उसको १। हम ही लडेंगे ऐसें कहै उस लडाई को १। नाम॥ दोहा॥ डके रे आहो पुरुषिका संभावनं जो दर्प॥ अहंकार जो परस्पर अहमहमिका सुथर्प॥१०७॥ पराक्रम के १०। अति पराक्रम के २। नाम॥ दोहा॥ शक्ति द्रविणं सह तरस वल शौर्य पराक्रम स्याम॥ शुष्मं प्राणं विक्रमं सुनो अति शक्ति तौ हि नाम॥१०८॥ रण के परिश्रम निवारणार्थ न सरवा नेपीने को

लडाई के ३१। बाहु युद्ध के २। नाम ॥ दोहा ॥ वीरपान मदपान रण। भूत भविष्यति माहि ॥ युद्ध जन्य मृध प्रधन रण। आयोधन कलि आहि ॥ १०९ ॥ प्रविदारण। आस्कंदन रु विग्रह कलह अनीक ॥ आपराधिक रु समर युध आजि रु समिति समीक ॥ ११० ॥ समाघात संस्फोट पुनि संप्रहार संग्राम ॥ अभ्यागम अभ्यामर्द संयुग आहव नाम ॥ १११ ॥ संख्य समित समुदाय अरु संयत अभिसंपात ॥ बाहुयुद्ध तो नियुद्ध हि दोय नाम विख्यात ॥ ११२ ॥ रण। व्याकुलता के २। वीरों के गर्जने के २। हाथीन की कतार के २। वीरों के निंदा पूर्वक पुकारने को १। नाम ॥ दोहा ॥ तुमुल तुरा संकुल हि अथ सिंहनाद क्ष्वेड हि ॥ घटा तु घटनी कंदन तु जोधन कोरव आहि ॥ ११३ ॥ हाथीन के गर्जन को १। धनुष के शब्द को १। जुझाऊ नगारा के शब्द को १। हठ के ३। नाम ॥ दोहा ॥ करि गर्जित तो बृंहित हि धनुष शब्द विस्फार ॥ पटह तु आडंबर हठ तु प्रसभ अरु बलात्कार ॥ ११४ ॥ घोरवा देने के २। उत्पात के ३। मूर्च्छा के ३। प्रसिद्ध संपन्न देश को परचक्र सैं पीडने के २। नाम ॥ दोहा ॥ स्खलित छल हि उत्पात तो त्रय उपसर्ग अजन्य ॥ मूर्च्छा कश्मल मोह है अवमर्द तु पीडन गन्य ॥ ११५ ॥ घोरवे सैं दबाने के २। जीत। वा। फते के २। वैर मिटाने के ३। भागने के ८। नाम। दोहा ॥ जु है अभ्यवस्कंदन सु अभ्यासादन जानि ॥

दिजिस्मै वोयाजाय उसके भिन्नभिन्न ५। नाम॥ दोहा
द्रोणिकं प्रास्थिकं आढकिकं कौडविकं रु खारीकं॥ ये द्रोणादि
रु वीजमितवोयेखेत हिंमीक॥१३॥ खेतके ३। खेतगण के
४। नाम॥ दोहा॥ वप्रं क्षेत्रं केदार त्रय खेतगणतु केदार्यं॥
केदारकं केदारिकं रु सेत्रं चारोही आर्य॥१४॥ ढेला। वा। डग
लके २। मोगरी। वा। मेजके २। पैणी। वा। चांवुकके ३
कुदारि। वा। कष्णीके २। नाम॥ दोहा॥ लोष्टं लेष्टं ही को
टिशं तुलोष्टभेदनं हि मित्र॥ प्राजनं तोदनं तोत्रं त्रय अवदा
रणं तु खनित्रं॥१५॥ हसिया। वा सांतली के २। चडायल
वा। जोतके ३। फालके ५। नाम॥ दोहा॥ दात्रं लवित्रं
योत्रं तौ योक्त्रं त्यतिय आवंध्नं॥ फलं तु निरीषं रु कूटकं रु फाल
रु कृषिकं अवंध॥१६॥ हलके ३। संवल। वा। सैलाके २।
रिश को १। नाम॥ दोहा॥ लांगलं हलं गोदारणं सीरं हि
[illegible] सोतु॥ युगकीलकं ईषां सुतो लांगलदंडं हिहेतु॥१७॥
[illegible] हारीके २। मेढीके २। साठीके। वा। धान्यभानके
३। जौके २। नाम॥ दोहा॥ सीतां लांगलपद्धति हि खलेद
रु तौ मेधि॥ आशुव्रीहिं पाटलं यवं तु पितशूकं हि मातिराधि
॥१८॥ हरया जौके २। मटरके ४। कोद्रूके २। नाम॥ दो
हा॥ तोक्मं हरितयवं कलायं तु हरेणु खंडिकं जानि॥ सती
कं हु कोद्रव सुतौ कोरदूषं पहिचानि॥१९॥ मसूरके २। मू
ठ। वा। वनमूंगके ३। सरस्यौके। धोली सरस्योंको १

दोहा॥ वाल्हीकं तु रामठ जतुके सहस्रवेधि रु हिंगु॥ पृथ्वी कवरी वाष्पिका कारवी हु दलहिंगु॥४३॥ हरदी के ५। समुद्र फेनके ३। नाम॥ दोहा॥ निशा हृतु वरवारीनी कांचनी सु पीता रु॥ हरिद्रा हि अक्षीव तो वशिर समुद्रज चारु॥४४॥ सेंधवके ४। सांभरि के २। खारी के ३। नाम॥ दोहा॥ सैंधव सिंधुज शित शिव रु मारिास षष्ठ चत्वारि॥ रोमकं वसु कं हि पाक्य तो विड रु कृतकं त्रय धारि॥४५॥ सोंचर के ३। कालानोंन को १। राव। वा। खांड के २। पक्की चीनी। वा। मिश्री के २। नाम॥ दोहा॥ अक्षतु सौवर्चल रु चकं तिलकं तु असितं पिकानि॥ मत्स्यंडी फाणितं जुगल सिता शर्करा तो मानि॥४६॥ दही दूध मिला पदार्थ के २। सिखरिण वा। चटनी के २। कढी के २। शूल पर भुने मांस के ३। वटुवा में पके के २। रसिआव के २। घृत से बनी वस्तु पूरी आदि के २। नाम॥ दोहा॥ क्षीरविकृति तो कूर्चिका रसाला मार्जिता हि॥ निष्ठानं तु तेमनं जुगल शूलाकृत तो अ हि॥४७॥ शूल्यं भटित्रं हि पैठरं तु करव्याहि उपसंपन्नं॥ तो प्र णीतं ही प्रयस्तं तु सुसंस्कृतं हि अकृन्न॥४८॥ पानेहा व्यंजनके २। वीना अन्नके २। चिकना के ३। कोका के २ नाम॥ दोहा॥ पिच्छिलं विजिलं हि शोचित तु समस्रष्टं हि जुग जोय॥ मस्रणं तु चिक्कणं स्निग्धं ही भावित वासितं दोय॥४९॥ मुरमुरा। वा। हाबुस के २। चांवर को १। लावा को

चवडाके४।धानी।वा।वाडुरीको१वरा।वा।पूवा
को३।दहीसानासत्तू के२।भातके ६।नाम॥दोहा॥
आपक्कं तुअभ्यूषं त्रय धौतीं हिअक्षतं लज्जों॥त्रिपिटको
पृथुकं हिजो भुने धाना पूपं तु साज॥५०॥अपूपपिष्टकं कं
तुदधिसक्तुं हि जुग उक्त॥भिस्सा ओदनं अन्नं षट व्रीहिविसं
धसूभक्त॥५१॥जला अन्न।वा।भातके २।माँड को१।
भातमाँडके ३।नाम॥दोहा॥दोय भिस्सटा दग्धिका
मंडं अग्रस अन्न॥आचामे तु निस्रावं अरु मासरं हू त्रय गन्न
॥५२॥ तपसी के५।गोसें उत्पन्न होयता को१।गोवर
के।नाम॥दोहा॥तरलो यवागूश्राणाउष्णिका पांच यवागू से
य॥विलेपीं हु गव्यं तु इका है गोविट् गोमयं दोय॥५३॥च
पलाको।वा।क्षारा को१दूधके३।घीआदिको१।
पतलादहीको नाम॥दोहा॥सूको यही करीषं अथ दुग्धं
तु पयसं रु क्षीरं॥घृतदध्यादि पयस्यं अथ द्रप्सं ढील द्धो धयं
२॥५४॥घृतके४।लूणयाके२तुरत का लूणया के२।
नाम॥दोहा॥आज्यं तु सर्पिषं घृतं हविषं नवोद्धृतं तु नवनी
तं॥ह्यो गो दो होद्भव घृतं तु है हैयंगवीनं मीत॥५५॥ ❋
॥❋॥❋॥ माठामात्रके४।माठाभेदके३।नाम।दोहा
कालशेयं दंडाहतं रु अरिष्टं गोरसं चारि॥तक्रं उदश्वित मथि
तं ये चौथ अर्द्ध बिन वारि॥५६॥दहीके जलको१।पीयू
षको१।भूरवके३।ग्रासके२।नाम॥दोहा॥दधि अट

मंडतु मस्तुं इक पीपूषं तु नवक्षीर ॥ क्षुदे अशनाया बुभुक्षाग्र
से तु कंधलं हि धीर ॥ ५७ ॥ साथ पीने के २ । साथ खाने के २
प्यासके ५ । भोजन के ७ । अघाने के ७ । जूठा को १ नाम ।
दोहा ॥ तुल्यपानं तु सपीति हीसह भोजन तो सग्धि ॥ तर्ष
पिपासा उदन्या त्दर्द अथ भोजनं जग्धि ॥ ५८ ॥ जेमन आहा
रु निघस लेप रु न्याद वखानि ॥ सौहित्यं तु तर्पण त्दप्ति फेल
औं ठहि जानि ॥ ५९ ॥ चाह के ५ । अहीर के ५ । नाम ॥ दोह
पर्याप्ति इष्ट यथेप्सित रु काम निकाम प्रकाम ॥ बल्लव गोपं उ
हीर गोसंख्य रु गोधुकं नाम ॥ ६० ॥ चोपाये को १ । गायवे
मालिक के ३ । गो सम्बन्धि समूह के २ ॥ नाम ॥ दोहा ॥
पाद बंधनं तु गवादि हि गवीश्वर तु गोमान ॥ गोमी तीन गवा
व्रजं तु गोकुल गोधनं नाम ॥ ६१ ॥ जहां पहिले गायों ने
खाया उसको । बैल के ९ । बैल समूह को १ । गायों के भु
के २ । नाम ॥ दोहा ॥ पूर्व चरती गो जहां सो आशितंगवीन
॥ बलीबर्द ऋषभ रु वृषभ उक्षा भद्र प्रवीन ॥ ६२ ॥ अनड्वा
न सौरभेय रु वृषं अरु गौन वहोय ॥ वृष गण औक्षक गो गण
तु गव्या गोत्रा दोय ॥ ६३ ॥ बछडो समूह को १ धेनु ओं के
समूहको १ । बडा बैल के २ । बूढा बैल के २ । कलोर को १
नाम ॥ दोहा ॥ वात्सक धेनुकं निज गण हि महाव्रष स्तु म
हो क्ष ॥ जरद्गव तु वृद्धोक्ष सो उत्पन्न तु जातोक्ष ॥ ६४ ॥ नया
बछडा के २ । बछवामात्र के २ । नाटा के २ । बांधया को

स्नेलायक को १। नाम ॥ दोहा ॥ सद्यजाततो तर्णक हिव त्सं प्राकृत करि सभ्य ॥ दम्य वत्सवर षंडता योग्य सुतो आर्षभ्य ॥ ६५ ॥ सांडके ३। कांधको १। गलकंवरी के २। नथुवा वै लके २। नाम ॥ दोहा ॥ षंड तु गोपति इट्चर हि स्कंधदेश वह होत ॥ सास्ना गलकंवल अथो नस्तित जु गनस्योत ॥ ६६ ॥ घसीटा के २। जोतने योग्य बैल के ३। नाम ॥ दोहा ॥ पष्टवाह युग पार्श्वग हि अय प्रासंग्य वखानि ॥ शाकट युग्य हि बैल त्रय भिन्न वाहके जानि ॥ ६७ ॥ हल मैं चलने वाले के २। जो तू बैल के ४। नाम ॥ दोहा ॥ खनति रु याको वहत है हालिक सैरिक द्वैय ॥ धुर्य धूरीसा रु धूर्वह सु धुरंधर रु धौरेय ॥ ६८ ॥ ए क धुर के वहने वाले के ३। सब भार मै चलै उसके २। नाम ॥ दोहा ॥ एक धुरीरा तु एक धुर एक धुरावह जानि ॥ सर्व धुरावह तो द्वितिय सर्वधुरीण वखानि ॥ ६९ ॥ गाय के ९। नाम ॥ दोहा ॥ माहेयी गो शृंगिणी उस्रा माता आहि ॥ रु सौरभेयी अर्जुनी रोहिणी रु अघ्न्या हि ॥ ७० ॥ उत्तमा गाय को १। गाय विशेष के ५। नाम ॥ दोहा ॥ उत्तमा तु है नैचिकी शावली ध वली जोय ॥ कृष्णा कपिला पाटला मांन्वरंग करि होय ॥ ७१ ॥ एक बर्ष। दो बर्ष। चारि वर्ष। तीन वर्ष की गाय के येके के नाम ॥ दोहा ॥ एकहायनी वर्षकी द्विहायनी दो साल ॥ चतुर्हायणी च्यारिकी त्रिहायणी त्रय साल ॥ ७२ ॥ बांझ गा यके २। अकस्मात पातित गर्भ के २। गर्भिणी के २।

दूधके उपगमन सैं पतित गर्भा को १। नाम॥ दोहा॥
वशां तु वंध्या अथ स्रवदगर्भा अवतोकौं हि॥ वृषसंगमातु संधि
नी वेहत गर्भ गिराहि॥ ७३॥ उचित समय बैल के पास जा
ने वाली के २। प्रथम गाभिनि के २। सीधी गाय के २ ना
म॥ दोहा॥ काल्या उपसर्या जुगल बाल गर्भिणी सोतु॥ प्रष्ठौही
सुकरा सुतो। द्वितिय। अचंडी होतु॥ ७४॥ बहुत बेत बियानी के
२। बकेनि गाय के २। तुर्त की ब्याई के २। नाम॥ दोहा
नकूसूति स्तु। परेष्टुकौं वष्कयणी तो जानि॥ चिरसूतां नवसूति
कों सोतो। धेनु पिछानि॥ ७५॥ दुहने मे सुशीला के २। मो
टे थन वाली के २। दशासेर दूधकी के २ गहने धरी को १
वर्ष ब्यावनी को १ नाम॥ दोहा॥ सुखसंदोह्या सुव्रता पीव
रस्तनी तु जोय॥ पीनोध्नी गुरु थनी अथ द्रोणाक्षीरा होय॥ ७६॥
तु द्रोणदुग्धा अथ धरी गहने धेनुष्या हि॥ बर्ष ब्यावनी गाय ते
समां समीना आहि॥ ७७॥ थन के २। खूंटा के २। रस्सी के
२। बहुत गांठि युत पशु बांधने की रस्सी के। नाम। दो
हा॥ ऊधस आपीनं हि शिवकं कीलकं अथ संदान॥ द्विति
या। दाम पशुरज्जु तो द्वितिय। दामनी नाम॥ ७८॥ रड के ४ र
ई बांधने के खंभ के २। मथानी। वा। महेडा के २। ऊंट
के ४। ऊंट के बच्चा को १। छोटे बच्चे काठ मे बंधे उस
को १। नाम॥ दोहा॥ मंथदंडक तु मंथपुनि। वैशाखंरु मं
थानं॥ कुठरदंड विष्कंभं जुग अथ मथनी सुजान॥ ७९॥ गगो

री ॥ ८१॥ उष्ट्रं तु मय रु. क्रमेलक रु सु महांग ॥ शिशुत करभ पगबंध जुतसो. पंदवलक प्रसंग ॥ ८० ॥ बकरीके २ बकरा के ४ । भेड वा । गाडरके ७ ऊंट । भेड । बकरा । इनके समूह के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ अजा तु. छागी बकलक तु अजपुभ वस्त रु. छाग ॥ मेढ्रं वृष्णि एडक उरण अरु. ऊर्णायुं सभाग ॥ मेष उरभ्र हि औष्ट्रक तु ओरभ्रक अरु जानि ॥ आजक हू ये तीन तो तिनके गन भे मानि ॥ ८२ ॥ गदहा के ४। क्रयविक्रयसें वर्त्तमान साहूकार । वा । व्यवहारिया के ८ । व्योपारी वा । बेचने वाले के २ । नाम ॥ दोहा ॥ गर्दभ चक्रीवान खर रासभ पञ्च वालेय ॥ सार्थवाह वैदेहक रु नैगम वाणिज ज्ञेय ॥ ८३ ॥ पण्याजीव रु. वणिक पुनि क्रयविक्रयिक विचारि ॥ आपणिक हु विक्रयिक तो. विक्रेता जुग धारि ॥ ८४ ॥ लेनेवाले के २ । वनियापनके २ । मोलके ३ । मूलधनके ३ । व्याज । वा । नफाके २ । अदलाबदली । वा । लेनदेनके ४ । नाम । दोहा ॥ क्रायक क्रयिक हि वणिज्या तो वाणिज्य बिचारि ॥ मूल्य तु वस्न अवक्रय हि नीवी परिपण धारि ॥ ८५ ॥ मूलधन हि अथ अधिक फल लाभ कहावत नान ॥ परीवर्त्त नैमेय पुनि. निमय चारि. परिदान ॥ ८६ ॥ निक्षेप । वा । धरोहरके २ । फेरदेनेको १ । बेचनेको फैलाईको १ । बेचने योग्यके २ । नाम ॥ दोहा ॥ उपनिधि न्यास हि फेरनो. तो प्रतिदान हि ज्ञेय ॥ क्रय्य तु बेचन हित धरी क्रेतव्य तु है क्रेय ॥ ८७

विक्रेय क्रियाकर्म के ३। साईके ३। विक्रेय क्रियाके २। नाम ॥ दोहा ॥ विक्रेयतु पणितव्य त्रय पणयँहु सत्यंकार ॥ सत्य कृति सत्यापनँ हि विपणक्रिय क्रयहि व्चार ॥ ८८ ॥ तोल। वान पके ४। तोल के ३। नाम ॥ दोहा ॥ मान पाय्य पौतव हुवयँ भेद तु तुला वखानि ॥ अंगुलि प्रस्थहि तीन करि भिन्न भिन्न पहिचानि ॥ ८९ ॥ तुलामान ॥ दोहा ॥ आद्य माषक तु गुंज पञ्च सोलह मासा सो तु ॥ अक्ष कर्ष तोला विदित चव तोला पल होतु ॥ ९० ॥ अक्ष कनक को सुवर्ण रु बिस्त सु मुद्रा जिहान ॥ कुरुबिस्त तु पल कनक को सो पल तुला सुजान ॥ ९१ ॥ बीस तुला को भार है आचित तो दश भार ॥ आचित श्ता कट भार है कार्षापण तु उदार ॥ ९२ ॥ कार्षिक रुपयो विदित जग सो तामा को होय ॥ तो पण पैसो जगत मे तुलामान इति जोय ॥ ९३ ॥ आढकादि ४ के। मूठीभरको १। पावभरको १। सेरभरको १। नाम ॥ दोहा ॥ आढक ड्रकडक द्रोण पुनि खारी वाह वखानि ॥ अथो निकुंचक कुडव पुनि प्रस्थ आदि पहिचानि ॥ ९४ ॥ चौपाई को १। वांटके ३। धनके १३। चांदी सोना दोनों के २। नाम ॥ दोहा ॥ पाद तु चौथो भाग है अंश तु वंटक भाग ॥ रिक्थ रु ऋक्थ धनो वित्त वसु अरु स्वापतेय सभाग ॥ ९५ ॥ द्रव्य हिरण्य रु रै द्रविण विभव द्युम्न अरु अर्थ ॥ हेम रूप्य कृत अकृत मे कोश हिरण्य समर्थ ॥ ९६ ॥ ताम्रादि द्रव्य को १। तामा रूपा के मेलको १।

मरकत मारोके ३।नाम॥दोहा॥तिनतैं अन्पत कुघैड़
करूप्पं तुजुगमिलिहोय॥अश्मगर्भ गारुत्मत रु। हरिन्म
णीहि जियजोय॥९७॥पद्मराग॥कुरुविन्द॥माणिक्य के ३।मो
तीके २।मूंगाके २।नाम॥दोहा॥शोणरत्नलोहितक
न्यपद्मरागमुक्तातु॥मौक्तिकजुग विद्रुमसुतो।द्वितियप्रव
लकहातु॥९८॥पद्मरागादि और मोती आदि रत्नमा
त्रके २।सोनाके १९।सोनाकेगहनाको १।नाम।दो
हा॥अश्मजातिमेरत्नमणीमुक्तादिकमेंकीय॥शातकुंभ
हाटक कनकं जातरूपतपनीयं॥९९॥कर्बुरं रुक्म महारजत
गर्भहिरण्य रु स्वर्ण॥कार्त्तस्वरं जांबूनदं रु कांचनहेमसुव
र्ण॥१००॥चामीकर गांगेयपुनि अष्टापद उनईस॥अलंकार
जोकनककोशृंगीकनकहिदीस॥१०१॥चांदीके ७।पीतर
के २।नाम॥दोहा॥श्वेत रूप्यं दुर्वर्णपुनि तार रजत रु खर्जूर
कलधौत हु अरु रीति सो।आरकूटमसहूर॥१०२॥तामा
के ६।लोहाके ११।लोह मैल।वा।कीटको।सबधा
तुको १।फालको १।नाम॥दोहा॥ताम्रकंशुल्वं रु म्ले
च्छमुखद्विष्ट उदुंबर सोय॥षट।वरिष्टलोह तु अयस शस्त्रक
तीक्ष्णसुहोय॥१०३॥अश्मसारकालायसं रु पिंड हुअश्मकेइ
र॥सिंहाण हु सवधातुतो लोह कुशी तुमसूर॥१०४॥काच
के २।पाराके ४।भैंसकेसींगको १।अबरखको नाम।
दोहा॥क्षार काचं चपल तुरसं पारद सूत प्रवीन॥भैंसिसींगगव

लौं हि अभलेअभ्रक गिरिजौ हु तीन ॥ १०५ ॥ सुरमाके ४ । तू
तिया के ५ । रसोत । चा ॥ सांजन को ४ । नाम ॥ दोहा
कापोतांजनयामुन रु स्त्रोतांजन सोवीर ॥ शिखिग्रीव तुत्थां
जन रु और वितुन्नकै धीर ॥ १०६ ॥ पांच मयूरक कर्परी ताक्ष्यं
शैल तो मानि ॥ तुत्थं रसगर्भ दार्विकौ क्वाथोद्भव पहिचानि ॥
१०७ ॥ गंधक के ३ । कालासुरमाके ३ । अंजन बिशेष
के ४ । हरितालके । नाम ॥ दोहा ॥ गंधाश्मासौ गंधिक
रु गंधकै चक्षुष्यो तु सुकुलाली रु । कुलात्थिका कुसुमांजन तुक
हतु १०८ रीतिपुष्प पौष्प कं चवथ पुष्प के तु अथ ताले ॥ ह
रितालकं पुनि पीतनं रु पिंजरं पंचम आल ॥ १०९ ॥ शिला
जित के ५ । गंधरस के ५ । नाम ॥ दोहा ॥ शिलाजतु तु अ
श्मज सु पञ्च गिरिज अथ्य गेरेयं ॥ बोलं गंधरसं प्राण पञ्च पिं
डं गोपरसं ज्ञेय ॥ ११० ॥ समुद्रफेन के ३ । सिंदूर के २ । सी
साके ४ । रांग के ४ । रूई के २ । कुसुंभ के ३ । नाम ॥ दोहा
अब्धिकफं तु हिंडीर त्रय फेन हु अथ सिंदूर ॥ नाग संभवं हि ना
गं तो सीसकं वप्रमसूर ॥ १११ ॥ योगेष्टं हु पिच्चटं तु त्रपु रंगं वंग पि
चुं तूलं ॥ कमलोत्तरं तो वन्हि शिखं महारजतं त्रिक तूल ॥ ११२ ॥
कंवल के २ । खरगोस के । रोमवस्त्र के २ । सहत के ३ । मो
म के २ । नाम ॥ दोहा ॥ मेषकंबल तु दूसरो ऊर्णायु हि शश
लोभ ॥ प्राप्रोरो मास्तिकं सौद्रं मधुं भपाच्छिष्ट तौ मोम ॥ ११३ ॥
मैनसिल के ४ । नैपाली मैनशिर के ३ । नाम ॥ दोहा ॥

नागजिह्विकामनोह्वा रु॰ नेपुत्रा आहि ॥ मनःशिला कुनटी सुतो नेपाली गोलाहि ॥ ११४ ॥ अलदारके ३ । सज्जी के ३ नाम ॥ दोहा ॥ यवाग्रज तु यवक्षार ॥ सुवर्चिका हि अरु कापोत ॥ औरसार्जिका क्षार त्रय सुवर्चिका जुत होत ॥ ११५ ॥ सोंचरके २ । वंशलोचनके २ । श्वेतमरिच शोभांजनके २ । नाम ॥ दोहा ॥ रुचक तु सौवर्चल जुगल वंशरोचना सोतु ॥ त्वक्क्षीरी ही शिग्रुज तु श्वेत मरिच जग होतु ॥ ११६ ॥ कुरवकी जडको १ । पीपलामूलके ३ । जटामासी के २ । पतंग के २ । मिले सोंठि मिरच पीपरि के । २ । मिले हरर बहेरा आंवरा के ३ नाम ॥ दोहा ॥ मोरट तो जड अरवकी अथ पिप्पली मूल ॥ ग्रंथिक चटका शिरं त्रय है गोलोमी तु कफूल ॥ ११७ ॥ भूतकेशी पतंग तो रक्तचन्दनं हि आहि ॥ त्रिकटु तु त्र्यूषण व्योष त्रय फलत्रिक तु त्रिफला हि ॥ ११८ ॥

इति वैश्य तरंगः

अथ शूद्र तरङ्ग लिख्यते ॥

शूद्रके ३ । करणादि से चंडाल तक के नाम ॥ दोहा ॥ शूद्र जघन्यज वृषल पुनि अवर वर्ण चत्वारि ॥ संकीर्ण तु चंडाल लौं करणादिक निर्धारि ॥ १ ॥ शूद्र स्त्री और वैश्य सें उत्पन्न को १ । वैश्य स्त्री और ब्राह्मण सें उत्पन्न को १ । शूद्र स्त्री क्षत्री सें उत्पन्न को १ नाम ॥ दोहा ॥ शूद्रा विप्रज तु सुत करण वैश्या द्विज अंबष्ठ ॥ शूद्रमें क्षत्रिय

ज,तौ उग्र नाम जगतिष्ठ ॥ २ ॥ क्षत्रिया स्त्री वैश्य सैं उत्पन्न को १ क्षत्रिया स्त्री शूद्र सैं उत्पन्न को १ नाम । दोहा । मागधौ विप्रा क्षत्रियाजु जो अर्याक्षत्रिय तात ॥ माहिष्यौ हिस्त्रौं सुतो अर्या शूद्र जतात ॥ ३ ॥ ब्राह्मणी स्त्री मै क्षत्रिय सैं उत्पन्न को १ ब्राह्मणी मै वैश्य सैं उत्पन्न को १ नाम ॥ दोहा ॥ ब्राह्मणि मै क्षत्रिय जतौ सूतै नाम विख्यात ॥ ब्राह्मणि ही मै वैश्य जनु है वैदेहक नात ॥ ४ ॥ शूद्रा वैश्य की लडकी मै वैश्या और क्षत्रिय के लडके सैं उत्पन्न को १ ब्राह्मणी मै शूद्र सैं उत्पन्न को १ नाम ॥ दोहा ॥ रथकारं तु माहिष्यतैं करणी मै उपजात ॥ चंडाल तु विप्राणी मै वृषल तनय विख्यात ॥ ५ ॥ चितेरा आदि के २ सब का सजातीय समूह को १ उन कुलों के प्रधान के १ माली के २ नाम दोहा ॥ शिल्पी कारु हि श्रेणी तो तिहिं सजाति गण चारि ॥ कुलक कुल श्रेष्ठी हि अथ मालिक मालाकार ॥ ६ ॥ कुम्हार के २ राज के २ कोली के २ दरजी के २ रंगसाज के २ शिकलीगर के २ चमार के २ नाम ॥ दोहा ॥ कुंभकार तु कुलाल अथ लेपक तो पलगंड ॥ तंतुवाय तु कुविंद जुग तुन्नवाय तो मंड ॥ ७ ॥ सौचिक रंगाजीव तो चित्रकर हि निर्धार ॥ शस्त्रमार्ज असिधावकौ हि पादुकृत चर्मकार ॥ ८ ॥ लुहार के २ सुनार के ५ नाम ॥ दोहा ॥ व्योकार तु लोहकारक रुक्मकारक तु चार ॥ स्वर्णकार नाडिंधम रुपंच कलाद सुनार ॥ ९ ॥

चुरिहारके २ । ठठेरा के २ । खाती के ४ । नाम ॥ दोहा ॥
शांखिक कांबविक हि जुगल । शुल्ब कुट्टक तु दोय ॥ शौल्बिक ते
कांकाष्ठतक्ष त्वष्टा वर्द्धकि होय ॥ १० ॥ गांव के खाती को १
स्वधान खाती को १ । नाई के ४ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ ग्रामत
क्षती ग्रामवस । कौटतक्ष स्वधीन ॥ दिवाकीर्त्ति मुंडी क्षुरी ना
पित चारि प्रवीन ॥ ११ ॥ धोबी के २ । कलार के २ । गडरिया
के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ रजक तु निर्णेजक अथो मंड हारक सुरे
य ॥ शौंडिक हि जावाल तो अजाजीव जुग जोय ॥ १२ ॥ पंडा वा
पुजारी के २ । इन्द्रजालके २ । इन्द्र जाली के २ । नाम
दोहा ॥ देवाजीव देवल हि । सांबरी तु मायो हि ॥ जुग जुग मा
याकार तो प्रातिहारिक हि आहि ॥ १३ ॥ नटके ६ । कथकके
२ । नाम ॥ दोहा ॥ शैलाली भर्त्ता नट रु कृशाश्वी रु शैलूष
॥ जायाजीव हि चारण तु कुशीलव हि सज रूष ॥ १४ ॥ मृदंग
बजाने वाले के २ । ताली बजाने वाले के २ । बांसुरी ब
जाने वाले के २ । बीणा बजाने वाले के २ । नाम ॥ दोहा
मार्दंगिक मौरजिक जुग पाणिघ तु पाणिवाद ॥ वेणुध्मा वै
णविक जुग वैणिक वीणावाद ॥ १५ ॥ चिड़ीमार के २ । जा
लिकके २ । कसाई के ३ । नाम ॥ दोहा ॥ जीवांतक शाकु
निक जुग जालिक वागुरिक हि ॥ वैतंसिक तो कौटिक रु मांसि
क तीन निदाहि ॥ १६ ॥ मजूर के ४ । संदेसिया के २ । बो
झिया के २ । नाम ॥ दोहा ॥ भृतक तु भृति भुक् कर्मकर वै